आचार्य श्रीमद् जिनलाभसूरि कृत

॥ पूजा संग्रह ॥

श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी ग्रंथमाळा ग्रंथांक ६० मणको.

शास्त्रविशारद योगनिष्ठ जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागर
सूरिजी विरचित.

॥ पूजा संग्रह ॥

सार्णद संघ तथा गोधावी संघना जैन सद्गृहस्थोनी
द्रव्य साहाय्यथी.

छपावी प्रसिद्ध करनार,

श्री अध्यात्मज्ञान प्रसारक मंडल
हा. वकील मोहनलाल हीमचंद.

मु. पादरा.

आवृत्ति पहेली. प्रत १०००.

संवत १९७९ सन १९२२ महावीर सं. २४४९.

किंमत रु. १—०—०.

आ पुस्तक मळवानुं ठेकाणुं—

वकील मा.नलाल हीमचंद.

पादरा. (गुजरात)

तथा

गांधी आतमाराम खेमचंद.

साणंद. (गुजरात)

श्री प्रजाहितार्थ मुद्रालय प्रेसमां पटेल, डाह्याभाइ दलपतरामे
छाप्युं. ठे० शाहापुर नवीपोळ—अमदावाद.

निवेदन.

अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी. श्रीमद् बुद्धिसागर ग्रन्थमाळाना ६० मणका तरीके पूजा संग्रह ग्रन्थ के जेना रचयिता, शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी छे ते सं. १९७९ नी सालमां प्रारंभमां बहार पडयो छे. तेनी किंमत रु. १-०-० राखवामां आवी छे. सूरिजी महाराज साहेबनी रचेली पूजाओ अपूर्व भाव रसवाळी अने अध्यात्मज्ञानभक्तिरसथी भरपूर छे. आ ग्रन्थ छपाववामां सद्गृहस्थ जैनो तरफथी भेट मळवाथी किंमत जूज राखवामां आवी छे, आ मंडळ तरफथी सस्ती किंमते पुस्तको वेचाय छे, तेम जैन कोम सारी रीते जाणे छे. मंडळ तरफथी अनेक पुस्तको छपावीने बहार पाडवानी इच्छा थाय छे पण धनवंतोनी मदत विना ते कार्य बनी शके तेम नथी. मंडळनी पासे उत्तम फंड नथी. छतां ते सहायकारकोनी मदतथी उत्तम पुस्तको बहार पाडया करे छे. जे जे गृहस्थोए आ पुस्तक छपाववामां धननी मदत करी छे तेओनां मुबारक नामोने अत्र धन्यवाद पत्रमां छपाववामां आव्यां छे, तथा तेओए केटला रूपैयानी मदत करी छे ते पण धन्यवाद पत्रमां जणाव्युं छे. अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडल तरफ-

श्री तेओने धन्यवाद आपवामां आवे छे. जेओ अन्य पुस्तको छपाववामां सहाय करशे तेओनो उपकार मानवामां आवशे अने पुस्तकोमां आपेला रुपयानी यादी सहित तेओनां नामोने अक्षरदेहथी अमर करवामां आवशे.

मु. पादरा.

अध्यात्मप्रसारक मंडळ.

सं. १९७९ कार्तिक पूर्णिमा.

धन्यवाद.

आ पूजासंग्रह ग्रन्थ गुरुराजश्री शास्त्रविशारद् जैनाचार्य योगनिष्ठ श्रीमद् बुद्धिसागरजी महाराज ज्यारे संवत १९७७ नी सालनुं चोमासुं श्री संघना आग्रहथी साणंदमां बिराजता हता, त्यारे महेता त्रिभुवनदास तथा चुनीलाल उमेद वगेरेए पोताना भाइना स्मरणार्थे प्रसिद्ध करवा सहाय आपवानुं जणाव्याथी तेमनी विनंतिथी गुरु-महाराज रच्यो छे. केटलोक भाग साणंदमां, केटलोक भाग महेसाणामां अने केटलोक भाग गुरुराजश्रीए पोतानी जन्मभूमि विजापुर शहेरमां बनावेल छे. आ उपयोगी ग्रन्थना प्रकटार्थे नीचे जणावेल बंधुओ तरफथी द्रव्य सहाय मळी छे माटे ते आपनार अने अपावनार अने अपाववानी अनुमोदना करनार सर्वने धन्यवाद आपवामां आवे छे तथा द्रव्य सहायकोनी नोंध लेवामां आवे छे. सद्ज्ञानना प्रगटार्थे द्रव्य सहाय सर्वे करतां अति उत्तम अने प्रशंसनीय छे, अने तेनुं फळ अनहद छे. ते दानवीरो जाणताज हशे.

३००—०—० महेता गोविंदजी उमेदभाइना स्मरणार्थे महेता त्रिभुवनदास तथा चुनीलाल तथा तेमना पुत्र दलसुखभाइए आप्या. मु. साणंद

१००—०—० महेता रायचंदभाइ रवचंदभाइए पोताना पुत्र त्रिभुवनना स्मरणार्थे मु. साणंद

१२५-०-० बाइ मोंघी महेता रायचंद करसनभाइनी पत्नीए आप्या. मु. साणंद

१००-०-० गांधी वाडीलाल राघवजीनी व्हेन हरकोरे संवत् १९७८ ना कारतक वदि ६ ना रोज गोधावीनो संघ काढ्यो त्यारे आप्या ते. मु. साणंद

५०-०-० एक ग्रहस्थ. मु. साणंद

१५०-०-० शेठ छगनलाल गीगाभाइ. मु. साणंद

२५०-०-० शेठ भोगीलालभाइ वीरचंदभाइ जे. पी. गोधावी हाल अमदावाद तथा मुंबई.

१०७५-०-०

उपरनी विगते आ ग्रन्थमां मदद मळी छे. संवत १९७८ ना कारतक वदि ६ ना रोज वाडीलाल राघवजीए गोधावीनो संघ काढयो हतो, ते संघमां गुरुराजश्री पधार्या हता. ते वखते गोधावीमां साणंदथी आवेला संघने प्रेमजमण नवकारशी आपवामां आव्युं हतुं. अत्रे शेठ अमृतलाल केवळदासनी प्रेरणाथी पुस्तक प्रसिद्ध करवामां रुा. ५००) नी मदद मळी हती. जे पैकी रु. २५०) नी नोंध आ ग्रन्थमां लेवामां आवी छे. साणंदमां श्रीसागरगच्छमां घणाज वखतथी एक उपाश्रयनी खामी हती ते दूर करवा महेता रायचंद कर-

सनभाइनी विधवाए रु. १००००) दस हजारनी मदद आपवाथी बाकीना रुपीया श्रीसागर संघना काढी एक भव्य धर्मशाला (उपाश्रय) बंधावेल छे. आ प्रमाणे आ पुस्तकना प्रसिद्ध करवा अर्थे जे जे बंधुओए सहाय आपी छे ते सर्वेनो अंत:करणपूर्वक आभार मानवामां आवे छे. भविष्यमां आवा अनेक ग्रन्थो प्रगट करवामां तेओ सहायक बनो, एम अंत:करणनी उंडी [illegible] इच्छवामां आवे छे.

लि. अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडळ तरफथी.
वकील शा. मोहनलाल हिमचंदभाइ.
मु. पादरा.

संवत १९७२
कार्तिक पूर्णिमा.

अने सद्गुरु चरणोपासक
किंकर. शा. आत्माराम खेमचंद.
मु. साणंद.

॥ पूजा संग्रह उपोद्घात. ॥

अनादिथी परमन्व छे अने तेनी पूजा पण अनादिकालथी छे. दरेक तीर्थंकरनी अपेक्षाए आदि छे एम अपेक्षाए ज्ञानीओ जाणे छे. जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल वगेरे पूजानां साधन वस्तुओ छे. अंगपूजा, अग्रपूजामां साधन वस्तुओने उपचारे पूजा कहेवामां आवे छे. द्रव्य पूजामां जलादि साधन पूजानो समावेश थाय छे. भावना, श्रद्धा, प्रीति, प्रभु गुणोनी स्तवना, तथा व्रतादि गुणोवडे प्रभुनी स्तवना करवी. प्रभुनी प्रभुना गुणो गाइ श्रद्धा पूर्वक भक्ति करवी, प्रभुना द्रव्य अने भाव अतिशयोनी स्तुति करवी. इत्यादि मानसिक सेवा भक्ति शुभ परिणामनो अने स्तुति पूजामय शब्दोनो भावपूजामां समावेश थाय छे. द्रव्यपूजा अने भावपूजा ए बे भेद पण प्रभुनी सेवा भक्तिरूप छे अने एवी सेवा भक्तिमां मतिश्रुत ज्ञान पण अंतरमां जाग्रत् होय छे, तेनी साथे चारित्रनी भावनाओ पण उल्लसे छे. ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, जगत्मां अनादिकालथी सर्व देशमां अनेकरूपे होय छे. साधनभक्तिनी अपेक्षाए भावभक्तिना पण अनेक भेद पडे छे. दरेक धर्ममां भक्तिने प्रभुनी प्राप्तिनुं साधन मानवामां आव्युं छे. केटलाक मतवाळाओ प्रभु परमात्माने साकार मानीने तेमनी भक्ति करे छे. मुसल्मानो अल्ला खुदाने अनंत नूरनो दरियो मानीने प्रभुनी भक्ति करे छे. वेदांतीओमां केटलाक मतवादीओ–रामानुज, रामानंद, मध्व,

निंबार्क, वल्लभाचार्य, स्वामीनारायण वगेरे परमेश्वरने साकार माने छे अने भक्तोना उद्धार माटे परमेश्वर वारंवार जन्म अवतार ले छे एम माने छे. रामानुज वल्लभाचार्य मतवादीओ परमेश्वर सदा साकाररूपी रहे छे एम माने छे. शंकराचार्यवाळा वस्तुतः परमात्माने निराकार माने छे अने विवर्तवादनी दृष्टिए परमेश्वरनां अमुक प्रतीको कल्पीने तेने साकार इश्वर तरीके माने छे. नैयायिको अने वैशेषिको परमेश्वरने निराकार माने छे. पतंजलिए पातंजलयोगदर्शनमां परमात्माने निराकार मान्यो छे. आर्य समाजीओ परमेश्वरने निराकार माने छे. ख्रीस्तिओ परमेश्वरने साकार माने छे. बौद्धो परमेश्वरने साकार तथा निराकार माने छे. जैनो परमेश्वरने साकार तथा निराकार माने छे. हिंदुओ, मुसलमानो, ख्रिस्तिओ, जैनो, बौद्धो अनेक दृष्टिबिंदुओनी अपेक्षाए परमेश्वरनी द्रव्यपूजा तथा भावपूजा माने छे. द्रव्य ते भावनुं कारण छे. साधनथी साध्यनी प्राप्ति थाय छे. ज्यां सुधी केवलज्ञानी परमात्माओ अघाती कर्मना योगे शरीरमां रहेला होय छे त्यां सुधी ते साकार परमेश्वरो छे, अने सर्व कर्मथी रहित थै सिद्धबुद्ध परमात्मा थाय छे त्यारे ते निराकार परमेश्वर तरीके गणाय छे. साकार परमेश्वरमां अरिहंत, जिन, आचार्य, उपाध्याय अने मुनि गुरुनो समावेश थाय छे. अष्टकर्म रहित सर्व शुद्धात्माओनो निराकार परमेश्वरमां समावेश थाय छे. आत्माना असंख्य प्रदेशो अने तेमां रहेल ज्ञानादि ज्योतिने अनंत नूर तेज सागर कहेवामां आवे छे. श्रद्धाप्रीति ज्यां छे त्यां अवश्य प्रतिमा

पूजा आदि [illegible] प्रगटे छे. प्रेम त्यां प्रतिमा पूजा छे. साकारना प्रेमथी साकारनी पूजा थाय छे. अने निराकारना प्रेमथी [illegible]नी पूजा थाय छे. साकारनी पूजा सिद्ध थया बाद निराकार प्रभुनी पूजा थइ शके छे. बाल जीवो, साकार प्रभुओनी भक्ति करीने हृदयनी शुद्धि करी शके छे. हृदयनी शुद्धि थया पछी ज्ञान प्रगटे छे अने ते ज्ञानथी निराकार प्रभुनी ध्यानरूप पूजा थाय छे. साकार पूजा ए प्रथम मोक्षमार्गनुं पगथियुं छे. साकार पूजा करनार साकार प्रभु अने तेना वियोगमां साकार प्रभुनी तथा गुरुनी प्रतिमानुं पूजन करे छे, तेनी दृष्टिमां प्रतिमामां साकार प्रभुनुं स्वरूप रमी रहे छे.

साकार प्रभुनी द्रव्य पूजाना अधिकारी गृहस्थो छे अने प्रभुनी भाव पूजाना अधिकारी मुनियो छे. जेवा प्रभुमां शुद्ध ज्ञानादि गुणो छे तेवा पोताना आत्मामां सत्ताए गुणो छे. प्रभुनी श्रद्धा प्रीतिथी प्रभुना गुणो प्राप्त करवा माटे प्रभु पूजानी आवश्यकता छे. प्रभुनी पूजा भक्ति करतां आत्मामां रहेला सद्गुणो प्रगटे छे अने आवरणो टळे छे. प्रभुना जे जे गुणोनुं बहु मान स्तवन करवामां आवे छे ते ते गुणो पोताना आत्मामां तिरोभावे–सत्ताए रहेला होय छे ते प्रगट थाय छे. प्रभुना गुणोनुं बहु मान पूजा ते वस्तुतः पोताना आत्मानी पूजा छे, कारण के तेथी पोताना आत्मानी शुद्धि थाय छे अने गुणो प्रगटे छे.

ज्यारथी मनुष्यो छे त्यारथी गमे ते भाषामां अनेक रीते प्रभुनी स्तुतिद्वारा पूजा करवानो रीवाज प्रवर्त्या करे छे श्री ऋषभदेव

प्रभुथी ते श्री महावीर प्रभुनी पूजाओ ते ते कालमां ते ते देशमां प्रचलित भाषाद्वारा थती हती. प्रभुनी पूजामां मुख्यभाव प्रेम होय छे अने ते गमे ते भाषाद्वारा बहार आवे छे. प्रभुना गुणोनी श्रद्धा प्रीति भावनाने भक्तो गमे ते भाषाद्वारा बहार प्रगट करे छे. पूर्वे संस्कृत भाषा अने प्राकृत भाषाद्वारा जैनो प्रभुनी पूजानां गानो गाता हता. संस्कृत प्राकृत भाषादिद्वारा प्रभुनी पूजा अने व्रतादि गुणोद्वारा थती प्रभु पूजाद्वारा जैनो प्रभुनी भक्ति करता हता. सोळमा वा सत्तरमा सैकाथी गुजराती भाषामां प्रभुनी पूजाओ रचावा लागी. श्रीसकलचंद्र उपाध्याये श्रीसत्तरभेदी पूजा रची ते पहेलांनी पूजाओ रचेली न जाणवामां आवे त्यां सुधी गुजराती भाषामां प्रथम पूजाना रचयिता श्रीसकलचंद्र उपाध्यायजी गणावाना. श्रीसकलचंद्रजी उपाध्यायजी पश्चात् श्रीयशोविजयजी उपाध्याय, श्रीज्ञानविमल सूरि, श्री विजयलक्ष्मी सूरि, श्री पद्मविजयजी पंन्यास, श्रीरुपविजयजी पंडित, श्री वीरविजयजी पंडित, आचार्यश्री विजयानंद सूरि, पन्यासश्री गंभीर विजयजी, श्रीमान् हंसविजयजी, श्रीमान वल्लभविजयजी वगेरे आज सुधी पूजाओ रचनार थया छे. खरतरगच्छ, अंचलगच्छ वगेरेमां गुजराती भाषामां पूजाओना रचनार अनेक सूरि पंडित मुनि थया छे अने भविष्यमां घणा थशे. पूजाओ भणाववानो श्वेतांबर जैनोमां घणो रीवाज छे. सर्व पूजाओमां नव पदनी अने वीश स्थानकपदनी पूजाओ वधारे भणावाय छे. उपाध्यायजी श्री यशोविजयजी, श्रीमद् देवचंद्रजी अने ज्ञानविमलजी सूरि ए त्रण-

नी नवपदनी स्तुतिनो संग्रह करीने कोइए नवपद पूजानी योजना करी छे. खरतरगच्छ अने तपागच्छ बन्नेमां ए नवपदनी पूजा भणावाय छे. श्री विजयलक्ष्मी सूरिकृत वीशस्थानकनी पूजानी जैनोमां घणी प्रसिद्धि छे. विद्वानो ते पूजाने भणावी विशेष हर्ष पामे छे. पूर्व पुरुष मुनिवरोनुं अनुकरण करीने मारावडे प्रसंगोपात्त केटलीक पूजाओ रचाइ छे ते आ पूजा संग्रहनुं पुस्तक वांचतांज वांचको जाणी शकशे.

मारी बनावेली पूजाओ—वसो, विजापुर, साणंद, महुडी (मधुपुरी) मेसाणा, ए चार गाममां रचायेली छे. दरेकमां पूजा रचयानो संवत् छे. विशेषमां गुरुपूजा अने प्रभु महावीर देवना यक्ष तरीके श्री घंटाकर्ण महावीरनी पूजाओ छे. त्रीजा, चोथा अने पांचमा परमेष्ठीमां गुरुतत्त्वनो समावेश थाय छे. श्रीमद् रविसागरजी गुरु महाराज अने श्रीमद् सुखसागरजी गुरु महाराज, ए बे परम उपकारी गुरुओना गुणनो पूजा रचवामां आवी छे. गुरुनी पादुका तथा मूर्ति आगळ अगर अन्यत्र गुरुनी स्थापना करी गुरु पूजा भणावची. नवपदनी पूजामां अरिहंत, सिद्धनी पेठे आचार्य, वाचक, तथा साधुनी पूजा छे. गुरुमां आचार्य, वाचक, मुनिनो समावेश थाय छे, खरतरगच्छमां श्री जिनदत्त, तथा श्रीजिनकुशलसूरिनी पूजा भणवामां आवे छे. पूजाओनी चोपडीओमां दादानी पूजा प्रसिद्ध छे. श्रीमद् रविसागरजी दादागुरु महा प्रभावक, चारित्रपात्र चूडामणि थया छे, माटे तेमनी पूजा रचेली छे, गुरुभक्तो गुरुगुण-

रागीओ गुरुनी पूजा भक्ति करे तेथी तेओना आत्मानी शुद्धि थाय छे. श्री घंटाकर्ण महावीर ए जैनशासन देव छे. शांतिस्नात्रमां अष्टोत्तरी स्नात्रमां अने प्रतिष्ठा विधिमां श्री घंटाकर्ण वीरनी स्थाली यंत्रवाळी मंत्रीने वेदिका उपर स्थापवामां आवे छे. श्री सकलचंद्रजी उपाध्यायजीए प्रतिष्ठा विधिनी संस्कारित योजना करी छे. शांतिस्नात्र अने अष्टोत्तरी स्नात्र विधिनी योजना पण तेमना वखतमां तथा जगद्गुरु तपागच्छ गगनभानु समान श्री हीरविजयजीना वखतमां थएली छे अने ते वखते आचार्योए जैनशासन देवता तरीके श्री घंटाकर्ण महावीरनी प्रसिद्धि करी छे अने ते परंपरा आज सुधी तपागच्छमां चाली आवे छे. श्री महुडी (मधुपुरी) गाममां शासन यक्ष तरीके श्री पद्मप्रभु जिनेश्वर देवनी आगळ एक देरी करी श्री घंटाकर्ण महावीरनी मूर्तिनी अमोए प्रतिष्ठा करी छे. ते शासनयक्षनो चमत्कार प्रभावक सर्वत्र विस्तार पाम्यो छे. घंटाकर्ण कल्प वाचवाथी तेमनो प्रभाव समजाशे. जेटला शासन देवो अने देवीओ छे तेओ समकित धारी छे तेओ साधर्मिक बंधु तरीके छे. गृहस्थ श्रावको जैनो तेमनी शासन प्रभावक साधर्मिक तरीके सेवा भक्ति करे छे अने तेथी शासनयक्ष देवो, गृहस्थ जैनोने धर्म साधतां संकट पडे छे ते काले सहाय करे छे. अमोए गृहस्थ जैनोने साधर्मिक देव तरीके तेमनी पूजा भणाववानो तेमनी मूर्त्ति आगळ अधिकार छे एवुं जाणी तेओ माटे पूजा रची छे के जेथी जैनो पोते, मिथ्यात्वी देवो अने देवी-

ओनी सहाय छंडीने समकिती देवदेवीओनी सहाय पामी शके—सम्म-
दिट्ठी देवा दिंतु समाहिंच बोहिं च (वंदितासूत्र)
ए वाक्यथी श्रावकोए सम्यग्दृष्टि देवोने कह्युं छे के हे सम्यग्दृष्टि
देवो ! अमने समाधि अने बोधि—समकित आपो. सम्यग्दृष्टि गृहस्थ
जैनो सम्यग्दृष्टि देवदेवीना गुणोनुं स्तवन करी तेओनी द्रव्यपूजा
करी शके छे. अष्टादश दोष रहित परमात्मा महावीर जिनेश्वरना
सम्यग्दृष्टि देवो अने देवीओ सेवको छे अने ते जैनशासननी प्रभा-
वनामां मदत करे छे. तेमने साधर्मिक समकितदृष्टि देव तरीके मानवा
पूजवामां दोष नथी. चक्रेश्वरी पद्मावती, माणिभद्र वगेरेनी देरास-
रोमां श्रावको पूजा करे छे तेम घंटाकर्ण वीरनी मूर्ति आगळ तेनी
स्तुति करी तेनुं पूजन करवुं ए जैन शासननी सेवा करनार देवनी
भक्ति छे.—

पूजा भणावनाराओए ज्ञानी मुनि वगेरेनी सेवा भक्ति करीने
तेओनी पासेथी दरेक पूजाना अर्थ धारवा. दरेक पूजाना रागने
धारवा. पूजाने सारी पेठे गातां शीखवुं. पूजानां साहित्य तरीके
जे जे वाजित्र योग्य लागे ते वगाडतां शीखवुं, जे पूजा भणाववानी
होय तेनो भावार्थ प्रथमथी समजी लेवो. एक सरखी रीते सर्व गा-
नाराओए तालबद्ध गावुं. मुखे खेसनो छेडो राखवो पूजा एक स-
रस गानार उपाडे अने बीजा पाछळ ते पद्य गाय, वच्चे कोइ जा-
तनी गरबड थवा न दे, वच्चे आडी अवळी वातो न करे, प्रभुना
सन्मुख दृष्टि राखे, जे पूजामां जेवो भाव होय तेवो परिणाम धारण

करे, प्रभु वीतरागना गुणोनुं बहु मान करे अने आनंदथी गायतो पूजा भक्तिनुं वातावरण एवुं छवाइ जायके जेथी तद्धेतु अनुष्ठान अने अमृत अनुष्ठाननो आनंद रस प्रगटे. जिन मंदिरमां पूजा भणावती वखते सर्व श्रावकोए नियमसर वेसवुं. पूजा भणाववामां विधिनो खप करवो अने आशातनाना दोषो टाळवा. वेठनी पेठे पूजा न भणाववी. मोक्ष माटे पूजा भणाववी. शुद्ध भक्त स्नात्रीयाओ करवा. पतासांनी लालचेज पूजामां सामेल थवुं ते विषानुष्ठान छे, माटे पूजा भणाववामां, गावामां अने पूजा श्रवण करवामां खास लक्ष्य राखवुं. गातां आवडे, सारुं गानारा गवैयाओ गाय, बाहिरनी सारी धामधूम देखाय, तेटला माटेज पूजामां जवुं एवुं न धारवुं. परंतु सारी रीते गावुं. पूजाओ गातां तेना अर्थनो विचार करवो, आत्मामां प्रभु भक्तिनो हर्षोल्लास प्रगटाववो अने प्रभुवीतरागना गुणोने प्रगटाववा खास लक्ष्य राखी सर्व पूजानी साधन सामग्री सेववी अने साध्य लक्ष्यनो केन्द्रसमान उपयोग भूली न जवो. श्रीमद् देवचंदजी महाराजे कह्युं छे के.

स्वामी गुण ओलखी स्वामीने जे भजे,
दर्शन शुद्धता तेह पामे;
ज्ञान चारित्र तप वीर्य उल्लासथी,
कर्म जीपी वाशे मुक्ति धामे, तार० ॥

प्रभु महावीर देवना गुणोनो प्रथम जाणी अने पछी प्रभु महावीरादि देवनी जे पूजा सेवा करे छे ते आत्माना सम्यग् दर्शननी शुद्धता प्राप्त करे छे. सम्यग् दर्शननी शुद्धताना बळे ज्ञान चारित्र तप वीर्य गुणना उल्लासने प्रगटावीने ते आत्माना शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र गुणने पामीने तथा अष्ट कर्मनो क्षय करीने मुक्ति धाममां वसे छे. प्रथम ज्ञान प्राप्त करीने पश्चात् पूजा वगेरेनी क्रिया करवी. गाडरीया प्रवाहनो त्याग करी प्रथम पूजाओनुं सारी रीते ज्ञान करवुं. विद्वान साधु गुरु अने दक्ष श्रावक पासेथी पूजाओना अर्थ धारवा. एवी रीते पूजाना गीतोद्वारा प्रभुनी पूजा करवाथी श्रावको मोक्षपदने पामे छे, त्यागी मुनियो प्रभुनी आगळ भावनाथी पूजाओ गाइ शके छे पण द्रव्य पूजा करता नथी. कारण के तेओए द्रव्य पूजानो त्याग करेलो छे. पूजा भणावतां आत्मोल्लासथी अनेक कर्मनी वर्गणाओनो क्षय थाय छे.

में यथाशक्ति पूजाओ रचवामां प्रयास कर्यो छे. समकित दृष्टिवाळा जीवो श्री कृष्णनी पेठे तेमांथी गुण सार ग्रहण करशे अने मिथ्यादृष्टियो काकनी पेठे दोषो जोशे. गुणानुरागी जे भक्तो हशे तेओ अवश्य फल प्राप्त करशे.

वसो गामना संघना आग्रहथी पहेली अष्ट प्रकारी पूजा रचवामां आवी हती अने त्यां प्रथम देरासरमां भणावी हती. वास्तुक पूजा विजापुरमां वकील. शा. रीखवदास अमुलेख, दोशी. नथुभाइ

मेछाचंद वगेरेना आग्रहथी रचवामां आवी हती अने प्रथम शेठ. रीखवदास अमुलेखना नवा घरमां भणावी हती. मोटी नवपदनी पूजा प्रथम महुडी गाममां श्रीपद्मप्रभुनी आगळे विजापुरनी अने साणंद श्रावकनी टोळीए सारी रीते भणावी हती. पूजासंग्रहमां आपेली पूजाओ जोवाथी मालुम पडशे के ते ज्ञानदर्शन चारित्ररूप मोक्ष मार्ग छे. व्यवहारनय अने निश्चयनय एम बे नयनीस्या द्वादशैलीथी अनेकांतनय सहित पूजाओ रचेली छे, तेनो भाव उत्तम छे. गीतार्थमध्यस्थभावी गुणानुरागी मुनियो पासे तेनो भावार्थ धारवो. पूजाओमां रुचिभेदे कोइने कोइ रुचे छे अने कोइने कोइ रुचे छे. रुचिज्ञानभेदे जुदी जुदी पूजाओ सर्वने रुचे छे. पूजानो सार ग्रहण करवो पूजाओ पैकी जेना जे अधिकारी हशे ते तेने ग्रहण करी भणावशे अने फल प्राप्त करशे. पूजासंग्रहने छपाववामां साणंद संघना श्रावकोए आगेवानीभर्यो भाग लीधो छे. शेठ गोविंदजी उमेदनी पाछळ तेमना भाइ त्रिभोवनदास तथा चुनीलाले तथा भाइ दलसुखभाइए धर्मदान करेलुं, तेओए तेमनी नाम स्मृति माटे पूजाओ वगेरे रचवानो आग्रह कर्यो, तेथी निमित्त पामीने बाकीनी केटलीक पूजाओ रचाइ छे. पूजासंग्रह छपाववामां जे जे श्रावकोए धननी सहाय करी छे तेओने धन्यवाद आपवामां आवे छे. पूजासंग्रह प्रथमावृत्तिमां जे कंइ स्खलन, भूल, दोष रहेल जणाशे तेने द्वितीयावृत्तिमां सुधारी लेवामां आवशे अने बनशे तो बीजी पण केटलीक नवीन पूजाओ

रची दाखल करवामां आवशे. पूजासंग्रहनां प्रुफ सुधारवामां मुनि कीर्तिसागरे मदत करी छे तेथी तेने धन्यवाद आपवामां आवे छे. जे कंइ वीतराग महावीर प्रभुनी आज्ञा विरुद्ध लखायुं होय तेनो मिच्छामि दुक्कडं देवामां आवे छे. पूजा भणावनारा अने श्रवण करनाराओना हृदयमां सेवाभक्ति पूजाना परिणामनी वृद्धि शुद्धि थाओ.

इत्येवं ॐ अर्हंमहावीरशांतिः ३

मु. महेसाणा.

सं. १९६९

कार्तिक सुदि ज्ञानपंचमी.

पूजासंग्रहनी प्रस्तावना,

शास्त्रविशारद–कविराज, जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिकृत पूजासंग्रह खरेखर ज्ञान भक्तिरस अने चारित्र भावरसनो सागर छे. श्रीमद्नी रचेली पूजाओमां भाव मुख्य छे. जे जे विषयनी पूजा रचेली छे तेनुं उत्तम हार्दिक स्वरूप चितर्युं छे, एटलुंज नहि परंतु तेमां स्थळे स्थळे तेमना उद्गारो के जे ज्ञान भक्तिरसमय छे ते देखाय छे. कर्तानुं ज्यां हृदय नीतरे छे ते काव्य छे. आनंद रसना उभरा अने अनुभव ज्ञानना उभराओ ज्यां त्यां पूजाओमां वांचतां अनुभवाय छे ते सहृदय साक्षर पूजानुभवी भक्तो स्वयमेव जाणी शकशे. गुरुमहाराजे रागो के जे पूजाओमां प्रचलित छे तेमां पूजाओ रची छे. केटलीक पूजाओने रागणीओमां पण रची छे. **पंचधा योग पूजा, अष्टांग योग पूजा, दानशीयल तपभाव पूजा, षडावश्यक पूजा, महावीर जन्म जयंती पूजा** वगेरे पूजाओ के पहेलां कोइए रची नहोती एवी पूजाओ रचीने तेमणे पूजारसिकोने नवीन पूजाओना आनंदरस आस्वादन प्रति आकर्ष्या छे. गुरुमहाराजनी रचेली पूजाओमां प्रासानुप्रास, झडझमक साथे आध्यात्मिक ज्ञान भक्ति चारित्र रसनो प्रवाह वह्या करे छे. तेमनी रचेली पूजाओ घणे ठेकाणे भणाववानी इच्छावाळा श्रावको ज्यां त्यां गामोगाम पूजासंग्रह बहार पडया पहेलां अगाउथी

मागणीओ कर्या करे छे. अष्टप्रकारी तथा वास्तुक पूजा आजसुधी घणा गामोमां शहेरोमां भणाववामां आवी छे. तेमनी रचेली नवपदनी मोटी पूजा पहेलवहेली विजापुर पासेना महुडी गाममां विजापुर तथा सार्णंदनी श्रावक टोळीए भणावी हती. गुरुश्रीए सत्तरभेदी पूजा एक दिवसमां पांच कलाकमां रची पूरी करी हती. पंचपरमेष्ठी पूजा, षडावश्यक पूजा, अष्टांगयोग पूजा तथा पंचधायोग पूजा वगेरे पूजाओ एकेक दिवसमां चार चार पांच पांच कलाकमां रची पूर्री करी हती. गुरुमहाराज ज्यारे पूजा रचवा बेसे छे त्यारे गद्यना लखाणनी पेठे सपाटाबंध पूजाओ रची दे छे. शीघ्रकवि तरीके तेओ जाहेर छे. तेओए भजन पद्यसंग्रहना आठ भाग रची बाहेर पाड्या छे. तेमनी रचेली सत्तरभेदी पूजानो भावार्थ, आध्यात्मिक दृष्टिए उत्तम छे. वीश स्थानकनी पूजामां थोडी गाथाओमां घणो भाव समाव्यो छे. पहेलांनी अनेक पूजाओ छे. हाल पण केटलाक पंडित मुनिवरोए पूजाओ रचेली छे. भिन्न रुचिवाळा लोको छे तेथी आ पूजाओना रुचिवाळा जे लोको छे तेने आ पूजाओ भणावतां घणो भक्तिरस प्रगटशे तथा भविष्यमां जेओ आवी पूजाओनी रुचिवाळा जीवो प्रगटशे तेओने आ पूजाओ घणी उपयोगी थै पडशे. आचार्य महाराजजी भविष्यमां बीजी पूजाओ प्रसंगोपात्त रचे एवो संभव छे. आ पूजासंग्रहनी आवृत्ति खपी जतां बीजी आवृत्ति छपावतां भविष्यमां रचाशे ते पूजाओने पण आ पूजाओना सुधारा वधारा साथे दाखल करवामां आवशे.

सज्जनो गुणानुरागी होय छे. दुर्जनो काकना जेवा दोष दृष्टिवाळा छे. दुर्जन इर्ष्याळुओ तो छता गुणने पण अवगुण तरीके देखाडवानो प्रयत्न करे छे अने पयमांथी पूरा काढवा जेवी चेष्टा करे छे, एवा इर्ष्याळुओ उत्तम पूजाओ अने तेना रहस्यने दोषरूप देखाडवा प्रयत्न करे तेथी सज्जन गुणानुरागी समजु जनोने खराब असर थती नथी. जेओने सम्यग् दृष्टि प्रगटी होय छे तेओ तो श्री कृष्णनी पेठे ज्यां त्यां सारुं देखे छे तेनी प्रसंशा करे छे अने गुणनारागी बने छे. जैन कोममां आचार्य महाराज साहेब जेवी प्रभावशाळी अल्प व्यक्तियो छे. तेमणे जैन कोमपर घणो उपकार कर्यो छे. जैनो अने हिंदुओ वगेरे सर्व कोमोमां, राजा रजवाडाओमां जैनाचार्य गुरु महाराजनी प्रतिष्ठा भारी छे, सर्व दर्शनवाळाओ तेमना लेखोने ग्रन्थोने प्रेमभावथी वांचे छे. गुरु महाराजना रचेला अनेक ग्रन्थो छे. ग्रन्थमाळाना मणकामां आ ग्रन्थथी वधारो थयो छे. तेमना हाथे विश्व लोकोनुं कल्याण थाय एवा ग्रन्थो हजी घणा लखाशे एवी इच्छा राखीए छीए. पूजाओमां ज्ञानदर्शन चारित्रादि गुणोनी भक्ति स्तुति अने ज्ञानादि गुणीओनी भक्ति करवामां आवे छे अने व्रतगुणोनी रुचि प्रगट थाय एवी भावना होय छे. आत्मानी शुद्धि करी आत्माने परमात्मा बनाववो अने अनंत जन्म जरा मरणना दुःखथी मुक्त थवुं एज सर्व प्रकारनी पूजाओनो मूळ उद्देश अने उद्देश गामी पूजाओनो भावार्थ होय छे. वाचकोए पूजाओ गाइने बेसी न रहेवुं पण तेनो भावार्थ ग्रहवो, सांभळी सांभळी फूटया कान–वाची वाची

फूटी आंख, गाइ गाइ थावयुं मुख, एम गाडरिया प्रवाहे चालतां पूजानुं अने तेमां कहेवा भावनुं रहस्य समज्याविना आत्मानो आनंद-रस प्रगटतो नथी. ज्ञानपूर्वक अने भावपूर्वक पूजाओ भणाववामां आवे छे तो वक्ताओने तथा श्रोताओने अत्यंत आल्हादभाव भक्ति-रस प्रगटे छे अने ज्ञानावरणीयादि कर्मोनी निर्जरा थाय छे. आत्मामां प्रभु भक्तिनो समाधिभाव प्रगटे छे तेथी प्रभुनो हृदयमां प्रगट भाव थाय छे. पूजाओ भणाववामां, श्रवण करवामां एकांत भक्तिनुं फल छे तेनो भावार्थ विचारी आत्मोल्लास प्रगटावतां उत्कृष्ट भावे क्षणमां मुक्ति थाय छे. भक्त जैनो आवी उत्तम पूजाओ भणावीने तथा श्रवण करीने प्रभु भक्तिना रसिया बनी आनंद रस पामो. एम इच्छुं छुं. सं. १९७९ का. सु ११ एकादशी. ॥

गुरुभक्त. लेखक.

गांधी आत्माराम खेमचंद,

महेता हरिलाल मंगळदास,

मु. साणंद.

श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी ग्रन्थमाळामां

प्रगट थयेला ग्रन्थो.

ग्रथांक		पृष्ठ	किंमत.
१	क. भजन संग्रह भाग १ लो.	२००	०–८–०
* १	अध्यात्म व्याख्यानमाळा.	२०६	०–४–०
* २	भजनसंग्रह भाग २ जो.	३३६	०–८–०
* ३	भजनसंग्रह भाग ३ जो.	२१५	०–८–०
* ४	समाधि शतकम्.	६१२	०–८–०
* ५	अनुभव पच्चिशी,	२४८	०–८–०
६	आत्मप्रदीप.	३१५	०–८–०
* ७	भजनसंग्रह भाग ४ थो.	३०४	०–८–०
८	परमात्मदर्शन.	४२क	०-१२-०
* ९	परमात्मज्योति.	५००	०-१२-०
* १०	तत्त्वबिंदु.	२३०	०–४–०
* ११	गुणानुराग. [आवृत्ति बीजी]	२४	०–१–०

* १२-१३. भजनसंग्रह भाग ५ मो तथा ज्ञानदीपिका.	१९०	०-६-०
* १४ तीर्थयात्रानुं विमान [आ. बीजी]	६४	०-२-०
* १५ अध्यात्म भजनसंग्रह	१९०	०-६-०
* १६ गुरुबोध.	१७४	०-४-०
* १७ तत्त्वज्ञानदीपिका	१२४	०-६-०
१८ गहुंलीसंग्रह भा. १	११२	०-३-०
* १९-२० श्रावकधर्मस्वरूप भाग १-२ [आवृत्ति त्रीजी]	४०-४०	-१-०
* २१ भजन पद संग्रह भाग ६ ठ्ठो.	२०८	०-१२-०
२४ वचनामृत.	८३०	०-१४-०
२३ योगदीपक.	३०८	०-१४-०
२४ जैन ऐतिहासिक रासमाळा.	४०८	१-०-०
* २५ आनन्दघन पदसंग्रह भावार्थ सहित.	८०८	२-०-०
* २६ अध्यात्म शान्ति [आवृत्ति बीजी]	१३२	०-३-०
* २७ काव्यसंग्रह भाग ७ मो.	१५६	०-८-०
* २८ जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थिति.	९६	०-२-०
२९ कुमारपाल चरित्र (हिंदी)	२८७	०-६-०

३० थी ३४ सुखसागर गुरुगीता.	३००	०-४-०
३५ षड्द्रव्य विचार.	२४०	०-४-०
* ३६ विजापुर वृत्तांत.	९०	०-४-०
३७ साबरमती काव्य.	१९६	०-६-०
३८ प्रतिज्ञा पालन. ३०४	११०	०-५-०
३९-४०-४१ जैनगच्छमत प्रबंध संघप्रगति जैनगीता.		१-०-०
४२ जैन धातुप्रतिमा लेख संग्रह		१-०-०
४३ मित्रमैत्री.		०-८-०
४४ शिष्योपनिषद्.		०-२-०
४५ जैनोपनिषद्.	४८	०-२-०
४६-४७ धार्मिक गद्यसंग्रह तथा सदुपदेश भाग १ लो.	९७६	३-०-०
४८ भजन संग्रह भा. ८	९७६	३-०-०
४९ श्रीमद् देवचंद्र भा. १	१०२८	२-०-०
५० कर्म योग.	१०१२	३-०-०
५१ आत्मतत्त्व दर्शन	११२	०-१०-०
५२ भारत सहकार शिक्षण काव्य	१६८	०-१०-०

५३	श्रीमद् देवचंद्र भा. २	१२००	३–८–०
५४	गहुली संग्रह भा. २	१३०	०–४–०
५५	कर्मप्रकृतिटीकाभाषांतर	८००	३–०–२
५६	गुरुगीत गुहलीसंग्रह	१९०	०-१२-०
५७–५८	आगमसार अने अध्यात्म गीता	४७०	०–६–०
५९	देववंदन स्तुति स्तवन संग्रह.	१७५	०–४–०
६०	पूजासंग्रह	४१६	१–०–०

* आ नीशानीवाळा ग्रंथो सीलकमां नथी.

उपरनां पुस्तको मळवानु ठेकाणुं.

वकील मोहनलाल हीमचंद.

(गुजरात) पादरा.

जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिकृत पूजा संग्रह.

विषयानुक्रमणिका.

पूजासंग्रहनुं अशुद्धि शुद्धि पत्रक,

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
७	३	घूजो	धूजो
१०	१५	घोदकथी	गंधोदकथी
१६	१४	लह	लहे
१७	७	स्नात्रया	स्नात्रीया
१९	६	भावरे	भावेरे
३२	४	जहजो	जेहजो
३९	१४	अनंत	अनंता
४६	१०	बासना	वासना
४८	१७	उँ हूँ	ॐ ह्रीँ
६७	१२	पुण्य	पुण्ये
७४		तप पूजाना होरीना रागमां बीजा पदने अंते रे अने तप एम बे सुधारीने वांचवुं.	
७६	२	कीधुं	दीधुं
७९	७	आस्रवने	आस्रव
९३	१६	लब्धि	लब्धि
१०३		ज्यां ज्यां ब्रह्म होय त्यां ब्रह्म वांचवुं.	
१०६		मैत्री भावनानी अरणिकवाळी देशी पूजामां बीजा अने चोथा पदने अंते रे उमेरवो.	

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
११५	६	करवा	करवां
१४५	२	शुद्वो	शुद्धो
१४७	५	गुण न	गुण ने
१४७	६	शक्रियो	शक्तियो
१४९	१३	उपदशने	उपदेशने
१५२	३	नानार	नरनार
१५२	१४	भवोदर्ि	भवोदधि
१५४	१४	तमोरेजो	तमोरजो
	१४	सेवतारे	सेवनारे
१५६	११	कथ्यां । र	कथ्यांसार
१५८	२	वादीए	वांदीए
१५९	१०	आखमां	आंखमां
१६०	२	जथी	जेथी
	१२	विकासरे	विकासेरे
१६४	३	लाभार्य	लाभार्थे
१८२	५	परपुदल	परपुद्गल
१९०	८	पूजी	पूजा
१९१	१२	भवोदधिमा	भवोदधिमां
२२४	११	बाघे	बांधेरे

पृष्ठ	लींटी	अशुद्धि	शुद्धि
२३३	३	मनमा	मनमां
२३६	७	दीजीणे	दीजीए
,,	९	द्रव्यार्थिकमये	द्रव्यार्थिकनये
	१४	शाश्वता	शाश्वतां
२४०	१८	समकितदा	समकितदाय
२४२	४	गुणंरगी	गुणरंगी
२६१	७	सवळा	सवळा
२६३	१५	कया	कयां
२८३		कलश छे तेमांनो एक कलश भणाववो.	
२९१	११	पूजता	पूजतां
३०६	४	मारी	सारी
३१६	१०	पुष्यं	पुष्पं
३२५	१	टाळेरे	टाळे
३३६	८	माहि	मांहि
३३९	१४	ग्राम	ग्राम
३४४	१३	नैवेद्यं	नैवेद्य. ॥
३५२	१५	निज	निज
३५९	१३	आखे	आंखे.
३५९	१५	नमो	नम्यो ॥

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
३६१	१०	सद्सद्	सदसद्
३६९	१२	भक्त छे	भक्त छे।
३७८	१७	स्मरतां	समरंतां ॥

सूचना-पूजा पूरी थतां ॐ ह्रीँ श्रीँ आदि मंत्र भणीने सत्तरभेदी तथा वीशस्थानकनी पूजा वगेरेमां पूर्वनी पूजाओनी पेठे संपूर्ण मंत्र भणवो. तथा अष्टप्रकारी पूजा विनानी बाकीनी पूजाओमां प्रत्येक पूजा दीठ अष्टप्रकारी पूजानो सामान ग्रहवो. वि० अन्य सूचनाओ वगेरे जे रही जती हशे ते द्वितीयावृत्तिमां दाखल करवामां आवशे.

इत्येवं ॐ अँर्हं महावीर शांतिः ३

पूजा संग्रह.

स्नात्रविधि.

प्रथम दुध, दहिं, घी, केशर, फुल अने जळनुं पंचामृत करी बे कलश एक पाटली उपर चोखाना बे स्वस्तिक करी ते उपर मूकवा. कळशने महोडे नाडाछडी बांधवी. एक त्रण बाजोठनुं सिंहासन करी ते उपर प्रभुनी पधरामणीनुं सिंहासन मूकी तेमां एक रकेबीमां केशरना बे स्वस्तिक करी, त्रण नवकार गणी एक धातुनी पंचतीर्थी प्रतिमाजी तथा एक सिद्धचक्रजीनी प्रतिमाजी पधराववां. प्रतिमाजीनुं मुख उत्तर वा पूर्व तरफ राखी पधराववां. प्रतिमाजी नीचे एक पैसो मूकवो. सिंहासनना वचला बाजोठ उपर चोखानो एक स्वस्तिक करी एक फळ मूकवुं. प्रतिमाजी पधराववाना सिंहासनना एक छेडे नाडाछडी बांधवी. एक रकेबीमां

थोभां वूटां फुल केशरवाला चोखा करी राखवा अने चामर, दर्पण, पंखो, घंट, विगरे सामान सिंहासन पासे राखवो. ज्यां वस्त्र चभावावानां आवे त्यां नाडाछभीनो ककभो मूकवो, फूलनी अछत होय त्यां केशरवाळा चोखानो उपयोग करवो. स्नात्र नणाववावाळो माणस हाथमां फूल लइने उभो रहे अने विधि नणावनार माणस विधि शरु करे. कुसुमांजलि बोली 'फूल चढाववुं'– विधि नणावनार माणस कुसुमांजलि चढाववानुं कहे त्यारे नगवानने कुसुमांजलि चढाववी. सात वखत कुसुमांजलि चढावी रह्या पछी स्नात्रीयो हाथ जोभीने ऊभो रहे अने विधि नणावनार विधि बोल्ये जाय, ज्यारे 'शुभ लग्ने जन्म्या प्रभु' ए दुहो पूरो थाय त्यारे स्नात्रियो त्रण खमासमण देइ चैत्यवंदननी विधि प्रमाणे चैत्यवंदन करे ते जयवीयरायनो पाठ 'आनव मखंभा' सुधी कही हाथमां कळश लेइने उभो रहे ने विधि नणावनार

ज्यारे 'सौधर्मेन्द्रे पंच रूप करी' ए पद पूरुं बोली रहे त्यारे जळनो प्रभुने अभिषेक करे. पछी ते ढाळ पूरी थया पछी भगवानने सिंहासनमांथी बहार लइ चोखा पाणीथी न्हवण करावी अंगलूहणां त्रण करी चन्दन पूजा करे. पछी आरति मंगल दीवो करवो.

आ विधि सामान्य प्रकारे लखी छे. परंतु ज्यां नाम्फाढडी लखी छे त्यां उत्तम वस्त्रोनो उपयोग करे वा उत्तम उत्तम द्रव्यनो उपयोग शक्ति प्रमाणे करे तो ते उत्तम छे.

" अथ जैनाचार्य बुद्धिसागर सूरिकृत "

अथ स्नात्रपूजा प्रारंभ:

दुहा

सर्वातिशये शोभता, प्रभु महावीर जिनेश,
शासन नायक जगपति, प्रणमुं हुं विश्वेश. ॥ १ ॥
प्रभु स्नात्रनी भावना, करतां शान्ति थाय; रोग
शोक दूरे टले, स्नात्रपूजा महिमाय. ॥ २ ॥

कुसुमांजलि ढाळ.

ऋषभदेव पूजा

आठजाति कलशे न्हवरावे, इन्द्रो मनमां आनन्द पावे; प्रभु पूजा समकित प्रगटावे,प्रभु जाणी प्रभुने दिल लावे; कुसुमांजलिथी ऋषभ पूजीजे, ग्रही प्रभुगुण मन रीजी जे. ॥ १ ॥

(फूल चढाववुं.)

शान्ति जिनपूजा

दुहो.

क्षायिक नव लब्धि प्रभु, शान्तिनाथ जगदेव;
द्रव्यभावथी शान्तिने, पामो करीने सेव. ॥ १ ॥

ढाळ.

सहजानन्द स्वभावे शान्ति, केवल ज्ञानभी शोभे कान्ति; टाळे सर्व जीवोनी भ्रान्ति, आपे तन्मय थातां क्षान्ति; चोसठ इन्द्रो सारे सेवा, पूजुं प्रणमुं शान्ति देवा. ॥ २ ॥

(फूल चढाववुं. ४)

नेमिनाथ पूजा

दुहा

केवलज्ञानमां भासतुं, अणु सम विश्व सदाय,
ते नेमि प्रभु पूजीए, भाव ब्रह्म प्रगटाय. ॥ १ ॥

ढाल.

बाल्यथकी जे ब्रह्म व्रतधारी, अनन्त शक्तिमय अवतारी, केवलज्ञानथी जग हितकारी; मोह शत्रु हणी ए मोहारी, नेमि जिनेश्वरने पूजी जे, प्रभु स्वरूप थै प्रभु प्रणमीजे ॥ २ ॥

(फूल चढाववुं ३)

पार्श्वनाथ पूजा

दुहा.

पार्श्व प्रभु प्रणमुं सदा, त्रेविसमा जिनराय;
वन्दे पूजे भावथी, सिद्धे वांछित काज. ॥ १ ॥

ढाळ.

पार्श्वप्रभु जगमां जयकारी, परब्रह्म जगने सुखकारी; चोत्रिश अतिशयथी अवतारी, पांत्रिशवाणी

गुणना धारी पार्श्व, पूजीजे ध्याने रहीजे, आत्मिक गुण प्रगटावी लीजे ॥ २ ॥ कुसुमांजलिए पूजा कीजे, प्रभु स्वरूप थावा दील कीजे. ॥ २ ॥

(फूल चढाववुं. ४)

वीरप्रभु पूजा.

दुहा.

शासननायक जगधणी, परब्रह्म महावीर; सर्वदेवना देव जे, सर्वधीरमां धीर. ॥ १ ॥

ढाळ.

प्रभु महावीर देव समरीजे, आविर्भावे आतम कीजे; वीर बनी महावीरने भजीए, कायरता दुर्गुणने तजीए. प्रभुचरणे कुसुमांजलि धरीए, धीर वीरता वेगे वरीए; देहाध्यास तजी वीर थावुं, ते माटे वीर गावुं ध्यावुं. ॥ २ ॥

(फूल चढाववुं ५)

अथ सर्व जिनपूजा.

सकल जिनेश्वर प्रेमे पूजो, अशुभकर्मथी भवि जन धूजो; कुसुमांजलि जिन चरणे धरीए, सहज स्वभावे शिवपुर वरीए ॥ २ ॥ कुसुमांजलि पूजो सर्व जिनन्दा, तुज चरण कमल सेवे चोसठ इंदा.

(फूल चढाववुं. ६)

इति चोवीशजिन पूजा.

सर्वजिन पूजा.

ढाळ.

पन्नरक्षेत्रे अतीत कालमां, वर्तमानमां वर्त्तेजी, भाविकाले थाशे जे जिन; वीतराग गुण शर्तेजी, एकसो ने सित्तेर तीर्थंकर, उत्कृष्टा जे कालेजी. पूजुं वांदुं गावुं ध्यावुं, आतम जे अजवाले जो ॥ १ ॥ जन्मोत्सव कल्याणक उजवे, इन्द्रादिक बहुभावे जो; जन्मकाल तीर्थंकर सहुने, मेरुपर लइ जावेजी; सर्व जाति कलशा अभिषेके, प्रेमे प्रभु न्हवरावेजी. एवा अरिहंता त्रण कालना, पूजीजे एक भावेजी ॥ २ ॥

(फूल चढाववुं ७)

आतम भक्ति मल्या केइ देवा. ए राग

भीजे भवे तीर्थंकर कर्मने, बांध्यु वीरे भावे, द्रव्यभाव वरथानक तपथी, प्रशस्य रागना दावे, सर्व जीवोने धर्मी बनावुं, सर्व विश्व उद्धारुं, रहे न जगमां कोइ दुःखी, सर्व जीवोने तारुं. ॥ १ ॥ शुभ उत्कृष्टा हर्षोल्लासे, जिनवर नामने बांधे, अनन्त पुण्य ग्रहीने प्रभुजी, सकल जीव हित साधे, मानव आयुः पूर्ण करीने, दशमा स्वर्गमां जावे, पुष्पोत्तर वैमानिक सुरवर, स्वर्गतणां सुख पावे. ॥ २॥ त्यांथी चवीने दक्षिण भरते, क्षत्रिकुंडपुरमांहे, त्रिशला-राणी कुखमां आव्या, ज्ञातकुले उत्साहे, त्रिशला-माता स्वप्नो देखी, आनंद अतिशय पावे, भारतने उद्धरवा प्रगटया,प्रभुजी शक्ति प्रभावे ॥ ३ ॥ हाथी वृषभने केसरी सिंह, लक्ष्मी पुष्पनी माला, चन्द्र रवि ध्वज कलश मनोहर, सरोवर पूर्ण विशाला, सागर रत्ननी राशी अग्नि, निर्धूम चौद निहाळे, चौदे स्वप्ननो अर्थ सुणीने, आनंद जीवन गाळे,

॥ ४ ॥ सिद्धारथराजाना हूकमे, जोषीओ त्यां आव्या, पुर बाहिर सुरम्य सभामां, अर्थ विचारे फाव्या, ज्योतिषिओ भेगा थइने, बोले साची वाणी; तीर्थंकर वा चक्रवर्ती तुज, पुत्र थशे गुणखाणी. ॥५॥ राजा राणी अति हरखायां, ज्योतिषी संतोष्या; दानादिकथी धर्मि लोको, याचकने संतोष्या; भारतमां सहु घरघर लोको, जाणी आनन्द पाया, त्रिशलामाता गर्भने पोषे, धरे निरोगी काया. ॥ ६ ॥ चैत्र शुदि तेरशना दिवसे, मध्यरीत्र थइ जातां; सर्व दिशाओ उज्वलशान्ति, आनन्दवाळी सुहातां; नव महिनाने साडा सातज, दिवस उपर थातां; त्रिशलामाताए प्रभु जनम्या, त्रिलोके थइ शाता. ॥७॥ भारतदेशे घरघर मंगल, घरघर हर्ष वधाइ, सिद्धारथ राजा मन आनन्द, प्रगट्यो लोक न माय. ॥ ८ ॥ शुभ लग्ने जनम्या प्रभु, त्रणभुवन उद्योत; नारकी पण आनन्दीयां, जेनी अनंत ज्योत. ॥ ९ ॥

हवे चैत्यवन्दन करवुं तेनि विधि.

वीर आसने बेसी बे हाथ जोडी प्रभुजी सामी दृष्टि राखो 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवन्दन करुं' इच्छं एम कही 'सकळ कुशळवल्लि' कही जगचिन्तामणि कहेवुं. पछी जं किंचि नमथ्थुणं जावन्ति चेइआइं, जावन्त केविसाहु, नमोऽर्हत् कही उवसग्गहरं कहेवुं, पछी आभवमखंडा सुधी अर्धा जयवीयराय कहेवा. अहिं सुधि कही पछी ऊभा थइ स्नात्रीआए कलश हाथमां लइ प्रभुजीना डाबा अंग तरफ उभा रहेवुं पछी विधि करनार विधि भणे.

राग उपरनो.

छप्पन दिक्कुमरी तीहां आवे, प्रभु जन्मोत्सव हेते; प्रभु माताने प्रणमे प्रेमे, सूतिकर्म संकेते. आठे दिक्कुमरी वायुथी; कचरो करती दूरे, आठ कुमरी गंधोदकथी, सुगंध जलने पूरे ॥ १ ॥ आठ कुमारी कलशा धारे, दर्पण आठे धारे; आठ कुमारी चामर

वींजे, भाव भक्ति अनुसारे. आठ कुमारी पंखा करती, रक्षा करती चारे; चार दीपकने धारे प्रेमे, निज आतमने तारे. ॥ २ ॥ कदलीनां घर करी मनोहर, बाल प्रभुने लावे; पवित्र कर्मने करवा माटे, जल कलशे न्हवरावे; जलपुष्पे आभरणे पूजी, प्रभु शरीर शणगारे; प्रभुना करमां राखडी बांधी, (वधावी नाडाछडी मूकवी;) जय जय शब्दोच्चारे. ॥ ३ ॥ माता पासे प्रभुने मूकी, निज निज स्थानक जावे, इंद्रासन ते वखते कंपे, महा पुण्य सद्भावे; अवधि ज्ञाने इंद्रे जाण्यो, प्रभु जन्म सुखकारी; सुघोषा आदि घंटाओ, वगडावे जयकारी. ॥ ४ ॥ पालक नाम विमानमां बेसी, इन्द्र बहु परिवार; अन्य विमानने वाहन बेसी, निज ऋद्धि अनुसारे; अन्य सुरेने देवीओ आवे, प्रभुने देखी वंदे; प्रभु अने प्रभु मात वधावी, इंद्र वदे गुण छंदे. ॥ ५ ॥ (फूल तथा केसर वाळा चोखाथी वधाववा.) जय जय माता जगमां जय जय, जय जय शब्दो बोले; ह्हारो

पुत्र जगत्तीर्थंकर, को नहि तेना तोले; प्रतिबिंब मातानी पासे, मूकी प्रभु कर लीधा; पंचरूप इंद्रे निज कीधां, भावे कारज सिध्यां. ॥ ६ ॥ मेरु उपर पांडुक वनमां, शिला सिंहासन ठावे; सौधर्मेंद्रे खोळा मांहि, प्रभु धर्या शुभ भावे; चोसठ इन्द्रो, भाव धरीने, आव्या त्यां उल्लासे; निज निज शक्ति ऋद्धि भावे, इंद्रो पूर्ण विकासे. ॥ ७ ॥ अच्युतेंद्रे औषधि तीर्थनी, माटी जल मंगाव्यां; आठ जातिना कलश भरीने, इंद्रो ए न्हवराव्या; फूल चंगेरी थाळ रकेबी, उपकरणो बहु जाति; प्रभुनी भक्ति करतां विध विध, निर्मल करता छाति. ॥ ८ ॥ भुवनपति ने व्यंतर ज्योतिष, वैमानिक बहु देवा; अच्युतपतिनी आज्ञा पामी, करता बहुविध सेवा; एक क्रोड ने साठ लाख सहु, कलशानो अभिषेक; अढीसे अभिषेक सहु मळी, सुर नहि चूके विवेक ॥ ९ ॥ (थोडो जळ अभिषेक करवो) इशान इन्द्रे करमां लीधा, प्रभुनी भक्ति कीधी; सौधर्मेन्द्र पंचरूप करी, भक्ति करी प्रसिद्धि; (संपूर्ण

जळनो अभिषेक करवो.) पुष्पादिकथी प्रभु वधाव्या, आनंदना कल्लोले; मंगलदीवो आरति करीने, सुरवर जय जय बोले ॥ १० ॥ अनेक वाजिंत्रोने वजावे, अनेक नाचो नाचे; प्रभुनो जन्मोत्सव करीने, सर्व सुरासुर राचे; करमां धारण करीने प्रभुने, त्रिशला माता पासे; इन्द्रादिक आवीने बोले, पूरण हर्षोल्लासे ॥११॥ पुत्र तमारो प्रभु अमारो, सर्व विश्व आधार; तुज कुखे प्रभु जन्म्या माटे, विश्व मात निर्धार; पंच धात्र सोंपी प्रभु क्रीडा,–करवा माटे वेश; बत्रीश कोटि रत्नादिकनी, वृष्टि करे हरे क्लेश. ॥१२॥ (फूल केशरवाळा चोखा, नाणाछडी विगरे प्रभु सन्मुख उछाळवुं.) इंद्रादिक प्रभु वांदि पूजी, नन्दीश्वरमां जावे; अष्टान्हिका महोत्सव करीने, आनंद मंगल पावे; निज निज कल्प सधावे सुरवर, दीक्षोत्सव अभिलाषे; केवलज्ञान महोत्सव इच्छा, राखी हर्ष विकासे. ॥१३॥ प्रभु जन्मोत्सव भारत देशे, जक्ते कीधो जावे; घर घर आनंद मंगल वर्तो, स्नात्र महोत्सव दावे;

सकल संघमां शांति वर्तो, इति उपद्रव शामो; स्नात्र
महोत्सव सुणनाराने,–गानारा सुख पामो; ॥ १४ ॥
परब्रह्म महावीर प्रतापे, रोग टळो सहु जाति; दुष्ट
देवना टळो उपद्रव, व्हेम टळो बहु भाति; गाम
नगर पुर देशमां शांति, वर्तो प्रभु प्रतापे; आधि
व्याधि संकट टळतां, प्रभु महावीर जापे. ॥ १५ ॥
सर्व जगत्मां शान्ति वर्तो, धर्मी बनो नरनारी, दोषो
क्षय पामो भक्तिथी, जनो बनो उपकारी; झघडा
युद्धो उपशम थाओ, वृष्टि थशो मनमानी; पुण्य कर्म
वधशो जगमांहि, वधशो शक्ति मझानी. ॥ १६ ॥
तप गच्छ हीर विजयसूरी जगगुरु, पट्ट परंपरधारी;
पूज्य गुरु रविसागर प्रगटया, सर्वोपम जयकारी;
शान्तिदायक सुखसागर गुरु, घर घर मंगलकारी;
बुद्धिसागर सूरि आशीः, शान्ति लहो नरनारी ॥१७॥

फूल तथा केशरवाळा चोखाथी प्रभुने वधाववा.

पछी सिंहासनमांथी प्रभुजी तथा सिद्धचक्रजीने
लइ चोखा पाणीथी पखाळ करी त्रण अंगलुहणां

करी केशर (चंदन)थी पूजा करी फूल चढाववां अने सिंहासन मध्येनी रकेबीमांथी पाणी काढी नांखी धोइ साफ करी फरी केशरना स्वस्तिक करी पधरावबा. आरती मंगळदीवो प्रगटी बंनेने नाडाछडी बांधी एक रकेबीमां मूकी कंकुना छांटा नाखी चोखाथी वधाववा, रकेबीमां सोपारी तथा एक पैसो मूकी रकेबी वच्चे राखी स्नात्रियाने सन्मुख बेसाडवो. रकेबीनी एक बाजु सात माटीनी कांकरी तथा सात मीठानी कांकरी लइ एक मीठानी कांकरी अने एक माटीनी कांकरी ए रीते दरेक ढगलीमां मूकी सात ढगलीओ करवी. पछी बीजी तरफ जळनी कुंडी राखवी. स्नात्रियाने उभा पगे बेसाडी डाबा हाथ उपर जमणो हाथ रखावी विधि जणावनार माणस स्नात्रियाना हाथमां दरेक वखते एक मीठानी अने एक माटीनी कांकरी आपी ते साथे हथेलीमां चोखा पाणीना कलशमांथी थोडुं पाणी आपे अने आरती मंगळ दीवानी रकेबी फरतुं लूण उतरावे. तेनी विगत.

लुण उतारो जिनवर अंगे, निर्मल जलधारा मनरंगे. ॥ लुण ॥ १ ॥ जिम जिम तडतड लुण ज फूटे, तिमतिम अशुभ कर्म बंध त्रुटे. ॥ लुण ॥ २ ॥ नयन सलुणां श्री जिनजीनां, अनुपमरूप दयारस भीनां. ॥ लुण ॥ ३ ॥ रूप सलुणुं जिनजीनुं दीसे, लाज्युं लुण ते जलमां पेसे. ॥ लुण ॥ ४ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ जलधारा, जल निखेवीए लुण उदारा ॥ लुण ५ ॥ जे जिन उपर दूमणो प्राणी, ते एम थाजो लुण ज्युं पाणी. ॥ लुण ॥ ६ ॥ अगर कृष्णागरु कुंदरु सुगंधे, धूप करीजे विविध प्रबंधे. ॥ लुण ॥ ७ ॥ एम सात वखत लूण उतारवुं पछी आरती उतारवी.

आरती.

जय जय वीर जिनेश्वर देवा, सुर नर इन्द्र लहे सेवमेवा; बार गुणे गुणवंता प्यारा, त्रण भुवनना छो आधारा. जय जय. ॥१॥ चोत्रीश अतिशय गुणगणधारी, पांत्रीश वाणी गुणे जयकारी. जय जय. ॥२॥

त्रिशलानंदन शिव सुखकारी, सिद्धारथ कुल शोभा-
कारी. जय जय. ॥३॥ द्रव्य भावथी आरति करीये,
मंगल माला सहेजे वरीये. जय जय. ॥४॥ बुद्धिसागर
प्रभु गुण लेवा, संघ चतुर्विध करे नित्य सेवा. जय. ॥५॥

पछी प्रभुजी न देखे तेवो रीते पडदो जइने
अगर प्रभुजीना अने स्नात्रीया वच्चे अंतर पडदो
राखी स्नात्र याना जमणा अंगुठा उपर कंकुनो चां-
दलो करावबो. पछी मंगळदीवो उतारवो. मंगळदीवो
उतारतां कपुर लावेला होय ते सळगावी रकेबीमां
मूकी मंगळदीवो उतारवो.

मंगळ दीवो.

मंगलदीवो मंगलकारी, करीये जिन आगळ
जयकारी, अरिहंत मंगल पहेलुं जाणो. बीजुं सिद्ध
मंगल मन आणो. ॥१॥ साधु मंगल त्रीजुं लहीए,
सद्गुण पामी शिवपुर वहीए. ॥मं० ॥२॥ धर्म मंगल
चोथुं सुखकारी, चार मंगलनी छे बलिहारी. ॥ मं०

॥३॥ भाव मंगल हेते चित्त धारी, मंगलदीप करे नर-नारी. ॥ मं० ॥ ४ ॥ बुद्धिसागर आनंदकारी, संघ चतु-र्विध शोभाकारी. ॥ मं० ॥ ५ ॥

इति स्नात्रपूजा समाप्त.

अथ नवपद पूजा प्रारंभः

॥ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

नमुं स्तवुं अरिहंतने, गेय ध्येय अरिहंत. प्राप्य प्रभु पद एह छे, जेना रागी संत. ॥१॥ विश स्थानमां कोइ पण, एकाराधन योग; तीर्थंकर पद संपजे, अनंत पुण्यनो भोग. ॥२॥ त्रीजे भव आराधना, अरिहंत आदि थाय; शुभ उंचा परीणामथी, अर्हत् पद बंधाय. ॥३॥ सर्व जीवो उद्धारवा, धर्मी करवा काज; उत्कृष्टा परिणामथी, बांधे पद जिनराज. ॥४॥ तीर्थंकर परमातमा, त्रण कालना जेह अरिहंत ते सर्व छे, घाती हणयाथी एह. ॥५॥

श्री अरिहंत पद गाइए, ध्याइजे सुखकाररे; अरिहंत जेवा थाइए, दोष रहे न लगाररे. श्री अरिहंत० ॥१॥ नमण ठवण द्रव्य भावथी, अरिहंत गातां ध्यातांरे; आतम अरिहंत पद वरे, कर्म सकल दूर जातांरे. श्री अरिहंत० ॥ २ ॥ वीश स्थानकने सेवतां. द्रव्य भावथी भावरे; तीर्थंकर कर्म वंध ए, पूर्व त्रीजा भव थावेरे. श्री अरिहंत० ॥ ३ ॥ वीश स्थानमय आतमा, भावथी हर्षोल्लासेरे; उज्ज्वल शुभ परिणामथी, अर्हत् पदवी प्रकाशेरे. श्री अरिहंत० ॥ ४ ॥ अरिहंत नामना जापथी, स्थापनामां प्रभु ध्यावेरे, द्रव्य भाव बे भेदथी, आतम जिनवर थावेरे. श्री अरिहंत० ॥ ५ ॥ तीर्थंकर नाम कर्मने, आतम ज्यारथी बांधेरे, द्रव्य तीर्थंकर त्यारथी, क्षीण मोही गुण साधेरे. श्री अरिहंत० ॥६॥ जन्मथकी त्रण ज्ञान छे, मति श्रुत अवधि प्रमाणोरे; चोथुं दीक्षा ग्रहे थके, मन पर्यव दिल जाणोरे. श्री अरिहंत० ॥ ७ ॥ गुण स्थानक चोथा थकी, बारमा

पर्यंत जाणोरे; द्रव्यथी तीर्थंकरपणुं, आलंबन शुभ आणोरे. श्री अरिहंत० ॥ ८ ॥ उपशम क्षयोपशम अने, क्षायिक समकित भावेरे; चरणमां क्षयोपशम पणुं, द्रव्य तीर्थंकर दावेरे. श्री अरिहंत० ॥ ९ ॥ भावथी तीर्थंकर प्रभु, समवसरणमां सोहेरे; क्षायिक नवलब्धि धणी, भव्योनां मन मोहेरे. श्री अरिहंत० ॥ १० ॥ अंतर क्षायिक भाव छे, औदयिक कर्मे प्रवर्तेरे; आत्मपणुं परीणामथी, आराधीए शुभ रीतेरे. श्री अरिहंत० ॥ ११ ॥ प्रारब्ध कर्म अघातियां, तीर्थंकर भोगवतारे, जीवन्मुक्त जिनेश्वरा, ध्यातां कर्मो टळतांरे. श्री अरिहंत० ॥ १२ ॥ बार गुणे प्रभु शोभता, विश्वोद्धारक देवारे, असंख्य देवोने देवीओ, करती प्रभुनी सेवारे. श्री अरिहंत० ॥ १३ ॥ निश्चय अरिहंत आतमा, राग द्वेषने हणतांरे; क्षयोपशम उपशम क्षये, शुद्धातम पद वरतांरे; वीर जिनेश्वर उपदिशे, आतम अरिहंत देवारे; बाहिरमां मुंझो नहीं, निज निजनी दिलसेवारे. वीर०

॥ १४ ॥ निश्चय समकित चरणथी, आपो आप प्रकाशेरे. असंख्य योगनो जेपति, आतम ज्योते विलासेरे. वीर० ॥१५॥ शुद्ध ब्रह्म निजातमा, असंख्य प्रदेशी पोतेरे; सेवा भक्ति ज्ञानथी, प्रगटे अनंती ज्योतेरे. वीर० ॥ १६ ॥ आतम ते अरिहंत छे, प्रेमे गावो ध्यावोरे; बुद्धिसागर आतमा, अनंत आतम पावोरे. वीर० ॥ १७ ॥

अर्हत्पदं नौमि गुणैर्युतं च ।
स्वाभाविकं शुद्ध मनन्तरूपम् ॥
पूज्यंपरब्रह्म जिनेश्वरं च ।
द्रव्येणभावेनचपूजयामि. ॥ १ ॥

ॐ अर्हंपरमेश्वराय सर्व देवाधिदेव पूजितायच श्रीमते जिनेन्द्राय जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं अक्षतं, तण्डुलं, नैवेद्यं, फलं, च यजामहे स्वाहा ॥

॥ इति अर्हत्पूजा समाप्ता ॥

द्वितीया सिद्धपूजा.

अरिहंत उपदेशथी जेह जाण्या, नमुं सिद्ध ते *शुद्धरूपे प्रमाण्या; अतःआदिमां पूज्य अरिहंत देवा, पछीथी करुं सिद्धनी शुद्ध सेवा.* ॥ १ ॥ अनंता थया सिद्ध थाशे अनंता, परब्रह्म ज्योति स्वरूपी भदंता, परिपूर्णज्ञाने थया जेह सिद्धा; अयोगी अजोगी अवेदी प्रबुद्धा. ॥ २ ॥

त्रीजे भव वरथानकतपकरी. ए राग.

कर्मातीत निरंजन निर्मल, निःसंगी निष्कामी; सापेक्षाए रूपी अरूपी, वर्ते आतमरामीरे. भविका सिद्ध प्रभु आराधो, आतम शुद्धि साधोरे. भविका, सिद्ध० ॥ १ ॥ एक समयमां सर्व द्रव्यना, गुण पर्यायने जाणे; देखे आनंद भोगे वर्ते, वर्ते आत्मिक प्राणेरे. भविका. सिद्ध० ॥ २ ॥ द्रव्यथी सिद्धो शोभे अनंता,सिद्ध क्षेत्रे प्रसिद्धा;एकसिद्धने आश्रयीआदि, अनंत गुण समृद्धोरे. भविका. सिद्ध० ॥ ३ ॥ अंतर रहितने अजर अमरजे, नहीं मन वाणी काया;

संसारी जीवोना जेओ, अनंत भागे सुखायारे. भविका. सिद्ध० ॥ ४ ॥ क्षायिक भावे सिद्ध थया जे, पुद्गल संगथी न्यारा; परिणामिक भावे जीवनता, जेहने नहीं आकारारे. भविका. सिद्ध० ॥ ५ ॥ वर्ण गंध रस स्पर्श रहित जे, आप स्वरूपे रुपी; पुद्गल रूपे जेह अरूपी, वर्ते रूपारूपीरे. भविका. सिद्ध० ॥६॥ आठे कर्मनो नाश करीने, आठ गुणे जे शोभे; व्यतिरेकी एकत्रिंश गुणी जे, भविजननां मन थोभेरे. भविका. सिद्ध० ॥ ७ ॥ अनंत गुण पर्याये जेओ, आविर्भावे सुहावे; प्रणमु गावुं ध्यावुं सिद्धो, मोह टळे सुख थावेरे. भविका. सिद्ध० ॥ ८ ॥ अनंत सिद्धनी ज्योतिमांही, अनंत सिद्धो ज्योते; त्रण कालमां नित्य छे जेओ, जीवे भावोद्योतेरे. भविका, सिद्ध० ॥ ९ ॥ सिद्ध स्वरूपी आतम भावी, सिद्धानंदने पामे; एक समयमां ऊर्ध्वगतिथी, सिद्ध स्थानमां जामेरे. भविका. सिद्ध० ॥ १० ॥ आत्मिक शुद्ध समाधि प्रकटे, मुक्तिनुं सुख प्रगटे; निर्विकल्प समाधि ज्ञाने, सर्वावरणो विघटेरे. भविका. सिद्ध० ॥ ११

नाम स्थापना द्रव्यने भावथी, सिद्धो वंदो ध्यावो; आपोआप स्वरूपे सिद्धो, परमानंदने पावोरे. भविका. सिद्ध० ॥ १२ ॥

वीर जिनेश्वर उपदिशे. ए राग.

प्रभु महावीर उपदिशे, त्रण भुवननो राणोरे; अनंत गुण पर्यायी छे, आतम प्रभु घट मानोरे. प्रभु० ॥ १३ ॥ निज आतम ते सिद्ध छे, जीव छे ते शिव जाणोरे; शुद्धोपयोगे आतमा, परब्रह्म प्रमाणोरे. प्रभु० ॥ १४ ॥ आरोपितपुद्गल दशा, तेथी आतम न्यारोरे; शुद्धातम उपयोगथी, सिद्ध स्वयं आधारोरे. प्रभु० ॥ १५ ॥ अनंत ज्ञानानन्दनो, आविर्भाव स्वभावेरे; बुद्धिसागर आतम, परमेश्वर निजभावेरे. प्रभु० ॥ १६ ॥

विरहितानपि कर्मभिरष्टभिः सहजसिद्ध गुणाष्टक धारिणः । समयदेशपदान्तरमस्पृशः, सकल सिद्धि गतान्परिपूजये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०

तृतीया आचार्यपद पूजा.

छत्रीशी छत्रीशी गुण वरू, सूरिपद सुखकार; गातां पूजतां ध्यावतां, सूरिपणुं निर्धार. ॥ १ ॥ द्रव्य क्षेत्रने कालथी, भावथी सूरि महंत; तीर्थेश्वर पाछळ प्रभु, राजा शोभे संत. ॥ २ ॥ जिन शासन साम्राज्यमां, संघ चतुर्विध भूप; वर्तमानमां संघना, प्रभु जे धर्म स्वरूप. ॥ ३ ॥

धन्य धन्य संप्रति साचो राजा. ए राग.

प्रेमे प्रणमुं श्री सूरीश्वर, जैनधर्मना धोरीरे; चार प्रकारे संघोन्नतिनी, जेना हाथमां दोरीरे. प्रेमे. ॥ १ ॥ सूरि मंत्रनो जाप करेने, धर्माचार प्रचारेरे; पंचाचारने पाळे पळावे, संघनुं श्रेय विचारेरे, प्रेमे. ॥ २ ॥ द्रव्यादिक अनुसारे वर्ते, संघने जे वर्तावेरे; बत्रीश उपमा जेने छाजे, धर्मने रक्षे भावेरे. प्रेमे. ॥ ३ ॥ गौणने मुख्यपणे सहु आशय, सर्व धर्म समजावेरे; सर्वनयोनी सापेक्षाए, स्वाधिकार जणावेरे प्रेमे० ॥ ४ ॥ द्रव्यभावथी सर्व संघनी, प्रगतिने

उपदेशेरे; कार्यो करता निर्लेपी थै, रहे न मनमां क्लेशेरे, प्रेमे० ॥ ५ ॥ त्यागी गृहस्थी बन्ने संघने, उत्सर्गने अपवादेरे; धर्माचार विचार जणावे, आत्मिक सुखने आस्वादेरे. प्रेमे० ॥ ६ ॥ तीर्थपति समसंप्रतिकाले, धर्म करावे बोधेरे; तीर्थंकरसम आज्ञाकारक, संघने रहे अक्रोधेरे. प्रेमे० ॥ ७ ॥ द्रव्यने भावथी संघ जीवनने, शासन उन्नति काजेरे, जे काले जे क्षेत्रे करवुं, आज्ञा करी जग गाजेरे, प्रेमे० ॥ ८ ॥ प्रतिरूपादिक चौद गुणोना, धारक योगी ज्ञानीरे; क्षमा प्रमुख दश धर्मना धारक, समभावोने ध्यानीरे. प्रेमे० ॥ ९ ॥ बार भावना चार भावना, भावे विकथा वारीरे; चार अनुयोगने वर्तावे, सर्व प्रमादने वारीरे. प्रेमे० ॥ १० ॥ करवुं करावबुंने अनुमोदवुं, जे जे योग्य ते करतारे; गाडरीया प्रवाह न चाले, स्वतंत्रता दिल धरतारे. प्रेमे० ॥ ११ ॥ सूत्रो शास्त्रो ग्रन्थो आदि, परंपरा सहु जाणेरे; अनुभवथी एक निश्चयधारी, संघनुं

ऐक्य जे मानेरे. प्रेम० ॥ १२ ॥ निश्चयने व्यवहारे वर्ते, संघना ऐक्यने साधेरे; एवा आचारोने विचारो, आपी गुणोथी वाधेरे, प्रेम० ॥ १३ ॥ सारण वारण चोयणने जे, पडिच्चोयण गुणधारीरे; जे श्रुत केवली स्वपर समयना, ज्ञाता गुणगण धारीरे. प्रेम० ॥१४॥ तीर्थंकर सम सूरि करे ते, क्षेत्रने कल्पानुसारेरे; धर्माचारमां जेह सुधारो, करता स्वाधिकारेरे, प्रेम० ॥ १५ ॥ पडया पडंता क्षुद्र प्रभेदो, टाळे उदार विचारेरे; बाह्यराज्यसम धर्मराज्यना, उन्नति हेतु धारेरे, प्रेम० ॥ १६ ॥ चार निक्षेपे सूरिवर पूजो, वंदो गावो ध्यावोरे, बुद्धिसागर परम प्रभुता, परमानंदने पावोरे, प्रेम० ॥ १७ ॥

आतम ते आचार्य छे, उपादान स्वभावेरे, क्षयोपशमने उपशमे, क्षायिक गुणगणदावेरे. आतम० ॥ १८ ॥ पूजो वंदो भावथी, गावोने मन ध्यावोरे, आतमस्वभावे सहजथी, शुद्धोपयोगे सुहावोरे, आतम० ॥ १९ ॥ आतमना

एकतानथी, सर्व शक्तियो उल्लसेरे, बुद्धिसागर आतमा, सूरिपद गुणथी विकसेरे. आतम० ॥२०॥

स्वपरशास्त्ररहस्यनिवेदिनः चरितपञ्चविधाचरणानपि, जिनसुधर्मधुरीणतया स्थितान्, सकल सूरिवरान्परिपूजये ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० स्वाहा.

चोथी उपाध्याय पद पूजा.

पंचविंशति सद्गुणे, उपाध्याय भगवंत, भणे भणावे शास्त्रने, पूजो वंदो संत० ॥ १ ॥ गुणो अने आचारथी, आत्म शुद्धि करनार, उपाध्याय जगमां जयो, युवराजा जयकार० ॥२॥ उपाध्यायनी भक्तिथी, प्रगटे दर्शनज्ञान, वाचंयम पाठक नमो, पूजो धरी एक तान० ॥ ३ ॥

सिद्धचक्रनी सेवा कीजे. ए राग.

उपाध्यायनी सेवा कीजे, विद्यमान सुखकारीजी, विद्यमान पाठकनी भक्ति, करतां तरे नरनारी, भवि-जन सेवोजी, त्यागी सर्व प्रमाद, ल्हावो लेवोजी० ॥ १ ॥ अंग उपागना पाठकज्ञानी, भणे भणावे

भावेजी, जैनधर्म फेलावे जगमां, पुण्ये दर्शन थावे. भवि० ॥ २ ॥ ज्ञानावरणी आदि कर्मो, अनंत क्षय झट थातांजी. पाठक प्रभुना वैयावच्चथी, आत्मस्वभावे सुहातां. भवि० ॥ ३ ॥ वर्तमानमां तरतमयोगे, वर्ते पाठक जेवाजी, गुणनी दृष्टि धारी घटमां, करीए भाव सेवा. भवि० ॥ ४ ॥ विनयने बहुमानथी सेवा, चार निक्षेपे करीएजी, जीवंता वाचंयम सेवो, समकित चारित्र वरीए. भवि० ॥५॥ निश्चयथी निश्चयमां वर्ते, व्यवहारे व्यवहरताजी; उत्सर्गने अपवाद विचारी, क्षेत्रकाळ अनुसरता. भवि०॥३॥पंच समिति त्रण गुप्ति धारे, जैन धर्म विस्तारेजी; निज निज अधिकारे सहु वर्णने, राखे स्थिर आचारे. भवि० ॥७॥ सर्व संघनी द्रव्यभावथी–चढती हेतु प्ररुपेजी; कर्म करे सहु अक्रिय थैने, निष्कामी निज रूपे. भवि० ॥ ८ ॥ शासन सेवा संघनी सेवा, करता अर्पाइ जाताजी; वेष क्रिया क्षुल्लक मत भेदे, संघभेदे न रहाता. भवि० ॥ ९ ॥ भव्य जीवोनी द्रव्य भावथी, आतम शुद्धि करताजी; ज्ञानक्रिया

भक्तिने समाधि, अनेक योगने धरता. जवि० ॥१०॥
सूरिजी राजाने मंत्री, पाठक संघना हेतेजी, पूजी
वंदी स्तवीने ध्याइ, रहीए शिव संकेते. भवि० ॥११॥
तरतम योगे द्रव्यजावयुत. उपाध्यायने जजीएजी;
पंचमकालने क्षेत्रानुसारे, वर्तताने यजीए. भवि०॥१२॥

निज आतम निश्चय प्रभु, पाठक जाणी ध्यावोरे;
उपाध्याय ते आतमा, अंतरमां लय लावोरे. निज०
॥ १३ ॥ अनंत गुणी आतमप्रभु, अनंतपर्यवी पोतेरे,
धारणा ध्यान समाधिथी, वर्तें आनंद ज्योतेरे. निज०
॥ १४ ॥ शुद्धातम उपयोगथी, सहजे आत्मस्वभा-
वेरे, सर्व करे निर्वंध जे, मोहनी वृत्ति हठावेरे. निज०
॥१५॥ अशक्य कांइ न आत्मने, अनंत शक्ति स्फुरा-
वोरे, बुद्धिसागर आतमा, श्रद्धा भक्तिथी जावोरे, नि०१६

जडिमधौर्यविनेयगणेषु ये ।
प्रथितबुद्धिबलाश्च गतस्मयाः ॥
श्रुतसुपाठसुधारसवाहिनः ।
प्रतिदिनं प्रणमामि सुपाठकान् ॥

पंचम साधुपद पूजा.

दोहरा.

अप्रतिबद्ध जे विश्वमां, कर्म योगी निष्काम; साधे आतम साधना, रमता आतमराम. ॥ १ ॥ मुनि तपसी अनगारी जे, साधु संयत नाम; यति ऋषि त्यागी श्रमण, आर्य भिक्षुक गुणधाम. ॥ २॥ आश्रव त्यागी महंत जे, अनेक जेनां नाम; वंदो पूजो प्रेमथी, संत प्रभु विश्राम. ॥ ३ ॥

॥ ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने ए राग ॥

प्रीतलडीने सांधो साधु साथमां, साधु संगते प्रभुनां दर्शन थाय जो, पंचम आरे दुर्लभ साधु संगति, मुनि भजंतां जन्म जरा दुःख जाय जो, प्रीतलडी० ॥ १ ॥ साधु संगतथी समकित प्रगटे खरु, ज्ञान अने चारित्र भलु प्रगटायजो, संतनो संगे रहीए श्रद्धा प्रेमथी, एक पलकमां धार्युं निश्चय थाय जो. प्रीतलडी० ॥ २ ॥ पंचम आरे मुनिनी श्रद्धा प्रीतडी, करतां आतम परमातम झट थाय

जो, संस्कारी भव्योने व्यक्ति सांपडे, गुण रागे सवळी बुद्धि प्रगटाय जो, प्रीतलडी० ॥ ३ ॥ यम नियमने आसन प्राणायामथी, प्रत्याहारने धारणा ध्यानथी जहजो, आत्म समाधि योगे घटमां वर्तता, निष्कामीने सम छे वनने गेहजो, प्रीतलडी० ॥ ४ ॥ धीरे धीरे मनने साधे साधुजी, सद्गुण साधे करता दुर्गुण त्यागजो, आसक्ति वण आचारोमां वर्तता, मुनिपर धारो स्वार्पण करीने रागजो, प्रीतलडी० ॥ ५ ॥ आत्मशुद्धि हेते सापेक्षे साधना, गौणने मुख्यपणे जाणे जे योगजो, उत्सर्गेने जे अपवादे वर्तता, निर्लेपी थै भोगवे सुख दुःख भोगजो, प्रीतलडी० ॥६॥ आपत्काले आपद् धर्में वर्तता, बाह्य संगमां जे दिलमां निःसंगजो, ध्येयपणे निज दिलमां प्रभु प्रगटावता, प्रगटे मुनिनी संगे आतम रंगजो; प्रीतलडी० ॥ ७ ॥ अंतर बाह्यनी ग्रन्थिमां ममता नहीं, गुरु आज्ञाए सर्वे कर्ता कर्मजो. निर्भय खेद-रहित अद्वेषी साधुजी, समताभावे अनुभवे शिव

शर्मजो. प्रीतलडी ॥८॥ समभावे मुक्ति छे सहु दर्शन विषे, क्रिया पंथ मत बाह्यथकी पण होयजो, तो पण मुनिभावे निश्चय समकितवडे, समभावीने नडे न बाह्यनुं कोयजो. प्रीतलडी० ॥ ९ ॥ गच्छनी निश्राए स्थविरो वर्ते सदा, गच्छोमां समभावे मुक्ति होयजो, सापेक्षाए हठ कदाग्रह त्यागीने, मुख्यपणे आतम उपयोगी जोयजो. प्रीतलडी० ॥ १० ॥ जे काले जे क्षेत्रे जे करवुं घटे, स्वपर जीवोना धर्म हितार्थे जेहजो, तेह करावे करे अने अनुमोदता, अल्पदोषने धर्म घणो करे तेहजो, प्रीतलडी० ॥११॥ सूरि गुरुनी आज्ञाए वर्ते मुनि, थता कषायो रोधे साधे धर्मजो; आत्मराज्यनी स्वतंत्रता जे साधता, करे कर्म पण उपयोगे जे अकर्मजो. प्री. ॥ १२ ॥ पूर्णानंदी आतम ज्ञाने अनुभवे, साधक बाधक कृत्याकृत्य विवेकजो; जैनधर्म उपदेशे भक्तोने भलो, रहे समाधि एवी धारे टेकजो. प्री. ॥ १३ ॥ पूजो वंदो गावो मुनिपदने भक्तुं, निश्चयदृष्टिने धारी

व्यवहारजो; बुद्धिसागर मुनि सेवाभक्तिबळे, क्षणमां प्रभुपद पामे नरने नारजो. प्री. ॥ १४ ॥

साधु ते निज आतमा; शुद्धातम उपयोगेरे; शुं मुंड शुं लोचथी, त्यागे शुं बाह्यजोगेरे. साधु. ॥ १४ ॥ शुद्धातमरमणी मुनि, मोहनी वृत्ति रोकेरे; हर्षे नहि जे बाह्यमां, रहे न बाह्यमां शोकेरे. साधु० ॥ १६ ॥ समभावी भव मुक्तिमां, सहजानंदना भोगीरे; रागने त्यागथी भिन्न जे, आतम देखे योगीरे. साधु० ॥ १८ ॥ निःसंगी निष्कामी जे, घटमां सिद्धि प्रकाशेरे; आनंदथी उभराइने, प्रसन्नताए विकासेरे. साधु० ॥ १९ ॥ आशा तृष्णा कामना, तेथी गणे निज न्यारोरे; बुद्धिसागर आतमा, सिद्ध बुद्ध निर्धारोरे. साधु० ॥ २० ॥

स्वपर कार्य सुसाधनतत्परान् ।
शिवभवस्थितिसाम्यसमन्वितान् ॥
विदितपञ्चमहाव्रतधारिणः ।
प्रणिदध प्रति साधु मतल्लिकान्
ॐ श्री परम.

षष्ठी दर्शनपद पूजा.

शुद्धातम दर्शन थतुं, निश्चय दर्शन तेह; देव गुरुने धर्मनी, श्रद्धा दर्शन एह. ॥ १ ॥ दर्शन छे व्यवहारथी, निश्चयथी सुखकार; सम्सठ बोले अलंकर्युं, धारो नरने नार. ॥ ३ ॥ दर्शन पाम्यो आतमा, निश्चय मुक्ति जाय; जडचेतन सम्यक्पणे, जाणी नहि मुंझाय. ॥ ४ ॥

ए गुण वीरतणो न विसारु. ए राग.

सम्यग् दर्शन जग जयकारी, सर्व जीव हित-कारीरे; प्रभु महावीर जिन उपदेशे, पामो नरने नारीरे. सम्यग्० ॥ १ ॥ द्रव्यभाव बे भेदे दर्शन, निश्चयने व्यवहाररे; देव गुरुने धर्मनी श्रद्धा, भेदे त्रण्य प्रकाररे. सम्यग्० ॥ २ ॥ आतम ते निश्चयथी देवज, आतम ते गुरु जाणोरे; आतममांही सत्य धर्म छे, निश्चय दर्शन मानोरे. सम्यग्० ॥ ३ मुनिभावे छे निश्चय समकित, रत्नत्रयी अभेदेरे; सापेक्षाए जाणी पामो, रहो न आतम खेदेरे. सम्य-

गु० ॥ ४ ॥ मुनिभावे समकितपणुं छे, आचारांगे भाख्युंरे; उत्कृष्ट क्षणमां छे मुक्ति, एवुं प्रभुए दाख्युंरे. सम्यग्० ॥ ५ ॥ दर्शनथी ज्ञान चारित्र प्रगटे, तेथी मुक्ति नक्कीरे; माटे दर्शन पामो भव्यो, राखो श्रद्धा पक्कीरे. सम्यग्० ॥ ६ ॥ गुरुने सेवे दर्शन प्रगटे, जिनवाणी सांभळतांरे; साधुसंत गुरु सेवा करतां, दर्शन कारण फळतांरे; सम्यग्० ॥ ७ ॥ श्रद्धा प्रीतिथी गुरु सेवे, जिन प्रतिमा अवलंबेरे, समकित दर्शन पामे भक्तो, पडे न मिथ्या अचंबेरे. सम्यग्० ॥ ८ ॥ आतमथी मिथ्यात्व टळे तेम, श्रद्धा साची प्रगटेरे; आत्मानुभव थातां पूर्वे, मिथ्या मोहनी विघटेरे. सम्यग्० ॥ ९ ॥ सर्व संघनी सेवा भक्ति, करतां हर्षोल्लासेरे; आतम समकित पामे निश्चय, आविर्भावे विकासेरे सम्यग्० ॥ १० ॥ सम्यग् दर्शनीनो संग करशो, समकितीनी करो भक्तिरे; बुद्धिसागर आतम सम्यग्, दर्शन प्रगटे शक्तिरे. सम्यग्० ॥ ११ ॥

सांजळशो मुनि संयमरागे, ए राग.

निश्चयथी दर्शन ते आतम, उपशमने क्षयोपशमेरे; क्षायिक दर्शनरूपी आतम, पडो न मिथ्या जमेरे. नि० ॥ १२ ॥ आत्मप्रतीति अनुभव आवे, जलपंकजवत् न्यारोरे; निर्लेपी आतम गुण खेले, आनंद अपरंपारोरे. नि० ॥ १३ ॥ निकाचित जे कर्मना जोगो, त्यां नहीं शोकने प्रीतिरे; निर्जरते कर्मोने जोगे, आतम सुख प्रतीतिरे. नि० ॥ १४ ॥ पंचवार उपशम घट प्रगटे, क्षायोपशमी असंख्यरे; एकवार क्षायिक समकितनी, प्राप्ति थतां निःशंकरे; नि० ॥ १५ ॥ चार निक्षेपे सात नयोथी, सम्यगदर्शन समजोरे; बुद्धिसागर आत्मस्वभावे; श्रद्धा प्रेमे रमजोरे; नि० ॥ १६ ॥

सकृदपि प्रतिपत्तिरह्हो नृणां ।
भवति यस्य भवस्थिति मापिका ॥
शिवसुखं प्रतिकन्दलतां दधत् ।
नमत तद्गुरु दर्शनमादरात् ॥
ॐ ह्रीं श्रीं परम.

सप्तमी ज्ञानपद पूजा.

ज्ञान ते आत्मस्वरूप छे, चेतन गुण छे ज्ञान; ज्ञान विना नहीं मुक्तिछे, वीर कहे भगवान्. ॥१॥ ज्ञानथी आनंद उपजे, ज्ञानथी विश्व प्रकाश; ज्ञान विना जगजीवडा, पग पग दुःखी दास. ॥२॥ ज्ञानीने पूजो भवी, सेवो नरने नार; ज्ञानावरणना नाशथी; व्यक्त ज्ञान सुखकार. ॥३॥

ध्यान क्रिया मनमां आणीजे. ए राग

ज्ञानने सेवो ज्ञानीने सेवो, ज्ञान जणोने जणावोरे; ज्ञानाभ्यासीने स्हाय करो भवी, शास्त्रो लखावो छपावोरे. ज्ञान० ॥१॥ जैनधर्म जगमां फेलावो, ज्ञानीओ प्रगटावीरे; ज्ञान विना नहि शासन चाले, ज्ञानछे मुक्तिनी चावीरे. ज्ञान० ॥२॥ श्रुत केवली केवली सम जाणो, ज्ञानथी धर्म प्रचारोरे; जयवंता तीर्थो ज्ञानीओ, जैनधर्म आधारोरे. ज्ञान० ॥३॥ ज्ञान विनानुं जीवन जड छे, आत्म जीवन छे ज्ञानेरे;

ज्ञानी ध्यान समाधि पामे, वर्ते शुद्धातम तानेरे; ज्ञान० ॥४॥ ज्ञानीनो जे विनय न सेवे, तेने छे अतिचाररे; ज्ञानीनी आशातना टाळो, सफळ करो अवताररे. ज्ञान० ॥ ५ ॥ भानु आगळ तम नहि रहेतुं, ज्ञानी आगळ अज्ञानरे; ज्ञानी घटमां दोष रहे नहीं, ज्ञान स्वतंत्र प्रमाणरे. ज्ञान० ॥ ६ ॥ ज्ञानथी चारित्र प्रगटे साचुं, ज्ञान छे श्रेष्ठ पवित्ररे; स्वपर प्रकाशक ज्ञान छे सुंदर, तेथी वशमां छे चित्तरे. ज्ञान० ॥७॥ ज्ञानीनी आज्ञाए हलाहल, पीतां मुक्ति थातीरे; अज्ञानी वचने अमृतने, पीतां न शांति सुहातीरे. ज्ञान० ॥८॥ पिंडस्थादिक ध्यानने ध्यावे, धर्म शुक्ल बे ध्यावेरे; ज्ञानी ध्याननी सूक्ष्म क्रियाथी, क्षणमां मुक्ति पावेरे. ज्ञान० ॥९॥ ज्ञाननी दासी सर्व क्रिया छे, ज्ञानी पासे किरियारे; ज्ञाने जगमां अनंत तर्या, भवसागरने तरियारे. ज्ञान० ॥ १० ॥ असंख्य योग छे मुक्तिना हेतु, ज्ञानयोग सहु मोटोरे; ज्ञानीनी सेवा भक्तिथी, रहे न कोई तोटोरे. ज्ञान० ॥ ११ ॥ ज्ञानीने पूजो ज्ञानी ने वंदो, ज्ञानी छे अप्रमादीरे;

शुष्कज्ञानी एकांतवादी, क्रियाजमी उन्मादीरे. ज्ञान० ॥१२॥ परोक्ष प्रत्यक्ष ज्ञान बे भेदे, श्रुत स्व-पर उपकारी रे; बुद्धिसागर सद्गुरु संगे, रहेशो नरने नारी रे. ज्ञान० ॥१३॥

वीर जिनेश्वर उपदिशे, ज्ञान सकल उपकारी रे; चार निक्षेपे ज्ञानने, समजो नर अने नारी रे. वीर० ॥१४॥ मति अठ्ठावीश भेदे छे, श्रुत छे चउदश भेदे रे; अवधि असंख्य प्रकार छे, रूपी वस्तु वेदे रे. वीर० ॥१५॥ मन पर्यव बे भेदे छे, मनना पुद्गल जाणे रे; केवल रूपारूपीना, सहु पर्याय पिछाने रे. वीर० ॥१६॥ अध्यातमज्ञाने भवी, केवलज्ञानने पामो रे, बुद्धि-सागर आतमा, परम प्रभु थै जामो रे. वीर० ॥१७॥

सकल वस्तुसमूहविभासनं ।
प्रचितकर्मविनाशनकर्मठम् ॥
युगलत्रावगतं मतिमुख्यकं ।
विरतिदं रतिदं प्रणिदध्महे ॥१॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ परम.

अष्टमी चारित्रपद पूजा.

सदाचार सद्गुणमयी, चारित्र छे सुखकार; गावो ध्यावो आचरो, जावे नरने नार. ॥ १ ॥ द्रव्य-भाव चारित्र छे, निश्चयने व्यवहार; स्वर्गने मुक्ति-फळ मळे, तजो दुर्गुण आचार. ॥ २ ॥

सिद्धिये नमो सिद्ध अनंता ए राग.

चारित्र एवुं मळो सुखकारी, जाउ चारित्रीनी बलिहारीरे; चारित्र० समभावे जग सघळुं लागे, रागद्वेष न मनमां जागेरे. चारित्र० ॥ १ ॥ परभावे रस रीझ न आवे, रीझ लागे आत्मस्वभावे रे; चारित्र० क्रोध उपर क्रोध जागे ज्ञाने, मन रहेतुं नहीं अभिमानेरे. चारित्र० ॥ २ ॥ निर्दंभ निर्लोभ भावे रहेवुं, सुख दुःख समभावे सहेवुंरे; चारित्र० देश-विरति सर्व विरति भेदे, आठ बार कषाय न वेदेरे. चारित्र० ॥ ३ ॥ रांक जीवो पण चारित्र पाळी, पाम्या मुक्ति वधू लटकाळीरे; चारित्र० शुक्ल शु-

फल परिणाम वधंता, एतो अनुभवे ज्ञानी संतारे. चारित्र० ॥४॥ मैत्री प्रमोदने माध्यस्थभावे, करुणाए हृदय शुद्ध थावेरे; चारित्र० निर्मम निरहंकारे प्रणामे, सत्य अप्रतिबद्धता जामेरे. चारित्र० ॥ ५ ॥ अस्तेय ब्रह्मचर्य संतोषे, तजी व्यसनने सद्गुण पोषेरे. चारित्र० मित्र शत्रुपर राग न रोष, नहीं निन्दक दृष्टिनो दोषरे. चारित्र० ॥ ६ ॥ तृण मणिपर सम-भावनी वृत्ति, रहे मनमां न विषयासक्तिरे; चारित्र० आवे अनुभव सुखनी खुमारी, थाय कर्मो सकल उपकारीरे. चारित्र० ॥ ७ ॥ थाय परमार्थ-नी योग प्रवृत्ति, दोष अल्पने बहुधर्मनीतिरे. चारित्र० कर्म करे पण मोहे न एमां, फल आशा रहे नहीं तेमांरे. चारित्र० ॥ ८ ॥ अतिचार दोष प्रगटया वारे, मळयो मानव भव नहीं हारेरे. चारित्र० शुद्ध उपयोगथी आत्म प्रकाशे, शुभ अशुभ न मनमां भासेरे. चारित्र० ॥ ९ ॥ पूजो गावोने मनमां ध्यावो, लेवो चारित्रनो सत्य

ल्हावोरे; चारित्र० संयमीनां दर्शन दुःखहारी, सेवो चारित्रीने नरनारीरे. चारित्र० ॥ १० ॥ समकीतीने चारित्रनी इच्छा, करी पुरुषार्थ ग्रहे दीक्षारे. चारित्र० धर्म शुक्ल ध्याने आतमऋद्धि, बुद्धिसागर मंगल सिद्धिरे. चारित्र० ॥ ११ ॥

माया कारमीरे माया न करो चतुरसुजाण ए राग.

आतमगुणो विनारे, होळी राजा सरखो वेष; भवोभव जीवडारे, पाम्या आधिव्याधि क्लेश. गुणवण आडंबर शा खपनो, वाह्यक्रिया व्यवहारेर; वेष क्रिया छे गुणने माटे, जाणे ते निज तारे. आतम० ॥ १२ ॥ मोह वने नहि मनडुं भमतुं, ध्यान समाधि योगेरे; जगमां सुखनी रहे न इच्छा, आतम सुखने जोगे. आतम० ॥ १३ ॥ दुर्गुण दोषो टाळी सघळा, आत्मगुणो प्रगटावोरे; चिदानंद उपयोग रमणता, चारित्रज ते ल्हावो. आतम० ॥ १४ ॥ मोहनो उपशम क्षयोपशमने, क्षायिकभाव जे करवोरे; निर्विकल्प समाधि योगे, परमानंदने वरवो. आतम० ॥ १५ ॥ आत्मोपयोगे आत्मरमणता, निश्चयथी

चारित्ररे; बुद्धिसागर पूर्णानन्दी, आतम पूर्ण पवित्र. आतम० ॥ १६ ॥

रमणतात्मगुणेषु हि यत्रच।
विगतनूतनकर्मपथं च यत् ॥
जगति जीवसमूहसुवल्लभं।
सुललितं चरणं हृदि धारये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम.

नवमी तपपद पूजा.

द्रव्यभावथी तप तपे, सकल विघ्न दूर जाय; पच्चाश लब्धि उपजे, जय जय तप महिमाय. ॥ १॥ तप तपतां कष्टो टळे, दुःखो दूरे जाय; सर्व कर्म दूरे टळे, पग पग मंगल थाय. ॥ २ ॥ तपना भेद अनेक छे, तपना बार प्रकार; पूजो वंदो तपस्वीने, तप तपशो नरनार. ॥ ३ ॥

नमोरे नमो श्री शत्रुंजय गिरिवर.

पूजो वंदो तप गुण धारी, तप तपशो जयकारे; तप तपतां अठ्ठावीश पच्चाश, लब्धि प्रगटे सा-

रे. पू० ॥ १ ॥ सर्व शुभाशुभ इच्छा रोधक, तपथी शक्ति प्रकाशेरे; निष्कामी थै कार्यो करतां, तप छे जाणो पासेरे. पू० ॥ २ ॥ देव गुरुने संघनी सेवा, भक्ति तप छे वेशरे; धार्मिक कर्म करंतां संकट—सहवां दुःखो कलेशरे.पू०॥३॥आत्मार्थे परमार्थे प्रवृत्ति,करतां भय नहि खेदरे; द्वेप न प्रगटे तप ए तपतां, नासे मोहना भेदरे. पू० ॥ ४ ॥ मन वाणी कायानी शुद्धि, धरवी तप जयकाररे; सर्व शुभाशुभ फलनी इच्छा-त्यागथी तप छे उदाररे. पू० ॥ ५ ॥ तीर्थंकर त्रिज्ञानी पण जे, ते भव मुक्ति जाणरे; तप तपता जाणीने भव्यो, तप तपशो गुण खाणरे. पू० ॥ ६ ॥ मरण जीवनपर नहीं आसक्ति, सर्व समर्पण थायरे; परमार्थे जीवननी करणी, शुद्धोपयोगे सुहायरे. पू० ॥ ७ ॥ सर्व जीवोना हितने माटे, काया मननी प्रवृत्तिरे; जैनधर्मनी सेवा भक्ति, करवानी छे रीतिरे. पू० ॥ ८ ॥ सर्व लोकनां दुःखो हणवा, सहेजे समर्पाइ जायरे; सुख दुःख आवे हर्षे न शोचे, साक्षी

भाव सुहायरे. पू० ॥ ९ ॥ नामने रूपमां मोह रहे नहीं, कर्तव्योज करायरे; ज्ञानाग्निमां मोहने होमी, मुक्ति क्षणमां पायरे. पू० ॥ १० ॥ मान पूजानी होय न वृत्ति, धार्मिक होय प्रवृत्तिरे; बाह्याभ्यंतर तपने तपतां, प्रगटे अनंती शक्तिरे. पू० ॥ ११ ॥ आतमने परमातम करवा, तप छे साधन सत्यरे; बुद्धिसागर मंगल पामो, तपथी करी शुभ कृत्यरे. पूजो० ॥ १२ ॥

वीरकुमरनी वातडी कोने करीए. ए राग.

वासनारोधक तप तपो नरनारी, मनथी इच्छाओ निवारी. करो आत्म शुद्धि जयकारी, शुभाशुभ परिणति वारी, रहो आत्म मगन्न, वासना. ॥ १३ ॥ निश्चय तप क्षण मात्रमां शिव आपे, शुद्ध केवल ज्ञाने छापे; पूर्ण आनंद घटमां व्यापे, रहो तपथी प्रसन्न. वास० ॥ १४ ॥ कामादिक मोह वृत्तियो सहु टाळो, शुद्ध आत्म स्वरूप निहाळो; भेदभावनी वृत्ति बाळो, राखो निर्मल मन. वास० ॥ १५ ॥

आत्मज्ञानने ध्यानथी छे समाधि, टळे आधि व्याधि उपाधि; लहो मुक्ति तप आराधी, बनो जीवन्मुक्त. वास० ॥ १६ ॥ निश्चय तप पुरुषार्थथी भवी पामो, बनी निर्विषयी दुःख वामो; परब्रह्म बनी ठरो ठामे; बुद्धिसागर बेश. वास० ॥ १७ ॥

गीत.

गायां गायांरे एम नवपद भावथी गायां; प्रभु महावीर देवे प्रकाश्यां, ते में भावथी ध्यायांरे. एम. चार निक्षेपे सातनयेजे, नवपदनुं करे ज्ञान; सिद्ध चक्र आराधी ध्याइं, पोते बने भगवान्रे. एम० ॥ १ ॥ आंबिल ओळी आदितपथी, नवपदने आराधे. पद-पद मंगल ऋद्धिसिद्धि, मुक्तिने ते साधेरे. एम० ॥ २॥ गुरुगम यंत्रने मंत्र ग्रहीने, जप जपतां एकताने. जे जे भावे आराधे ते ते, भावे फळे छे ज्ञानेरे. एम० ॥ ३ ॥ संवत् ओगणिश सत्तोत्तरनी, साले आश्विन मासे, विजया दशमी चढता पहोरे, पूजा रची उल्ला-

सेरे. एम० ॥ ४ ॥ सानंद शहेरे आनंद ल्हेरे, चोमासुं कर्युं भावे. संघनी सेवा भक्ति सारी, नवपद पूजा भणावेरे. एम० ॥ ५ ॥ तपगच्छहीरविजय सूरिपाटे, सहज सागर उवज्झाय, पट्ट परंपर योगी महासिद्ध, नेमि सागर गुरुरायरे. एम० ॥ ६ ॥ सागर शाखामां रवि सरखा, रविसागर गुरुराज. गुर्जर देशी संघ सुधार्यो, जेनां उत्तम काजरे. एम० ॥ ७ ॥ तेमनी पाटे वैयावच्ची, धर्म क्रियामां धोरी. श्री सुख सागर गुरुजी वंदु, ज्ञाननी हाथमां दोरीरे. एम० ॥ ८ ॥ गुरु सुखसागर पूर्ण कृपाथी, नवपद महिमा गायो, बुद्धिसागर सूरिए भावे, सिद्ध चक्र वधायोरे. एम० ॥ ९ ॥

दहति यत्किल कर्म निकाचितं,
विविध सिद्धि विधायकमप्य हो;
जिनवरैरपि सेवितमादरात्,
हृदि वहामि तपो बहु भेदकम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं परम०

पंचाचारपूजा प्रारंभ.

मङ्गलम्.

प्रभु महावीर जिनवरा, तीर्थंकर जयकार; सर्व विश्व शासन प्रभु, परब्रह्म सुखकार. ॥ १ ॥ प्रणमी वंदी पूजीने, गावुं पंचाचार, पंचाचारे वर्ततां, मुक्ति लहे नरनार. ॥ २ ॥ द्रव्यभाव आचार छे, साधन साध्य प्रकार; सापेक्ष साधन सकल, आत्मशुद्धि करनार. ॥ ३ ॥

प्रथम ज्ञानाचार पूजा.

दुहा.

मोहनजी मोकलोरे मोसाळुं अथवा ओहि जिन पूजीए मनरंगे–ए राग.

प्रभु महावीर जगहितकारी, प्रतिबोध्यां नरने नारी, धन्य महावीर जग उपकारीरे, आज मनोरथ

मुज फळीया. मनवंछित मेळा मळियारे. आज० ॥१॥
ज्ञानाचारने समजाव्यो, ते में मनमांही लाव्यो.
द्रव्यने भावथकी भाव्योरे. आज० ॥ २ ॥ काल
विनयने बहुमाने, गुरुगम पामी उपधाने, अनि
ह्नवताना तानेरे. आज० ॥ ३ ॥ शब्दार्थ तदुभय
धारो, श्रुत जणतां सुख निर्धारो, तजीए आठे अति-
चारोरे, आज० ॥ ४ ॥ आगम शास्त्र श्रवणयोगे,
गुरुसेवा स्वार्पण भोगे, ज्ञान वधे मन आरोग्येरे,
आज० ॥ ५ ॥ गुरु श्रद्धा प्रीति भक्ति, प्रगटे ज्ञान
तणी शक्ति, प्रगटे परम प्रभु व्यक्तिरे. आज ॥६॥
ज्ञानावरण सकल दूर नासे, आगम अनुभव अभ्यासे,
भावथी आतम उल्लासेरे. आज० ॥ ७ ॥ तुज
आगम गुरुमुख सुणतां, कर्म सकळ वेगे टळतां,
बुद्धिसागर, अनुसरतांरे. आज० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय ज्ञानाचारपूजनाय.

जलादिकं–यजामहे स्वाहा.

द्वितीय दर्शनाचार पूजा.

दुहा–

दर्शनाचारने पाळीए, आठ तजी अतिचार; द्रव्यभाव बे भेदथी, समजो दर्शन सार, ॥ १ ॥ निश्चयने व्यवहारथी, दर्शनना बहु भेद; दर्शनना, आचारने, पाळी टाळो खेद, ॥२॥ देवगुरुने धर्मनी, भक्ति करतां भव्य, आत्मिकदर्शन प्रगटतुं, करतां शुभ कर्तव्य, ॥ ३ ॥

विनति धरजो ध्यान जगपति विनति ए–राग.

दर्शनना आचार, भवी भजो, दर्शनना आचार निःशंकित थै निःकांक्षित थै, रुडो धरो व्यवहार. भवी० ॥ १ ॥ वितिगिच्छा दोष निवारी, साधीए धर्माचार. भवी० मूढपणानी दृष्टि त्यागी, धरो प्रभु-पर प्यार. भवी० ॥ २ ॥ उपबृंहणथी दर्शन पुष्टि,

जिनशासन जयकार. भवी० सकल संघनी सेवा भक्ति, निष्कामि आचार. भवी० ॥ ३ ॥ जिनशासनना आठ प्रभावक, सेवो नरने नार, भवी० उपयोगी थै दर्शनाचारे; रहेतां कर्म संहार. भवी० ॥४॥ लज्जा खेदने द्वेष निवारी, निर्भय थैने उदार. भवी० तनमन धननुं अर्पण करवुं, संघोन्नति हितकार. भवी० ॥ ५ ॥ अर्पाइ जाओने जैनो, त्यागी देहाध्यास, भवी० देवगुरुने जैन धर्मनो, तजो नहीं विश्वास. भवी० ॥ ६ ॥ स्थिर करीए धर्मे सर्वने, यथाशक्ति नरनार, भवी० साधर्मिकनी भक्ति करीए, करी प्रभावना सार. भवी० ॥७॥ निश्चय शुद्धातम अनुभवतां, रहे न दर्शन दोष, भवी० बुद्धिसागर दर्शन पामे, सहु रीते संतोष. भवी० ॥ ८ ॥

तृतीया चारित्राचार पूजा.

दुहा.

द्रव्यभाव चारित्र छे, निश्चयने व्यवहार,
चारित्राचारे रमो, आठ तजी अतिचार. ॥ १ ॥

पांच समिति त्रण गुप्तिनो, उत्तम जगमां योग, जे योगे रमतां थकां, आतम होय अयोग. ॥ २ ॥ अपवादे समिति कही, उत्सर्गे त्रण गुप्ति; गुप्ते गुप्ता मुनिवरा, पामे क्षायिक शक्ति, ॥ ३ ॥

सांभळजो मुनि संयमरागे—ए राग.

प्रभु महावीर जिन उपदेशे, समिति गुप्ति साचीरे, असंख्य योगनी प्रवचन माता, रहेशो तेमां राचीरे ॥ प्रभु ॥ १ ॥ ज्ञानने भक्ति कर्म उपासना, हठयोगादिक योगोरे, त्रण गुप्तिमां सर्व समाता, जेथी रहे नहीं रोगोरे ॥ प्रभु ॥ २ ॥ गृहस्थ त्यागी बेने हितकर, योग क्षेम प्रदातारे, सिद्धया सिजशे सिद्धे तेओ, पाळी प्रवचन मातारे ॥ प्रभु ॥ ३ ॥ भावथकी त्रण गुप्ति साधे, मुक्ति अनुभव आवेरे, द्रव्यने भावथकी निज मुक्ति, सहजानंद सुहावेरे ॥ प्रभु ॥ ४ ॥ रागद्वेष संकल्प विकल्पो, दूर थतां मन गुप्तिरे, निर्विकल्प स्वभावे समाधि, केवल प्रगटे शक्तिरे ॥ प्रभु ॥ ५ ॥ आतम ज्ञानोपयोगे रहेतां,

समिति गुप्ति पासेरे, ज्ञानी सर्वे कर्मो करतो, ज्ञाने गुप्ति उपासेरे ॥ प्रभु ॥ ६ ॥ ज्ञानी समिति धारे ज्यां त्यां, द्रव्यभावथी जाणीरे, उत्कृष्टात्नंगे क्षण मुक्ति, भाखे केवल ज्ञानीरे ॥ प्रभु ॥ ७ ॥ समिति गुप्ति साधे सर्वे, योग सधाता जाणोरे, बुद्धिसागर आत्म उजागर, प्रगटे भाव प्रमाणोरे ॥प्रभु ॥८॥

चतुर्थी तपआचार पूजा.

दुहा.

बार भेदे तप भलो, बाह्य अभ्यंतर लेश; तप तपतां नासे घणा, कर्म निकाचित क्लेश. ॥ १ ॥
अशुभ शुभ इच्छा सकल, सर्व क्रिया फलत्याग. निश्चय तप ते जाणवुं, तपता महा सौभाग. ॥ २ ॥
बारे अतिचारो तजी, धारो तप आचार, दुःख सही आतम चहो, तप तपशो नरनार. ॥ ३ ॥

चोमासी पारणुं आवे—ए राग.

प्रभुमहावीर जिनजयकारी, तप तपिया वनी अनगारी, बन्या केवली जगहितकारी, भाख्युं तप वर्तन सुखकारीरे, तप सेवो सकल नरनारी, जाउ तपि-

यानी बलिहारीरे, तप० ॥ १ ॥ द्रव्यभावथी तप आचरवुं, भवसागर वेगे तरवुं, निश्चय निज गुणमां ठरवुं, समभावे रही सहु करवुंरे, तप० ॥ २ ॥ परपुद्गल मोह न धरवो. निश्चय तप गुण ए वरवो, द्रव्यभाव काम संहरवो, प्रभु पूजी तप दिल करवोरे. तप० ॥ ३ ॥ द्रव्य भाव तपस्वीसेवा, करवा प्रगटे दिल हेवा; एतो अनुभव अमृत मेवा; तपसीनी सहाये देवारे. तप० ॥ ४ ॥ जे जे कर्म उदयमां आवे, सुख दुःखपणुं दर्शावे; शुभाशुभ बुद्धि नहीं लावे, रहे ज्ञानी सम तप भावेरे. तप० ॥ ५ ॥ नाम रूपमां मोह न धारे, करे कर्मने स्वाधिकारे; उपकारमां जीवन गाळे, संघ सेवा तप ते भारेरे. तप० ॥ ६ ॥ करे सद्गुरु साधु भक्ति, कोइमां नहीं धारे आसक्ति; राखे नहीं सात जातनी भीति, एवी ज्ञानी तपस्वी रीतिरे. तप० ॥ ७ ॥ शुद्ध उपयोग छे तपभारी, पामे ज्ञानी जन संस्कारी; ध्यान सहज समाधि सारी, रहे वृत्ति न कोइ विकारीरे. तप०॥८॥ पुरुषार्थथी तप आचरशो, यथाशक्ति भावथी

करशो; लब्धि सिद्धि प्रकटता करशो, बुद्धिसागर मंगल वरशोरे. तप० ॥ ९ ॥

पांचमी वीर्याचार पूजा.

दुहा—

आतम शक्ति फोरवो, त्रण तजी अतिचार, सर्व प्रमादो परिहरो, धर्म करो नरनार, ॥ १ ॥ देव गुरुने धर्मना, आराधनमां शक्ति, फोरवतां शक्ति वधे, प्रगटे प्रभुपद व्यक्ति, ॥२॥ टींटोमी उत्साहथी, अनंत गुणो, उत्साह, धारी आतम शुद्धिनो, राखो मनमां चाह. ॥ ३ ॥

ध्यान क्रिया मनमां आणी जे—ए राग.

प्रभु महावीर जिन उपदेशे, वीर्याचारने धारोरे. धर्ममां शक्ति फोरवो लोको, करशो पर उपकारोरे. प्रभु० ॥१॥ दुःख पडंतां नहिं मुंझाशो, परनी व्हारे धाशोरे, संकट पडता भागी न जाशो, करवा धर्म

उजाशोरे॥ प्रभु० ॥२॥ व्रत तप भक्तिमां ढीला न थाशो, उत्साहे सुख पाशोरे; कायर थै थाओ नहीं दासो, चूको न निज विश्वासोरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ अनंत शक्तिनो स्वामी आतम, कायरथो न पमातोरे; जीवंतां मरजीवा ज्ञानी, तेथी आत्म लहातोरे. प्रभु० ॥ ४ ॥ देहाध्यासथी मरतां मुक्ति, पडे न पाछा नीतिरे, शूराजननी एवी रीति, धरे न क्यांये भीतिरे. प्रभु० ॥ ५ ॥ गोपवो नहीं वज्रवीर्यने धर्मे, उत्साही सत्कर्मेरे; थैने रहेशो आतम शर्मे, पडो न मिथ्या भर्मेरे. प्रभु० ॥ ६ ॥ भावीभाव हशे ते थाशे, कर्मे लख्युं ते थाशेरे; एकांत मिथ्या एवी बुद्धि, टाळी रहो उल्लासेरे; प्रभु० ॥ ७ ॥ आतमना पुरुषार्थे सर्वे, थातुं निश्चय राखोरे; प्राण पडे पण कार्य न मूको, आतम सुखने चाखोरे. प्रभु० ॥ ८ ॥ वीर्याचारे कर्म टळे सहु, आतम शक्तियो प्रगटेरे; आतम ते परमातम थावे, मिथ्या कर्मो विघटेरे. प्रभु० ॥ ९ ॥ सर्व प्रकारे धर्म प्रवृत्ति, करतां धैर्यने

धारोरे; बुद्धिसागर आनंद मंगल, सिद्ध प्रभु निर्धारोरे. प्रभु० ॥ १० ॥

कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो—

पंचाचार सदाचार जगमां, ते गातां हरखायो; वीर प्रभु वचनामृत पीतां, तृप्ति न मनमां पायोरे. महावीर० ॥१॥ पंचाचारना धारक पूजो, पंचमी गति सुखकारी; वीर प्रभुए समकित पामी, पाळया दुर्गति हारीरे. महावीर० ॥२॥ दर्शन ज्ञानने चारित्रमांही, पंचाचार समाया; पंचाचारने पाळे मुक्ति, सहजानंद सुहायारे. महावीर० ॥ ३ ॥ अंतर आतम पंचाचारे, पूजी वीरने भावे; परमातम पोते घट थावे, ध्याता ध्येय सुहावेरे. महावीर० ॥४॥ सानंद शहेरे आनंद ल्हेरे, पूजा रची गुण दावे; ओगणीश सतोत्तर आशो वदि, बीज दिने बहु चावेरे. महावीर० ॥ ५ ॥ भणतां गणतां ने सांभळतां, पामो शिव नरनारी; संघ

चतुर्विध मंगल पामो, समकिती व्रती अवतारीरे. महावीर० ॥ ६ ॥ चउनिक्षेपे सातनये में, पंचाचारने जाण्या; गुरु सुखसागर पूर्ण कृपाथी; धर्म्म भावे आण्यारे. महावीर ॥७॥ गावो जाणो मनमां आणो, आचारने आचारो; बुद्धिसागर आनंद मंगल, ऋद्धि वृद्धि अपारोरे. महावीर० ॥ ८ ॥

अथ विंशतिस्थानक पद लघुपूजा प्रारंभ.

प्रथम अरिहंतपद पूजा.

श्री महावीर जिनेश्वरा, चोवीशमा जिनराज;
त्रिशलानंदन जयकरा, प्रणमुं जिनशिरताज. ॥ १ ॥
बहुविध तपशास्त्रो भण्यां, कर्म दुरित हरनार;
विंशति स्थानक तप वडुं, सहु तपमां शिरदार.
॥ २ ॥ विशस्थानक पूजा रचुं, पूज्यपणुं दातार;
पूज्यनी पूजा भक्तिथी, तीर्थंकर पद सार. ॥ ३ ॥

प्रथम अरिहंत पदपूजा.

परमेष्ठीमां प्रथम छे, अरिहंत भगवंत. नय
निक्षेपे ध्याइए, आविर्भावे संत. ॥ १ ॥

संभव जिनवर विनति. ए राग.

प्रभु अरिहंत जिन पूजीए, बारगुणे जयकारीरे,
चोत्रीश अतिशयवंत जे, केवलज्ञानना धारीरे॥
प्रभु० ॥ १ ॥ पांत्रीश वाणी गुणोवडे, जग बोधे

सुखकारीरे; त्रणकाल अर्हन् विभु, सर्व जगत् उपकारीरे. प्रभु० ॥२॥ क्षायिक नव लब्धि धणी, तारण तरण झहाजरे. तीर्थ प्रवचन संघने, स्थापे भवी हितकाजरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ इन्द्र असंख्य सुरासुरा, सेवे प्रभु हितकारीरे; घाती कर्म चउ क्षय करी, जाव प्रभुता धारीरे. प्रभु० ॥४॥ दोष अढार रहित प्रभु, सर्व शुभोपम छाजेरे. बुद्धिसागर ध्यावतां, आतम जगमां गाजेरे. प्रभु० ॥ ५ ॥

द्वितीया सिद्ध पदपूजा.

सकल कर्मने क्षय करी, सिद्धया सिद्धशे जेह; त्रिकरणयोगे पूजीए, वंदीजे गुण गेह. ॥ १ ॥

ध्याइए ध्याइए ध्याइए- सिद्ध परमातम प्रभु ध्याइए; आठ कर्म क्षये आठ गुणोथी. सिद्ध थया दिल लावीए. व्यतिरेकी एकत्रीश गुणो जे. अस्ति नास्तिमय जावीए. सिद्ध० ॥ १ ॥ जन्म जरा नहीं

मृत्यु न जेने, हृदय धरीने रीजीए. शुद्ध गुणो पर्यायो अनंता, आविर्भावे ते लीजीए. सिद्ध० ॥ २ ॥ पूर्णानंदमयी परमेश्वर, आदि न अंत न पाइए. आतम सत्ताए परमातम. सत्ताध्याने सुहाइए. सिद्ध० ॥ ३ ॥ आतम गुण पर्यायथी अस्तिनास्ति परनी जाणीए. उत्पत्तिव्यय ध्रुवतारामी, समये समये चित्त आणीए. सिद्ध० ॥ ४ ॥ सिद्ध प्रभुओ गावो ध्यावो, प्रभु आज्ञा शिर धारीए. बुद्धिसागर सिद्ध प्रभु विभु, थैने जन्म सुधारीए. सिद्ध० ॥५॥

तृतीया प्रवचन पदपूजा.

प्रवचन पूजतां वंदतां. ध्यावतां मंगलमाल.
प्रवचन पद दिलमां वस्युं—सर्व पाप हणनार. ॥१॥

विमला नव करशो उच्चाट ए—राग.

प्रेमे प्रवचन पूजो गावो. मनमां धारशोरे. भावे तीर्थ संघ सेवाथी, संकट टाळशोरे. प्रेमे० संघ

चतुर्विध सेवा भक्ति. करतां प्रगटे सघळी शक्ति. करीने शासन सेवा. आतमने उद्धारजोरे ॥ प्रेम० ॥ १ ॥ तीर्थंकर पण तीर्थने नमता, तीर्थ नमे ते भव नहि नमता. भावे प्रवचन श्रुतने मनमांही अवधारशोरे. प्रेम० ॥२॥ धर्मक्षेत्र साते शुभ पोषो, टाळो शंसय आदि दोषो. आतम उपयोगी थै कर्म कटक संहारशोरे. प्रेम० ॥३॥ जैन धर्म फेलावो करशो, तीर्थंकर गणधर पद वरशो. प्रभुनी वाणीने जगमां सर्वत्र प्रचारशोरे. प्रेम० ॥ ४ ॥ प्रवचन सेवा माटे सर्वे, मळ्युं गणो नहि रहेशो गर्वे. भावे बुद्धिसागर आप तरो परतारशोरे. प्रेम० ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थ आचार्य पद पूजा.

नमो नमो श्री सूरिवर, गणधर संघ प्रधान;
तीर्थंकर पाछळ प्रभु, अर्हन्सम भगवान्. ॥ १ ॥

जीवलडा घाट नवा शीद घडे. ए राग.

सूरिवर शासन जक्ति भर्या, हृदयमां ते में अंगीकर्या, देशकाल अनुसारे शासन, धर्म प्रचारक

खरा. छत्रीशी छत्रीशी गुणे करी, आतम गुणथी भर्या. हृदयमां० ॥ १ ॥ देशकाल तरतम गुण किरिया, शोभे जे जयकरा; बत्रीश उपमा जेने छाजे, गीतार्थ ज सुखकरा. हृदयमां० ॥ २ ॥ धर्मशास्त्रना अर्थ प्रकाशे, शासन शोभा वर्या; स्वतंत्रताए वर्ते जगमां, अनंत ज्योते भळ्या. हृदयमां० ॥ ३ ॥ सर्व शास्त्रनी एक वाक्यता, करता अनुभव भर्या; आतम उपयोगे सहु करणी, करता ध्याने ठर्या. हृदयमां० ॥ ४ ॥ ध्यान समाधि योगे योगी, कदि न जावे मर्या; बुद्धिसागर सूरि सेवा, भक्ति मंगल धर्या. हृदयमां० ॥ ५ ॥

अथ पंचम उपाध्याय पद पूजा.

पच्चीश गुणथी शोभता, उपाध्याय जयकार;
भणे भणावे साधुने, युवराजा सुखकार. ॥ १ ॥

आतम भक्ति मळ्या केइ देवा. ए राग.

वाचक पद पूजो नरनारी, स्वयं बनो जग तेवा; पुरुषार्थे वाचक पद प्रगटे, कर्म क्षये गुण लेवा. वाचक० ॥ १ ॥ जीवंता वाचक सहु पूजो, द्रव्यथी भावथी भावे; गुणीनी संगे गुणीना ध्याने, गुण निज घटमां आवे. वाचक० ॥ २ ॥ वाचक वैयावच्च करीने, मानव भव ल्यो ल्हावो; सर्व स्वार्पण करीने भक्ति, करतां गुण प्रगटावो. वाचक० ॥ ३ ॥ मिथ्या संशय तर्क वितर्को, तजीने वाचक सेवो; लोक विषय संज्ञाने त्यागो, वाचक सेवा मेवो. वाचक० ॥ ४ ॥ अनेक सद्गुणदरिया वाचक, सेवो नरने नारी. बुद्धिसागर वाचक पदनी, जाउं हुं बलिहारी. वाचक० ॥ ५ ॥

पंचमस्थविरपद पूजा.

स्थिर करता मुनि आदिने, जैन धर्ममां जेह; स्थविरोने सेवो सदा, स्थिरतादिक गुण गेह. ॥ १ ॥

श्रुतपद नमिये भावे नविया. ए-राग.

स्थविर मुनि जगमां उपकारी, मुनिजन स्थिरता कारीजी; स्थविर साधुनी संगति करतां, चंचलता टळनारी; स्थविरने, नजीएजी, पशुने करता देव, स्थविरने यजीएजी ॥ १ ॥ वीश वर्ष दीक्षा पर्यायी, साठ वर्ष वय धारीजी; आचार आदि अंगना ज्ञाता, श्रुतस्थविरा सुखकारी. स्थविर० ॥२॥ बालक ग्लान संशयी चंचलने, धर्मविषे स्थिरकारीजी; परिणामिक बुद्धि अनुभवी जे, बाल मुनि हितकारी. स्थविर० ॥ ३ ॥ प्रभु महावीरे मेघ कुमरने, संयममां स्थिर कीधाजी; ठाणांगे दश स्थविरा भाख्या, आतम रमणी प्रसिद्धा. स्थविर० ॥ ४ ॥ ज्ञानी ध्यानी मुनिवरा जे, स्वपर समयना दरियाजी; बुद्धिसागर स्थविर मुनि शुभ, तारे ने जे तरिया. स्थविर० ॥ ५ ॥

सप्तम साधु पद पूजा.

आत्म स्वनावे जे रमे, परोपकारी महान्;
सत्तावीश गुण धारका, प्रणमो मुनि गुणखाण. ॥ १ ॥

ए गुण वीर तणो न विसारुं ए राग.

मुनिवर देखी प्रणमो वंदो, पूजो ध्यावो भावोरे; मुनिवरनी संगत करवामां, श्रद्धा प्रीति लावोरे. मुनिवर० ॥ १ ॥ वर्तमानमां तरतम योगे, वर्ते साधु जेहरे; तेनी सेवा भक्ति करतां, थाशो स्वयं गुण गेहरे. मुनिवर० ॥ २ ॥ मुनि आशातना हेलना त्यागो, वर्तताना संगरे; करशो गुणरागी थै लोको, गुणनो धरो मन रंगरे. मुनिवर० ॥ ३ ॥ सर्वे जीव उपकारी साधु, क्षांति आदि धरे धर्मरे; शुद्धातम उपयोगे वर्ती, करता धर्मनां कर्मरे. मुनिवर० ॥ ४ ॥ अप्रतिबद्धपणे जे वर्ते, गुरु निश्राए संतरे; बुद्धिसागर मुनिवर सेवा, अनंत पुण्य मळंतरे. मुनिवर० ॥ ५ ॥

अष्टम ज्ञानपद पूजा.

ज्ञानने पूजो भविजना, सकल धर्म आधार;
ज्ञान प्रकाशी आतमा, परमातम निर्धार. ॥ १ ॥

सिद्धचक्र पद सेवा कीजे. ए–राग.

सर्व गुणोमां ज्ञान छे मोटुं, ज्ञाने परमानंदोजी; आत्मज्ञान छे सर्वमां मोटुं, टाळे जे भवफंदो; ज्ञानने भजीएजी, ज्ञान छे आतम रूप; निजगुण सजीएजी. ॥ १ ॥ ज्ञानोपयोगे आत्मरमणता, स्वरूप क्रिया छे साचीजी; ज्ञानोपयोगे ध्यान क्रियाथी, रहेशो निजगुण राची. ज्ञान० ॥ २ ॥ ज्ञानोपयोगे सहज समाधि, निर्लेपे सहु करणीजी; नयनिक्षेपे ज्ञानने जाणो, जे छे भवमां तरणी. ज्ञान० ॥ ३ ॥ निजपरने उपकारी श्रुत छे, जाणे छे स्याद्वादीजी; अनेकान्तपणे सहु जाणो, थाओ नहीं उन्मादी. ज्ञान० ॥ ४ ॥ ज्ञाने सर्व कर्म क्षय क्षणमां, करे छतां नहि कर्ताजी; बुद्धिसागर सद्गुरु सेवो, ज्ञानी भवोदधि तरता. ज्ञानने० ॥ ५ ॥

नवमी दर्शनपद पूजा.

द्रव्य भाव दर्शन समु, निश्चयने व्यवहार, सम्यग् दर्शन पामीने, मुक्ति लहे नरनार. ॥ १ ॥

तपपदने पूजीजे हो प्राणी. ए राग.

दर्शन दिल प्रगटावो हो सुखकर, दर्शन दिल प्रगटावो॥उपशम क्षयोपशमने क्षायिक, द्रव्यने नाव सुहावो; व्यवहार निश्चय समकित पावो, अजरामर थइ जावो हो. सुखकर ॥ दर्शन० ॥ १ ॥ सम्यग् दर्शन योगे मिथ्या, शास्त्रो पण होय सवळां. मिथ्या दर्शन योगे सम्यक्–शास्त्रो पण होय अवळां हो. सुखकर॥ दर्शन० ॥ २ ॥ सम्यक्पणे सघळुं परिणमतुं, समकितीने नावे. अल्पबंधने निर्जरा झाझी, प्रवृत्तिमां थावे हो. सुखकर ॥ दर्शन० ॥ ३ ॥ सात आठ त्रण चार भवोमां, समकिती लहे मुक्ति. उत्कृष्टुं अंत मुहूर्तमां, पामे मुक्ति झटिति हो. सुखकर. दर्शन० ॥ ४ ॥ समकितीनी सेवा नक्ति, करवा स्वार्पण करवुं. बुद्धिसागर आतम शुद्धि, मंगल पदने वरवुं हो. सुखकर. दर्शन० ॥ ५ ॥

दशमी विनयपद पूजा.

बाह्याभ्यंतर विनयने, सेवो नरने नार. सर्व धर्मनुं मूळ छे, सद्गुणमां शिरदार ॥१॥

जीवलडा घाटं नवा शीद् घडे. ए राग.

विनयनी वाटे जे जन चडे, जगत्मां पाछो ते नहीं पडे. देव गुरुने संत विनयथी, मारग धर्मनो जडे; विनये विद्याज्ञानने पामे, संसारे नहि सडे. विनयनी ॥ १ ॥ पांचने दशविध तेरने बावन, भेदे विनयने करे. शमदम आदि गुणने पामे, वांछित वेळा वळे. विनयनी ॥ २ ॥ आहारी पण उपवासी छे, विनयी मुक्ति वरे. गुरु विनये ज्ञानादिक पामे, श्रद्धा प्रीति बळे. विनयनी० ॥ ३ ॥ सर्व संघ गुणीजनना विनये, मोहनी वृत्ति टळे. शुद्धातम उपयोगे करणी, थावे निजगुण जळे. विनयनी ॥ ४ ॥ सर्व शक्तिनुं मूळ विनय छे, जक्तोने सांपडे. बुद्धिसागर मंगल माला, अनंत सुखकां मळे. विनयनी ॥ ५ ॥

अग्यारमी चारित्रपद पूजा.

सर्वगुणी चारित्रथी, मुक्ति लहो नरनार; चारित्र सम जग को नहीं, पूर्ण मुक्ति दातार. ॥ १ ॥

कानुडो न जाणे मोरी प्रीत. ए राग.

चेतन धारी ले चारित्र, दुर्गुण दोष हरीनेरे, चेतन॥ द्रव्यने भावथी धारे, कर्मो सघळां संहारे; एवुं रुडुं धर चारित्र, शाने मोह धरे छे रे. चेतन० ॥ १ ॥ सर्व प्रमादो वारी, चेती ले आतम सुधारी; गृही वा त्यागीनुं चारित्र, धरी ले स्वाधिकारेरे. चेतन. ॥ २ ॥ मोह कादवमां खूंच्यो, भूंडनी पेठे मुंझ्यो, रागद्वेषे पडियो मूढ, शीदने निज विसरेछेरे. चेतन० ॥ ३ ॥ हजी छे हाथमां बाजी, हारे शुं थैने पाजी; जीवो मुक्ति पाम्या अनंत, शाने वार करेछेरे. चेतन० ॥ ४ ॥ शुद्ध स्वभावमां रमवुं, एथी न भवमां भमवुं; बुद्धिसागर गुरु चारित्र, पामी भव्य तरेछेरे. चेतन० ॥ ५ ॥

बारमी ब्रह्मचर्य पद पूजा.

रत्न मणिमय मंदिरो, प्रतिमाओ करनार; तेथी अनंतु फल लहे, ब्रह्मचर्य धरनार. ॥ १ ॥

धनधन ते जगमां नरनार, सिद्धाचलके
जानेवाले. ए राग.

धन्य धन्य जगमां ते नरनार, निर्मल ब्रह्मचर्य धरनार; पूजो ब्रह्मचारी नरनार, धारो ब्रह्मचर्य सुखकार ॥ रत्नमणि कंचननी प्रतिमा, चैत्य करावणहार; अनंत गणुं फल तेथी पामे, ब्रह्मचर्य धरनार. धन्य० ॥ १ ॥ सहस चोराशी मुनिवरदाने, जे फल नक्की थनार; ते फल विजयने विजयाजक्ते, थयुं धन्य अवतार. धन्य० ॥ २ ॥ द्रव्यथी कायिक वीर्यनी रक्षा, आत्म रमणता सार; भावथी ब्रह्मचर्य छे एवुं, सहु शक्ति दातार. धन्य० ॥ ३ ॥ सर्व प्रकारे विषयनी वांछा, त्यागी जे रहेनार; अनासक्तिए करे कृत्य सहु, ब्रह्मचारी शिरदार, धन्य० ॥ ४ ॥ देश थकी ने सर्वथकी जे, ब्रह्मचर्य धरनार; इन्द्रादिक तेना पद पूजे, देवो स्हाये थनार, धन्य० ॥ ५ ॥ दिव्य औदारिक त्रिकरण योगे, सर्व काम हरनार, बुद्धिसागर ब्रह्मचर्यनी, अनंत शक्ति उदार, धन्य० ॥ ६

त्रयोदशमी क्रियापद पूजा.

आतमज्ञानथी सत् क्रिया, करतां कर्म विनाश;
साध्योपयोगे साधना, आपे सिद्धि विलास. ॥ १ ॥

ध्यान क्रिया मनमां आणी जे. ए राग.

धर्मक्रिया करीए उपयोगे, निजपरने हितकारी रे; आवश्यक जे धर्मनां कार्यो, करीए फर्ज विचारी रे. धर्म० ॥ १ ॥ निजपर उपकारक शुभ कार्यो, सर्व संघ उपकारी रे; करतां मरतां मोह न धरीए, फलनी इच्छा निवारी रे. धर्म० ॥ २ ॥ निजपर उपकारक छे प्रवृत्ति, व्यवहारे व्यवहरीएरे. क्रियाउत्थापे संघ रहे नहीं, समजी सर्वे करीएरे. धर्म० ॥ ३ ॥ शुद्ध परिणामे शुद्ध फल थातुं, आत्मोपयोगे मुक्तिरे; व्यवहारिक धार्मिक कर्तव्यो, करवां व्यवहार री तिरे. धर्म० ॥ ४ ॥ ध्यान क्रिया ध्यानी घट धारे, निज उपयोगे सुधारेरे; ज्ञानी बाह्याभ्यंतर किरिया, [illegible] र्म व धारेरे. धर्म० ॥ ५ ॥ अशुद्ध क्रिया

ध्यान वारी संतो, करता आतम शुद्धिरे; बुद्धिसागर सहज स्वभावे, रमतां आनंद ऋद्धिरे. धर्म० ॥ ६ ॥

॥ चौदमी तपपद पूजा. ॥

तपथी प्रगटे लब्धियो, अट्ठावीश पच्चाश; कर्म तपावे चीकणां, तप ते तपशो खास. ॥ १ ॥

फाग रंग मच्यो जिन दरबाररे चालो खेलीए होरी.

ए–राग.

तप तपशो नरनाररे, तप छे सुखकारी; तपथी अनंती शक्तिरे, प्रगटे हितकारी ॥ बाह्याभ्यंतर तप बहु भेदे, जन्म मरण दुःखहारी; फल इच्छानो रोध कर्याथी, कर्म खरे बहु भारी रे. तप छे सुखकारी. तप०॥१॥ कर्म निकाचित क्षय बहु थातां, करो कर्तव्य विचारी; धर्म करंतां दुःख सहन तप, परपरिणति संहारी रे. तप० ॥ २ ॥ परीषह उपसर्गोने सहीने, कार्य करो उपकारी; मन वाणी कायानी प्रवृत्ति, परमार्थे जयकारी रे. तप० ॥ ३ ॥ भव मुक्तिमां सम परिणामी, थाशो मोहने मारी; उत्कृष्टुं तपनुं फल ए छे, मुक्ति निश्चय धारी रे. तप० ॥ ४ ॥ तप त-

पिया शासनना प्रभावक, वंदु वार हजारी; बुद्धिसागर मंगल माला, पद पद आनंद कारी रे. तप० ॥ ५

पन्नरमी गोयम पद पूजा.

वर्तमान जे वर्तता, साधु श्रमणो जेह; दान दियंतां तेहने, पामो स्वर शिव गेह. ॥ १ ॥

ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे. ए राग.

भावथी दानने दीजे हो, भविजन! भावथी दानने दीजे॥ अभय सुपात्र बे दान प्रभावे, आतम उज्वल कीजे. हर्षोल्लासे तीर्थंकर पद, बांधी मुक्ति वरीजे हो. भविजन० ॥ १ ॥ संघ चतुर्विध सेवा-भक्ति, करतां निश्चय मुक्ति; दानथी त्यागने त्यागथी शिवपद, आतम शुद्धि प्रयुक्तिहो. भविजन० ॥ २ ॥ आंखे अश्रु रोमांच विकसित, हृदये हर्ष न मावे; गद्गद वाणी दाखी एवो, सर्वोत्कृष्ट कहावे हो. भविजन० ॥ ३ ॥ स्वार्पण भावे दानने देतां, शिव-पद सहेजे थावे; सात क्षेत्रमां दान दियंतां,

परमानंदपद पावे हो. भविजन० ॥ ४ ॥
दान दीधुं तेने सघळुं कीधुं; दान करो नरनारी.
बुद्धिसागर ऋद्धिवृद्धि, पामो शिव वधू सारी हो.
भविजन० ॥ ५॥

सोळमी जिनपद पूजा.

नमो नमो जिनपद भलुं, पूजो ध्यावोचित्त;
दोष अढार रहित प्रभु, परमातम जे पवित्र. ॥ १ ॥

श्री श्रेयांसजिन अंतर्यामी. ए राग.

जिनपद गावो जिनपद ध्यावो, आतम तेवो भावोरे. सोळ कषायो जीते जिन, ते जिनपद घट प्रगटावोरे. जिनपद० ॥ १ ॥ श्रुतज्ञानी अवधि मन नाणी, छद्मस्था वीतरागीरे; जिनपद आराधकने पूजो, आतम रंगी त्यागीरे. जिनपद० ॥ २ ॥ विद्यमान आचार्यने वाचक, बालस्थविरने मांदारे; वैयावृत्य करो बहु भावे, होय न भक्तिमां वांधारे. जिनपद० ॥ ३ ॥ वैयावच्च फल नाश थतो नहीं,

वैयावच्ची न पकतोरे; सकल संघनी [illegible], कोइ न भवमां रखडतोरे. जिनपद० ॥ ४ ॥ चढता भावे जिनपद साधक, सर्व जैननी सेवोरे; करतां महा पापी पण मुक्ति, पामे निश्चय देवोरे. जिनपद० ॥ ५ ॥ जैनोमां जिनपदने भावो, आतमने जिन करशोरे; बुद्धिसागर आतम जिनवर, पोते थै शिव वरशोरे. जिनपद० ॥ ६ ॥

सप्तदश संयमपद पूजा.

शुद्धातम गुण रमणता, संयम छे सुखकार;
धारण ध्यान समाधिमय, साधो नरने नार. ॥१॥

त्रीजे भव वरथानक तप करी. ए राग.

संयम आराधो नरनारी, आतम शुद्धिकारी; ध्यान समाधिमय संयम छे, निज परने उपकारीरे. भविजन! संयमने प्रगटावो, लेशो नरभव ल्हावोरे. भविजन० ॥ १ ॥ द्रव्य समाधिथी भाव समाधि, अनंत गुणी हितकारी; विकल्पक विकल्प रहित जे,

सेवो समाधि विचारीरे. भविजन० ॥२॥ हठ आदि अज्ञान समाधि, वीश दोष परिहरीए; गृहस्थने त्यागी भेदे संयम, व्यवहार निश्चय धरीएरे. भवि- जन० ॥ ३ ॥ चार निक्षेपे सात नये नव, तत्त्व सामायिक धारो; मन वश करतां आत्मसमाधि, शुद्ध थता आचारोरे. भविजन० ॥ ४ ॥ संयमीनी सेवा भक्तिथी, शक्तियो प्रगटावो; बुद्धिसागर आतम संयम, आविर्भावे लावोरे. भविजन० ॥ ५ ॥

अष्टादशमी अभिनवज्ञानपद पूजा.

प्रतिदिन अभिनवज्ञानने, पामो नरने नार;
अभिनव ज्ञान विना कदा, रहीए नहि क्षणवार. १

सिद्धचक्र पद सेवा कीजे. ए राग.

अभिनव ज्ञान भणो भवी भावे, गुरुगम लही सुखकारीजी, स्वर्ग अने शिवसुख झट लहीए, स्वाध्याय पंचविध धारी; श्रुतने भणिएजी—त्यागी सर्व प्रमाद, नव श्रुत गणीएजी. ॥ १ ॥ बुद्धिना

गुण आठ वधारो, आठ दोषने टाळोजी; सर्वथकी आराधक ज्ञानी, क्रिया रहित पण जाळो, श्रुतने. त्यागी० ॥ २ ॥ देश आराधक किरिया भाखी, ज्ञाननी किरिया दासीजी; ज्ञानि ज्ञान आशातना टाळो, शुद्ध स्वरूप उल्लासी. श्रुतने. त्यागी० ॥३॥ ज्ञानथी आतम शुद्धि अनंती, कार्य करंतां थावेजी; अज्ञानी संवरने आस्त्रवने–रूपे मन प्रणमावे. श्रुतने. त्यागी. ॥ ४ ॥ अनुभव ज्ञानी सूरि वाचक मुनि, संग निशदिन रहेशोजी; बुद्धिसागर आत्म प्रभुता, चिदानंदपद लेशो. श्रुतने. त्यागी० ॥ ५ ॥

आगणिशमी श्रुतपद पूजा.

पंच ज्ञानमां श्रुत छे–स्वपरोपकारक वेश, चउ मुंगां श्रुत बोलतुं, टाळे सर्वे क्लेश. ॥ १ ॥

चंद्र प्रभुजीसे ध्यानरे मोंये लागी लगनवा,

ए राग.

श्रुत स्वपर उपकारीरे, भवी भावथी सेवो-भवी भावथी सेवो; जगमां छे जयकारीरे. भवी० केवलना-

नीना मुखनी वाणी, चउदने वीश प्रकाररे. भवी०
नव तत्त्व ज षड् द्रव्य प्रकाश्यां, नयनिक्षेपे उदाररे.
भवी० ॥१॥ तत्त्व फरे नहीं त्रण्यकालमां, फरता
रहे आचाररे. भवी० दुःषमकाले श्रुत छे भानु, भणो
भणावो साररे. भवी० ॥२॥ श्रुतज्ञानी केवली सरखो,
सेवो नरने नाररे. भवी० बत्रीश दोष रहित आगम
छे, वर्ते जगदाधाररे. भवी० ॥३॥ वीरप्रभुए अर्थ प्र-
काश्या—सूत्र रच्यां गणधाररे. भवी० श्रुत केवली
आदि मुनियोए, शास्त्र रच्यां जयकाररे. भवी० ॥४॥
श्रुतज्ञानीनो विनय करो बहु, प्रेमे करो सत्काररे.
भवी० बुद्धिसागर शुद्धातम पद, हेते स्याद्वादधाररे.
भवी० ॥ ५ ॥

" वीशमी तीर्थपद पूजा "

संघ चतुर्विध तीर्थ छे, सर्व विश्व सुखकार;
अरिहा नमता तीर्थने, तीर्थ भजो नरनार. ॥१॥

वीरकुमरनी वातनी कोने कहीए. ए राग.

संघ चतुर्विध तीर्थ छे जयकारी, पंच परमेष्ठी हितकारी; सर्व विश्वविषे उपकारी, सेवो नर-ने नार. संघ० ॥ १ ॥ जंगम तीर्थ आराधना शिव-कारी, श्रद्धा प्रीतिथी सेवा सारी; जाउ संघनी जग बलिहारी, सेवे नासे पाप. संघ० ॥ २ ॥ स्थावर तीर्थने रक्षतो संघ शक्ते, रहो संघनी निशदिन भक्ते; संघथी जैन शासन वर्ते, जीवो संघना हेत. संघ० ॥ ३ ॥ स्थावर जंगम तीर्थपर प्रेम लावो, मोति पुष्पे संघ वधावो; भावे तीर्थंकर पद पावो, बनो संघना दास. संघ० ॥ ४ ॥ सूरि वाचक मुनि सेवजो सुखकारी, करी स्वार्पणने दोष वारी; बुद्धिसागर तीर्थनी यारी, करे मंगलमाल. संघ० ५

कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो. ए राग.

गायुं गायुंरे वीशस्थानक पद तप गायुं; गातां पूजतां ध्यातां दिलडुं, आनंदथी उभरायुंरे. वीश.

आतममां वीश स्थानक जाण्यां, अनुभवमां एम आव्युं; साधन योगे साध्यनी सिद्धि, जाणंतां मन भाव्युंरे. वीश० ॥ १ ॥ एकमां वीशने वीशमां एकज, एक साधे वीश साध्यां; साध्योपयोगे साधन सफळां, भावथकी आराध्यांरे. वीश० ॥ २ ॥ आतममां वीश द्रव्यने भावे, निश्चयने व्यवहारे; शुद्धातम उपयोगे घटमां, गुण पर्याय प्रकारेरे. वीश० ॥ ३ ॥ वीश स्थानक पैकी एक स्थानक, आराधंतां भावे; तीर्थंकर पद पामे भव्यो, मुक्ति अनंता पावेरे. वीश० ॥ ४ ॥ सिद्धचा सिद्धशे जीव अनंता, एकेक पद आराधे; गुण एक सेवे गुण अनंता, प्रगटे साधन साधेरे. वीश० ॥ ५ ॥. ओगणिश सत्तोत्तर आश्विननी, चोथ वदि गुरुवारे; सानंद शहेरे चोमासुं करी, पूजा रची भवीतारेरे. वीश० ॥ ६ ॥ पूर्ण प्रतापी तप गच्छ नायक, जग गुरु बिरुद धराया; हीर विजयसूरि प्रणमुं पाया, अकबरे गुण गण गायारे. वीश० ॥ ७ ॥ सहज

सागर पाठक जयकारी, सागर शाखा धारी; पट्ट परंपर रविसागर गुरु, रविसम प्रगटया भारीरे. वीश० ॥ ८ ॥ पूर्ण प्रतापी सुख सागर गुरु, करुणा आशोः प्रभावो; बुद्धिसागर पूजा रची शुभ, संघमां थाओ वधावोरे. वीश० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० तीर्थ पूजार्थं जलादिकं यजामहे स्वाहा.

अथ दशविधयति धर्मपूजा प्रारंभ.

प्रणमुं श्री परमातमा, महावीर जगदाधार; चोवीशमा तीर्थंकरा, शासनपति सुखकार. ॥ १ ॥ जेणे संघने स्थापियो, सर्व धर्म आधार; प्रभु महावीर जग जयो, अनंत गुण दातार. ॥ २ ॥ यति धर्म दशविध कह्यो, आत्मशुद्धि करनार; जगजय श्री महावीर जिन, वंदु वार हजार. ॥ ३ ॥ समवसरणमां बेसीने, कीधो तीर्थ प्रचार; जंगम तीर्थ ते मुनिवरा, तेना दश गुण धार. ॥ ४ ॥ दश गुणथी मुनि शोभता, पूजो दश विध धर्म; दश विध धर्मे आत्मनुं, प्रगटे ज्ञान ने शर्म. ॥ ५ ॥ ते माटे दश धर्मनी, रचुं पूजा सुखकार; अष्ट प्रकारे पूजशो, वीर प्रभु जयकार. ॥ ६ ॥

प्रथम क्षमापूजा.

प्रभु महावीर भाखता, धर्म क्षमा सुखकार; आराधो भवी भावथी, अनंत सुख दातार. ॥ १ ॥

सहियर सुणिएरे भगवती सूत्रनी वाणी. ए राग.

प्रभु महावीर विभु उपदेशे, सर्व जगत् हित-कारी; धर्म क्षमा धारो नरनारी, क्रोधकषायने वारी.

आत्म स्वभावनेरे, समजी क्षमा गुण धारो; क्षमावंत साधुरे, बाकी वेषाचारो. आत्म० ॥ १ ॥ अपकारे उपकारे क्षमाने, धारे बहुला लोको; धर्म क्षमा सहजे घट प्रगटे, ज्ञाने क्रोधने रोको. आत्म० ॥ २ ॥ कूरगडु खंधकना शिष्यो, धन्य मेतार्य मुनीन्द्रा; काने गोपे खीला मार्या, सहिया वीर जिनेन्द्रा. आत्म० ॥३॥ अच्चंकारी भट्टा मोटी, धन्य क्षमा गुण दरिया; अहंवृत्ति ममता नहि जेने, क्षमा गुणी मुनि तरिया. आत्म० ॥ ४ ॥ वेष क्रिया तप जप सहु साधन, धर्म क्षमाथी सफळां; शुभ अशुभ वृत्ति नहि रहेतां, साधन नहि छे खपनां. आत्म० ॥ ५ ॥ देहादिक अध्यासो छंडी, आतमना उपयोगे; रहेतां धर्म क्षमा गुण प्रगटे, समताना संयोगे. आत्म० ॥ ६ ॥ चिदानंद

आतम प्रगटावो, असंग आतम जावो; बुद्धिसागर पूर्णानंदे, रमता मुनिवर ध्यावो. आत्म० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय क्षमा लाभार्थं जलं, चंदनं पु० धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीया मार्दव धर्मपूजा.

द्रव्यभाव अहंकारना, त्याग थकीछे त्याग; मुनि श्रमणी लघुता धरो, थावो प्रभु वडभाग. ॥ १ ॥ आठ जातिना मद तजी, थावो निरहंकार; अगुरु लघु निज आतमा, समजीने सुखकार. ॥२॥ मान अने अपमानमां, वर्तता समभाव; अनंत गुण प्रगटे खरा, साधो मार्दवदाव. ॥ ३ ॥

श्रावक व्रत सुरतरु फळियो. ए राग.

परमेश्वर वीर उपदेशे, रहो न मुनि रागद्वेषे; मान तजे ते सुख लेशेरे, मुनिवर मान परिहरशो.

क्षण क्षण आतम गुण स्मरशोरे, मुनि० भवसागर वेगे तरशोरे. मुनिवर० ॥ १ ॥ आठ जाति मद परिहरता, आतम शुद्धि ते करता; परम ब्रह्म वेगे वरतारे. मुनिवर० ॥ २ ॥ रावण मानथकी हार्यो, भीमे दुर्योधन मार्यो; मन पेसे मद अणधार्योरे. मुनिवर० ॥ ३ ॥ ज्ञानने [illegible] अहंकारे, तरे नहीं पर नहि तारे; गारवे जीव करे भारेरे. मुनिवर० ॥ ४ ॥ उंच नीच भेदे आवे, अज्ञानी मनमां फावे; मद केफे निज भूलावेरे. मुनिवर० ॥ ५ ॥ हुं मारुं ज्यां नही जागे, त्यांथी मद दूरे भागे; जयडंको घटमां वागेरे. मुनिवर० ॥ ६ ॥ हुं त्यांथी प्रभु छे आघा, बाहुबली समजी जाग्या; केवल ज्ञानी वीतरागारे. मुनिवर० ॥ ७ ॥ मद वण मनडुं रहे ज्यारे, आतम प्रभु प्रगटे त्यारे; आप तरे मुनि पर तारेरे. मुनिवर० ॥ ८ ॥ प्रभु महावीर कथे एवुं. समजी लक्ष्य विषे देवुं; बुद्धिसागर सुख लेवुंरे. मुनिवर० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० प० मार्दव गुण लाभार्थं जलं०–यजामहे स्वाहा ॥

तृतीया आर्जव धर्म पूजा.

द्रव्यभाव आर्जव गुणे. रमतां केवलज्ञान; मुनिवर आर्जव गुण रमो, स्वयं थशो भगवान् ॥१॥
जन मन रंजन स्वार्थथी, कपट क्रियाओ थाय; मानादिकना त्यागथी, आर्जव गुण प्रगटाय ॥२॥
मल्लिनाथ पूरवभवे, कपटे स्त्री अवतार, पाम्या जाणी मुनिवरो, धरो सरलता सार ॥३॥

जीरण शेठ भावना भावेरे, महावीर प्रभु घेर आवे. ए राग.

प्रभु महावीरने दिल धारो, प्रभुने क्षण क्षण संभारो; उपयोगे आत्म सुधारो, धरो आर्जव गुण निज तारोरे; एवो वीरप्रभु उपदेशो, माया त्यागी मुनि शिव लेशोरे. एवो० ॥ १ ॥ निष्कपटे कहेवुं ने रहेवुं, दुनियानुं कह्युं सहु स्हेवुं; मान पूजामां लक्ष्य न देवुं, जेवुं अंतर बाहिर तेवुंरे. एवो० ॥ २ ॥ माया त्यागे प्रभु दिल आवे, अन्य दोषो वेगे जावे;

शोभे आतम आविर्भावे, शुद्ध सरळता आत्म स्वभावेरे. एवो० ॥ ३ ॥ दुनिया भले वंदे निंदे, करे हेलना रागी छंदे; वध बंधन मारवा मंडे, त्होये पडशो नहीं मुनि फंदेरे. एवो० ॥ ४ ॥ मर्या पहेलां माया मारो, निर्मायी बनी निज तारो; मळ्यो मानव भव नहि हारो, मन कपटवृत्ति संहारोरे. एवो० ॥ ५ ॥ माया संगे क्षण क्षण मरवुं, कदि दंभथी होय न तरवुं; माया मारी जीवन धरवुं, पछी मरवुं नहीं अवतरवुंरे. एवो० ॥ ६ ॥ त्यागो सर्व प्रकारे माया, बूरा तेना छे पडछाया; माया त्यागथी प्रभु घटछाया, समजी संतो सुख पायारे. एवो० ॥ ७ ॥ वसे कपट त्यां दुःखना दरिया, माया त्यागी मुनि गुण भरिया; बुद्धिसागर मुनि केशरिया, निष्कपटी केवल वरियारे. एवो० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ०—आर्जवप्राप्त्यर्थं जलादिकं. यजामहे स्वाहा ॥

चतुर्थी मुक्तिधर्म पूजा.

लोभ तजे सर्वे तज्युं, लोभ टळंतां मुक्ति; जग लोभे नहीं मुंझता, तेने नहीं छे भीति. ॥१॥ लोभ

तज्याथी जीवतां, मुक्ति अनुभव थाय; जीवंतां मुक्ति नहीं, देह तजे शुं ? पाय. ॥ २ ॥ सर्व प्रकारे लोभनो, कीधो जेणे त्याग; जीवंता ते मुक्त छे, सिद्ध बुद्ध वडभाग. ॥ ३ ॥

वीरकुमरनी वातडी कोने कहीए. ए राग.

वीरप्रभु परमातमा जयकारी, जेछे विश्वविषे उपकारी; प्रतिबोध्यां नरने नारी, भजो मुक्ति हेत; लोभ तजीशे साधुओ सुखकारी. ॥ १ ॥ लोभथी मुक्त ते मुक्त छे नरनारी, तजो लोभने महा दुःखकारी; रहो निःसंग मनडुं धारी, रही जग समभाव. लोभ० ॥ २ ॥ मूर्च्छा परिग्रह जाणशो वीर बोले, नहीं संतोषना कोइ तोले; चढशो नहीं लोभ हिंचोळे, मुनि मुक्त स्वतंत्र. लोभ० ॥ ३ ॥ सर्व जगतना संगथी नहि संगी, अनासक्तिए आतम सुरंगी. होय धनी पण चित्त निःसंगी, जडमां नहीं मोह. लोभ० ॥ ४ ॥ जड वस्तुनी लालचे जीव भटक्यो,

लाख चोराशीमां लटक्यो; संत पासे जतां पण अटक्यो, धर्यो नहि प्रभु प्रेम. लोभ० ॥ ५ ॥ लोभे लक्षण जाय छे सत्य नासे, दुर्बुद्धि रहे दिल पासे; हिंसादिक पाप प्रकाशे, लोभे सर्व विनाश. लोभ० ॥ ६ ॥ लोभी पापो सहु करे एम जाणो, अनासक्तिने मनमां आणो; धरो संतोष दिल मझानो, करो उपयोगी काज. लोभ० ॥ ७ ॥ देवगुरु संघ भक्तिनो लोभ करशो, निज फर्ज अदा करी फरशो; धर्म्य लोभने पहेलां धरशो, पछी निर्लोभभाव. लोभ० ॥ ८ ॥ मुक्तिने भवमां समपणुं दिल धारो, सर्व संगे छतां लोभ वारो; शुद्ध आतम परिणति धारो, बुद्धिसागर गाय. लोभ० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम० मुक्ति गुण प्राप्त्यर्थं जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

पंचमी तपोधर्म पूजा.

मोह टळे शुद्धि वधे, तप ते धर्मने मान; दुर्गुण दोषो सहु टळे, तप करवुं गुण खाण. ॥ १ ॥ परो-

कारी साधुनां, तप रूपी सहु काज; सर्व दुःख सहेवां समे, तप ते गुण शिरताज. ॥ २ ॥ बाह्याभ्यंतर तपथकी, शक्ति प्रगटे अनंत; तपने पूजो आदरो. ध्यावो मुनिवर संत. ॥ ३ ॥

कर्म परीक्षा करण कुमर चल्योरे ए राग.

निष्कामे तप तपशो मुनिवरारे, भाखे वीर जिनेश; कर्म निकाचित क्षणमां क्षय थतांरे, नासे सघळा क्लेश. निष्कामे० ॥ १ ॥ परोपकारी कर्मो तप कह्यांरे, विश्व जीवोनी सेव; सर्व शुभाशुभ अभिलाषा विनारे, वर्ते थाओ देव. निष्कामे० ॥२॥ संघनी सेवा भक्ति तप भलुंरे, वैयावच्चने ध्यान; प्रायश्चित्तने विनये राचशोरे, करो स्वाध्यायथी ज्ञान. निष्कामे० ॥ ३ ॥ देहाध्यासविना आतम प्रभुरे, देखाता भगवंत; बाह्य तपो पण आत्म विशुद्धिनारे, हेते छे गुणवंत. निष्कामे. ॥ ४ ॥ ज्ञानी मुनिने तप सहु कार्यमांरे, जोगविषे पण योग;

भोगो पण सहु रोग समा गणेरे, वर्ते योगे अयोग. निष्कामे० ॥ ४ ॥ कार्य करे पण अक्रिय जे रहेरे, धरी आतम उपयोग; सर्व विषयनी वांछावण रहेरे, शोचे न हर्षे भोग. निष्कामे० ॥ ६ ॥ मुनिने मन दमतां तप छे सदारे, करतां सर्व प्रवृत्ति; अन्तर तप अज्ञो नहि जाणतारे, मनमां नहीं आसक्ति. निष्कामे० ॥ ७ ॥ मुनिनी सर्व प्रवृत्ति तपमयीरे, क्षेत्रकाल अनुसार; बाह्यथी अंतर अनंत गणु भलुंरे. टाळे कर्म विकार. निष्कामे० ॥ ८ ॥ ज्ञानीने सहु बंधन कारणोरे, निर्जरहेते थाय; बुद्धिसागर तपसी पूजतांरे, ध्यातां तप प्रगटाय. निष्कामे० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ प० तपोगुण लाभार्थं जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

छठी संयम धर्म पूजा.

संयम साधो संयमी, वश करी मन वच काय; संयमथी झट सिद्धि छे, लब्धि सकल प्रगटाय.

॥ १ ॥ आत्मिक बल संयम नकुं, टाळे आठे कर्म; संयमो क्षणमां मुक्ति पद, पामे शाश्वत शर्म. ॥ २ ॥ धारणा ध्यान समाधिमय, संयम छे सुखकार; संयम धर्मनी पूजना, करशो नरने नार. ॥ ३ ॥

गंगातट तपो वनमांरे बनी रचना भारी. ए राग.

साधो संयम साधुरे, के आतम उपयोगे; पडो नहि मोह वनमांरे, रहो मन वैराग्ये. साधो० ॥ १ ॥ (साखी) लीन बनो निज आतममां, गुण पर्यायने ध्याइ; मोह परिणति वारतां, प्रगटे मुक्ति वधाइ; आतम श्रद्धा प्रेमेरे, के मस्तदशा प्रगटे; निजशक्ति अनंतीरे, प्रकटे तम विघटे. साधो० ॥ २ ॥ (साखी) क्षण पण संयमी संगवण, जीवो नहि नरनार; संयम साधन साध्य छे, आत्मशुद्धता सार. पंच समतिने गुप्तिरे, के साधन जेह वरे; पूर्णानन्दी आतमरे, अनुभव तेह करे. साधो० ॥ ३ ॥ व्रत तप जपदम साधनो, सापेक्षे छे सत्य; मुनिवरनां संयममयी, सघळां जाणो कृत्य.

भक्ति कर्मने ज्ञानेरे, संयम शक्ति वधे; शुद्ध आत्मोपयोगेरे, साधन सत्य सधे. साधो० ॥ ४ ॥ उपचारिक धर्मज भलो, संयम रूपी सर्व; तेमां पण संयमीजनो, करो न क्यारे गर्व. हठ धर्म निवारीरे, संयम सहेजे सजो; बुद्धिसागर प्रेमेरे, महावीर देव भजो. साधो० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० संयम लाभार्थे जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

सप्तमो सत्यधर्म पूजा.

द्रव्यभाव सापेक्षथी, सत्य असंख्य प्रकार; सत्य समो नहीं धर्म छे, सत्य ग्रहो नर नार. ॥ १ ॥ सत्य वदोने आचरो, जैन धर्म छे सत्य; प्राणांते नहि छंडशो, सत्य धर्मनां कृत्य. ॥ २ ॥ ज्ञानथकी साचुं ग्रहो, करो असत्यनो त्याग; पक्षपात छंडी करी, धरो सत्यनो राग. ॥ ३ ॥

तेजे तरणिथी वडोरे. ए राग.

वीर प्रभुए भाखियोरे, सत्य धर्म जयकार; मिथ्या जूठने परिहरोरे, सत्य धरो आचार हो भवि-

जन !!! सत्य धर्मने धारजोरे, मानव भव नहि हारजोरे, समजो सत्य प्रकार. ॥ १ ॥ सत्य वसे त्यां शक्तियोरे, देवो करता सहाय; देशने सर्वथी सत्यनेरे, स्वाधिकारे ग्रहाय हो. भविजन॥ सत्य० ॥ २ ॥ क्रोध मान माय लोभथीरे, कामथी जूठ वदाय; प्रभु वीतरागी आतमारे, बोले सत्य सदायहो. भविजन॥ ॥ ३ ॥ सत्य ते सेवा भक्ति छेरे, सत्य समी नहीं शक्ति; सत्य समुं बळ नहि कश्युंरे, सत्य समी नहि नीति हो. भविजन० ॥ ४ ॥ भयने हास्यथी जूठनेरे, बोलंतारे अधर्म; स्वार्थे अज्ञाने जनारे, बांधे अशाता कर्म हो. भविजन० ॥ ५ ॥ दुःख पडे प्राण जो पडेरे, तोपण छंडो न सत्य; उपसर्गो थातां घणारे, छंडो न साचां कृत्य हो. भविजन० ॥६॥ ज्ञान अने माध्यस्थथी रे, सत्य तत्त्व समजाय. बलिहारी सत्यवादीनी रे, जूठाथी दूर जाय हो. भविजन० ॥७॥ सत्य ग्रही मुनियोगीओरे, पाम्या पामशे मुक्ति; अनंत महिमा सत्यनोरे, रविथी अनंती द्युति हो.

भविजन० ॥ ८ ॥ सत्य वदो सत्य आदरोरे, दुःख सहीने अनंत; सुवर्ण पेठे कसोटीएरे, चढीने थावो भदंत हो. भविजन० ॥९॥ रवि पहेला ते उगतारे, सत्यवादी नरनार; बुद्धिसागर आतमारे, पूर्णानन्द अपार हो. भविजन० ॥ १० ॥ ॐ० सत्य लाभार्थं जलादिकं यजमहे स्वाहा ॥

अष्टमी शौच धर्म पूजा.

द्रव्यभाव व्यवहारने, निश्चय शौच छे धर्म,
भाव शौच सेव्याथकी, विघटे सर्वे कर्म. ॥ १ ॥
द्रव्यथी भाव अनंत गुण, आत्मशुद्धि करनार;
उपादान निमित्तथी, समजो ग्रहो नरनार. ॥२॥
आत्मशुद्धिकर शौच छे, लक्ष्य न भूलो लेश;
साध्योपयोगे शौचने, करतां टळता क्लेश. ॥ ४ ॥

श्रुतपद नमिये भावे भविया, श्रुत छे जगत आधारजी. ए राग.

समवसरणमां बेसी वीरजिन, केवलज्ञाने प्रकाशेजी; भाव शौचथी निश्चय मुक्ति, परमानंद

विलासे; शौचने धारोजी, तजी पर परिणति टेवं, आत्म सुधारोजी० ॥ १ ॥ सात नयोने चउनिक्षेपे, शौच धर्मने जाणोजी; देहनी शुद्धि बाह्य शौच छे, अंतर शुद्धता आणो. शौच० ॥ २ ॥ द्रव्यथकी पण भाव शौच छे, अनंत गुणो हितकारीजी; काय थकी मनथीज अनंत गुण, शुचिता छे सुखकारी. शौच० ॥ ३ ॥ भाव शौच ज्यां छे त्यां दर्शन, ज्ञानचरण जयकारीजी; भाव शौच धरता मुनि वंदो, पूजो जग उपकारी. शौच० ॥ आतम शौच विना कायाना-शौचथी थाय न मुक्तिजी, हिंसादिक क्रोधादिक दोषो, टळतां शौचनी रीति. शौच०॥५॥ आंतरमळ मन मोहने टाळो, पवित्र करी मन म्हालोजी; बाहिर शौच कदाग्रह गालो, अंतरने अजवाळो. शौच० ॥ ६ ॥ मननो मेल टळ्याथी मुक्ति, जेनी तेनी थातीजी; एकली पंडिताइ न खपनी, निर्मल करशो छाती. शौच० ॥ ७ ॥ राग-द्वेष मलीनता टाळो, दोष प्रगटता खाळोजी; का-

मवासना बीजंने वाळो, प्रभु जिन आतम भाळो. शौच० ॥ ८ ॥ भाव शौचवण वेषाचारे, मुंझो नहीं नरनारीजी. आतम शुद्धि करे ते शौच छे, समजो ब्रांति निवारी. शौच० ॥ ९ ॥ शौच धर्मथी साधु अनंता, मुक्त थयाने थाशेजी; बुद्धिसागर आत्मरमणता, करतां शौच छे पासे. शौच० ॥१०॥ ॐ०–शौच धर्म लाभार्थं जलादिकं यजामहे स्वाहा.

नवमी अकिंचन धर्म पूजा.

मूर्छा परिग्रह ग्रहथकी, मुक्त थतां छे मुक्ति; अकिंचन ते धर्म छे, त्यागीनी ए रीति. ॥१॥ द्रव्य-भाव परिग्रहथकी, न्यारा वर्ते संत; आत्मानंद रस अनुभवे, नमो नमो गुणवंत. ॥ २ ॥ मूर्च्छावण न परिग्रही, उपयोगी मुनिराज; उपधि देहादिक छतां, निःसंगी शिरताज. ॥ ३ ॥

दान सुपात्रे दिजेहो भवियां, दान सुपात्रे दीजे, एराग.

परिग्रह मूर्च्छा त्यागी हो मुनिवर, परिग्रह

मूर्च्छा त्यागी; अंतर बाहिर ममता रहित थै, वर्ते छे वडभागी हो. मुनिवर ॥ परिग्रह० ॥ १ ॥ नवविध परिग्रहमां नहि ममता, वर्ते सकल पर समता; देहादिक गच्छ संगी छतां पण; निःसंग ज्ञाने रमता हो. मुनिवर० ॥२॥ साधन उपयोगी उपधि सहु, ज्ञानी न त्यां बंधाता; तारु तरे जेम सरवरमांही, संवर जावे सुहाता हो. मुनिवर० ॥ ३ ॥ मूर्च्छा ए छे सर्वे उपाधि, मूर्च्छावण निरुपाधि; ज्ञानीने आस्रव पण संवर, उपयोगे नहि आधि हो. मुनिवर० ॥ ४ ॥ जडमां शुभाशुभ भाव रहित जे, ते नहि जग बंधातो; बाह्य परिग्रह तेने करे शुं? जे नहीं पुद्गले रातो हो. मुनिवर० ॥ ५ ॥ ममतावण नहीं कर्मबंध छे, ममता त्यागे त्यागी; जडनी ममता त्यागी सुज्ञाने, थाशो आतमरागी हो. मुनिवर० ॥ ६ ॥ यावत् मूर्च्छा अंतर तावत्, कोइ न मुक्ति पामे; मूर्च्छावण मणि पर्वत उपर, बेठो ठरे शिव ठामे हो. मुनिवर० ॥ ७ ॥ परिग्रह त्यागी मुनिवर सेवा,

भक्ति करो बहु भावे; क्षण एक साधुनी संगत करतां, निश्चय मुक्ति थावे हो. मुनिवर० ॥ ८ ॥ अणुसम ग्रहीने मेरु सरीखा, मुनिवर मोटा जाणा; संतोषे नहीं कोनी परवा, आनंद भोगी मानो हो. मुनिवर० ॥ ९ ॥ निश्चयने व्यवहारथी त्यागी, सेवो पूजो ध्यावो; बुद्धिसागर शुद्धातम पद, पूर्णानंदी पावो हो. मुनिवर० ॥ १० ॥ ॐ०—अकिंचन धर्म लाभाय जलादिकं यजामहे स्वाहा.

दशमी ब्रह्मचर्य धर्म पूजा.

ब्रह्मचर्य सम को नहीं, सर्व धर्ममां श्रेष्ठ, द्रव्य-भाव ब्रह्म आगळे, अन्य सकल छे हेठ. ॥१॥ नेमि सुदर्शन जंबुने, स्थूलिभद्रज अनगार; गावो पूजो भावथी, ध्यावो नरने नार. ॥ २ ॥ ब्रह्म मळे ब्रह्मचर्यथी, भाखे वीर जिनेश; द्रव्यभावथी धारतां, नासे सघळा क्लेश. ॥ ३ ॥

ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे, ए व्रत जगमां दीवो. ए राग.

ब्रह्मचर्य सुखकारी हो जगमां, आतम आनंद-कारी; ॥ द्रव्यथकी देहवीर्यनी रक्षा, स्त्री मैथुन परिहारी; भावथकी पर परिणति त्यागे, ब्रह्मव्रती जयकारी हो. जगमां, ब्रह्मचर्य सुखकारी० ॥ १ ॥ पांचे इन्द्रिय त्रेवीश विषयो, शुभ अशुभ नहीं लागे; स्वप्ने पण नहीं कामनी वृत्ति, ब्रह्मभाव घट जागे हो. जगमां ॥ २ ॥ मैथुन भोगे सुख नहीं शांति, आधि व्याधि उपाधि. जाणी मुनिवर ब्रह्मस्वरूपे, वर्ते छे निरुपाधि हो. जगमां० ॥३॥ कामी व्यभिचारी महादुःखी, रूप राग भरमाया; हडकाया कूतरनी पेठे, क्यांये सुख नहीं पाया हो. जगमां० ॥ ४ ॥ कामभोगथी थाय न शांति, उलटी कामनी वृद्धि; जाणी कामनी वृत्ति शमावो, पामो आत्मिक ऋद्धिहो. जगमां० ॥५॥ चामडी रागी जन चामडिया, आतमना नहि प्रेमी; आतमरागी जग वैरागी, वर्ते योगी क्षेमी हो.

जगमां० ॥ ६ ॥ आतमरागी प्रेमी ज्ञानी, भक्त संत मुनिराया; शुद्ध ब्रह्ममां निशदिन रमता, प्रणमो तेना पाया हो. जगमां० ॥ ७ ॥ निराकार शुद्धातम ब्रह्ममां, रमवुं ब्रह्म छे नावे, पूर्णानंदनी मोझे रमतां, पोते प्रभुजी सुहावे हो. जगमां० ॥ ८ ॥ ब्रह्मरसे रसिया मुनिवरजी, बाह्यरसे दूर खसिया; एकवार आतम आनंदरस, पाम्या ब्रह्म उल्लसिया हो. जगमां० ॥ ९ ॥ ब्रह्मचर्यथी शक्ति अनंती, नासे दूरे रोगो, ब्रह्मचर्य छे सर्वनुं जीवन, एथी सबळा योगो हो. जगमां० ॥ ११ ॥ द्रव्यथी भाव अनंत गुण उत्तम, कारणे कार्यनी सिद्धि, अष्ट सिद्धि नवनिधियो प्रगटे, आत्मिक क्षायिक लब्धि हो. जगमां० ॥११॥ इन्द्रादिक सहु देवो पूजे, ब्रह्मचारीने रागे; मुनिवर सेवा भक्ति करतां, ब्रह्मव्रत दिल जागे हो. जगमां० ॥ १२ ॥ नाव ब्रह्मधारी उपकारी, भोगी जेह अनोगी; बुद्धिसागर ब्रह्म अलखने, पूर्ण जगावे योगी हो. जगमां० ॥ १३ ॥ ॐ० ह्रीँ०—ब्रह्मचर्य लाभाय जलादिकं यजामहे स्वाहा.

कलश गीत.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो॥ दश विध साधु धर्मनी पूजा–पुष्पे प्रभुजी वधायो. त्रिशला नंदन वंदन करतां, सहजानंदने पायोरे. महावीर० ॥ १ ॥ ओगणिश सत्योत्तर आश्विन वदि, छठ शनिवार शुहायो; दशविध मुनिवर धर्मनी पूजा, रचतां हर्षे उमाह्योरे. महावीर० ॥ २ ॥ सानंदमां आनंदनी ल्हेरे, दशविध धर्मने ध्यायो; संघनी भक्तिए चोमासामां, मंगल जय वर्तायोरे. महावीर० ॥ ३ ॥ सदसद्भूत ज आतम धर्मनो, अनुभव निश्चय आयो; आपोआप स्वरूपे खेली, जन्मी जगमां फाव्योरे. महावीर० ॥ ४ ॥ तपगच्छहीरविजय सूरि जगगुरु, धर्मना तेजे सवायो; पट्ट परंपर रवि-सागर गुरु, झळहळ ज्योति सुहायोरे. महावीर० ॥ ५ ॥ दर्शन ज्ञानने चारित्रमयश्री, सुखसागर गुरु रायो; तेना चरणकमळमां भ्रमर सम, थातां

ब्रह्म जगायोरे. महावीर ॥६॥ गुरु कृपाने आशीर्वादे, जगमां धर्म फेलायो; बुद्धिसागर आनंदमंगल, जंगम संघ वधायोरे. महावीर० ॥ ७ ॥

चार भावनानी पूजा.

परम ब्रह्म परमातमा, प्रभु महावीर देव, सर्व सुरासुरनत विभु, इन्द्रो करता सेव. ॥ १ ॥ प्रभु महावीरे कह्यो, चार भावना बोध; भावे चारे भावना, थातो मोह निरोध. ॥ २ ॥ चार भावना भावतां, प्रगटे आतम शुद्धि; ते कारण चउ भावना-पूजानी छे सिद्धि. ॥ ३ ॥ मैत्री मुदिता भावना, भाव मध्यस्थ विचार; करुणा चोथी भावना, भावंतां भवपार. ॥ ४ ॥ अष्ट प्रकारी पूजना, प्रत्येक पूजा दीठ; प्रभु महावीर पूजतां, प्रगटे सम्यग् दृष्टि. ॥ ५ ॥ चार भावना भावतां, त्यागी गृही नर नार; क्षणमां केवल ज्ञानने, पामंता निर्धार. ॥ ६ ॥

प्रथम मैत्री भावना पूजा.

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी. ए राग.

चरम जिनेश्वर महावीर पूजीए, जेणे तार्यां नरनार; भावना चारेरें जेणे उपदिशी, भावे शिव निर्धार.

मैत्रीभावना भावो भविजना. ॥ ॥ १ ॥ सर्व जीवोने मित्रसमा गणो, छंडो वैर विरोध; शत्रु दृष्टिरे दिलथी परिहरो, एवो प्रभुनोरे बोध. मैत्री० ॥ २ ॥ आतम सरखारे सर्वे जीव छे, कर्मवडे परतंत्र; अज्ञाने ते रे सत्य न जाणता, जपता मोहनो मंत्र. मैत्री० ॥३॥ कर्म प्रमाणेरे सुख दुःख संपजे, जीवो निमित्त होय; कर्म विना कोइ निमित्त नहीं थतुं, शत्रु न मानोरे कोय. मैत्री० ॥ ४ ॥ सम्यग्दृष्टिने सवळीबुद्धिथी, सर्व जीवो होय मित्र; आत्मोन्नतिमारे हेतु परिणामे, कोइ न होय अमित्र. मैत्री० ॥ ५ ॥ सातनयो-थीरे मैत्रीभावना, चउनिक्षेपरे जाण; द्रव्यने भावेरे निश्चय व्यवहारे, प्रगटे केवल ज्ञान. मैत्री० ॥ ६ ॥ जेना मनमांरे मित्र जगत् बन्युं, ते छे जग-नोरे मित्र; भव बंधनथीरे मुक्त प्रभु थयो, ज्ञानी संत पवित्र. मैत्री० ॥ ७ ॥ खमो खमावोरे सर्वे जीवने, टाळी रागने रोष; जैनधर्मनोरे ए व्यवहार छे, करवो आतम पोष. मैत्री० ॥ ८ ॥ मैत्रीभावना

वर्तन आदरो, टाळी मोहनी वृत्ति; दुःख सहीनेरे सघळा जीवनी, करशो प्रेमेरे ज्ञक्ति. मैत्री० ॥ ९ ॥ परमातम सत्ताए सहु जीवो, आतममां एम भाव, बुद्धिसागर मैत्रीज्ञावना, ज्ञवसागरमांरे नाव. मैत्री० ॥ १० ॥ ॐ०–मैत्रीभाव लाभाय ज० य० स्वाहा.

द्वितीया प्रमोदज्ञावना पूजा.

प्रमोद भावना पुष्पथी, पूजो वीरजिनेन्द्र; प्रमोद ज्ञावे जे रहे, थाता तेह महेन्द्र. ॥ १ ॥ दोष दृष्टिने टाळवा, प्रमोद ज्ञावना बेश; निंदादिक दूरे टळे, नासे मिथ्या कलेश. ॥ २ ॥ गुणने गुणीने देखतां, मनडुं हर्षित थाय; ए छे मुदिता ज्ञावना, आचरतां दुःख जाय. ॥ ३ ॥

ते जे तरणिथी वकोरे. ए राग.

वंदु प्रभु महावीरनेरे, जेणे ओळखाव्यो धर्म; उपकारी नहीं तुज समोरे, टाळ्यो मिथ्या ज्ञर्म हो.

।दलमां. मुदिता भावना भावीएरे, आत्म प्रभु प्रग-टावीएरे. टाळी दोषनी दृष्टि. ॥ १ ॥ कर्म वश सहु प्राणियारे, दोषी काल अनादि; अचरिज शुं त्यां मानवुंरे, गुण देखो निरुपाधिहो. दिलमां मुदिता० ॥ २ ॥ सर्व संसारी जीवमांरे, दोषने गुण बे साथ; गुण देखी चित्त रीझीएरे, रीझे त्रिभुवन नाथ हो. दिलमां मुदिता० ॥ ३ ॥ परगुण परमाणु समारे, जाणी गिरिसम चित्त; खुशी थता जग सज्जनारे, करता आत्म पवित्र हो. दिलमां मुदिता० ॥ ४ ॥ कृष्णे श्वानना दंतनेरे, प्रशंस्या धरी राग; गुण रागे प्रगटे गुणोरे, जीव बने महाभाग हो. दिलमां मुदिता० ॥ ५ ॥ नय निक्षेपे जाणीनेरे, आदरशो नरनार; समकितवंता जीवनोरे, एवो छे आचारहो. दिलमां मुदिता० ॥ ६ ॥ मिथ्यादृष्टिपणुं टळेरे, टळती दोषनी दृष्टि; सर्व गुणो प्रगटाववारे, पुष्करा वर्तनी वृष्टि हो. दिलमां मुदिता० ॥ ७ ॥ निन्दा थती नहीं कोइनीरे, सद्गुण लेश जणाय; सर्व जी-

वोनी साथमांरे, आतम भाव सुहायहो. दिलमां मुदिता० ॥ ८ ॥ सर्व कषायो उपशमेरे; क्षयोपशम क्षय थाय; आत्म स्वभावे आतमारे, प्रणमे सुख प्रगटाय हो. दिलमां मुदिता० ॥ ९ ॥ क्षपक श्रेणि चढे आतमारे, समजावे वर्तमान; क्षीण मोही अंतरातमारे, पामे केवल ज्ञान हो. दिलमां मुदिता० ॥ १० ॥ कोटि दोष छतां गुणोरे, देखंता संत धार; दोष त्यजी गुण हर्षथीरे, राचो नरने नार हो. दिलमां मुदिता० ॥ ११ ॥ शत्रुना पण गुण जुवोरे, करो न नामथी निंद; प्रभु महावीरना वोधथीरे, गुण गुणी मानो वंद्य हो, दिलमां मुदिता० ॥ १२ ॥ जैन धर्मनी भावनारे, गुण रागे प्रगटाय; बुद्धिसागर आतमारे, ज्योति ज्योते सुहाय हो. दिलमां मुदिता० ॥ १३ ॥ ॐ०–प्रमोद भाव लाभाय. ज० य० स्वाहा.

तृतीया माध्यस्थ भावना पूजा.

दुहा.

माध्यस्थ त्रीजी भावना, आदरे जे नरनार; सर्व प्रकारे सत्यने, पामे शांति अपार. ॥ १ ॥ मिथ्या दुर्बुद्धि टळे, पक्षपात दूर जाय; दुराग्रहो सर्वे टळे, रागने रोष पलाय. ॥ २ ॥ ज्यां त्यां सत्य प्रकाशतुं, रहे नहीं अज्ञान; नय निक्षेपे धर्मने, जाणंतां थे ज्ञान. ॥ ३ ॥

धन धन संप्रति साचो राजा. ए राग.

जेम जेम राग अने द्वेष विघटे, तेम प्रगटे समजावरे; दृष्टि रागनो त्याग थतां दिल, प्रगटे मध्यस्थ भावरे. वीर प्रभुए ए गुण भाख्यो, आदरो नरने नाररे; मध्यस्थ भावे सत्य प्रकाशे, आनंद अपरंपाररे. वीर० ॥ १ ॥ पक्षपात थाय रागने द्वेषे, मानव स्वार्थे अन्धरे; मिथ्याबुद्धियोगे लोको, अवळी दृष्टिए बन्धरे. वीर० ॥ २ ॥ सर्व कदाग्रह

दूरे नासे, प्रगटे सत्य प्रकाशरे; सत्यने माटे सर्व समर्पण, शुद्धातम विश्वासरे. वीर० ॥ ३ ॥ द्रव्य क्षेत्रने कालने भावथी, सत्यासत्य जणायरे; सत्यनां सर्वे दृष्ठि बिंदुओ, प्रगटे सत्य ग्रहायरे. वीर० ॥ ४ ॥ सत्यने न्याय ग्रहे मध्यस्थी, पकडे न गद्धापुच्छरे; जूठुं ते साचुं नहीं माने, सत्य आगळ सहु तुच्छरे. वीर० ॥ ५ ॥ नय निक्षेपने भंग प्रमाणे, जैन धर्म छे सत्यरे; सर्व नयोनी सापेक्षाए, समजो दर्शन कृत्यरे. वीर० ॥ ६ ॥ ज्ञानी संतनी सेवा भक्ति, करतां मध्यस्थ भावरे; प्रगटे सर्व कर्म व्यवहारे, समजाता सत्य दावरे. वीर० ॥ ७ ॥ काल स्वभावने नियति कर्मे, उद्यमे थातुं काजरे; पंचना समवाये छे कार्यनी-सिद्धिनुं साम्राज्यरे. वीर० ॥ ८ ॥ माध्यस्थभावे वर्तो लोको, करशो धार्मिक कर्मरे; सुणशो वांचशो जोशो चिंतशो, दिलमां प्रगटशे शर्मरे. वीर. ॥ ९ ॥ सर्व बाजुथी सत्य तपासो, करो मध्यस्थे काजरे; दर्शन ज्ञान चरणनी प्राप्ति, प्रगटे शिव साम्राज्यरे.

वीर० ॥ १० ॥ मध्यस्थ भावे वीर प्रभुने, पूजो ध्यावो हमेशरे; बुद्धिसागर शुद्धातम पद, पामो अलख प्रदेशरे. वीर० ॥ ११ ॥ ॐ०—माध्यस्थ भाव लाभाय ज० य० स्वाहा.

चोथी करुणा भावना पूजा.

दुहा.

चोथी करुणा भावना, सर्व धर्मनुं मूल; करुणा वण समकित नहीं, सर्व धर्म अनुकूल. ॥ १ ॥ दया धर्ममां सत्यने, दान शीयल तप माय; सर्वे धर्म समाय छे, करुणामां सुखदाय. ॥२॥ प्रभु महावीर प्रकाशियो, दया धर्म दिलभाव, भवोदधि तरवा खरुं, करुणा उत्तम नाव. ॥ ३ ॥

सांभळशो मुनि संयमरागे उपशम श्रेणि चढियारे.

ए—राग.

प्रभु महावीर जग उपकारी, तीर्थंकर जयकारीरे, करुणा भावने उपदेश्यो शुभ, आदरशो

नरनारीरे. प्रभु० ॥ १ ॥ द्रव्य करुणा सर्व जीवोनां, दुःखो दूरे करवांरे; सर्व जीवोना प्राणनुं रक्षण, करवुं कर्म आचरवांरे. प्रभु० ॥ २ ॥ यथाशक्ति उपकारो करवा, रोगादिकने हरवारे; द्रव्य करुणा एवो पहेलो, भावी गुण अनुसरवारे. प्रभु० ॥३॥ भाव करुणा निज आतमपर, कर्म शत्रु संहरवारे; सर्व लोकने आतमज्ञाने, प्रतिबोधी उद्धरवारे. प्रभु० ॥ ४ ॥ जैनधर्म जगमां फेलावे, भाव करुणा थातीरे; निजपर आतम शुद्धि माटे, भाव दया प्रगटातीरे. प्रभु० ॥ ५ ॥ सात नये करुणाने जाणी, कहेणी रहेणीए रहेवुंरे, शत्रु उपर पण करुणा बुद्धि, राखी दुःखने सहेवुंरे. प्रभु० ॥ ६ ॥ ज्ञानथकी करुणा घट प्रगटे, हिंसा बुद्धि विघटेरे; ज्यां करुणा त्यां प्रभु छे निकटे, आतम भवमां न भटकेरे. प्रभु० ॥ ७ ॥ नेमि प्रभुए परणवा जातां, मृगनी करुणा कीधीरे; वीरप्रभुए चंडकौशिकपर, करुणा कीधी प्रसिद्धिरे. प्रभु० ॥ ८ ॥ द्रव्य दयाथी भाव

दया छे, अनंत गुण हितकारीरे; जे जे भावे करवी घटे ते, करशो समय विचारीरे. प्रभु० ॥ ९ ॥ दया विनानो धर्म नहीं छे, धर्म न हिंसा कर्मेरे; रागने द्वेष विना निष्कामी, रहे आवश्यक धर्मेरे. प्रभु० ॥१०॥ अल्प दोषने धर्म महा लाभ, दया कर्म आचरवांरे; स्वाधिकारे तरतमयोगे, कर्म विवेके करवारे. प्रभु० ॥ ११ ॥ प्रभु महावीर श्रद्धा भक्ति, पामी करुणा करशोरे; बुद्धिसागर परमब्रह्मने, शुद्ध बनीने वरशोरे. प्रभु० ॥ १२ ॥

कलश गीत.

गाया गायारे प्रभु महावीर प्रेमे ध्याया॥ चारे भावना पुष्पथी पूज्या, वीर जिनेश्वर गाया; आतम ते महावीर प्रभुजी, घटमां व्यक्त सुहायारे. प्रभु० ॥ १ ॥ चार भावना द्रव्यने भावे, भावंतां प्रभु पाया; आतम सरोखुं जग सहु भास्युं, अनुभव रंग वधायारे. प्रभु० ॥ २ ॥ संवत् ओगणिश सत्योतरमां,

साणंद रही चोमासुं; आश्विन वदि सातम रवि-वारे, पूजा रची सुख भास्युंरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ चारे भावना भावतां घटमां, आनंद अनुभव आयो; प्रभु महावीर देवने भावे, भावना भावी वधायोरे. प्रभु० ॥ ४ ॥ महावीर पट्ट परंपर तपगच्छ, हीर-विजय सूरिरायो; जगगुरु पदवी पाम्या साची, अकबरशाहे वधाव्योरे. प्रभु० ॥ ५ ॥ वाचक सहज सागर गुरु पट्टनो, परंपराए आव्या; श्री रविसागर गुरु महंता, जगमां प्रसिद्धि पायारे. प्रभु० ॥ ६ ॥ तस शिष्य वैयावच्चीशिरोमणि, चारित्री शिर राजा; श्री सुखसागर शांत सुधाकर, क्रियावंत शिर ताजारे. प्रभु० ॥ ७ ॥ गुरु सुखसागर पूर्ण कृपाथी, पूजा रची सुखकारी; भणे गुणे जे सांभळे ते सुख-पामो मंगल भारीरे. प्रभु० ॥ ८ ॥ आत्मोपयोगी भावना न्यारी, आतम शुद्धिकारी; बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धि; शांति लहो नरनारीरे. प्रभु० ॥ ९ ॥ ॐ० करुणा लाभाय ज० य० स्वाहा ॥

दान शीयल तप भावनी पूजा.

प्रथम दान पूजा.

जय जगमां महावीर जिन, सर्व विश्व आधार; परम ब्रह्म तीर्थंकरा, परमेश्वर जयकार. ॥१॥ केवलज्ञानी जिनपति, सुरनर पूजे पाय; वीतराग परमातमा, सेवंतां सुख थाय. ॥ २ ॥ समवसरणमां बेसोने, सत्य जणाव्यो धर्म; दान शीयल तप भावनां, सत्य जणाव्यां मर्म. ॥ ३ ॥ दान शीयल तप भावथी, मुक्ति लहे नरनार; एमां शंसय नहि जरा, समजाव्युं निर्धार. ॥ ४ ॥ ते माटे पूजा रचुं, दान शीयल तपभाव; द्रव्यभावथी पूजतां, प्रगटे गुण सद्भाव. ॥ ५ ॥

प्रथम दान पूजा.

दान समो नहि धर्म जग, दान दियो नरनार; दानथी भावे त्याग छे, दानथी जग उपकार. ॥१॥ दीक्षा ग्रहतां पूर्वे, तीर्थंकर दे दान; दानथी निश्चय

मुक्ति पद, जाखे छे भगवान्. ॥ २ ॥ दान सुपात्रे वापरो, धारी सत्य विवेक; दान विना नहीं सिद्धि छे, दाने समकित टेक. ॥ ३ ॥

सांभळशो मुनि संयम रागे. ए राग.

नमो नमो महावीर उपकारी, जगमांही जयकारी रे. दानस्वरूप प्रकाश्युं साचुं, द्रव्यभाव सुखकारी रे. नमो० ॥ १ ॥ अभय सुपात्र उचित अनुकंपा, कीर्ति पांच ए भाख्यां रे; यथायोग्य सेवे नरनारी, उत्तम फल तस दाख्यां रे. नमो० ॥२॥ अन्न वस्त्रने औषधदाने, परोपकार करातो रे; ज्ञानदान सहु दानमां मोटुं, महिमा न वर्णव्यो जातो रे. नमो० ॥ ३ ॥ भावथी समकित दान अभय छे, चारित्रादिक जाणो रे; जन्ममरणथी छूटे आतम, दान ते भाव प्रमाणो रे. नमो० ॥४॥ ममता टळतां दान ज थातुं, अगियारमो प्राण आपे रे; सर्व प्राणार्पण ज्यां दाने, त्यां प्रभु प्रगटी व्यापे रे. नमो० ॥ ४ ॥ राचे

माचे दान करीने, ते उत्तम पद पामेरे; आतम गुण आतमने आपे, ते ठरतो शिव ठामेरे. नमो० ॥६॥ दानथकी गुण सर्वे प्रगटे, दुर्गुण दोषो टळनारे; वैरीजन पण व्हालां थाता, वांछित मेळा मळतारे. नमो० ॥ ७ ॥ सातनयेने चउ निक्षेपे, दानस्वरूप विचारोरे; सर्व धर्ममां दान छे पहेलुं, त्रिकयोगे ते धारोरे. नमो० ॥ ८ ॥ दानने देतां सर्वे दोधुं, धन धन जगमां दानीरे; दाने तीर्थंकर पद बांधे, समजे धर्मी ज्ञानीरे. नमो० ॥ ९ ॥ संघ चतुर्विध शासन भक्ति, दानने देतां थातीरे; देव गुरुने संतनी सेवा, तरतमयोगे सुहातीरे. नमो० ॥ १० ॥ अरसपरस उपकारक हितकर, दान समुं नहीं कोइरे; प्रभु महावीर देवे प्रकाश्युं, आदरशो शुभ जोइरे. नमो० ॥ ११ ॥ द्रव्यने भावथी धर्मदानथी, दानीनो बलि-हारीरे; बुद्धिसागर दानने आपो, धर्मी नरने नारीरे. नमो० ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं० परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु

निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय दान लाभाय जलं चंदनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं यजामहे स्वाहा॥

द्वितीया शीयल तप पूजा.

शीयल सम नहीं धर्म कोइ, सकल कर्म हरनार. शीयल सागर सम भलुं, अन्य नदी सम धार.॥१॥ शीयल पाळे पाळशुं सहु, पाळया व्रत आचार, शीयलवंताने नमो, पूजो नरने नार. ॥ २ ॥ शीयलव्रतथी मुक्ति छे, स्वर्ग तो सहेजे होय; दुष्ट उपद्रव झट टळे, नडे न निजने कोय. ॥ ३ ॥

श्री जिनभाषित वचन विचारीए—ए राग.

आत्म प्रभु महावीरने पूजीए, ध्याइ जे बहु भाव—भविकजन; प्रभु गुण लेतां प्रभुसम शोभिए, लक्ष्य न चूको एह दाव. भविकजन० शीयलने पाळो साचा भावथी० ॥ १ ॥ सीतादिक सतीयो संभारीए, ध्याइए तीर्थंकर आदि, भविक०॥ शेठ

सुदर्शन जंबुने स्मरो, कामनी वारोरे व्याधि. भविक-शीयल० ॥ १ ॥ धन्य धन्य स्थूलीभद्र महंत जे, शीयलधारीमांही श्रेष्ठ. भविक ॥ कामना घरमां पेसी कामने, पाडयो पटकीरे हेठ. भविक. शीयल० ॥ ३ ॥ विजयने विजयाने धन्य धन्य छे, टाळ्युं कामनुं मूळ; भविक०॥ शीयलवंतां नरने नारीओ, टाळो कामनुं शूळ. भविक. शीयल० ॥ ४ ॥ शीयलधारी जनने पूजीए, वंदीए करीने संग; भविक. संगे रंग प्रगटतो दिलविषे, प्रभुवचने दृढ रंग. भविक. शीयल० ॥५॥ सातनयोने चउ निक्षेपथी, जाणो शीयलनुं रूप; भविक. द्रव्यभावथी सेवे शिव मळे, नासे भव भय धूप. भविक० शीयल० ॥६॥ द्रव्य ते भावनुं कारण जाणवुं, कारणे कार्यनी सिद्धि; भविक०॥ कायिक वीर्यनी रक्षा धारतां, प्रगटे बाह्यनी ऋद्धि. भविक. शीयल० ॥ ७ ॥ पतिव्रता पत्नी व्रत शीयल छे, गृही आश्रम हितकार; भविक. द्रव्य भावथी शीयल छे त्यागीने, दुर्गुणनो परिहार.

भविक. शीयल० ॥८॥ सद्वर्तन चारित्र ते शीयल छे, उत्तम गुणना आचार; भविक. दोष व्यसन दुर्गुणना त्यागथी, शीयल छे सुखकार. भविक. शीयल० ॥ ९ ॥ द्रव्यने भाव शीयल पूजावडे, पूजो महावीर देव; भविक. आत्म महावीर प्रगटे आत्ममां, निज गुण पर्याय सेव. भविक. शीयल० ॥ १० ॥ आतम शुद्ध उपयोगे वर्तीए, भाव शीयल छे ए वेश. भविक. बुद्धिसागर परमानंदनी, प्राप्ति होय हमेश. भविक० शीयल० ॥११॥ ॐ० शीयल लाभाय ज० य० स्वाहा ॥

तृतीया तप पूजा.

तप पूजो भवी भावथी, सेवो ध्यावो वेश;
तपथी प्रगटे सिद्धियो, नासे सघळा क्लेश. ॥ १ ॥
अनेक जातनां तप भलां, द्रव्यभाव व्यवहार; कार्यसिद्धि पुरुषार्थता, दुःख सहन तपसार. ॥ २ ॥
तन मन धनना योगथी, करतां शुभ पुरुषार्थ;
संकट दुःखोने सहे, तप प्रगटे परमार्थ. ॥ ३ ॥

ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने. ए—राग.

द्रव्यभावथी तप तपशो नरनारीओ, कार्यनी सिद्धि तप वण कोइ न होय जो; मोहपरिणति रोधक निश्चय तप भलुं, कर्तव्यो करतां सहेजे तप जोयजो. द्रव्य० ॥ १ ॥ बाहिर तप षड्भेदे सुखकर छे सदा, भव्यजीवो तेनो धरता व्यवहार जो; अभ्यंतर तप षड्भेदे छे निर्मलुं, शुद्धातम कारक ते छे सुखकारजो. द्रव्य. ॥ २ ॥ देवगुरुने संघनी सेवा भक्तिमां, सर्व समर्पण करवुं तप ए वेशजो; निष्कामे निज अधिकारे फर्जो अदा—करतां तप ते पडतां सहेवा कलेशजो. द्रव्य० ॥ ३ ॥ प्राण पडे पण धर्म कर्म नहीं मूकवां, निर्भय निश्चल भावे रहेवुं चित्तजो; सर्व शुभाशुभ भावविषे समभावना, धरवी तप ए जाणो श्रेष्ठ पवित्रजो. द्रव्य० ॥ ४ ॥ दुर्गुण दोषने सर्व व्यसनने टाळवां, उपकारी कर्मो करवां सही दुःख जो; लाभालाभमां मान अने अपमानमां, समताए रहीए ने सहीए भूखजो. द्रव्य० ॥ ५ ॥ रोगी आदि जीवोनां दुःख टाळवा, तनमन

धन शक्तिनो देवो भोगजो; परमार्थो करवामां स्वार्थो होमवा, एवो साचो दुष्कर तपनो योगजो. द्रव्य० ॥ ६ ॥ फलनी इच्छा राख्या वण परमार्थनां, करवां कृत्यो त्यागी भयने द्वेषजो; खेद विना शुभ धर्म प्रवृत्ति धारीए, साध्योपयोगे मुक्तिनो उद्देशजो. द्रव्य० ॥ ७ ॥ नामरूपमां निर्मोही बनी वर्तवुं, सर्व शुभाशुभ इच्छानो करी रोधजो; अर्पाइ जावुं गुरु आदि भक्तिमां, योग्यजनोने देवो घटतो बोधजो. द्रव्य० ॥ ८ ॥ प्रायश्चित्तने विनये, वैयावृत्यथी, स्वाध्याय ध्यानथी प्रकटे आतम शुद्धिजो; देहादिकमां निर्मोही थै वर्तता, प्रगटे आतमनी नव क्षायिक लब्धिजो. द्रव्य० ॥ ९ ॥ मनवाणीने कायाथी तप योग छे, तपथी शुद्ध करो आचार विचारजो; बुद्धिसागर प्रभु महावीर देवनो, भाख्यो तप एवो छे जग सुखकारजो. द्रव्य० ॥ १० ॥

ॐ० तपो लाभाय ज० य० स्वाहा ॥

चोथी भाव पूजा.

भावथकी क्षणवारमां, प्रगटे केवलज्ञान;

क्षणमां भावथी मुक्ति छे, वीर कथे भगवान् ॥ १ ॥ वीरो शाळवी भाव वण, पाम्यो काया क्लेश; भाव रुचि रस प्रेमथी. विघटे रागने द्वेष. ॥ २ ॥ भाव विना किरिया सकल, निष्फळता देनार; हर्षोल्लासे भावना, भावो नरने नार. ॥ ६ ॥

जीरण शेठ भावना भावेरे. महावीर प्रभु घेर आवे—ए राग.

महावीर प्रभु जयकारी, भावे उपदेशे सुखकारी; भावथी सर्व सिद्धि थनारी, भाव दिलमां धरो नर नारीरे; भावनी जगमां बलिहारी, भाव अमृत आनंदकारीरे. भाव. ॥ १ ॥

चक्री भरते भावना भावी, क्षणमां घाति कर्म हठावो; थै केवली मुक्तिने पावी, भाव; भक्तिनी छे चावीरे. भाव० ॥ १ ॥ भावे भावना भावतां ज्ञानी, थया आषाढा मुनि ध्यानी; थया क्षणमां केवल-

ज्ञानी, रही खप नहीं बीजा कशानीरे. भाव० ॥२॥ वांस उपर नाटक करता, इला पुत्रजी ध्यान धरंता; भावथी श्रेणिए संचरंता, एक क्षणमां केवल वरतारे. भाव० ॥ ३ ॥ प्रभु महावीर पारणुं आवे, जीरण शेठ भावना भावे; पूरण घेर दानने पावे, जीरण शेठ स्वर्ग सिधावेरे. भाव० ॥ ४ ॥ भावथी धर्म कोइ न मोटो, भाव रूवण सर्वमां तोटो; थाय व्रत तप मांही गोटो, भाव वण आडंबर खोटोरे. भाव० ॥ ५ ॥ भाव आनंद रस रुचि प्रीति, जेमां द्वेष नहीं खेद भीति; हर्षोल्लासनी उत्तम रीति, उज्वल परिणाम प्रवृत्तिरे० भाव० ॥ ६ ॥ भाववण कोइ मुक्ति न पामे, भाववण नहीं शक्तिथी ज्ञामे; कोइ किरीया न आवे कामे, भाव वण वळतुं नहि दामेरे. भाव० ॥७॥ भाव चढतीरसनी धारा, सेवा भक्तिथी सुखकारा; वहे आनंद अपरंपारा, रस वेधक सिद्धि उदारारे. भाव० ॥ ८ ॥ श्रद्धा प्रीतिवडे भाव आवे, शुष्कज्ञानीन जरू शुं पावे; सत्य आनंद रस उप-

जावे, तेनी घेन खुमारी न जावेरे. भाव० ॥ ९ ॥ जेथी भाव वधे ते करशो, एवुं सांभळी व्रत आचरशो; भावरस ज्यां त्यां मन धरशो, तेथी आतम जीवन वरशोरे. भाव० ॥ १० ॥ शुद्धभाव आनंद रस व्यापे, क्षणमां मुक्तिरस छापे; कर्म अनंत भवनां कापे, बुद्धिसागर आनंद आपेरे. भाव० ॥११॥ ॐ० भाव लाभाय ज० य० स्वाहा ॥

गीत कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो.

दान शीयल तपभाव पूजाए, अतिशय आनंद पायो; द्रव्य पूजाने भाव पूजानो, ए अधिकार रचायोरे. महावीर. ॥ १ ॥ द्रव्य पूजाने भाव पूजानो, गृहस्थ छे अधिकारी; भाव पूजाना अधिकारी मुनि, शुद्धातम सुखकारीरे. महावीर० ॥ २ ॥ दानशीयल तप भावना योगे, मुक्ति लहे नरनारी; सर्व साधारण धर्म छे जगमां, सर्व जीव हितकारी रे.

महावीर० ॥ ३ ॥ एक दिवसमां पूजा रची शुभ, सर्व भवी उपकारी; आश्विन वदि आटम सोमवारे, वर्ते जग जयकारी र. महावीर. ॥ ४ ॥ ओगणिश सत्तोत्तरमां साणंद, चोमासुं कर्युं भावे; संघनी भक्तिए उपदेश, रहेतां आनंद दावेरे. महावीर० ॥ ५ ॥ प्रभु महावीर पट्ट परंपर, तपगच्छ संघना राजा; जगगुरु हीर विजय सूरि शोभे, सर्व गच्छ शिरताजारे. महावीर० ॥ ६ ॥ तपगच्छ सागर पट्ट परंपर, रविसम पूर्ण प्रतापी; रविसागर गुरु प्रेमे प्रणमुं, जगमां कीर्ति व्यापीरे. महावीर. ॥ ७ ॥ तश शिष्य चारित्री शिर शेखर, सुखसागर गुरु धीरा; शांतने दांत महत मुनीश्वर, सर्व मुनिमां वीरारे. महावीर. ॥ ८ ॥ गुरु सुखसागर पूर्ण कृपाथी, आत्मामृतरस पीधो; बुद्धिसागर आनंद मंगल, पामी पूर्ण प्रसिद्धोरे. महावीर० ॥ ९ ॥

अष्टांग योगनी पूजा.

प्रणमुं तीर्थंकर विभु, चोवीशमा जिनराज; परमेश्वर महावीर देव, योगेश्वर सम्राट. ॥ १ ॥ योगनां अंगो आठ छे, तेह प्रकाश्यां वेश; समवसरणमां बेसीने, दीधो शुभ उपदेश. ॥ २ ॥ हठनां अंगो चार छे, राजनां अंगो चार; निश्चय ने व्यवहारथी, समजी ग्रहो नरनार. ॥ ३ ॥ दर्शन ज्ञानने चरणमां, अंगो आठ समाय; पंचाचारने समितिमां, गुप्तिमांही सुहाय. ॥ ४ ॥ स्याद्वादी समकितीने— सम्यक्पणे प्रणमाय; साधननी उपयोगिता, स्वाधिकारे जणाय. ॥ ५ ॥ त्यागी गृहस्थने योगनुं, आराधन सुखकार; असंख्य योग वीरे कह्या, मुक्ति हेतु निर्धार. ॥ ६ ॥ ज्ञानी गुरुगमने लही, जैन शास्त्र अनुसार; योगाष्टक पूजा रचुं, स्वर्गने शिव दातार. ॥७

प्रथम यम योग पूजा.

अहिंसा सत्य यम कथ्या, अस्तेय छे जयकार;

ब्रह्मचर्य संतोषने, आदरतां शिव सार. ॥१॥ पाप कर्मने रोधतो, यम ते संवर जाण; आदरतां आस्रव टळे, प्रगटे अनुभव ज्ञान. ॥२॥ सर्व योगनुं मूळ छे, सर्व योग आधार; प्रथम पगथियुं मुक्तिनुं, पाळो नरने नार. ॥ ३ ॥

देखो गति दैवनीरे. ए राग.

प्रणमो पूजो वीरनेरे, जेने जणाव्यो योग; पंच महाव्रत यमथकीरे, नासे कर्मनो रोग. भवी यम आदरोरे; टाळी दुःखकर भोग. भवी यम आदरोरे. ॥ १ ॥ हिंसा दुःखनी वेलडीरे, अहिंसा सुखखाण; वैर विरोध रहे नहींरे, मुक्तिनुं छे प्रमाण. भवी० ॥ २ ॥ सत्य समो नही धर्म छे रे, सत्य जगत् आधार; सत्यथी धर्मो प्रगटतारे, सत्य ग्रहो धरी प्यार. भवी० ॥ ३ ॥ सर्व प्रकारनी चोरीथीरे, विरमे शांति सुहाय; चोरी करतां प्राणियारे, सुख शांति नहि पाय. भवी० ॥ ४ ॥ द्रव्यथी मैथुन त्यागतांरे, नववाडो धरी वेश; आधि व्याधि उपाधिनेरे, नासे

रोगने क्लेश. भवी० ॥ ५ ॥ भावथकी ब्रह्मचर्य छेरे, मोह परिणति त्यागः शुद्धब्रह्ममां म्हालवुंरे, सर्वयाग शिर याग. भवी० ॥ ६ ॥ मूर्च्छा परिग्रह त्यागथीरे, मन चंचलता जाय; द्रव्य परिग्रह पण टळेरे, आत्मानुभव थाय. भवी० ॥ ७ ॥ भोगोप-भोगथी विरमतांरे, पाप कर्मनो अंत; यमवरे प्रभु पूजीनेरे, मुक्तिवर्या बहु संत. भवी० ॥ ८ ॥ देहनी शुद्धि यमथकीरे; मनवच कायनी शुद्धि; बुद्धिसा-गर आत्मनोरे, प्रगटे चिदानंद ऋद्धि. भवी० ॥९॥

ॐ ०प० यमयोग लाभायज० य० स्वाहा ॥

द्वितीया नियम पूजा.

बीजी नियमनी पूजना, करतां दुःखनो नाश; मन इन्द्रिय वशमां रहे, नियम ते जाणो खास. ॥ १ ॥ जे जे उपाये मन तनु, आतम वश वर्ताय; नियम ते जाणो सही, पाळंतां सुख थाय. ॥ २ ॥ नियम योगने आदरी, पाम्या मुक्ति अनंत; नियम

सिद्धि छे यमथकी, जाखे वीर जदंत. ॥ ३ ॥

सुत सिद्धारथ भूपनोरे, सिद्धारथ भगवान्—ए राग.

शुभ नियम बहु जातनारे, द्रव्यने भावथी जाण; मोह पशुबळ झट टळेरे, आदरतां गुण खाणरे; नियमने पाळशो, टाळो विषय कषायरे, दोषो टाळशो. ॥ १ ॥ बाह्याभ्यंतर तप तपेरे, षट् आवश्यक कर्म; सहज कर्म सदोषीनेरे, करतो साधे धर्मरे. नियम० ॥ २ ॥ घोर अभिग्रह धारतोरे, गुर्वादिकनीरे भक्ति; परोपकारी कार्यमांरे, फोरवतो निज शक्तिरे. नि० ॥३॥ देवगुरुने साधुनांरे, दर्शननी शुभ टेक; आवश्यक सहु फर्जनेरे, धारे धरीने विवेकरे. नियम० ॥ ४ ॥ सकल साधन नियमनांरे, द्रव्यने भावथी जेह, साध्योपयोगे धारतोरे, देह छतां निर्देहरे. नियम० ॥ ५ ॥ द्रव्यभावथी शौचनेरे, धारे मन संतोष; निन्दादिक दुर्गुण त्यजेरे, धरी गुण दृष्टि पोषरे. नियम० ॥ ६ ॥ धर्म कर्म करवां घटेरे,

ते ते करतोरे सर्व; दुष्ट जे कामनी वासनारे, टाळे प्रगटथो गर्वरे. नियम० ॥ ७ ॥ सूरिवाचक मुनि सेवतांरे, करतो हर्षोल्लास; जिन प्रतिमा अवलंबतोरे, प्रभु वचने विश्वासरे. नियम० ॥ ८ ॥ समकितवण हठयोगथीरे, पामे नहि कोइ मुक्ति; सम्यग्ज्ञाने नियमनीरे, पाळे जे शुभ रीतिरे. नियम० ॥९॥ हठयोगी अज्ञानथीरे, निष्कामी नहीं थाय; सम्यग् ज्ञानी नियमनेरे, पाळंतो शिव जायरे. नियम० ॥ १० ॥ द्रव्यक्षेत्रने भावथीरे, सातनयोथीरे जेह; जाणी नियमने आदरेरे, सिद्ध बने छे तेहरे. नियम० ॥ ११ ॥ पाळो नियमना योगनेरे, जेथी आस्रव जाय; बुद्धिसागर आतमारे, परमेश्वर पद पायरे. नियम० ॥१२॥ ॐ ०प० नियमयोगलाजाय ज य० स्वाहा ॥

तृतीया आसन योग पूजा.

आसनथी आरोग्यता, देहनी पुष्टि थाय; रोगादिक दूरे टळे, देहथी धर्म सधाय. ॥ १ ॥ ते

माटे आसन घणां, जेने घटे जे तेह; करतां देहनुं वळ वधे, निमित्तसाधन एह. ॥ २ ॥ आसन जय करीने जनो, सेवा भक्ति योग; साधे पंचाचारने, टाळे कर्मना रोग. ॥ ३ ॥

इडर आंबा आवलीरे, ए राग.

आसन जयथी योगनीरे, भूमि शुद्धि थाय; देह आरोग्यता संपजेरे, वायु रोगो जायरे; भविजन !!! आसन जयने साध्य, तेवडे प्रभु आराध्यरे. भवि० ॥ १ ॥ गोदुहिकासनथी प्रभुरे, वीरजिने कर्यु ध्यान; पर्यंकासन बेसीनेरे, वीर लह्या निर्वाणरे. भवि० ॥ २ ॥ काउसग्गना आसनेरे, कीधां अनेके ध्यान; पद्मासनथी साधुओरे, लह्या घणा निर्वाणरे. भवि० ॥ ३ ॥ योग वहन देव वंदनेरे, आसननो उपयोग; प्रतिक्रमणने मंत्रनीरे, साधनामांहि योग्यरे. भवि० ॥ ४ ॥ कायिक आसन जय करेरे, वायु रोगो जाय; अनेक रोगो न उपजेरे, धर्म साधनमां सहायरे. भवि०

॥ ५ ॥ भावथी आसन जाणवुंरे, आतम स्थिर परीणाम; आशावण मन ध्येयमांरे, वर्त्तता स्थिर धामरे. भवि० ॥ ६ ॥ मननी चंचलता मटेरे, ठरी रहे स्थिर ठाम, भाव आसन ते जाणवुंरे, निश्चलता निष्कामरे० भवि० ॥ ७ ॥ पद्मासन बेठा प्रभुरे, वंदो पूजो भव्य; बुद्धिसागर योगनुंरे, साधो झट कर्त्तव्यरे. भवि० ॥८॥ ॐ ०प० आसन योगलाभाय ज० य० स्वाहा.

चतुर्थ प्राणायाम पूजा.

प्राणायामथी प्राणनो, मन तनु शुद्धि थाय; अष्टधा प्राणायामना, भेद कह्या गुणदाय. ॥ १ ॥ जैन शास्त्रमां भाखिया, ते रीते नरनार; प्राणायामने साधीने, मनोजयने वरनार, ॥ २ ॥ द्रव्यभावथी जाणतां, करतां प्राणायाम; सहज योगनी पुष्टिनुं, साधन छे परिणाम. ॥ ३ ॥

कुंबखडानी देशी.

प्राणायामनी साधनारे, करशो नरने नार; प्रभु

पद पूजीए. रेचक पूरक कुंभकेरे, प्राणनी शुद्धि थनार. प्रभु पद पूजीए, पूजीए जिनवर पूजीएरे, आनंद प्रगटे अपार. प्रभु पद० ॥ १ ॥ प्राणायामना ज्ञानथीरे, शुभ अशुभ जणाय, प्रभु ॥ इडा पिंगला नाडीयोरे, सुषमणा बोध थाय. प्रभु० ॥ २ ॥ अष्टधा प्राणायामथीरे, टळता रोग अनेक. प्रभु; वायु अने पित्त कफतणारे. टळता महाउद्रेक. प्रभु० ॥ ३ ॥ प्राणायामना जयथकीरे, प्रगटे बाहिर सिद्धि. प्रभु ॥ वीर्यादिक रक्षण थतुंरे, आयुष्य बलनी ऋद्धि. प्रभु० ॥ ४ ॥ मन तनु वाणी शक्तियोरे, विकसे सात्विक बुद्धि. प्रभु ॥ बाह्य शक्ति कारणपणेरे, आतम शक्तिनी वृद्धि. प्रभु० ॥ ५ ॥ भाव प्राणायाम साधनारे, सम्यग् ज्ञानीने होय. प्रभु ॥ दुष्ट संकल्प विकल्पनोरे; रेच करे सुख जोय. प्रभु० ॥६॥ धर्म शुकल ध्याने पूरतोरे, पूरक प्राणायाम. प्रभु ॥ शुद्ध स्वभावे स्थिरतारे. कुंभकना परीणाम. प्रभु० ॥ ७ ॥ अशुद्धनुं रेचन कररे, शुद्ध पूरण

पुरुषार्थ. प्रभु ॥ निज गुणथी पूरण थवुंरे, रेचकनुं परमार्थ. प्रभु० ॥ ८ ॥ अष्ट कर्मने आत्मथीरे, कर्षवां रेचक भाव. प्रभु ॥ उपशम क्षयोपशम क्षयेरे, पूरावुं पूरक दाव. प्रभु० ॥ ९ ॥ क्षायिकभावे आत्ममांरे, स्थिरता रमणता जेह. प्रभु ॥ कुंभक भावथी जाणीनेरे, आदरशो धरी स्नेह. प्रभु० ॥ १० ॥ भाव प्राणायाम योगथीरे, क्षणमां केवल सिद्धि. प्रभु ॥ द्रव्यथकी भाव जाणवोरे, अनंत गुण प्रद ऋद्धि. प्रभु० ॥ ११ ॥ द्रव्य ते भावनो हेतु छेरे, कारणे कारज थाय, प्रभु ॥ बुद्धिसागर आत्मनीरे, शुद्धता हेते उपाय. प्रभु० ॥ १२ ॥ ॐ ०प० प्राणायाम योगलाभाय ज० य० स्वाहा ॥

पंचम प्रत्याहार योग पूजा.

बाहिर जाती वृत्तियो, रोधवी प्रत्याहार; अनासक्ति विषयोविषे, राग रीस परिहार. ॥ १ ॥
त्रेवीश विषयोमां थतो, राग रीस परिणाम; तेथी विमुख थवुं भलुं, निर्विषयी मन ठाम. ॥ २ ॥

सकल शुभाशुभ वृत्तियो, रोकवी प्रत्याहार; धारी समकितोजनो, पामे जवोदधिपार. ॥ ३ ॥

तेजे तरणीथी वडोरे, ए राग.

प्रभु महावीर पूजीएरे, वंदीए धरी भाव. प्रत्याहार प्रकाशियोरे, जेथी वधे गुणदावहो. भविका० प्रत्याहारने धारशोरे, मननी मलीनता टाळशोरे. शुद्ध थशो नरनार० ॥ १ ॥ मोहनी वृत्तियो बाह्यमांरे, जातां रोकवी योग; बाहिर वृत्ति जीवम्हारे, पामे शोकने रोगहो. ॥ भविका० ॥ २ ॥ बाह्य परिणति वृत्तिएरे, गुणश्रेणि न चढाय; अंतरंग परिणामथीरे, क्षायिक गुणमां जवाय हो. भविका० ॥ ३ ॥ उत्तरोत्तर उज्जवलपणेरे, ज्ञानादिक परिणाम; उत्तरोत्तर गुणस्थानकोरे, पामे मन विश्राम हो. जविका० ॥ ४ ॥ शुभ अशुभता नहीं रहेरे, दृश्य अदृश्य मझार; प्रत्याहारनी सिद्धतारे, निजगुण निजमां धार हो. भविका० ॥ ५ ॥ दुर्गुण दोषो

सहु टळेरे, नासे व्यसनो दुष्ट; प्रत्याहारनी सिद्धिएरे, आतम निर्मल पुष्ट हो. भविका० ॥ ६ ॥ रात्री दिवस क्षण क्षण विषेरे, करतां कर्माचार; मन वाणी काय प्रवृत्तिमांरे, धरशो प्रत्याहार हो० भविका० ॥ ७ ॥ सम्यग्ज्ञानीने सहजथीरे, थातो प्रत्याहार; योगपणे घट परिणमेरे, प्रारब्धनो व्यवहार हो. भविका० ॥ ८ ॥ सम्यग्ज्ञानोपयोगथीरे, सुख दुःखमां समभाव; निजगुण निजमां खेंचतोरे, एवो आविर्भाव हो. भविका० ॥ ९ ॥ प्रत्याहारे जे परिणमेरे, ग्रहे न छंद्म जेह; बुद्धिसागर आत्मनीरे, पूर्णता पामे तेह हो० भविका० ॥ १० ॥ ॐ ०प० प्रत्याहार योगलाभाय ज० य० स्वाहा ॥

छठी धारणायोग पूजा.

दुहा.

अरिहंत महावीर धारणा, धारो नरने नार.
शब्दथी अर्थनी धारणा, धरतां शक्ति अपार ॥ १ ॥
श्रद्धा प्रेमथी धारणा, धरता जे निष्काम; शुद्धि करी

निज हृदयनी, पांमे शिवपुर ठाम ॥ २ ॥ नव पदनी दिल धारणा, धरतां केवलज्ञान; बाह्यांतर त्राटक भळे, धारणमां गुणखाण. ॥ ३ ॥

सनेही संत ए गिरि सेवो. ए राग.

द्रव्य भावथी धारणा धरीए, प्रभु महावीर दिलमां स्मरीए. अन्य परिणतिने परिहरिए, निज आतम शुद्धता करीए; प्रभु महावीरने दिल धरीए, एवी धारणाए प्रभु वरीए. प्रभु० ॥ १ ॥ प्रभु ध्येयनी धारणा धारो, षट चक्रोमां निर्धारो; प्रभु धारणमां मन वाळो, तेथी घटमां थतो उजियारो. प्रभु० ॥ २ ॥ बाह्य आंतर त्राटक करीए, दुर्ध्यानने झट परिहरीए; उपयोगे रहीए फरीए, प्रभुमय थै प्रभुने वरीए. प्रभु० ॥ ३ ॥ प्रभु महावीरमां मन राखो, मुखे महावीर नामने भाखो; मोह शत्रुने मारी नाखो, आतम आनंद रस चाखो. प्रभु० ॥ ४ ॥ प्रभु महावीरमय थै जाशो, बीजुं सघळुं भूली जाशो;

सिद्धियोमां नहीं लोभाशो, सत्य धर्म कमाणी कमाशो. प्रभु० ॥ ५ ॥ खातां पीतां हरतां फरतां, उपयोगे कर्मो करतां; प्रभुनी घट धारणा धरतां, नरनारी संयम वरतां. प्रभु० ॥ ६ ॥ पहेली साकार धारणा आवे, पछी निराकार सुहावे; प्रभु नवधा भक्ति प्रभावे, भक्त योगी शिवपद पावे. प्रभु० ॥७॥ सर्व जापो धारणा माटे, वळो वहेला शिवपुर वाटे; मुक्ति मळे छे शिरने साटे, मळे धारणा ज्ञानीना हाटे. प्रभु० ॥ ८ ॥ मनथी मोह दूर हठावो, शुद्ध आतम महावीर भावो; धारणाए वीर वधावो, भाव अनहद तान वजावो. प्रभु० ॥ ९ ॥ गुणस्थानक चढवा निसरणी, धारणा भवसागर तरणी; बुद्धि-सागर अमृत सरणी, धरो मनमां धारण करणी० ॥ प्रभु० ॥१०॥ ॐ ०प० धारणा योगलाभाय. ज० य० स्वाहा ॥

सप्तमी ध्यानयोग पूजा.

धर्म ध्यानने शुक्लथी, मुक्ति सहेजे थाय; निरा-

कार साकार बे, ध्यानथी कर्मो जाय. ॥ १ ॥ अरिहंत आदि ध्येयमां, मन एकाग्र प्रधान; थातां क्षायिकभावथी, प्रगटे केवलज्ञान ॥ २ ॥ चार प्रकारे ध्यान छे, आत्म शुद्धि करनार; ध्यानथी प्रभुमय थै जतां, प्रगटे प्रभु निर्धार. ॥ ३ ॥

सांभळशो मुनि संयम रागे उपशम श्रेणि चढियारे. ए राग.

धन्य महावीर जिन उपकारी, जगमांही जयकारीरे; ध्यान धरीने केवल पामी, मुक्तिवर्या सुखकारीरे. धन्य० ॥१॥ सर्व प्रकारनां ध्यान प्रकाश्यां, उपदेश्यां नरनारीरे; आर्त रौद्रने धर्म शुक्ल चउ, समजो गुरुगम धारीरे. धन्य० ॥ २ ॥ पिंडस्थने पदस्थने ध्यावो, रूपस्थथी लय लावोरे; रुपातीतना ध्याने केवल–ज्ञानने क्षणमां पावोरे. धन्य० ॥ ३ ॥ ध्येयमां अंतर्मुहूर्त ध्यानज. थातां जीवन्मुक्तिरे; आत्मानंद-रसोदधि प्रगटे, विषयोमां न आसक्तिरे. धन्य० ॥ ४ ॥ अंतर्मुहूरत ध्यान प्रतीते, आत्म समाधि प्रगटेरे; खातां पीतां कार्य करंतां, शुद्ध

स्वरूप न विघटेरे. धन्य० ॥ ५ ॥ श्रुतज्ञानी ध्याने अधिकारी, आत्मार्थी अविकारीरे; आतमरंगी ध्यानी संगी, निःसंगी नरनारीरे. धन्य० ॥ ६ ॥ गुरुकुलवासी गुरुना भक्तो, सर्व स्वार्पणकारीरे; लोकादि संज्ञा परिहारो, ध्यानी बने गुणधारीरे. धन्य० ॥ ७ ॥ धर्म शुक्ल बे ध्यावना भावो, अशुभ ध्यान हठावोरे; शुद्धातम उपयोग जमावो, परमातम प्रगटावोरे. धन्य० ॥८॥ अशुभ ध्यान ठाण त्रेसठ वारो, शुद्ध स्वरूप विचारोरे; मानव भवनी क्षण नहि हारो, आतम गुणने सुधारोरे. धन्य० ॥ ९ ॥ साकार ध्यान निराकार ध्यान बे, अनुक्रमथी भवी ध्यावोरे; बुद्धिसागर आतमशुद्धि, करवा लगनी लगावोरे. धन्य० ॥१०॥ ॐ प० ध्यान योगाराधना० ज० य० स्वाहा ॥

अष्टमी समाधियोग पूजा.

ध्यानतणा अभ्यासथी, प्रगटे आतम समाधि;
राग द्वेषने कामनी, होय नहीं मन आधि ॥ १ ॥

आतममां मन स्थिर थतां, शुद्ध समाधि थाय;
मोहात्मक संकल्पने, विकल्प उपशमी जाय ॥ २ ॥
ज्ञानोपयोगे सहज छे, आत्म समाधि व्यक्त. परमा-
नंद रस स्वादथी, बाहिर नहि आसक्ति ॥ ३ ॥

चौद लोकके पार कहावे ए राग—वा.
जिनपद जगमां जाचुं जाणो—ए राग.

सहज समाधियोगे महावीर, केवलज्ञानने पा-म्याजी. अप्रमत्त दशा प्रगटावी, घाती कर्मने वाम्या; जिनवर नमीएजी, त्यागी मोह स्वभाव, निज गुण रमीएजी. ॥ १ ॥ उपशमने क्षय क्षयोप-शमथी, आत्म समाधि प्रकाशेजी; मोहाभावे सहज समाधि, आतम आनंद भासे. जिनवर० ॥ २ ॥ ब्रह्मरन्ध्रमां प्राण चढंतां. हठ समाधि कथातीजी; तेनी किंमत कोडी सरखी, शुद्धोपयोगे जणाती. जिनवर० ॥ ३ ॥ द्रव्य समाधि ज्ञान विनानी, शाता वेदनी भोगेजो; भाव समाधि सहजानंदे, आतमना

उपयोगे. जिनवर० ॥ ४ ॥ द्रव्य समाधिकर्मने करवां, भाव समाधि पामोजो; शुद्धोपयोग छे सहज समाधि, आतम गुण विश्रामो. जिनवर० ॥ ५ ॥ शुभ उपयोग छे द्रव्य समाधि, शुभ कषाय प्रणामेजी; शुभथी शुद्ध उपयोगमां रमतां, आतम मुक्ति पामे. जिनवर० ॥ ६ ॥ यावत् रागने द्वेष विना मन, आतम निज उपयोगीजो; तावत् शुद्ध समाधि वर्ते, आतम आनंद भोगी. जिनवर० ॥ ७ उदये आव्यां कर्म शुभाशुभ, ज्ञानी त्यां समभावीजी; आतमनो उपयोग न चूके, देतो मोह हठावो. जिनवर० ॥ ८ ॥ निर्विकल्प समाधिमांहो, मोह विचार न आवेजी; मोह विकल्पो प्रगटे त्यारे, सविकल्प कहावे. जिनवर० ॥ ९ ॥ शुद्धातम महावीर प्रभु एक, स्थिर उपयोगे प्रकाशेजी; एकता लीनता समता प्रगटे, मोहनुं द्वैत प्रणाशे. जिनवर० ॥ १० ॥ मिथ्या ज्ञानीने जे समाधि, मिथ्याभावे ते कहीएजी; भव मुक्तिमां समपरिणामे, केवल ज्ञानने लहीए. जिनवर० ॥ ११ ॥ कर्म योगीने

शक्तने ज्ञानी, शुद्ध समाधि पामेजी; असंख्य योग थता अहीं भेळा, घाती कर्म विरामे. जिनवर० ॥ १२ ॥ ज्ञानानंदे शुद्ध समाधि, पामे केवल प्रगटेजी; बुद्धिसागर आनंद मंगल, पामे माया विघटे. जिनवर० ॥ १३ ॥

कलश गीत.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो.

अष्टांग योगनी पूजा रचीने, वीर जिनेश्वर ध्यायो; अष्टांग योगना भाव पूजनथी, आतम शुद्धि पायोरे. महावीर. ॥ १ ॥ सम्यग् ज्ञानीने आठे अंगो, प्रणमे सम्यग् भावे; मिथ्यात्वीने मिथ्या स्वरूपे, निज दृष्टिना स्वभावेरे. महावीर० ॥ २ ॥ जैनागम अनुसारे अंगो, हेमसूरिए प्रकाश्यां; ज्ञानी गुरुगमथी ग्रहतां ए, सम्यग्भावे विकास्यांरे. महावीर ॥ ३ ॥ देशथकी गृही छे अधिकारी, सर्वथकी मुनि त्यागी; गुरुगमथी अधिकार लहीने, थाशो योगना रागीरे. महावीर० ॥ ४ ॥ पाशव आसुरी

वलने हणवा, यंागांगो हितकारी; सत्ताए आतम परमातम, व्यक्त करे निर्धारी रे. महावीर० ॥ ४ ॥ तिरोभावीय ज्ञानादि गुण, आविर्भावने माटे; योजे निजगुणमां ते योगो, धूर छे तेमां आठेरे. महावीर० ॥ ६ ॥ आतम गुणने आतममां जे, योजे ते योग कहेवो; ज्ञानादि शक्तियो योगज, सम्यग अर्थने लेवोरे. महावीर० ॥ ७ ॥ अनंत ज्ञानानंदनी प्राप्ति-कारक योग ते जाणो; सात नयोथी योगने जाणी, निश्चय अनुभव आणोरे. महावीर. ॥ ८ ॥ निमित्त उपादान बे भेदे, द्रव्यने भावथी जाणी; शुद्धातम प्रगटावो संतो, एवी वीरनी वाणी रे. महावीर. ॥ ९ ॥ म्हारेतो गुरु सेवा पसाये, सम्यग् अनुभव आव्यो; नय निक्षेपादिकथी तत्त्वो, जाणी स्याद्वाद भाव्योरे. महावीर० ॥ १० ॥ प्रभु महावीर पट्ट परंपर, श्वेतांबर मुनिराया, तपगच्छ जगगुरु हीर विजय सूरि, अकबरे पूज्या पायारे. महावीर० ॥ ११ ॥ तस पट्टसागर शाख परंपर, रविसागर गुरुराया; तस शिष्य संत शिरोमणि गुरुवर, सुख

सागर नमुं पायारे. महावीर० ॥ १२ ॥ ओगणिश सत्तोत्तर आश्विननी, वदि दशमी बुधवारे; पूजा रचीने पूरण कीधी, लाभ घटिका सवारेरे. महावीर० ॥ १३ ॥ संघनी श्रद्धा प्रीति भक्ति, आग्रहथी चोमासुं; सानंद शहेरे कीधुं भावे, धर्म स्वरूप प्रकाश्युंरे. महावीर० ॥ १४ ॥ योगनी पूजा भणे ने भणे ते, पामो उत्तम शक्ति; बुद्धिसागर संघमां मंगल, प्रगटो ऋद्धि भक्तिरे. महावीर. ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं० समाधि योगलाभाय ज० य० स्वाहा ॥

अथ नवधा क्रिया भक्ति पूजा.

परम प्रभु परमातमा, चोवीशमा जिनराज; वर्धमान महावीर नमुं, विश्वपति शिरताज. ॥ १ ॥ नवधा भक्ति पूजना, पूज्यनो करतां सार; पूजक पूज्यपणुं वरे, पूज्य बनो निर्धार. ॥ २ ॥ नवधा भक्तिनी भलो, पूजा शिवदातार; आतम ते परमातमा, व्यक्त बने नरनार. ॥ ३ ॥ भक्तिनी पूजा रचुं, हृदय शुद्धि करनार; शुद्ध हृदयथी ज्ञाननी, प्राप्ति छे जयकार. ॥ ४ ॥ देवगुरुने धर्मनी, संघनी भक्ति वेश; करतां मुक्ति थाय छे, नासे सघळा क्लेश. ॥ ५ ॥

प्रथम श्रवण क्रिया पूजा.

प्रभु महावीर देवनां, वचन सुणो नरनार; गुरु संत उपदशने, सुणतां ज्ञान थनार. ॥ १ ॥ श्रवणथकी श्रुत ज्ञान छे, श्रुति ते हेत कथाय; प्रभु वचनामृत सांभळे, सम्यग्ज्ञान सुहाय. ॥ २ ॥ ब्राह्मी सुंदरी मुखथको, सुणी वचनामृत सार;

बाहुबली जिन केवली, बन्या धन्य अवतार. ॥ ३ ॥ श्रवण करे जे शास्त्रने. ते पामे श्रुतज्ञान. माटे श्रवण क्रियावडे, पूजो प्रभु भगवान्. ॥ ४ ॥

राग केदारो अथवा आशावरी.

प्रभु महावीरनां वचन सुणो भवी, जेथी प्रगटे ज्ञानरे; रोहिणीयो जेम स्वर्गने पाम्यो, सफल करो निज कानरे. प्रभु० ॥ १ ॥ प्रभु गुरु वचनामृत सुणतां जे, धारे मन बहुरागरे; समकिती ते मिथ्यात्वने छंडे, पामे साचो त्यागरे. प्रभु० ॥ २ ॥ इन्द्रभूति आदि गणधर मुनिवर, सांभळी प्रभु उपदेशरे, प्रतिबुध्या चारित्र धरी शुभ, टाळ्या कर्मना कलेशरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ चंड कोशियो स्वर्गने पाम्यो, श्रवण करी प्रभु बोधरे; श्रवण क्रियावण मुक्ति नहीं छे, श्रवणे कर्मनो रोधरे. प्रभु० ॥ ४ ॥ विनय अने बहुमान सुरागे, सांभळो प्रभुनी वाणीरे; सर्व प्रमादो दूर करीने, सांभळो थाशो

ज्ञानीरे. प्रभु० ॥ ५ ॥ गुरुसंत मुखथी प्रभु वाणीने, सांभळतां बे ज्ञानरे; वांचन करतां अनंतगणुं फळ, श्रवण करे श्रुति मानरे. प्रभु० ॥ ६ ॥ मिथ्या कषायो निंदा न सुणशो, सुणशो धर्मनो बोधरे; तन मन धनने तुच्छ गणीने, सुणतां मोहनो रोधरे. प्रभु० ॥ ७ ॥ जांगुली आदि मंत्र श्रवणथी, सर्पा दिक विष जायरे; गुर्वादिकनो बोध सुणंतां, मोहनुं विष पलायरे. ॥ ८ ॥ मोरली सुणतां नाग हरण जेम, भूले तनुनुं भानरे; अर्पाइ जातां तेम भव्यो, श्रवण करो जिनवाणरे. प्रभु० ॥ ९ ॥ प्रतिदिन क्षण क्षण गुर्वादिकनी, सेवा करी सुणो धर्मरे; बुद्धिसागर आत्म महोदय, पामो ज्ञानने शर्मरे. प्रभु० ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय, श्रवण पूजार्थं जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा—

अथ द्वितीया कीर्तन क्रिया पूजा.

दुहा.

अर्हत् सिद्धने सूरिनो, कीर्ति करो नरनार; वाचक साधु आदि नव, पद स्तवतां सुखकार. ॥ १ ॥ गुर्वादिक गुण गावतां, खरे अनंता कर्म; अनंत गुण प्रगटे दिले, अनंत प्रगटे शर्म. ॥ २ ॥ देव गुरुने धर्मनी, कीर्ति करी नरनार; पूज्यपणुं पामे सही, विघटे दुःख अपार. ॥३॥ कीर्तन पूजाथी प्रभु. पूजो धरी मन प्यार; द्रव्यथी भावथी सिद्धि छे, आत्म शुद्धि निर्धार. ॥ ४ ॥

न्हवणनो पूजारे निर्मल आतमारे. ए राग.

कीर्तन पूजारे करो जिनराजनीरे, भाव धरी नरनार; अरिहंत महावीर कीर्ति गावतांरे, पामो भवोदधि पार. कीर्तन० ॥ १ ॥ सिद्धने सूरिवाचक साधुनुंरे, कीर्तन गुणनुं वेश; गुरु गुणीजननुं कीर्तन मन थकोरे, करतां राग न द्वेष. कीर्तन० ॥ २ ॥ तपसी पन्नरसे त्रणने बोधियारे, गोतम लब्धि प्रयोग;

अनुमोदन कीर्तनथी ते वर्यारे, केवल ज्ञाननो योग; कीर्तन० ॥ ३ ॥ कीर्तन करतां रावणे बांधियुंरे, श्री तीर्थंकर नाम; नामने रूपनो मोह त्यजी घणारे, पाम्या शिवपुर धाम. कीर्तन० ॥ ४ ॥ अपकीर्ति अपयश अवगुण टळेरे, दोषनी दृष्टि पलाय, गुणने गुणीनो एकता झट थतीरे, कर्मनो भेद हणाय. कीर्तन० ॥ ५ ॥ गुणनी स्तवनाथी समकित मळेरे, प्रगटे सम्यग् ज्ञान, क्षपक श्रेणिए चारित्री चढेरे, थाय न मान अमान. कीर्तन० ॥ ६ ॥ कीर्तन करतां क्षणमां केवलीरे, असंख्य थयां नरनार; गुणनी स्तुति अवगुण ढांकवारे, कीर्तन पूजा सार. कीर्तन० ॥ ७ ॥ सत्यादिक गुण वृन्दनी कीर्तनारे, प्रभुनी पूजा एह; शुद्धातम करवा प्रभु प्रार्थनारे, स्तवना छे गुण गेह. कीर्तन० ॥ ८ ॥ द्रव्यने भावथी प्रभु कीर्तन करोरे, प्रभुने गावो भव्य; बुद्धिसागर शुद्धातम प्रभुरे, भक्तिनुं कर्तव्य. कीर्तन० ॥ ९ ॥

ॐ ०प० कीर्तन पूजार्थं ज० य० स्वाहा ॥

तृतीया सेवन क्रिया पूजा.

अरिहंत आदिनी करो, द्रव्यभावथी सेव; सेवक बनो उपयोगथी, सेव्य बनो स्वयमेव. ॥ १ ॥ सात नयोथी सेवना, आत्मशुद्धिने हेत; गुर्वादिकनी सेवना, आत्म मुक्ति संकेत. ॥ २ ॥ श्रवण अने कीर्तनथकी, सेवाभाव सुहाय; सेवाथी सहु सिद्धियो, प्रगटंती घटमांह्य. ॥ ३ ॥

पुख्खलवइ विजयेजयोरे. ए राग.

प्रभु महावीर सेवीएरे, श्रद्धा प्रीति धरी मान; विनये वैयावृत्यथीरे, पामो केवल ज्ञानरे; भविजन !!! सेवा करो धरी भाव, लेजो नरभव ल्हावरे. भविजन० ॥ १ ॥ स्वार्पण करी गुरु सेवीएरे, रही अंतर निष्काम; सेवा फल नहीं इच्छीएरे, अधिकारे करो कामरे. भविजन० ॥ २ ॥ तमोरेजोगुण सेवनारे, त्यागी सात्विक सेव; करतां शुद्ध उपयोगथीरे, बनो प्रभु जिनदेवरे. भविजन० ॥ ३ ॥ संघ चतुर्विध सेवनारे, आतम सेव ते जाण; गुणीजन दश सेवा

थकीरे, प्रगटे आतम ज्ञानरे. भविजन० ॥ ४ ॥ सेवा योग छे आद्यमांरे, सकल धर्मनुं बीज; खेद रहित निर्भय दशारे, अद्वेष सात्विक रीझरे. भविजन. ॥ ५ ॥ संशयने निंदा त्यजीरे, त्यागो सर्व आसक्ति; उपकारी जीवन धरीरे, पामो प्रभुपद व्यक्तरे. भविजन० ॥ ६ ॥ प्रभुमय थइ प्रभु सेवीएरे, दया सत्य धरी टेक; संकटमां धीरज धरोरे, चूको न धर्म विवेकरे. भविजन० ॥ ७ ॥ दुःख पडे नहीं शोचीएरे, सुख थतां नहीं हर्ष; मानामानमां समपणुंरे, त्यागो चित्त अमर्षरे. भविजन० ॥ ८ ॥ सत्ताए सहु जीवनेरे, सिद्धसमागणो चित्त; चारे भावना भावीनेरे, सेवा करतां पवित्ररे. भविजन० ॥ ९ ॥ दीन दरिद्री दुःखीनीरे, धर्म हीणानी सेव; फर्ज अदा करो सर्वदारे, त्यागी दुर्गुण टेवरे. भविजन० ॥ १० ॥ चढते भावे सेवनारे, करतां आतम शुद्धि; बुद्धिसागर मंगलोरे, पगले पगले समृद्धिरे. भविजन० ॥ ११ ॥

ॐ ०प० सेवन क्रियालाभार्थं ज० य० स्वाहा.

चतुर्थी वचन क्रिया पूजा.

वाचिक शक्तिए पूजीए, प्रभु महावीर जिणंद; वीरे वाचिक शक्तिथी, टाळ्या भवना फंद ॥ १ ॥ प्रभु वाणीने पूजीए, सेवीए सुखकार; प्रभु वचन समज्याथकी, पामो भवनो पार. ॥ २ ॥ सत्य असत्य जे वचन छे, समजो तेना भेद; निश्चयने व्यवहारथी, समजे नासे खेद. ॥ ३ ॥

सुमतिनाथ गुणशुं मलीजी. ए राग.

सत्य वचनने आदरोजो, भावधरी नरनार; धर्म संघ परमार्थमांजो, करवो वचन व्यापार; महावीर प्रभुए, सत्य वचन कथ्यां सार. ॥ १ ॥ निजपर उन्नति काजमांजो, देवा धर्मोपदेश; सदुपयोगे वचननेजी, वापरशो सही क्लेश. महावीर० ॥ २ ॥ जूठां वचनो नहीं वदोजो, सत्यवचननो प्रकाश; सत्य असत्यना भेदनेजो, जाणीने करशो विकास. महावीर० ॥ ३ ॥ मृत्यु आदि भय त्यजीजी,

क्रोधादिक त्यजी दोष; हिंसादिक अव्रत तजीजी, सत्य वचन करो पोष. महावीर० ॥ ४ ॥ स्वाधिकारे सत्य वचनने, वदतां धर्म अपार; सापेक्षाए जाणशोजी, सत्यासत्य प्रकार. महावीर० ॥ ५ ॥ सत्यअसत्य वचन सकळजी, देश कालादिसापेक्ष; अधिकार समज्या विनाजी, वचन सकल निरपेक्ष. महावीर० ॥ ६ ॥ अनेकनयनी दृष्टिएजी, वदो सापेक्ष वचनः वचन भलामां वापरोजी, आशय शुभ धरो मन्न. महावीर० ॥ ७ ॥ परमार्थे उपयोगथीजी, सर्वदा वचन व्यापार; करशो निर्भयता धरीजी, करशो जग उपकार. महावीर० ॥ ८ ॥ द्रव्य भावथी देवगुरुनी–धर्मनी सेवा काज; बुद्धिसागर सत्य वचनने, वदतां सुख साम्राज्य. महावीर० ॥ ९ ॥

ॐ ०प० वचनक्रिया लाभाय ज० य० स्वाहा.

पंचमी वन्दन क्रिया पूजा.

अरिहंतादिक वंदतां, भावथी मुक्ति थाय;

नवपद्ने वंद्न करे, अपकीर्ति दुःख जाय. ॥ १ ॥ द्रव्यने भावथी वांदीए, गुरुने धरी बहुप्रेम; ज्ञान चरण आनंद गुण, प्रगटे योगने क्षेम. ॥ २ ॥ सात्विक वंदन श्रेष्ठ छे, मोहनी करे चकचूर; वंदक वंद्यपणुं वरे, सुख पामे भरपूर ॥ ३ ॥

संभव जिनवर वीनति. अवधारो गुण

ज्ञातारे—ए राग.

प्रभु महावीर वंदना, द्रव्यने भावथी होशोरे; मारे एक तुं शरण छे, म्हारो एक भरोसोरे. प्रभु० ॥ १ ॥ वन्दन आवश्यक क्रिया, केवल ज्ञाने प्रकाशीरे; देवगुरुने वंदतां, नासे सकल उदासीरे. प्रभु० ॥ २ ॥ सातनये छे वंदना, चार निक्षेप धारोरे; शुद्धोपयोगे घटविषे, प्रगटे छे उजियारोरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ श्रद्धा प्रीति उल्लासथी, विनयने बहुमानेरे; गुर्वादिकने वंदतां; भक्ती शोभे

ज्ञानेरे. प्रभु० ॥४॥ एकवार जो भावथी, प्रभुने वंदन थावेरे; तो क्षणमां घाती हणी, केवलघट प्रगटावेरे. प्रभु० ॥५॥ प्रभु महावीरमय बनी, आतम महावीर जाणोरे, शुद्धोपयोगे वंदतां, आतम केवल ज्ञानी रे. प्रभु० ॥६॥ अरिहंतादिक वंदना, आतम प्रति ते होवेरे; आपो आपने वंदना, आपो आपने जोवेरे. प्रभु० ॥ ७ ॥ व्यवहार निश्चय पूज्यने, पूर्ण प्रेमे वधावोरे; गीतार्थादिक संतने, वंदन करी ल्यो ल्हावोरे. प्रभु० ॥ ८ ॥ रोमराजी विकसे घणी, हैडे हर्ष न मावेरे; आनंद अश्रु आंखमां, गद गद वाणी सुहावेरे प्रभु० ॥ ९ ॥ पूज्यथी एक स्वरूपता, आनंदोदधि प्रगटेरे; ध्येय ध्यातानी एकता, थातां कर्मो विघटेरे. प्रभु० ॥ १० ॥ एकवार महावीरने, अमृत वंदन थावेरे बुद्धिसागर आतमा, सहजानंदने गावेरे. प्रभु० ॥११॥

ॐ ०प० वन्दन क्रियालाभाय ज० य० स्वाहा.

षष्ठी ध्यान क्रिया.

आत्म शुद्धि जेथी थती, ते छे उज्वल ध्यान; धर्म शुक्ल बे ध्यानथी, प्रगटे केवलज्ञान. ॥ १ ॥ मनथी ध्यान क्रिया थती, ध्यानथी कर्म विनाश; कर्म विनाशथी मुक्ति छे, मुक्ति अनंत सुखवास. ॥ २ ॥ पिंडस्थादिक ध्यानथी, अक्रिय थावो जाय; रागद्वेषादिक विना, अक्रियता कर्तव्य. ॥ ३ ॥

ध्यान क्रिया मनमां आणीजे. ए–राग.

ध्यान करो भवी भाव धरीने, प्रभु महावीर प्रकाशेरे; अरिहंत आदि ध्यान धरंतां, गुण पर्याय विकासरे. ध्यान० ॥ १ ॥ ध्याता ध्येयने ध्याननी एकता, योगे पूर्ण समाधिरे; नामने रूपनो मोह रहे नहीं, विघटे उपाधि आधिरे. ध्यान० ॥ २ ॥ शुद्धोपयोगे प्रभु महावीर, रंगरसे जे रसियोरे; क्षण क्षण प्रभुरसरंगे रीझे, चढता जावे उल्लसि-

यारे. ध्यान० ॥ ३ ॥ कर्म करे पण अक्रिय आतम, शुद्धोपयोगे रसियोरे; पर परिणतिने दूर करीने, निज आतममां वसियोरे. ध्यान० ॥ ४ ॥ पिंडस्थादिक चार प्रकारे, ध्याने आतमखुमारीरे; घटमां प्रगटे स्वाद न उतरे, ध्यानीनी बलिहारी रे. ध्यान० ॥ ५ ॥ क्षण क्षण ध्यानीने छे महोत्सव, आनंदनी वहे हेलीरे; जीवन्मुक्ति प्रभुमय जीवन, करतो निजगुण केलि रे. ध्यान० ॥ ६ ॥ बाहिर अंतर सर्वमयी ते, सर्वथकी ते न्यारोरे; कर्ता अकर्ता योगी अयोगी, जोगी अजोगी धारोरे. ध्यान० ॥ ७ ॥ जलपंकजवत् निर्लेपज्ञानी, आतममां मस्तानी रे; रहे दशा नहीं प्रगटी छानी, अनुभव ज्ञाननी वाणी रे. ध्यान० ॥ ८ ॥ अंतरमां मन राखी वर्ते, होय न लेश उदासी रे; कर्मविपाके सुख दुःख वेदे, आत्मानंद विलासी रे. ध्यान० ॥ ९ ॥ श्रुतज्ञाने ध्यानने ध्यातां, आतम ज्ञान प्रकाशेरे; कर्म विपाकोदधिपर तरतो, आपोआप विलासेरे. ध्यान०

॥ १० ॥ आतम लय लागी छे जेने, ते ध्यानी जयकारी रे; बुद्धिसागर ध्यानानुभव, प्रगटयो आनंदकारी रे. ध्यान. ॥ १० ॥ ॐ० ध्यानक्रिया लाभाय जलं० य० स्वाहा ॥

सप्तमी लघुता क्रिया पूजा.

दुहा.

लघुताथी प्रभुता मळे, टळे दोष अभिमान;
बाहुबलि लघुता धरी, पाम्या केवलज्ञान. ॥ १ ॥
लघुता गुणनी वेलडी, लघुता मुक्तिद्वार; भवोदधिपर तुंबीवत्, तरतां तरने तार. ॥ २ ॥ कर्मभार हलको थतो, आतम नहीं लेपाय; लघुता पूजाथी प्रभु, पूजंतां सुख थाय. ॥ ३ ॥

उत्तम फल पूजा कीजे, मुनिने दान सदा दीजे.

ए राग.

वीर प्रभु पूजो ध्यावो, सेवक बनो लेवो ल्हावो; लघुताए प्रभुने भावोरे, प्रभु उपदेशे मन-

लावो. लघुताए प्रभुता पावोरे. लघु० ॥ १ ॥ आठ प्रकारे मद त्यागो, देहाध्यास तजी जागो; शुद्धातम भावे लागोरे, लघुता० ॥ २ ॥ सेवक ते स्वामी थावे, ए अनुक्रम ज्ञानी पावे; मानदशा मन नहीं लावेरे. लघुता० ॥ ३ ॥ जडपुद्गलमदमां मुंझे, तेने प्रभु दिल नहीं सूजे, आतमप्रभुने शुं पूजेरे. लघुता० ॥ ४ ॥ रस ऋद्धि गारव पडिया, शातागारवे लडथडिया, जीवोने प्रभु नहीं जडियारे. लघुता० ॥ ५ ॥ इन्द्रादिकपदवी सर्वे, रहेवुं नहीं तेहना गर्वे; प्रभु मळता नाहि मन भर्मेरे. लघुता० ॥ ६ ॥ गुरुता लघुता जडमाया, मोहदशाना पडछाया, अगुरु लघु आतमरायारे. ॥ लघुता० ॥७॥ अगुरु लघु गुण उपयोगी, षट्कारक आतमयोगी, थातां न मोहे संयोगीरे. लघुता. ॥ ८ ॥ यावत् जडगुरुता आवे, तावत् लघुताना भावे, रहेशो अगुरुलघु दावेरे. लघुता० ॥ ९ ॥ दीनभाव लघुता छंडो, आत्मप्रभुता दढ मंडो, दंभो मानतणो झंडोरे. लघुता० ॥ १० ॥

सापेक्षे लघुता समजो, मान अहंवृत्ति दमशो, बुद्धि-
सागर दिल रमशोरे. लघुता० ॥ ११ ॥

ॐ० लघुता लाभार्थं ज० य० स्वाहा ॥

अष्टमो एकता क्रियापूजा.

वीर प्रभुथी एकता, भावो नरने नार; ऐक्य करी प्रभु साथमां, लहो भवोदधिपार. ॥१॥ संग्रह नय सत्तावडे, सर्व जीवो छे एक; आतम सत्ता ध्यावतां, प्रगटे व्यक्ति विवेक. ॥ २ ॥ जडथी न्यारो आतमा, गुणपर्यायाधार; एकता भावे भावतां, कर्म रहे न लगार.

मेरुशिखर न्हवरावे हो सुरपति मेरुशिखर न्हवरावे.
ए राग.

आतम एकता ध्यावो हो, भविजन!!! आतम एकता ध्यावो; प्रभुमां लयलीन थावो हो, भविजन! आतम एकता ध्यावो॥ एकता भावना भावो विवेके, नय सापेक्ष प्रमाणे; द्रव्यार्थिकथी एकता ध्यातां,

निर्विकल्पता जाणे हो. भविजन० ॥ १ ॥ गुणपर्याये अनेकता आतम,-मांही समावे ध्याने; राग रीस रूप मनकुं मरेने, शोभे केवलज्ञाने हो. भविजन० ॥ २ ॥ ज्ञाताज्ञेयने ध्याताध्येयनी, एकता अनुभव थातां; पूरण आत्म प्रतीति प्रगटे. कर्मो सकल दूर जातां हो. भविजन० ॥ ३ ॥ सत्ताए महावीर प्रभुनी, साथे एकता ताने; रहेतां आतम आनंद स्वादो, अनुभव अनुभवी जाणे हो. भविजन० ॥ ४ ॥ रागद्वेषनुं द्वैत टळ्याथी, निज गुण पर्याय योगे; आतम एकता थावे नक्की, रहे न भिन्नता भोगे हो. भविजन० ॥ ५ ॥ जड द्रव्योना गुण पर्यायो, तेथी आतम न्यारो; आपोआप स्वभावे खेले, एकता एह विचारो हो. भविजन० ॥ ६ ॥ अनंत ज्ञानानन्दथी आतम, एक स्वरूप सुहायो; गुणगुणीनी एकता एवी, लीनता आनंद थायो हो. भविजन० ॥ ७ ॥ आदि अंत न आतम एवो, भावो ध्यावो गावो; परमातम महावीर प्रभुथी,

एकमेक थइ जावो हो. भविजन० ॥ ८ ॥ एकलो आव्यो एकलो जाशे, कोइ न साथे जाशे; प्रभु महावीर जिन उपदेशे, चेते ते सुख पाशेहो. भविजन० ॥ ९ ॥ तत्त्वमसिसोऽहं पदध्याने, अेकता अनुभव आवे; बुद्धिसागर आत्ममहावीर, आपोआप सुहावेहो. भविजन० ॥ १० ॥ ॐ० एकता लाभार्थं ज० य० स्वाहा ॥

नवमी समताक्रिया पूजा.

समताथी पूजो प्रभु, विभुमहावीर जिनेश;
ज्यां समता प्रगटी खरी, त्यां नहि रागने द्वेष. ॥१॥
सकल साधना सिद्धता, समता प्रगटे थाय; क्षायिक समता प्रगटतां, बाकी न कार्य रहाय. ॥ २ ॥
आतम ते परमातमा, समभावे प्रगटाय; आपो आपनी पूजना, अेकता अनुभव पाय. ॥ ३ ॥

मेतारज मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार.

ए राग.

समतारस सागर प्रभुजी, वीर जिनेश्वर देव;

समभावे प्रभु सेवतांजी, नासे कर्म कुटेव. महावीर जिनेश्वर, धन्य धन्य तुम उपदेश, ॥ १ ॥ जडचेतनमय विश्वमांजी, समभावे उपयोग; विषमपणुं प्रगटे नहींजो, समता आनंद भोग. महावीर० ॥ २ ॥ खंधक शिष्यो पांचशेजी, प्राणांते समभाव, मोहने मार्यो छेवटेजी, धन्य अे समता दाव. महावीर० ॥ ३ ॥ मुनि मेतार्ये समपणुंजी, धार्युं छंडयो देह, शुभाशुभ बुद्धि विनाजी, पाम्यां मुक्तिगेह. महावीर० ॥ ॥ ४ ॥ समता भावने आदर्योजी, गज सुकुमाल मुनीश, देहनी ममता परिहरीजी, सोमिलपर नहि रीस. महावीर० ॥ ५ ॥ अन्य तीर्थियो पण लहेजी, समता भावेरे मुक्ति, समता ते पाम्या प-छीजी, नहीं तप किरिया रीति. महावीर० ॥ ६ ॥ दर्शन ज्ञान चरण सकलजी, समतामांही सुहाय, समता प्रगटे सिद्धताजी, अेक पलकमां थाय. महावीर० ॥ ७ ॥ काने खीला मारि-

याजी, पगपर रांधीरे खीर; तो पण समभावे रह्याजी, परमेश्वर महावीर, महावीर० ॥ ८ ॥ पार्श्व प्रभु समता धरीजी, कमठे कीधोरे रोष; नासापर जल आवियुंजी, तोपण रोष न तोष. महावीर० ॥ ९ ॥ वृत्ति शुभाशुभ नहीं रहेजी, प्रगटे केवल-ज्ञान; आपोआप प्रभु विभुजी, चिदानंद भगवान्. महावीर० ॥ १० ॥ ग्रहण त्याग इच्छा नहींजी, वर्ते पूर्व प्रयोग, समभावे शुद्धातमाजी, चिदानंद गुणभोग. महावीर० ॥ ११ ॥ शुभाशुभ वृत्ति विनाजी, कर्म निकाचित भोग; भोगवतां तनु वर्ततांजी, केवळ ज्ञाननो योग. महावीर० ॥ १२ ॥ हर्षशोक सुखदुःखमांजी, समता भावेरे वर्त; बुद्धिसागर आत्ममांजी, अनंत आनंद शर्त. महावीर० ॥ १३ ॥

कलश–गीत.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो.

नवविध किरिया भक्तिथी पूज्यो, आतम अनु-

भव पायो; एकता लीनता समतायोगे, सहज स्वभावे सुहायोरे. महावीर ॥ १ ॥ श्रद्धाप्रीति पूजन अर्चन, स्पर्शनभाव लहायो; दास्यने सख्यने आतमऐक्ये, अमृत किरियाए छायोरे. महावीर ॥२॥ नवधाभक्ति सापेक्षाए, अनेकभेदे ध्यायो; अभेदभावे अद्वैतभक्ति, करतां सुख प्रगटायोरे. महावीर ॥३॥ सम्यग्दृष्टिए भक्तिनां अंगो, ग्रहीने सापेक्षभावे; आतमशुद्धि करीए रंगे, सहेजे आत्मस्वभावेरे. महावीर ॥ ४ ॥ भक्तिना तानमां भेद न भासे, आतमज्ञाने प्रकाशे; नवविध किरिया अक्रियपदने, आपे परमोल्लासेरे. महावीर ॥ ५ ॥ अन्यो अन्यने विषगरलथी, विश्वभ्रमणता थावे; तद्धेतु अमृत किरिया योगे, परमानंद सुहावेरे. महावीर ॥ ६ ॥ म्हारे तो गुरुकृपा पसाये, अमृत आनंद आयो; आपोआप स्वरूप सुहायो, अक्रिय अनुभव पायोरे. महावीर ॥ ७ ॥ ओगणिश अठोत्तरनी साले, ज्ञान पंचमी शुक्रवारे; नवधा किरिया पूजा रचो शुभ,

भव्य जीवोने तारेरे. महावीर० ॥ ८ ॥ सानंद संघनी शुभ भक्तिअे, कर्युं चोमासुं भावे; पूजा रचंतां अनुभव आनंद, प्रगटयो भक्ति प्रभावेरे. महावीर० ॥ ९ ॥ शासन नायक वीर जिनेश्वर, श्वेतांबर मुनि राजा; तपगच्छ जगगुरु हीर विजय सूरि, संयमी गुण शिरताजारे. महावीर० ॥ १० ॥ पट्टपरंपरा श्री नेमिसागर, रविसागर गुरुराया; श्रीसुखसागर समता दरिया, संवेगी शिरसुहायारे. महावीर० ॥ ११ ॥ गुरु कृपाअे पूजा रची शुभ, संघ सकल हितकारी; बुद्धिसागर मंगल माला, आनंदघन अवतारीरे. महावीर०॥१२॥ ॐ० समता लाभार्थं ज० य० स्वाहा॥

अथ अष्टकर्मसूदनार्थं अष्ट प्रकारी पूजा.

परमेश्वर महावीर जिन, तीर्थंकर जगदेव; परमप्रभु परमातमा, भावे करीये सेव. ॥ १ ॥ अष्ट कर्मना नाशहेत, पूजा अष्ट प्रकार; रचतां गुण अठ संपजे, प्रगटे शांति अपार. ॥ २ ॥ ते माटे पूजा रचुं, संक्षेपे हितकार; प्रभु महावीर देशना, अनुसारे सुखकार. ॥ ३ ॥

प्रथम ज्ञानावरणीयसूदनार्थं जलपूजा.

न्हवणनी पूजारे निर्मल आतमारे, ए राग.

न्हवणनी पूजारे भवि भावे करोरे, प्रभु महावीरनी सत्य; ज्ञानविना अज्ञाने प्राणियारे, करता आस्रव कृत्य. न्हवण० ॥ १ ॥ ज्ञानावरणे ज्ञान न संपजेरे, भवमां भमवुं थाय; ज्ञानावरणनी पांच प्रकृतिछेरे, ज्ञानाच्छादन न्याय. न्हवण० ॥ २ ॥ क्षयोपशमने क्षायिक भावथीरे, ज्ञानावरण विनाश; मति श्रुत अवधि मनपर्यव अनेरे; प्रगटे केवल खास.

न्हवण० ॥ ३ ॥ मति अट्ठावीश भेदछे तथारे, त्रणशे चालीश भेद; श्रुतछे चउद अने वीश भेद-थीरे, प्रगटे नासे खेद. न्हवण० ॥ ४ ॥ असंख्य प्रकारे अवधिज्ञानछेरे, मनपर्यव बे भेद; केवल ज्ञान ते एक प्रकारछेरे, प्रगटेछे निर्वेद. न्हवण० ॥ ५ ॥ ज्ञानावरणी ज्ञानने रोधतुंरे, तेनो नाश जो थाय; तो प्रगटेछे ज्ञान प्रकाशतारे, नहि अज्ञान रहाय. न्हवण० ॥ ६ ॥ ज्ञानने ज्ञानी सेवा भक्ति-थीरे, वसतां गुरुकुल वास; ज्ञानावरणी कर्म विना-श छेरे, टळतां मोह विलास. न्हवण० ॥ ७ ॥ ज्ञा-नीनी निंदा आशातनारे; तजजो नरने नार; श्रुत-ज्ञानी गुरुना भक्तो बनोरे, प्रगटे ज्ञान उदार. न्हवण० ॥ ८ ॥ भणो भणावो श्रुतने भविजनारे, अनुमो-दो द्यो दान; बुद्धिसागर आतम शुद्धतारे, प्रगटे केवल ज्ञान. न्हवण० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ प० ज्ञान वरण सूदनार्थं ज० य० स्वाहा॥

द्वितीया दर्शनावरणीयकर्मसूदनार्थं जलपूजा

दर्शनावरण हठाववा, चंदनपूजा सार; दर्शनावरणनी प्रकृति, नव कीजे परिहार. ॥ १ ॥ चक्षुआदि चारनां, आवरणो छे चार; पांचे निद्रा त्यागतां, दर्शन गुण जयकार. ॥ २ ॥ देवगुरुने धर्मनी, आशातनथी कर्म, बंधातां ते जाणीने; सेवो जिनवर धर्म. ॥ ३ ॥

सांजळशो मुनि संयम रागे—ए राग.

चंदनपूजाए प्रभु चर्चो, निजआतमने अर्चोरे; दूर करो झट कर्मनो फडचो; राखो न भेदनो कर्चोरे. चंदन ॥ १ ॥ दर्शनावरणना क्षयोपशमथी, क्षायिकथी गुण प्रगटेरे; चक्षु अचक्षु अवधि केवल, दर्शनथी दुःख विघटेरे. चंदन ॥ २ ॥ दर्शननुं आवर्ण करे ते, दर्शनावरणी जाणोरे; दर्शनावरणने हणवा माटे, सेवाभक्ति प्रमाणोरे. चंदन ॥ ३ ॥ गुरुनी श्रद्धा प्रीतियोगे; आशातनने वियोगेरे; सद्गुण गणना पूर्णप्रयोगे, वर्ते न हर्षे शोकेरे. चंदन ॥ ४ ॥

दर्शनावरण टळे छे क्षणमां, ज्ञानने ध्यानाभ्यासेरे; समताभावे कर्म करंतां, दर्शनशक्ति प्रकाशेरे. चंदन ॥ ५ ॥ पांच प्रकारनी निद्राक्षयथी, दर्शनगुण झट प्रगटेरे; आतमदर्शन अनुभव आवे, मिथ्याबुद्धि विघटेरे. चंदन ॥ ६ ॥ चंदनसम दर्शन शीतलता, भावे आतम पूजोरे; निंदा विकथा परपरिणतिथी, मनमां लेश न मुंझोरे. चंदन ॥ ७ ॥ जिनवर पूजा ते निजपूजा, शुद्धातम उपयोगेरे; केवलज्ञानने केवलदर्शन, प्रगटे निजगुण भोगेरे. चंदन ॥ ८ ॥ दर्शनावरणीय कर्मने हणवा, स्थिर उपयोगे रहेशोरे; बुद्धिसागर आनंदमंगल, परम प्रभुता लेशोरे. चंदन ॥ ए ॥

ॐ० प० दर्शनावरणीय कर्म सूदनार्थं चंदनं० य० स्वाहा॥

तृतीयवेदनीय कर्म सूदनार्थं पुष्प पूजा.

शाताअशाता वेदनी, सुखदुःख फलदातार; सुखदुःख वेदे सर्व जीव, लक्षचोराशी मझार, ॥१॥ सुखदुःख मोहथी वेदतां, थातो कर्मनो बंध; सुख

दुःखमां समभावथी, आतमछे निर्बंध. ॥ २ ॥ आतम सुखने वेदवा, पुष्पे पूजो राज; आत्ममहावीर प्रगटतां, सफळा सर्वे काज. ॥ ३ ॥

इडर आंबा आंवलीरे. ए राग.

पूजो प्रभु महावीरनेरे, जेणे जणाव्यो धर्म; पुष्प ाल प्रभु कंठमांरे, स्थापंतां शिवशर्मरे. भवि- जन. पूजो महावीर देव, फळती प्रभुनी सेवरे, भवि जन!!! पूजो० ॥ १ ॥ शाताअशाता वेदतांरे, समभाव पुष्पनी माळ, धारंतां प्रभु कंठमांरे, रहे न मोहनी जाळरे. भविजन पूजो० ॥ २ ॥ छाया ताप परे आ- वतुंरे, सुखदुःख वाराफेर; पुण्यपापकर्मो फळेरे; करो न राग न वैररे. जविजन! पूजो महावीर देव० ॥३॥ सुखदुःख वेदे समपणेरे, अधिकारे करे काज; सहज समाधि ते योगछेरे, प्रगटे शिव साम्राज्यरे. भवि० पूजो० ॥ ४ ॥ शुद्धोपयोगे वर्ततांरे, वर्णादिक करे कर्म; बाहिर व्यवहार साधतांरे, वर्ते आतम धर्मरे. भवि. पूजो० ॥ ५ ॥ वाहिर वर्ते बाह्यमांरे, अंतरमां

उपयोग; निर्बंध आतम वर्ततोरे, जोगवतो सहु जोगरे. जवि० पूजो० ॥ ६ ॥ सुखदुःख वेदनी जोगमांरे, धरे न सुखदुःख बुद्धि; आतममां सुख अनुजवेरे, प्रगटे सिद्धनी ऋद्धिरे. जवि० पूजो० ॥ ७ ॥ सुख आवे हर्षे नहींरे, दुःख प्रगटे नहीं शोक; सुख दुःख बुद्धि न भोगमांरे, तेने पूरण योगरे. भविजन पूजो० ॥ ८ ॥ कर्म निकाचित प्रगटतारे, सुखदुःख जोगवेरे जोग; जोगी अजोगी अंतरविषेरे, योगे वर्ते अयोगरे. जविजन! पूजो० ॥ ९ ॥ चक्री इन्द्रादिक भोगमांरे, रहे म सुखनी वृत्ति; आतम सुख अनुजव थतांरे, जीवंतां निर्वृत्तिरे. भविजन! पूजो० ॥ १० ॥ प्रभु महावीर देवनोरे, अेवो छे उपदेश; बुद्धिसागर आतमारे, आनंदरूप हमेशरे. जविजन! पूजो० ॥ ११ ॥

ॐ० प० वेदनीय कर्म सूदनार्थं पुष्पं य० स्वाहा ॥

चतुर्थ मोहनीयकर्मसूदनार्थे धूपपूजा.

दर्शनचारित्र मोहनी, सर्वकर्म शिरदार; मोह टळे कर्मो सकल, विणसंतां निर्धार. ॥ १ ॥ मोह तणा परिणामथी, आठकर्म बंधाय; निर्मोही आतम पणे, शुद्धातम प्रगटाय. ॥ २ ॥ ध्यानधूप प्रभु आगळे, करतां नहि दुर्गंध; आतम आत्मपणे रमे, आतम वर्ते अबंध. ॥ ३ ॥

दशमे देशावगाशिकेरे, चउद नियम संखेव–ए राग

धन्य महावीर जगधणीरे, केवलज्ञानी देव; आतमध्यानना धूपथीरे, साधुं ताह्यरो सेव हो. जिनवर० आतमसुखने आपशोरे, रोमे रोमे व्यापशोरे; ताह्यरो रहो उपयोग. ॥ १ ॥ दर्शन मोहनी नाशथीरे, प्रगटे समकित धर्म; चारित्र मोहनी नाशथीरे, प्रगटे आतमशर्म हो. जिनवर॥ आतम॥ २॥ अठावीश मोह प्रकृतिरे, क्षयोपशम तस होय; उपशम क्षायिकभावथीरे, शुद्ध परिणति जोय हो.

जिनवर॥ आतम. ॥ ३ ॥ सकल कर्ममां मोहनुंरे, अनंतगणुं छे जोर; मोह टळे बीजां टळेरे, नासे छे जेम चोर हो. जिनवर. आतम. ॥ ४ ॥ निर्मोहभावे वर्तवुंरे, आतमधर्म छे एह; आतम शुद्धोपयोगथीरे, रहे न मोहनीरेह हो. जिनवर. आतम० ॥ ५ ॥ अव्र-ततजी व्रत आदरोरे, धारो संवर भाव, निर्जराहेतु आदरोरे, आतमशुद्धि दावहो. जिनवर० आतम० ॥ ६ ॥ आतमज्ञानने पामतांरे, प्रगटेछे वैराग्य; आतमना उपयोगथीरे, वर्ते सहेजे त्यागहो. जिन-वर० आतम० ॥ ७ ॥ जिनआगम गुरु संगतिरे, करतां संतनो संग; निर्मोहभावे आतमारे, परिण-मतो जिनरंगहो. जिनवर० आतम० ॥८॥ देवगुरुने धर्मनेरे, आराधे मोह जाय: रवि उगे परभातमांरे, तम तो दूर पलायहो० जिनवर० आतम० ॥ ९ ॥ गृही त्यागीदशाविषेरे, करतां व्यवहार कर्म; नि-र्मोहे नहीं कर्मछेरे, प्रगटे मुक्ति शर्महो. जिनवर० आतम० ॥ १० ॥ ज्ञानक्रियाथी मोहनोरे, क्षय क्षण-

मांहे थाय; नामरूपनिर्मोहथीरे, केवल ज्ञान सुहायहो. जिनवर० आतम० ॥११॥ आतम आतमने दियेरे, प्रभु भक्ते निज मुक्ति; बुद्धिसागर आत्मनारे, उपयोगे नहि भोनिद्रा. जिनवर० आ० ॥१२॥ ॐ० प० मोहनीय कर्मसूदनार्थं धूपं य० स्वाहा ॥

पंचम आयुःकर्मसूदनार्थं दीपपूजा.

सुरनर तिर्यंच नरकनुं, आयुः चार प्रकार; चार गतिमां आयुथी, तनु स्थितिछे निर्धार. ॥ १ ॥ चारगतिमां आयुथी, बंधावानुं थाय; अनंतजीवन पामतां, आयु बंधन जाय. ॥ २ ॥ ज्ञानदीप प्रगटावीने, पूजो प्रभु जिनराज; अनंत शाश्वत जीवनने, पामो सिद्ध काज. ॥ ३ ॥

मल्लिजिननाथजी व्रतलीजेरे ए राग.

प्रभु महावीरपर धरो प्रीतिरे, टालो दुष्टाचार अनीति. प्रभु० द्रव्य दीपक धरी भाव दीवोरे, प्रगटावी अनंतुं जीवोरे; प्रभु वचनामृतने पीवो. प्रभु०

॥ १ ॥ पुण्ययोगे सुरनर आयरे, प्रायः तिर्यंच आयु वंधायरे, पापे नरकतिरि गति थाय. प्रभु० ॥ २ ॥ आयुः कर्मतणीए मायारे, जेवा पाणीमां पडछायारे; ज्ञानी जक्तो नहीं मुंझाया. प्रभु० ॥ ३ ॥ स्थिति अनंत पामीने ठरवुंरे, पछी जन्म मरण नहि करवुंरे; एवुं शुद्धातम पद वरवुं. प्रभु० ॥ ४ ॥ मोह योगेछे आयुष्य वंधरे, निर्मोहे वर्ते अबंधरे; परभावनी होय न गंध. प्रभु० ॥ ५ ॥ पूर्व कर्म निकाचित जोगोरे, तेवा मळता सर्व संयोगोरे; वर्ते अंतरमां योगो. प्रभु० ॥ ६ ॥ ज्ञानीने जे आस्रव कर्मोरे, परीणमे ते संवर धर्मोरे; टळे ज्ञाने मिथ्याभर्मो. प्रभु० ॥ ७ ॥ श्रुत दीपकथी प्रभु पूजेरे, शुद्धआत्म स्वरूप झट सूजेरे; पामी आतम मन नहीं मुंझे. ॥ ८ ॥ शुद्ध आत्मस्वरूपना रसियारे, गति छतां न गतिमांहि वसियारे; कर्मयोगी अकर्म उल्लसिया. प्रभु० ॥ ९ ॥ गति आयुछे बंदिखानुंरे, तनु हेडसमुं न मझानुंरे; त्यांतो ज्ञानीने रुचे शानुं ? प्रभु०

॥ १० ॥ मनुजवमां थायछे मुक्तिरे, ज्ञान वैराग्य व्रत धरो नीतिरे; टळे सर्व प्रकारनी भीति. प्रभु० ॥११॥एवी प्रभुमहावीरनीवाणीरे,ज्ञानवैराग्यथी दिल आणीरे; प्रभुपूजा करो गुणखाणी. प्रभु० ॥ १२ ॥ ज्ञानानन्द अनंतपद वरवारे, भवपाथोधि वेगे तरवारे; बुद्धिसागर गुरु अनुसरवा. प्रभु० ॥ १३ ॥

ॐ प० आयुः कर्म सूदनार्थं दीपं य० स्वाहा ॥

षष्ठनाम कर्म सूदनार्थ अक्षत पूजा.

नामकर्मनी प्रकृति, एकसोत्रण छे सर्व; देहादिकमां मोह वा, करवो नहि कंइ गर्व. ॥ १ ॥ नाम कर्मना क्षयथकी, अरूपपद प्रगटाय; रूपीपणुं नहि आत्मनुं, रूपादिक जडमांह्य. ॥ २ ॥ अक्षयरूप छे आतमा, अक्षत करवा हेत; व्यवहारे अक्षतथकी, प्रभु पूजा संकेत. ॥ ३ ॥

सनेही संत एगिरि सेवो. चउदभुवनमां तीर्थ न एवो.—ए राग.

प्रभु महावीरजी जयकारी, पूजो अक्षतथी

सुखकारी. प्रभु ॥ प्रकृतिरस स्थिति प्रदेश, चारेभेदे बंध न लेश: सत्ता उदीरणा नहीं कलेश, टाळया राग अने मन द्वेष. प्रभु० ॥ १ ॥ टाळया कर्मविपाको सर्वे, रही शुकलध्याने अगर्वे; रह्या नहीं परपुद्गल भर्मे, मुंझ्या नहि मिथ्याजडशर्मे. प्रभु० ॥ २ ॥ नामरूपमां निर्मोह भावे, रहे जे कोइ साक्षीना भावे; नाम कर्मथी छूटो थावे, शुद्ध अरूपपद निज पावे. प्रभु० ॥ ३ ॥ नाम कर्म प्रारब्धना भोगो, अनासक्तिए वर्ते योगो; थाय नहीं कंइ हर्ष न शोको, थाय विषम न प्रकटे रोगो. प्रभु० ॥ ४ ॥ थतां केवल नाम रहेछे, आयु पर्यंत तेह वहेछे; समभावे ज्ञानी सहेछे, शुद्ध आत्मरमणता चहेछे. प्रभु० ॥ ५ ॥ प्रभु सरखा थावा माटे, वळो केवल ज्ञानोनी वाटे; माल वेचायछे गुरु हाटे, लेजो स्वार्पण करी शिरसाटे. प्रभु० ॥ ६ ॥ नामरूप अध्यासने त्यागो, शुद्ध आतम भावे जागो; त्याग ग्रहणमां मनथी न लागो, मोहभावथी दूरे भागो. प्रभु०

॥ ७ ॥ नामकर्म अघातीले जाणो, ज्ञान प्रगटे अबंध प्रमाणो; निर्मोही आतमराणो, निजगुणथी खेले मझानो. प्रभु० ॥ ८ ॥ नाम कर्मने परोपकारे, वापरो जैन धर्म प्रचारे; वापरे ते धर्म न हारे, करो कर्तव्य निज अधिकारे. प्रभु० ॥ ९ ॥ एवी वीर प्रभुनी वाणी, सर्व नयथी यथातथ्य जाणी; श्रद्धा प्रीतिए मनमां आणी, कर्म तलने पीलवा घाणी. प्रभु० ॥ १० ॥ नामरूपमां नहीं मुंझाशो, शुद्ध उपयोगथी सुख पाशो; बुद्धिसागर दिल हरखाशो, चिदानंद स्वरूप प्रकाशो. प्रभु० ॥ ११ ॥

ॐ० प० नाम कर्म नाशार्थं अक्षतं य० स्वाहा ॥

सप्तमी गोत्रकर्मसूदनार्थं नैवेद्यपूजा,

उच्च नीच व्यवहारथी, निश्चयथी नहीं कोय;
उच्चनीच जडमोहथी, आत्मस्वरूपे न जोय. ॥१॥
उच्चने नीच बे गोत्रछे, यश अपयश करनार; मान अने अपमानना, हेतुछे व्यवहार. ॥ २ ॥ प्रभु महा-

वीर बोधथी, उच्च नीच बे भेद; बेमां समभावे रहे, ज्ञानीनें निर्वेद. ॥ ३ ॥ उच्च नीच बे प्रकृति, तेमां निर्मोह हेत; नैवेद्य पूजानो भलो, द्रव्यभाव संकेत. ॥ ४ ॥

प्रभु प्रतिमा पूजीने पोसह करीए.—ए राग.

महावीर जिनवर पूजीने गुण लीजेरे; उच्चने नीचनो भेद विसारीए. निज आतमनुं शुद्ध स्वरूप विचारोरे, पुद्गलनी माया जूठी धारीए, आतमछ सरखा मन अवधारीए, कुलादिक मदने प्रगटयो वारीए. ॥ १ ॥ उच्चपणाना माने हर्ष न धरीएरे, जातिना अभिमानेरे धर्म न हारीए; सत्ता विद्या लक्ष्मी आदि मोहेरे, भूलंतां भानरे निज नहि ता-रीए. आतम० ॥ २ ॥ कर्मनी माया पाणीना पड-छायारे, उंचने नीचना भेद नहीं खरा; समज्या ते मुंझाया नहि भरमायारे, पाम्यारे आनंद अमृतना झरा. आतम० ॥ ३ ॥ चडती पडती उच्च नीच अवतारोरे, संसारे एह अवस्था सर्वनी; परने पोतानुं

मानी शुं फूलोरे, छाजे नहि कोइ अवस्था गर्वनी. आतम० ॥ ४ ॥ आतमदे भरिया जीव दुःखने वरिआरे, स्वप्नानी बाजीरे जूठी जागतां; उच्चने नीच पणुं स्वप्नानी बाजीरे; आतमरे अगुरुलघु घट लागतां. आतम० ॥ ५ ॥ कुल विद्या लक्ष्मी सत्ता हिणाइरे, पामंतां हर्ष न उद्वेगे रहो; उच्च नीचनी माया स्वप्ना जेवीरे, जाणीरे समभावे जीवन वहो. आतम० ॥ ६ ॥ मान अने अपमानने लाभालाभेरे, समताने धारी कर्तव्यो करो; योगी भक्तजीवन एवुं आतमनुंरे, परमातम प्रगटावी मुक्ति वरो. आतम० ॥ ७ ॥ उच्चने नीचना भेद नहि मुंझाशोर, खत्तारे खाशो पडती पामशो; आतमने कदि नीच न मानो भव्योरे, बाहिरनी वृत्तिथकी विरामशो. आतम० ॥ ८ ॥ उच्चने नीचनी भ्रांति कर्मनी दृष्टेरे, आतमनी दृष्टिए कशुं छे नहीं; आतम दृष्टि जीवनथी संचरशोरे, परमानंद पामोरे अधिकारे वही. आतम० ॥ ९ ॥ उच्चनीचना भेदे सुखदुःख वृत्तिरे, स्वप्नामां एछे जागतां नहीं; कर्म अन्वयी उंचा ज्ञानी जाण्यारे,

स्वप्नामां नेद खेद प्रगटे सही. आतम० ॥ १० ॥ अगुरु लघुछे आतम निजअनुभवतोरे, तेनीरे आगळ कर्म ते शुं करे; बुद्धिसागर आतम रविझळहळतोरे, केवलज्ञानज्योतेरे प्रभुपदने वरे. आतम० ॥ ११ ॥ ॐ० प० गोत्र कर्म विनाशाय नैवेद्यं य० स्वाहा ॥

अष्टम अंतरायकर्म सूदनार्थ फल पूजा.

दान लाभने भोगने. वीर्य अने उपभोग; पांच तणां आवर्णने, हणतां निजगुण योग. ॥ १ ॥ अंतराय हणवा भवी, फलथी पूजो देव; द्रव्य भावथी शक्तिने, पामो करी जिन सेव. ॥ २ ॥ दानादिक आवर्णनो, क्षयोपशम क्षय थाय, दानादिक निज शक्तियो, प्रगटे धर्म सुहाय. ॥ ३ ॥

वाजां वाग्यांरे प्रभु दरबाररे. मोहन वाजां वागियां.

ए राग.

मुक्तिफल पामवा हेतेरे, फले प्रभु पूजोए.

सर्व इच्छाओ करीने निरोधरे, निजातम रीजीए;
गुणपर्यायदान निज दीजीए, चिदानंदनो लाभज
निजरे. फले॥गुणपर्याय भोगोपभोगमां, परपुद्गलनी
नही खीजरे. फले० ॥ १ ॥ शुद्ध आतमबल प्रग-
टावीए, दुष्ट टाळीए पशुबळ वेगरे. फले॥मन इन्द्रि
योमां पशुबल वसे, तेथी करीए नहिं अविवेकरे.
फले० ॥ २ ॥ लब्धि शक्तिओने प्रगटावीए, नहीं
रीजीए खीजीए बाझरे. फले. परमार्थमां तनमन
वापरो, करो विश्वमां सारां काजरे. फले० ॥ ३ ॥
जैन धर्मने संघनी उन्नति, करवामां होमशो सर्वरे.
फले० अणशक्तिए खेद न कीजीए, होय शक्ति
छतां नहि गर्वरे. फले० ॥ ४ ॥ देवगुरुने धर्मनी भ-
क्तिमां, मृत्यु थतां न हठीए लगाररे, फले. ॥ खेद
भय अने द्वेषने त्यागीए, करो परमार्थो नरनाररे.
फले० ॥ ५ ॥ समभावथी कर्मांतरायनो, क्षयोपशम
क्षय झट थायरे, फले.॥ दानलाभादि वापरो भावथी,
थतां निष्काममुक्ति सुहायरे. फले० ॥ ६ ॥ जीव

अजीव उपकार सहजछे. एतो थाय परस्पर जाणरे. फले. दानादिक प्रवृत्तिनिवृत्तिमां, शुद्ध उपयोग दृष्टि प्रमाणरे. फले० ॥ ७ ॥ देशो तेवुंज नक्की पामशो, वावो तेवुं फले निर्धाररे, फले.॥ बाह्यफल मिष शिवफल पामवा, लहो सहज समाधि साररे. फले० ॥ ८ ॥ ज्ञानपरमानंद फल जीवतां, लही मुक्ति अनुभव थायरे. फले. सर्व कर्तव्य कर्मो कर्या करो, तेथी शक्तियो प्रगटी सुहायरे. फले० ॥ ९ ॥ शुद्ध आतम प्रभु महावीरछे, एवा निश्चयथी जाय दुःखरे, फले. बुद्धिसागर शुद्ध प्रभु विभु, आपो आप अनंतु सुखरे. फले० ॥ १० ॥

कलश ॥

गायो ध्यायोरे महावीर जिनेश्वर गायो, अष्ट-कर्म निषूदनहेते, अष्टधा पूजा गायोरे. महावीर० आतम साथे काल अनादि, कर्मबंध व्यवहारे; कर्म-नो कर्ता भोक्ता आतम, रागद्वेष विकारेरे. महा-वीर० ॥ १ ॥ बंध उदय उदीरणा सत्ता, कर्मभेद

व्यवहारे; प्रारब्ध संचितने क्रियमाणज, अशुद्धनय उपचारेरे. महावीर० ॥ २ ॥ सम्यग्ज्ञान वैराग्यन त्यागे, वर्ते साक्षी भावे; कर्म शुभाशुभ सुखदुःख फळने, वेदो समता दावेरे. महावीर० ॥ ३ ॥ ज्ञान ध्यानथी क्षणमां मुक्ति, निर्मोह कर्म करंतां; गृही त्यागी निज अधिकारे, गुण कर्मे विचरंतांरे. महावीर० ॥ ४ ॥ द्रव्यार्थिक शुद्धनय दृष्टिए, कर्मनो कर्ता न हर्ता; आतम सत्ताए निर्लेपी, बे नय समजे संतारे. महावीर० ॥ ए ॥ व्यवहारने निश्चय बेनयथी, सापेक्षाए जाणो; निश्चयदृष्टिना उपयोगे, रहीने अनुभव म्हाणोरे. महावीर० ॥ ६ ॥ पुण्य पाप बे भेदमां आठे, कर्मो समाइ जातां, आस्रवमांही पुण्य पाप बे, अंतर्जामी थातांरे. महावीर० ॥ ७ ॥ तमो रजो गुण सत्त्वनी वृत्ति, मोहनीमांही समाती; मोहनी जीते जीत्यां बाकी, सम्यग्दृष्टि सुहातीरे. महावीर० ॥ ८ ॥ रागरोस अरि जीत्या अरिहंत, महावीर केवल ज्ञानी; प्रभुए कर्म स्वरूप

प्रकाश्युं, समजे समकीती ज्ञानीरे. महावीर० ॥ ९ ॥ पुनर्बंधक नहींछे ज्ञानी, नहीं पुद्गल अभिमानी; अल्पबंध महानिर्जरा करतो, निर्मोहभावे ध्यानीरे. महावीर० ॥ १० ॥ सम्यग्ज्ञाने बळियो आतम, अज्ञाने बळियुंछे कर्म; कर्म निकाचित प्रारब्ध भोगमां, उपयोगे आतम शर्मरे. महावीर० ॥ ११ ॥ ओगणिस अठोत्तर कार्तिक सुदि, आठम मंगल-वारे; पूजी रचीने आनंद पाम्यो, प्रभुदाणोना प्यारेरे. महावीर० ॥ १२ ॥ सानंद शहेरमां चोमासुं कर्युं, संघनी भक्तिछे सारी; प्रभु महावीर पट परंपर, तपगच्छ जग जयकारीरे. महावीर० ॥ १३ ॥ जगगुरु हीरविजयसूरि राजा, पट परंपर छाजे, श्री नेमिसागर रविसागरजी, सुखसागर गुरु गाजेरे. महावीर० ॥ १४ ॥ गुरु कृपाए पूजा रची शुभ, संघमां आनंदकारी, बुद्धिसागरसूरि मंगल, जिन-शासन जयकारीरे. महावीर० ॥ १५ ॥

ॐ० प० अंतराय नाशार्थं फलं य० स्वाहा ॥

षडावश्यकपूजा.

श्री परमेश्वर वीरजिन, चोवीशमा जिनराज; त्रिशलानंद जगधणी, सर्वदेव शिरताज. ॥ १ ॥ समवसरणमां बेसीने, भाख्यो साचो धर्म; षट् आवश्यक भाखियां, गृही साधुनां कर्म. ॥ २ ॥ षट् आवश्यक कर्मथी, चित्तनी शुद्धि थाय. मनशुद्धिथी आतमा, केवल ज्ञानने पाय. ॥ ३ ॥ सामायिक चउविश जिन, स्तव गुरुवंदन बेश; प्रतिक्रमण आवश्यके, नासे कर्मना कलेश. ॥ ४ ॥ कायोत्सर्गने आदरे, करतां प्रत्याख्यान; आत्मशुद्धिथी प्रगटतुं, सहेजे केवलज्ञान. ॥ ५ ॥ षडावश्यकनी रचुं, पूजा द्रव्यने भाव; भेदे उपयोगे भली, भवोदधिमां नाव. ॥ ६ ॥ अष्टप्रकारे पूजना, प्रत्येक पूजा दीठ; आत्मानुभव पामवा, ज्ञान क्रियाथी मिष्ट. ॥ ७ ॥

प्रथम सामायिक आवश्यक पूजा.

सामायिक करतां थकां, रागद्वेष विनाश; क्ष-

णमां केवल उद्भवे, नासे भाव उदास० ॥ १ ॥ अनंतजीवो पामिया, समता योगे मुक्ति; समताविण मुक्ति नहीं, साधे कोटि युक्ति. ॥ २ ॥ सर्व धर्म मत पंथमां, समत्वथी छे मोक्ष; समत्वपणुं सहु धर्ममां, मुक्तिभाव परोक्ष. ॥ ३ ॥ सर्व व्रतादिक सार छे, समता धारो भव्य; समत्व सामायिक भलुं, आवश्यक कर्तव्य. ॥ ४ ॥ नयव्यवहारथी बे घडी, आराधो नरनार; निश्चय समता हेतुछे, सेवो नवि सुखकार. ॥ ५ ॥ चउनिक्षेपे धारीए, सातनये ते जाण; द्रव्यभावथी सेवतां, प्रगटे सम्यग् ज्ञान. ॥ ६ ॥ समताभावछे सर्वदा, त्यागी निश्चय नाव; समता ते चारित्रछे, उपयोगे दिल लाव. ॥ ७ ॥

प्रभु पडिमा पूजीने पोसह करीएरे—ए राग.

समताभावे सामायिकमां रहीएरे, सामायिक योगे शिवसुख थायछे; समभावे रहेवाथी अनुभव जागेरे, स्थिरताना योगे तत्त्व जणायछे, अंतरना

उपयोगे धर्म ग्रहाय छे, चंचळता मननी दूरे जाय छे; वैराग्ये भाव भलो परखाय छे, धन्य धन्यरे समताभाव सुहाय छे. अंतर०॥१॥ गुरुमुखथी सामायिक उच्चरे श्रावकरे, लाखचोराशी जीवयोनिने खमावतो; दश मनना दश वचनना द्वादश कायारे, बत्रीश दोषो टाळी आतम ज्ञावतो. अंतर० ॥ २ ॥ पिंडस्थादिक चार ध्यानने धरीएरे. वरीएरे धर्म शुकल बे ध्यानने; आर्त रौद्र बे ध्यान बूरां परिहरीएरे, तजीएरे माया ममता मानने. अंतर० ॥ ३ ॥ धर्मग्रंथने जणीए गणीए भावरे, विकथानो वातो लेश न कीजीए; द्रव्य गुण पर्याये वस्तु विचारीरे, वस्तु स्वभाव धर्म ग्रहीने रीझीए. अंतर० ॥ ४ ॥ स्थिर उपयोगे ध्यान समाधि वरीएरे, झळकेरे ज्योति आतमरामनी; श्वासोश्वासे अजपाजापे स्मरीएरे, वाटेरे चालो अविचळ धामनी. अंतर० ॥५॥ आत्मज्ञानथी सत्य समाधि पामोरे, वामोरे रागद्वेष बे दोषने; मैत्री प्रमोद करुणा माध्यस्थ विचारोरे;

धारोरे निरुपाधि सुखपोषने. अंतर० ॥ ६ ॥ नय निक्षेपे सामायिकने समजीरे, कोजीये सामायिक शिववेलडी; समतामृत भोजनथी प्रगटे शान्तिरे, समतानी आगेरे शुं छे ? शेलडी. अंतर० ॥ ७ ॥ सिद्ध समा समताथी सर्वे जीवोरे, जटकेरे कर्मथकी संसारमां; कर्मदोष त्यां जाणी जीव खमावोरे, समतानो ल्हावोरे मनु अवतारमां. अंतर० ॥८॥ जाग ! जाग! चेतन तुं सामायिकमांरे, मुंझीश नहि मुसाफर मायाजाळमां; बुद्धिसागर सामायिक उपयोगेरे, गाळोने जीवन सहु कल्याणमां. अंतर० ॥ ९ ॥

सामायिक निज आतमा, समता परिणतियोगेरे; परमानंदना जोगमां, वर्ते निज उपयोगेरे; वीर जिनेश्वर जाखता, आत्म स्वजावे रहेशोरे; विषम स्वजावे नहीं रहो, शुद्ध परिणति वहेशोरे. वीर० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम० सामायिकार्थे जलं चंदनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं यजामहे स्वाहा.

द्वितीया चतुर्विंशतिस्तव पूजा.

चोवीश जिनवरने नमो, वंदो पूजो भव्य, स्तवो भक्ति बहुमानथी, ए बीजुं कर्तव्य. ॥ १ ॥ चोवीश तीर्थंकर प्रभु, वीतराग भगवंत; स्तवतां ध्यातां आतमा, पामे भवनो अंत. ॥ २ ॥ चंद्र समा निर्मल सदा, रविथी अनंत प्रकाश; एवा चोवीशठे विभु, ध्यातां आत्मविलास. ॥ ३ ॥ सागरवत् गंभीर जे, सिद्ध गति दातार; प्रभुमय थै प्रभुने स्तवे, स्वयं प्रभु निर्धार. ॥ ४ ॥

हे सुखकारी आ संसार थकोजो मुजने उद्धरे.

ए राग.

जग उपकारी चोवीश तीर्थंकर मुज मनमांही वस्या, प्रभु जयकारी शुद्धातम उपयोगे अंतर उल्लस्या, चोविश जिनस्तव भावे करतां, अंतर्मां उपयोगे वरतां, घातीकर्मो वेगे खरतां, नरनारी केवल पद वरतां. जग० ॥ १ ॥ एकतान प्रभु साथे जागे,

मनडुं वर्ते प्रभुना रागे; श्रद्धा प्रीतिलय जो लागे, मनडुं वर्ते भव वैराग्ये. जग० ॥ २ ॥ प्रभु ज्ञेय स्वभावे घट आवे, कर्तव्य सकल योगे थावे; आतम निर्लेपपणुं जावे, आतम परमातम थै जावे. जग० ॥ ३ ॥ परमातमने दिलमां धारो, आविर्भावे घट उजियारो; नहीं नामरूपनो अहंकारो, कर्तव्य करे आवे पारो. जग० ॥ ४ ॥ चोवीश जिनवर साथे प्रीति, तेथी नासे सघळी भीति; प्रगटे जगमां साची नीति, प्रामाणिकता साची रीति. जग० ॥ ५ ॥ मुजध्याने ध्येयपणे आवो, मुज ज्योते हो आविर्भावो; एकमेक स्वरूपेछे ल्हावो, परमानंद प्रगटे दावो. जग० ॥ ६ ॥ सर्वे जिनवर पूजा गावो, वंदो प्रणमो प्रेमे ध्यावो; ध्येयाकारे घट प्रणमावो; प्रभुसम निज आतम प्रकटावो. जग० ॥ ७ ॥ प्रभु स्तवतां केवलने मुक्ति, भक्ति आवश्यकनी रीति; प्रभु स्तवतां प्रगटे गुण नीति, आचारे रहे नहि दुर्नीति. जग० ॥ ८ ॥ प्रभुरूपे अैक्य बनी

मळवुं, प्रभु ज्योते ज्योतथकी मळवुं; पछी जगमां नहिठे अवतरवुं, प्रभु प्रार्थी निश्चय पद वरवुं. जग० ॥ ९ ॥ प्रभु वीर वोध मनमां वसियो, चोविश जिन स्तवनानो रसियो; बुद्धिसागर प्रभु उल्लासियो, शुद्धातम भावे विकसियो, जग० ॥ १० ॥

ॐ० प० चतुर्विंशति स्तव आराधनार्थं जलं० य० स्वाहा॥

तृतीया गुरुवन्दन आवश्यक पूजा.

दुहा.

आवश्यक गुरुवन्दना, प्रतिदिन त्रण्ये काल; करतां ज्ञानादिक गुणो, प्रगटे मंगलमाल. ॥ १ ॥ श्रद्धा प्रीति भावथी, गुरु वंदतां ज्ञान; गुरुवण ज्ञान न थाय ठे, गुरुवण होय न सान. ॥ २ ॥ विधिपूर्वक गुरुवन्दना, करतां नासे कर्म; शुद्धातम घट उल्लसे, प्रगटे साचो धर्म. ॥ ३ ॥ गुरुदीवो गुरुदेव ठे; गुरुनो सत्याधार; गुरुवण मुक्ति न कोइनी, समजो नरनेनार. ॥ ४ ॥ वंदो पूजो सद्गुरु, प्रणमो वारंवार; सूरिवाचक यतिसंघनी, भक्ति सदा फळनार. ॥ ५ ॥

गुरुवंदन आवश्यके, पाम्या मुक्ति अनंत; चउनिक्षेपे नये जला, सेवो सद्गुरु संत. ॥ ६ ॥ क्षणपण सद्गुरु संगति, टाळे रागने रीस; समकितप्रद गुरु जक्तिथी, मुक्ति विश्वावीस. ॥ ७ ॥

ध्यानक्रिया मनमां आणीजे. ए राग.

जगगुरु महावीर जिन जयकारी, वंदु वार हजारीरे; गुरु वंदन आवश्यक जाख्युं, जेथी तरे नरनारीरे. जग० ॥ १ ॥ गुरुवंदनमां मुज मन राचे, गाजे घन मोर नाचेरे; रीझे नहि मन कुगुरु काचे, स्वार्पणता ठे साचेरे. जग० ॥ २ ॥ गुरूवंदनथी केवल वरिया, अनंत जीवो तरियारे; लघुता विनयवडे संचरिया, गुरुभक्ते जे भरियारे. जग० ॥ ३ ॥ सद्गुरू रागे गुण सहु आवे, दुर्गुण सघळा जावेरे; गुरूपदेशे श्रद्धा जावे, शक्ति सकल प्रकटावेरे. जग० ॥ ४ ॥ सर्व खमावुं कृत अपराधो, सद्गुरु जगमां लाध्योरे; तुज कृपाए अनुजव वाध्यो, साधनथी प्रभु

साध्योरे. जग० ॥ ५ ॥ विधिपूर्वक गुरुवंदन होशो; दुर्गुण म्हामुं न जोशोरे; माफ करो गुरु म्हारा दोषो, मुज आतमने पोषोरे. जग० ॥ ६ ॥ एवी रीते गुरु वंदन करता, गुरु सदा अनुसरतारे; समकिती गृही त्यागी गुण वरता, भव पाथोधि तरतारे. जग० ॥७॥ दोषदृष्टि त्यागी गुरु रागी, शिष्य भक्त वडभागीरे; बुद्धिसागर सद्गुरु वंदन, करतां लगनी लागीरे. जग० ॥ ८ ॥ ॐ० प० गुरु वन्दन आराधनार्थं ज० य० स्वाहा ॥

चतुर्थी प्रतिक्रमणावश्यक पूजा.

दुहा.

प्रतिक्रमण करवाथकी, आतम शुद्धि थाय. आत्माभिमुख भावथी, प्रतिक्रमण कहेवाय. ॥ १ ॥ अतिचारादिक दोषथी, पाछा फरवुं जेह; पापतणुं करवुं नहीं, प्रतिक्रमण छे तेह. ॥ २ ॥ पंच प्रतिक्रमणां कथ्यां, आतम शुद्धि हेत; द्रव्यभाव करतां थकां, मुक्तिनो संकेत. ॥ ३ ॥ प्रतिक्रमणने जाणता,

सातनयोथी जेह; चउनिक्षेपे आदरे, दोष रहे नहि रेह. ॥ ४ ॥ निंदो गर्हो दोषने, खमो खमावो जीव, कर्म भेद दूरे टळे, पामे आतम शिव. ॥ ५ ॥

ए व्रत जगमां दीवा मेरे प्यारे, ए व्रत जगमां दीवो.

ए राग.

महावीर प्रभु जयकारीहो, जगपति ! महावीर प्रभु जयकारी, प्रतिक्रमण आवश्यक भाख्युं, सर्व जीव हितकारी, दुर्गुण दोषथी पाछा फरवुं, प्रतिक्रमण जयकारी हो. जगपति महावीर० ॥ १ ॥ गृही त्यागी व्रत समकितमांही, अतिचारादिक लाग्या; निंदे गर्हे फरी करे नहीं, प्रतिक्रमणे तेह जाग्याहो. जगपति० ॥ २ ॥ क्षयोपशमो समकित चारित्रे, वारंवार छे दोषो; तेमाटे प्रतिक्रमणावश्यक, करो आतम गुण पोषोहो. जगपति० ॥ ३ ॥ दोषने गुण निरीक्षा करतां, प्रायश्चित्तने धरतां, निंदो गर्हो निजगुण वरतां, भवि नरनारी तरतां हो. जगपति०

॥ ४ ॥ मोहीना मन मीठो कहेणी, पण कडवीछे रहेणी; कहेणी प्रमाणे थातां रहेणी, चढशो मुक्ति निसरणी हो. जगपति० ॥ ५ ॥ मनवचनकाया प्रतिक्रमणथी, मनवचन काया शुद्धि; क्षण क्षण उपयोगे पडिक्कमणुं, करतां चिदानंद ऋद्धिहो. जगपति० ॥ ६ ॥ आतमना उपयोगे ध्याने, नहि आवश्यक करणी; शुभाशुभपरीणाम निवृत्ति, भवपाथोधितरणीहो. जगपति० ॥ ७ ॥ चउनिक्षेपे सातनयोथी, प्रतिक्रमण अवधारो. निज निज अधिकारे प्रतिक्रमतां, शुद्ध थता आचारोहो. जगपति० ॥ ८ ॥ अप्रशस्य कषाय प्रवृत्ति, प्रतिक्रमता संसारी; प्रतिक्रमणथी क्षणमां मुक्ति, पाम्या घणा नरनारीहो. जगपति० ॥ ९ ॥ पंच पडिक्कमणां व्यवहारे, निश्चय निज उपयोगे; जाणीने वर्ते जे भावे, रहे न भवभय रोगेहो. जगपति० ॥ १० ॥ पश्चात्तापथी भूलो खमावो, खमो दुर्गुणने हटावो; बुद्धिसागर सद्गुरु संगे, आनंद मंगल पावोहो. जगपति० ॥ ११ ॥

ॐ० प० प्रतिक्रमणाराधनार्थं ज० य० स्वाहा ॥

पंचमी कायोत्सर्गावश्यक पूजा.

देह छतां जेने जरा, रहे न देहाध्यास; कायोत्सर्गज जाणवो, आतम ध्यानाभ्यास. ॥ १ ॥ द्रव्य भावथी जाणवुं, कायोत्सर्ग स्वरूप; आवश्यक विधि योगथी, नासे भवभय धूप. ॥ २ ॥ शुद्धातम उपयोग छे, कायोत्सर्ग प्रमाण; निश्चयनयथी आदरे, प्रगटे केवलज्ञान. ॥ ३ ॥ व्यवहारे विधिथी करो, टाळो मनना दोष; दर्शन ज्ञानने चरणनी, शुद्धि प्रगटे पोष. ॥ ४ ॥

हम मगन भये प्रभु ज्ञानमां. ए राग.

प्रभु महावीर जिनवर ध्याइए, ध्याइए ध्याइए ध्याइए, प्रभु०। कायोत्सर्ग करो गुण हेते, आवश्यकदिल धारिये; देहादिक जड वस्तुथी न्यारो, आतम शुद्ध विचारिये. प्रभु० ॥ १ ॥ देह छतां नहि देहनी ममता, धर्मे तनु व्यापारीए; शुद्धातम उपयोगे रहीने, परमानंदमां म्हालीए. प्रभु० ॥ २॥ दर्शन ज्ञान चरणनी शुद्धि, काउसग्गयोगे कीजीए;

देहादिक मोहसागर उपर, ज्ञाने तरंतां रीझीए. प्रभु० ॥ ३ ॥ काउसग्ग योगे क्षणमां केवल, मुक्ति अनंता पामिया; शुभ अशुभ परिणाम त्यजीने, शुद्ध स्वरूपे जामिया. प्रभु० ॥ ४ ॥ शुद्धातम उपयोगे रहेतां, सर्व प्रभुने ध्याइया; निश्चयनयथी एकातममां, सर्व जिनेश्वर आविया. प्रभु० ॥५॥ व्यवहारथी विधि काउसग्ग करवो, एम सापेक्ष विचारीये; आतम शुद्धि हेते साधन, एकदाग्रह वारिये. प्रभु० ॥ ६ ॥ द्रव्यभाव व्यवहारने निश्चय, नयसापेक्षे जाणीए; सांज सवारे आवश्यकने, रहेणीमांही आणीए. प्रभु० ॥ ७ ॥ मोहादिक कर्मो झट विणसे, मानव भव नहि हारिए; प्रभुनी साथे तन्मय थैने, मोही मनडुं मारीए. प्रभु० ॥ ८ ॥ गृही त्यागीने आवश्यक छे, नित्यनी करणी कीजीए; बुद्धिसागर मंगलमाला, परमानंद पद लीजीए. प्रभु० ॥ ९ ॥ ॐ० प० कायोत्सर्गाराधनार्थं ज० य० स्वाहा ॥

छठी प्रत्याख्यानावश्यक पूजा.

छट्टुं आवश्यक करो, जावे प्रत्याख्यान; द्रव्य-जाव बे कर्मनो, नाश थतो भवी जाण. ॥ १ ॥ सर्व शुभाशुज वांछना, त्याग ज प्रत्याख्यान; निश्चयथी ए आदरे, प्रगटे केवलज्ञान. ॥ २ ॥ आसक्तिनो त्याग ते, निश्चय प्रत्याख्यान; रागद्वेषने परिहरे, प्रत्याख्यान प्रमाण. ॥ ३ ॥ द्रव्यथी प्रत्याख्यानना-अनेक भेदो जोय; साध्यतणा उपयोगथी, साधन सफळां होय. ॥ ४ ॥ आतम जावे मन थतां, वर्ते प्रत्याख्यान; ग्रहणत्याग बुद्धि विना, सहजयोगथी मान. ॥ ५ ॥

श्रीपालना रासनी देशनो.

जिमतरु फूले जमरो बेसे. ए राग.

प्रभु महावीरने वंदो पूजो, गाजो प्रणमो ध्याजो, प्रत्याख्यान जिणे उपदेश्युं, भावथी मनमां लावोरे, जविका, प्रत्याख्यानने धारो, थाय सफळ अवता-

रोरे. भविका० ॥ १ ॥ व्यवहारथी पच्चखाणने करिये, मनपर काबू धरिये; गुरु पासे पच्चखाण उच्चरिये, कर्म निकाचित हरियेरे. भविका० ॥ २ ॥ अशनादिक इच्छा संवरीये, सुख दुःख समता वरिये, कर्म अनंतां क्षण निर्जरीए, आतमने उद्धरिएरे. भविका० ॥ ३ ॥ पापकर्म इच्छाओ त्यागो, आतम भावे जागो; परपरिणामथी दूरे भागो, पर पुद्गल नहीं मागोरे. भविका० ॥ ४ ॥ भोगादिक इच्छाओ छंडो, निज आतम रढ मंडो; काढो मोहतणो पग दंडो, छंडो मिथ्या घमंडोरे. भविका० ॥ ५ ॥ दुष्टेच्छाओ दूर निवारो, कामेच्छाओ वारो; हिंसादिक वृत्ति संहारो, आतममां प्रेम धारोरे. भविका० ॥६॥ कायिक सुख माटे जे भोगो, निश्चय तेह छे रोगो; तेना जे प्रगटे संयोगो, वेदो निर्वेद योगोरे. भविका० ॥ ७ ॥ आतमभाण अन्य इच्छा सर्वे, ते त्यागे पच्चखाणो, निकाचित भोगो भोगवतां, विषमभाव न आणोरे. भविका० ॥८॥ जीवो अनंता मुक्ति पाम्या,

प्रत्याख्याननना योगे; बुद्धिसागर आनंद मंगल, वर्तो निजगुण भोगे हो. भविका० ॥ ९ ॥

कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो.

त्रिशलानंदन आनंदवर्धन, वर्धमान जिनरायो, चोवीशमा तीर्थंकर ईश्वर, परमब्रह्म सुहायोरे. महावीर० ॥ १ ॥ षडावश्यक पूजा रचीने, पूज्याप्रभु हरखायो; आनंदमंगल घटमां पायो, शुद्धोपयोगे रमायोरे. महावीर० ॥ २ ॥ ओगणिश अठोत्तर कार्तिक सुदि, नवमी बुध सुहायो; सानंद शहेरमां आनंद ल्हेरे, पूजा रची गुण पायोरे. महावीर० ॥३॥ वीरजिनेश्वर पट्ट परंपर, तपगच्छी गुरुराजा; हीरविजयसूरि शासन धोरी, भारतमुनि शिरताजारे. महावीर० ॥ ४ ॥ वाचक सहज सागर गुरु मोटा, पट्ट परंपर राजे; श्री नेमिसागर रविसागरगुरु, मेघपरे जग गाजेरे. महावीर० ॥ ५ ॥ श्रीरविसागर शिष्यसनूरा, पटधर गच्छना राजा; श्री

सुखसागर सद्गुरु प्रणमुं, सागर पेठे माझारे. महावीर० ॥ ६ ॥ गुरु कृपाथी पूजा रची शुभ, सर्व जीव सुखकारी; बुद्धिसागर आनंद मंगल, शांति तुष्टि करनारीरे. महावीर० ॥ ७ ॥ षडावश्यक पूजा सुणे जे, भणे भणावे भावे; सकल संघमां आनंद मंगल, घर घर शांति थावेरे. महावीर० ॥ ८ ॥ ॐ० प० प्रत्याख्यानाराधनार्थं ज० य० स्वाहा ॥

अष्टप्रकारी पूजा.

दुहा.

श्री संखेश्वर पार्श्वजी, पुरीसादाणी जेह; पद पंकज नमी तेहना, रचना रचुं गुणगेह. ॥ १ ॥ पूजा अष्टप्रकार छे, आद्य न्हवण जयकार; चंदन कुसुमने धूपनी, पंचम दीप मनोहार. ॥ २ ॥ अक्षत नैवेद्य फुल इम, पूजा अष्टप्रकार; करतां शिवसुख संपजे, पामीजे भवपार. ॥ ३ ॥ द्रव्य भाव भेदे करी, पूजे जे जिनराय; पूजा करतां प्राणिया, पूजक पदवी पाय. ॥ ४ ॥ शुभ सिंहासनमां प्रभु, पडिमा स्थापी सार; समय विधि अनुसारथी, पूजीजे सुखकार. ॥ ५ ॥

१ जलपूजा.

अनिहारे जिनमंदिर रलियामणुंरे—ए देशी.

बहुभावे सुरवरकोडाकोडी मिलीरे, प्रभुने सुरगिरि लइ जाय; आठजाति कलशा भरीरे, प्रभुन्ह-

वण करे सुरराय. सुरवरकोडा० ॥ १ ॥ बहु भावे नाचे राचे जिन प्रेमथीरे, अभिषेक करी हरखाय; तिम प्रभुपूजा करतां थकांरे, अध्यातम निर्मल थाय. सुरवरकोडा० ॥ २ ॥ बहुभावे विप्रवधू जल रेमतीरे; जिनपडिमापर सुखकार; स्वर्गादिक सुख पामतीरे; तिम भवियण वर्तो सार. सुरवरकोडा० ॥ ३ ॥

धन धन संप्रति साचो राजा–ए देशी.

शमजलथी निज चेतन निर्मल, थाय कहे जिनवाणीरे; शमजलथी शुद्ध चेतन अर्चन, करतां भवभय हाणीरे. शमजलपूजा चेतन करीए. ॥ १ ॥ मिथ्यात्वाविरति कषायने योग, तेथी कर्म बंधायरे; चारगतिमां भटके चेतन, विविध दुःखने पायरे. शम० ॥२॥ गज सुकुमालजी शमजल पूजा, करतां बहु सुख पाम्यारे; स्कंधक सूरिना शिष्यो तेमज, कर्मपंक झट वाम्यारे. शम० ॥ ३ ॥ मुनिमेतार्ये शमजल पूजा, चेतननो जिम कीधीरे; भाव न्हवण–शम चेतन अर्चन, करतां शिवफल सिद्धिरे. शम०

॥ ४ ॥ भावपूजा साधु अधिकारी, द्रव्य भाव दोय श्राद्धरे; बुद्धि शिवसुख पामे शाश्वत, होवे निराबाधरे. शम० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा.

---

२ चंदनपूजा.

दुहा.

बीजी चंदन पूजना, करतां पाप पलाय; मिथ्यादोष अनादिनो, टळतां शिव सुख थाय. ॥१॥ पुद्गल संगे आतमा, दुर्गंधियुत जाण; सुगंधे जिन पूजतां, सुवासित मन आण. ॥ २ ॥

सुण बहेनी पियुडो परदेशी—ए देशी.

चंदन पूजा करो शुभ भावे, जिनवरनी सुख काजेरे; चंदनसम चेतन शीतलता, थातां शिवसुख ताजेरे. चंदन० ॥ १ ॥ केसर—चंदन घसी जयणाये,

मांहे घनसार मिलावोरे; रजत कचोलीमांहे ठवीनें प्रभु पूजा विरचावोरे. चंदन० ॥ २ ॥ चंदनपूजा योगे जयसुर, शुभमति शिवसुख पामेरे; तिम भवि-जण चंदन पूजाथी, ठरता अविचल ठामेरे. चंदन० ३

वीर जिनेश्वर उपदिशे.—ए देशी.

चंदनसमकित भावथी, पूजन चेतन कीजेरे; मिथ्यामल दूरे करी, अविचल पदवी लीजेरे. चंदन० दोष अढार रहित प्रभु, देव तत्त्व मन आणोरे; सुसाधु गुरुतत्त्व छे, द्रव्य क्षेत्र काल जाणोरे. चंदन० ॥ २ ॥ जिनवर भाषित सत्य छे, धर्मतत्त्व चित्त लावोरे; द्रव्य समकित अवलंबतां, भावसमकित गुण पावोरे. चंदन० ॥ ३ ॥ क्षायिक समकित चंदने, जे भवि चेतन वासेरे; मिथ्यामत दूर वासना, तेहथकी दूर नासेरे. चंदन० ॥ ४ ॥ द्रव्य समकित छंडीने, भावसम्यकृत्व जे थापेरे; ते तस खप करतां थकां, किम करी भवभय कापेरे. चंदन० ॥ ५ ॥ समकित गुणे पूजना. चेतननी जे करशेरे, बुद्धिसागर सुख

लही, मुक्तिवधू झट वरशेरे. चंदन० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम पुरुषाय० चंदनं यजामहे स्वाहा.

---

३ कुसुमपूजा.

दुहा.

पूजा त्रीजी पुष्पनी, करीए आणी भाव; पूजा थी पूजकपणुं, लहीए आप स्वभाव. ॥ १ ॥ सुवासित सुक्षेत्रथी, उपन्यां पुष्प रसाल; लावी अर्चा जिन करो, होवे मंगलमाल. ॥ २ ॥

साहेलडियांनी देशी.

कुसुम पूजा जिननी करो, सुखकारिका. जिम भवभय दूर थाय; दुःखवारिका. चंपक–मालती–केतकी, सुख,–सुगंधी फुल लाय. दुःख॥०कुसुम०॥१॥ कीटक खाधुं न लीजीए, सुख० भूमि पडयुं निरधार; दुःख. विविध जाति फुलथी, सुख. पूजा पुण्य प्रकार. दुःख. कुसुम० ॥ २ ॥ मोगरो–जासुलपुष्पथी, सुख. षड्ऋतुनां फुल; दुःख. प्रशस्य आगमे जे

कह्यां, सुख. ते लहिये अनुकुल. दुःख. कुसुम० ॥ ३ ॥ वणिक सुता लीलावती, सुख. पामी जिम शिवस्थान, दुःख. तिम भवि भावे कीजीए, सुख. पूजा श्रीजगवान्. दुःख. कुसुम० ॥ ४ ॥

वीरजिणेसर उपदिशे–ए देशी.

सत्य शौच कुसुमे करी, जे निज चेतन पूजेरे; कर्म कलंक अनादिनुं, तेहथकी झट ध्रूजेरे. सत्य० ॥१॥ सत्य जे आत्मस्वरूपनी, श्रद्धा मनमां कीजेरे; उपनीतादिक भेदने, जाणी सत्य वदीजेरे. सत्य० ॥ २ ॥ कूडकपट त्यागी करी, आप स्वभावे रहीएरे; त्याग करी परभावनो, शिवसुख सहेजे लहीएरे. सत्य० ॥ ३ ॥ मन व्यापार निवृत्तिथी, शान्ति चेतन पामेरे; आत्म अनुभव जागतां, कर्मरोग झट वामेरे. सत्य० ॥ ४ ॥ परपुद्गल संयोगथी, चेतन चउगति भटकेरे; तेहतणा त्यागे करी, भमतो चेतन अटकेरे. सत्य० ॥ ५ ॥ स्वगुणे करी सत्यछे, आत्म-

राय भवि जाणोरे; बुद्धिसागर सुख लही, होवे शिवपुर राणोरे. सत्य० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम पु० कुसुमं यजामहे स्वाहा.

—•—

४ धूपपूजा.

दुहा.

चोथी पूजा धूपनी, दशांगादिक जाण; कर्मेन्धनने बाळवा, करता भविक सुजाण. ॥ १ ॥ धूप करो प्रभु आगळे, शास्त्र वचन अनुसार; करतां सुख बहु लीजीए, तरीए भवजलपार. ॥ २ ॥

अनिहांरे जिनमंदिर रळियामणुंरे—ए राग.

भवि भावे धूपपूजा जिननी करोरे, जिम जावे भव भयरोग; चूरण शुद्ध दशांगथीरे, धूप करतां नासे शोग. धूपपूजा. ॥ १ ॥ भवि भावे धूपधाणुं वामांगे ठवोरे, अगरतुरुकघनसार; कुंदरुचंदन उखेवतांरे, पामीजे भवजलपार. धूपपूजा० ॥ २ ॥ भवि भावे शास्त्र विधि अनुसारथीरे, करिये धूपपूजा शुद्ध, स्वर्गतणां सुख पामियेरे, वळी लहीए शिवपद बुद्ध.

धूपपूजा० ॥ ३ ॥ भवि भावे विनयंधर सुख पामतोरे, धूपपूजाथी विस्तार; तिम नवि भावे करतां थकांरे, बुद्धि शिवसुख निरधार. धूपपूजा० ॥ ४ ॥

गिरुआरे गुण तुमतणा—ए देशी.

ध्यानधूपनी पूजना, करीए भविजन भावेरे, परपुद्गलदुर्गंधता, तेहथकी दूर जावेरे. ध्यानधूप प्रगटावीए ॥ १ ॥ आर्त्त—रौद्र दुर्ध्यान छे, धरतां दुःख बहु लहीएरे, तेनो त्याग करी भवि, आप स्वभावे रहीएरे. ध्यान० ॥ २ ॥ धर्मध्यान शुभगति दीए, शुक्लध्यान शिव आपेरे; गुणठाणे गुण उपजे, भवो भवनां दुःख कापेरे. ध्यान० ॥ ३ ॥ आत्मध्यान धरतां थका, दुर्गंधी दूर नासेरे; योग समाधि लगावतां, चढीए मोक्ष आवासेरे. ध्यान० ॥ ४ ॥ अस्थिर आ संसारमां, जीवे बहु दुःख सहियांरे; नरकतणां दुःख भोगव्यां, ते नवि जाए कहियांरे. ध्यान० ॥ ५ ॥ चेतन नरक—निगोदमां, वार अनंती भमियोरे; चारगति संसारमां, अज्ञाने जीव रमियोरे.

ध्यान० ॥ ६ ॥ पुद्गलजामा पहेरीने, चेतन नाटक करतोरे; राजा कबहु रंक थइ, पुद्गल संगे फरतोरे. ध्यान० ॥ ७ ॥ रुवे नाचे खेलतो, हसतो खातो रोगीरे; कबहु चेतन जोगी ने, कबहु वियोगी शोगीरे. ध्यान० ॥ ८ ॥ कर्मे करी ए सव हुवे, कर्म दूर जब थावेरे, बुद्धिसागर सुख लही, चिदानंद कहावेरे. ध्यान० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० धूपं यजामहे स्वाहा.

---

५ दीपपूजा.

दुहा.

दीपक पूजा जिननी, करीए आणी भाव; आत्मगुण हितकारिका, भवजलमां जिम नाव. ॥ १ ॥ प्रभु आगळ दीपक धरो, दक्षिण पास रसाळ; द्रव्य दीपकनी पूजना, करतां मंगळमाळ. ॥ २ ॥

सुतारीना बेटा तुने विनवुंरे लोल—ए देशी.

भवि भावे दीपकनी पूजनारे लोल, जिन आगळ करीए नित्यजो; मिथ्यात्व अनादि निवारीएरे लोल, प्रभु पूजीए चोखे चित्तजो. प्रभु दीप पूजा रळियामणीरे लोल, ज्युं पूजा करे सुर—इंद्रजो तिम पूजो भवि जिनचंदजो, लहो शाश्वत शिव सुख कंदजो. प्रभु० ॥ १ ॥ धूम अज्ञान नासे वेगळुंरे लोल, शुद्ध आत्मरूप प्रगटायजो; रजत—कनक—ताम्रनां कोडियांरे लोल, तेमां घृत धरो हित लायजो. प्रभु० ॥ २ ॥ जिनमंदिर वासण मांजियेरे लोल, घृत कोडिया मांजिये खासजो; दीवा उघाडा नवि मूकीएरे लोल, चित्त होय जो शिवसुखआशजो. प्रभु० ॥ ३ ॥ दीपपूजाथी जिनमति धनसिरिरे लोल, जिम पामी शाश्वत सुखठायजो; तिम भक्तिभावे जिन पूजीएरे लोल, इम बुद्धिसागर गुण गायजो. प्रभु० ॥ ४ ॥

कोइलो पर्वत धुंधलोरे लोल–ए देशी.

भाव दीपक ते ज्ञान छेरे लाल, भविजन अति सुखकारेरे; हुं वारीलाल. मति अट्ठावीश भेदछेरे लाल, त्रणसे चालीश तिम धाररे. हुं. भाव० ॥ १ ॥ चौद वीश भेद श्रुतनारे लाल, पामंतां सुख थायरे; हुं. श्रुतज्ञानी केवली समोरे लाल, प्रेमे प्रणमो पाय रे. हुं. भाव० ॥ २ ॥ अवधि असंख्य प्रकारछेरे लाल, मुख्य भेद षट् धारेरे; हुं. मनःपर्यव भेद दो कह्यारे लोल, केवल एक उदाररे. हुं. भाव० ॥ ३ ॥ केवलज्ञान प्रत्यक्ष छेरे लाल, तेहथी सर्व जणायरे; हुं. तीर्थंकर ते गुण वरीरे लाल, उपदेश दे सुखदायरे. हुं. भाव० ॥ ४ ॥ ज्ञानसहीत किरिया कहीरे लाल, साचो मोक्ष उपायरे हुं. वस्तु एकांते जे ग्रहे रेलाल, भवमां ते भटकायरे. हुं. भाव० ॥ ५ ॥ विनय करो ज्ञानीतणोरे लाल, ज्ञानीतणुं बहुमानरे; हुं. भणो भणावो ज्ञाननेरे लाल, लखो लखावो ज्ञानरे. हुं. भाव० ॥ ६ ॥ शासन चाले ज्ञानथीरे लाल, उपदेश ज्ञानथी थायरे; हुं. समकित प्रगटे ज्ञा-

नथीरे लाल, मिथ्यात्व दूरे जायरे. हुं. भाव० ॥७॥ पंचमकाले आधार छेरे लाल, ज्ञान श्रुत निरधाररे हुं. वरजो आशातना श्रुततणीरे लाल, पामो ज्युं भव पाररे. हुं. भाव० ॥ ८ ॥ ज्ञान क्रिया अंतर सुणोरे लाल, खजुआ भानु समानरे; हुं. भाव० ॥९॥ महिमा ज्ञाननो अति घणोरे लाल, भाख्यो ते नवि जायरे; हुं. आत्मस्वरूप समजो भवीरे लाल, पामो शिवपुरठायरे. हुं भाव० ॥ १० ॥ किरियारहित ज्ञान पांगळुंरे लाल, आंधळी किरिया तेमरे; हुं. थातां संगम दोउनोरे लाल, थावे शिवसुखक्षेमरे. हुं. भव० ॥ ११ ॥ आलंबन प्रभुनुं ग्रहीरे लाल, पूजो चेतन द्रव्यरे; हुं. बुद्धिसागर सुख लहीरे लाल, पामे शिवपुर भव्यरे. हुं. भाव० ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ--परम० दीपं यजामहे स्वाहा.

६ अक्षतपूजा.

दुहा.

समकित निर्मल कारिका, अक्षतपूजा एह; भवि जन भावे कीजीए, लहीए शिवपुरगेह. ॥ १ ॥ उ-

त्तमक्षेत्रे नीपन्या, अखंड नयनानंद; उज्ज्वल तंडुल पूजना, करीए श्रीजिनचंद. ॥ २ ॥

मेरु शिखर न्हवरावो हो सुरवर, मेरु०--ए देशी.

अक्षत पूजा कीजेहो भविका, अक्षतपूजा कीजे, शुभतंडुल उज्ज्वल शुभक्षेत्रे, नोपन्या तेहीज लहीए; गोधूम पण तिम पूजा कीजे, शुभभावे गहगहीए हो. भविका० अ० ॥ १ ॥ चारगतिचूरकस्वस्तिक प्रभु--आगे कीजे भावे; त्रणपुंज रत्नत्रयी वरवा, करतां भव दुःख जावे हो भविका. अ० ॥ २ ॥ सिद्धशिला उपर एक योजन, चोवीसमा तस जागे; मोक्षशिव सिद्ध पदने हेते, सिद्धशिला करो आगे हो भविका. अ० ॥ ३ ॥ भवभवनां पुनरावर्त्त हरवा, वरवा शिवपटराणी; नंदावर्त्त करो भवि भावे, होवे नवनयहाणीहो भविका. अ० ॥ ४ ॥ कीरयुगले जिम अक्षत पूजा, करतां सुख बहु लीधुं; बुद्धिसागर शिवसुख संपदा, पामवा मनकुं कीधुं हो भविका. अ० ॥ ५ ॥

कयुं जाण्युं कयुं बनी आवही.—ए देशी.

शुभ परिणाम ते भावथी, अक्षत पूजा सारहो भविक; भावरोग दूर टाळवा, औषधसम चित्त धारहो भविक. भावपूजा अतिसुख दीए० ॥ १ ॥ हिंसा जूठ चोरी तजो, परनारी निरधारहो भविक; तनु धनममता परिहरो, रयणीभोयण अंधकारहो भविक. भाव० ॥ २ ॥ दिसिगमननो नियम करो, चौद नियम नित्य धारहो भविक; बत्रीश अनंतकाय तिम, अभक्ष्य बावीस निवारहो भविक. भाव० ॥३॥ कषाय मद विकथा वळी, विषय निद्रा त्यागहो भविक; चित्त संतापना हेतु जे, तेथी न धरीए रागहो भविक. भाव० ॥ ४ ॥ अहं मम मोह मंत्रनो, त्याग करो गुणवंतहो भविक; विपरीत मंत्र मनन थकी, थाओ शाश्वत सुखवंतहो भविक. भाव०॥५॥ अनंतरत्नत्रयी गुणे, चेतनद्रव्य विचारहो भविक; कर्मविनाशथी संपजे, स्थिति सादि अपारहो भविक. भाव. ॥ ६ ॥ अक्षतअक्षयसुखभणी, भावपूजा सुर-

सालहो भविक; बुद्धि शिवसुखसंपदा, पामे मंगल-मालहो भविक. नाव. ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री–परमअक्षतं यजामहे स्वाहा.

---

७ नैवेद्यपूजा.

दुहा.

नैवेद्यपूजा सातमी, दुःखदोहग हरनार; सुरनर शिवसुख पामवा, कल्पवृक्षसम सार. ॥ १ ॥ विविध दुःखमृग–सिंहसम, शान्ति तुष्टि करनार; प्रभुपूजाथी रोग शोग, ए सहु दूर थानार. ॥ २ ॥

(तेजे तरुणीथी वडोरे–ए देशी.)

नैवेद्यपूजा सातमीरे, करीए आणी प्रेम; भव-जल तरवा नाविकारे, आपे शिवसुखक्षेमहो भविका. नैवेद्यपूजा कीजीएरे. जिनआणा शिर दीजीयेरे, जन्ममरण दूर जाय. ॥ १ ॥ मोदक लापसी दैंथरांरे, बरफी पेंडा कुलेर; घेबर घारी सांकलीरे, विधिये करी निज घेरहो. न. नै. ॥ २ ॥ पापड पूरी रेवडीरे,

खुरमां खाजां सार; फेणी जलेबी खीरथोरे, पूजा करो मनोहारहो भ. नै. ॥ ३ ॥ गुंदवडां ने रेवडीरे, शाल दाल घृत गोळ; प्रभु भक्तिथी पूजीएरे, होवे ज्युं रंग चोलहो भ. नै. ॥ ४ ॥ हलीयपुरुषपेरे पूजनारे, जे करशे नरनार; बुद्धि शिवसुखसंपदारे, पामी लहे भवपारहो भ. नै. ॥ ५ ॥

(वीर जिणेसर उपदिशे–ए देशी.)

भावनापूजा भावथी, नैवेद्यनो जे करशेरे; प्रवहणसम छे भावना, भावे ते शिव वरशेरे. भा. ॥१॥ आ संसार अनित्य छे, संध्यारंगसम देखोरे; तेमां जन्ममरण कर्यां, आवे नहि तस लेखोरे. भा. ॥२॥ शरण नहि संसारमां, मरता जीवने कांइरे; मृत्युवश थया जीवने, नहि कोइ जगमां सखाइरे. भा. ॥३॥ त्रण भुवनमां प्राणियो, भटक्यो अनंतिवाररे; माता ललनापणे हुवे, पिता पुत्र विचाररे. भा. ॥ ४ ॥ पुरुष स्त्रीपणे थावतो, ए संसारस्वरूपरे; संसारमां जे राचशे, ते पडशे भवकूपरे. भा. ॥ ५ ॥ पुत्र स्त्री

परिवारने, मारुं मारुं मानेरे; सत्यवचन जिनवरतणां, सांभळतो नहि कानेरे. भा. ॥ ६ ॥ शरीरपंजरमां रह्यो, चेतन एक मन आणरे; एकलो आव्यो एकलो, जाइश परभव जाणरे. भा. ॥ ७ ॥ तन धन मंदिर मालीआं, पुत्र कलत्रने भाइरे; ताराथी ए भिन्न छे, जूठी तास सगाइरे. भा. ॥ ८ ॥ सातधातुथी नोपनी, अशुचिमय छे कायारे; विष्टा मूत्र शरीरमां, करवी शी? तस मायारे. भा. ॥ ९ ॥ जीव माताना पेटमां, मलमूतरमां रहियोरे; दुःख अनंतु त्यां सह्युं, पवित्र शुं? हवे थइयोरे. भा. ॥ १० ॥ समये समये कर्मने, रागादिकथी बांधेरे; शिवसुखकारण धर्मने, केम मनथी नवि साधेरे. भा. ॥ ११ ॥ जेथी कर्म रोकाय छे, तेहीज संवर जाणोरे; करवो आदर तेहनो, एहीज धर्म वखाणोरे. भा. ॥ १२ ॥ तप द्वादश चित्त धारीए, लोकस्वभावने समजोरे; आपस्वभावे स्थिर थइ, परपुद्गल मत रमजोरे. भा. ॥ १३ ॥ बोधिदुर्लभ जाणीने, जिनआणा शिर

वहीएरे; अरिहंतभाषित धर्म छे, सत्यधर्म जिन कहीएरे. भा. ॥ १४ ॥ जड पुद्गलथी भिन्न छे, अरूपी आत्मस्वरूपरे; बुद्धिसागर ध्यावतां, थावे शिवपुरभूपरे. भा. ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ—परम० नैवेद्यं यजामहे स्वाहा.

---

८ फलपूजा.

दुहा.

आठमी फलनी पूजना, करिए भवि हित लाय; फलपूजाथी पामीए, शिवफल अतिसुखदाय. ॥ १ ॥ उत्तम वृक्षतणां ग्रही, फळ रमणिक मनोहार; प्रेमे पूजो भविजना, होवे जयजय-कार. ॥ २ ॥

(ऋषभजिणंदशुं प्रीतलडी—ए देशी.)

फळपूजा जिनराजनी, भवि कीजे हो भावे सुखकार; शास्त्रविधि अनुसारथी, लहो शुभ फळ

हो पामो भवपार. फळ. ॥ १ ॥ श्रीफळ आम्र बदामने, सीताफळ हो दाडीम हितकार; केळां पिसतां नीमजां, रायणफळ हो मेवो जयकार. फळ. ॥२॥ काळ अनादि जीवने, नहीं तृप्ति हो मनमांही लगार; विविधफळ भक्षण करी, जीव रझळ्यो हो चउगति मोझार. फळ. ॥ ३ ॥ जीव लालचियो लंपटी, फळभक्षणथी हो नहि विरम्यो लगार; पापजय नहीं चित्त गण्यो, भक्ष्याभक्ष्यनो हो नवि करियो विचार. फळ. ॥ ४ ॥ जिनशासन अंगीकरी, प्रभु आगे हो करुं विनति एम; फळपूजा उतारतो, प्रभु आगे हो ठवुं आणी प्रेम. फळ. ॥ ५ ॥ आपो शिवफळ जिनवरा, जे पामी हो भवनां दुःख जाय; बुद्धिसागर सुख लहो, पामे शिवफळ हो जे अतिसुखदाय. फळ. ॥ ६ ॥

(सांभळजो मुनि संयम रागे—ए देशी.)

शाश्वत शिवफळ स्वाद लहो भवि, जैनधर्म

चित्तधारीरे; द्रव्यभावथी धर्म जे जाणे, जाउं तेहनी बलीहारीरे. शा. ॥१॥ सातनयो उत्तर तस भेदो, आगमथी जे जाणेरे; सप्तभंगी जे शुद्धि जाणे, ते मुक्तिसुख माणेरे. शा. ॥ २ ॥ षट्‌द्रव्यगुणपर्याय जाणे, जाणे आत्मस्वरूपरे; उपादेय आतमने जाणे, ते न पडे भवकूपरे. शा. ॥ ३ ॥ नवतत्त्व जिनेश्वर भाखे, बोध तास जे करशेरे; हेय ज्ञेय उपादेय समजी, समकित–श्रद्धा वरशेरे. शा. ॥ ४ ॥ श्रद्धाथी समकित शुद्ध प्रगटे, तेथी विरति लहियेरे; विरतिथी क्षय कर्मनो करतां, शिवपुरमारग वहियेरे. शा. ॥ ५ ॥ बाहिर अंतर परम ए तीन, आत्म परिणति समजोरे; परमातम पद लक्ष्य विचारी, अंतर आतम रमजोरे. शा. ॥ ६ ॥ शरीर वाणी मनथी जूदो, आत्मद्रव्य चित्त धरतोरे; अरूपी निःसंग आतम निर्मल, तास ध्यान मन करतोरे. शा. ॥ ७ ॥ राग द्वेष मोहरायना योद्धा, तेहनी साथे वढतोरे; आतमा आप स्वरूपे खेली, क्ष-

पक श्रेणीए चढतोरे. शा. ॥ ८ ॥ वीर्योल्लास वधे गुण प्रगटे, कर्मकलंक खपावेरे; शुक्लध्यानपायाए चढतो, केवलज्ञान गुण पावेरे. शा. ॥ ९ ॥ आयुष्यस्थिति पूर्ण करीने, शरीरसंग दूर करतोरे; जन्ममरणना फेरा टाळी, सादिअनंत स्थिति वरतोरे. शा. ॥१०॥ दुःखाभावरूपमुक्ति माने, नैयायिकमतवादीरे; सर्वव्यापकमुक्ति माने, ते पण छे उन्मादीरे. शा. ॥११॥ स्वामीसेवकभाव स्वीकारे, मुक्तिमां ते खोटोरे; कर्म खप्याथी सर्वे सरखा–माने ते जीव मोटोरे. शा. ॥ १२ ॥ गमनागमन मुक्तिमां माने, मतवादी अज्ञानीरे; गमनागमनरहित छे मुक्ति, जाणे स्याद्वादज्ञानीरे. शा. ॥१३॥ अनंतसुखमयमुक्तिफलने, पामे भवि नरनारीरे; बुद्धिसागर शिवसुख पामे, चिदानंदपद धारीरे. शा. ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम–फलं यजामहे स्वाहा.

सर्वोपरी गीतं.

(नमो नमोभवियण भावशुं ए–ए देशो.)

अष्टप्रकारी पूजना ए, द्रव्य भाव मनोहार; भविजन पूजोए ए. जिनप्रतिमा जिनसारिखी ए, भाखी शास्त्रमजार. भवि.॥१॥ दर्शन दीठे देवनुं ए, पापपंक दूर थाय; भवि. भगवतीमांहो मुनिवराए, प्रतिमावंदन जाय. भवि. ॥२॥ नामनिक्षेपो उच्चरेए, स्थापना किम न मनाय; भवि. शुद्धभावथो पूजतांए, जन्ममरण दूर जाय. भवि. ॥३॥ सांकळचंदसुत जाणीएए, चुनीलाल उदार; भवि. नथुभाइसुत जाणीएए, जेठाभाइ हितकार. भवि. ॥ ४ ॥ जेठालाल नरोत्तम कारणेए, मूळचंदभाइना काज; भवि. डाह्याभाइनो विनतिए, करतां शिवसुख राज. भवि. ॥ ५ ॥ शासन वीर जिनेश्वराए, हीरविजय सूरि राय; भवि. सहेजसागर उपाध्यायजीए, तास शिष्य वखणाय. भवि. ॥६॥ तास शिष्य उपाध्याय-

जी ए, जयसागर जयकार; भवि. पाटपरंपर शोभ-
ताए, नेमिसागर सुखकार भवि.॥ ७ ॥ तस शिष्य
रविसागर गुरु ए, संवेगी अनगार; भवि. तस शिष्य
सुखसागर गुरु ए, गामोगाम विहार. भवि.॥ ८ ॥
वसोनगर पधारियाए, संघ सकल हरखाय; भवि.
ऋषभदेवतीर्थंकराए, निरखी आनंद थाय. भवि.
॥९॥ तास पसाये ए रचीए, पूजा अष्टप्रकार; भवि.
भणो भणावो सांभळो ए, भावथकी नरनार. भवि.
।१०। मेरुपरे ए स्थिर थइ ए, करजो भविमन वास; भवि.
चंद्र सूर्य जब लग रहे ए, जगमां करता प्रकाश.
भवि. ॥११॥ तब लग पूजा विस्तरो ए, शांति तुष्टि
करनार; भवि. ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा ए, पूजाथी
थानार. भवि.॥१२॥ संवत ओगणीस उपरे ए, ओग-
णसाठनी साल; भवि. फागण वदि एकादशी ए,
पूजा पूर्ण विशाल. भवि. ॥१३॥

कलश.

एम सकलसुखकर द्रव्य भावे, पूजा अष्टप्रकारी ए; भणे भणावे सुणे जे भवी, ते शिवसुख लहे भारी ए. तपगच्छशाखा गगनमंडळ—दिवाकरपेरे छाजता; वैराग्यरंगे व्याप्युं जस मन, महिमा जग जस गाजता. ॥१॥ रविसागर गुरु प्रेमे प्रणमुं, संवेगी सिरदार ए; जस नाम देतां सकलमंगल, पामे भवीनरनार ए. तस पदपंकजभृंगसम श्री—सुखसागरगुरुबाल ए; एम बुद्धिसागर शिव सनातन, पामे मंगलमालए. ॥ २ ॥

इति अष्टप्रकारीपूजा संपूर्णा.

वास्तुकपूजा.

दुहा.

श्री संखश्वरपार्श्वनाथ, त्रेवीसमा जिनराय; धरणेंद्र पद्मावती, पूजे जेहना पाय. ॥ १ ॥ पार्श्वयक्ष जस शोभतो, सेवा करे चित्त लाय, पुरिसादाणी पार्श्वनाथ, ध्याता शिवसुख थाय.॥२॥ वास्तुकपूजा घरतणी, करता सुख विशाल; ऋद्धि वृद्धि जय संपजे, कीर्ति मंगलमाल. ॥३॥ पंच पंच वस्तुथकी, संखेश्वरप्रभुपास, पूजो भवी भावे करी, सफळ होवे मन आश. ॥ ४ ॥ चिंतामणिसम पार्श्वनाथ, पार्श्वमणि समनाम; ध्यातां गातां प्राणीनां, सिद्धे सघळां काम. ॥ ५ ॥

प्रथमपूजा.

(मल्लिजिन वंदीए भवी भावेरे–ए राग.)

संखेश्वरपासप्रभु नित्य गावोरे, शाश्वत शिवकमळा पावो, सं० काशीदेश वणारसीगामरे, विश्वसेन-

राजा अश्विरामरे; वामामाता सुखविश्राम. संखेश्वर. ॥१॥ प्रभु मातकुखे जब आयारे, इंद्र चोसठ सुरगिरि लायारे; सुरासुर मनमां हरखाया. संखेश्वर. ॥ २ ॥ एक लाखने साठ हजाररे, आठजाति कळश मनोहाररे; प्रभु न्हवण करे जयकार. संखेश्वर. ॥ ३ ॥ इंद्राणीयो हस्ती गातीरे, जिनदर्शन करी हरखातीरे; नाटक करी मनमां माती. संखेश्वर. ॥ ४ ॥ एवा पार्श्वप्रभु घर लावोरे, शुभ सिंहासन पधरावोरे; प्रभु न्हवण करी सुख पावो. संखेश्वर. ॥५॥ रोगशोग सहु दूर नासेरे, प्रभुश्रद्धा मनमां वासेरे; शाश्वतपद बुद्धि त्रासे. संखेश्वर. ॥६॥

मंत्रम्—ॐ नमो भगवते श्री संखेश्वरपार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय जन्मजरामृत्युनिवारणाय क्षुद्रोपद्रपशमनाय जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजमाहे स्वाहा.

द्वितीयपूजा.

दुहा.

स्नात्र भणावी पार्श्वनुं, पूजा कीजे सार; पूजक पूज्यनी पूजना, समजीजे सुखकार. ॥ १ ॥ बेउ पासे वींजीए, चामर चारु उमंग; दर्पण प्रभु आगळ धरो, होवे जयजय रंग. ॥ २ ॥

(सुतारीना बेटा तुने विनवुंरे लोल—ए देशी.)

प्रभु पार्श्वजिनेश्वर गावीएरे लोल, श्री संखेश्वर प्रभु नामजो, तुज नामथी नवनिधि संपजेरे लोल, मनवांछित सिद्धे कामजो; नाम रुडुं संखेश्वर पासनुंरे लोल, मिथ्यात्वदशा दूर थायजो; शुद्ध श्रद्धा हृदय प्रगटावजो. नाम रुडुं. ॥ १ ॥ पूजा वास्तुक दोय प्रकारनीरे लोल, शुभ अशुभ भेद कहायजो; द्रव्य वास्तुकपूजाना ए कह्यारे लोल, तेह हरखे कहुं चित्त लायजो. नाम रुडुं. ॥ २ ॥ घर महेल करावी तेडियेरे लोल, ब्राह्मण होमादिक वासजो; वेद गायत्री मंत्र भणावीएरे लोल, ब्राह्मण

जमाडीए खासजो. नाम रुडुं. ॥ ३ ॥ देवदेवी ब्रह्मादिक पूजियेरे लोल, पाडाबुद्धिए कोळुं [illegible]पायजो; मरी न[illegible]ां दुःख भोगवेरे लोल, मिथ्या वास्तुकपूजा कथायजो. नाम रुडुं. ॥ ४ ॥ फल श्रीफल प्रमुखने होमतांरे लोल, पंचेन्द्रिय हिंसा थायजो; अपमंगल एह खरुं कह्युंरे लोल, अशुभ वास्तुकपूजा कहायजो. नाम रुडुं. ॥ ५ ॥ शुभ वास्तुकपूजा वर्णवुंरे लोल, जेनुं रुडुं विशाल [illegible]जो, बुद्धि शाश्वत संपदा पामीएरे लोल, पास नाम ते मंगल रूपजो. नाम रुडुं. ॥ ६ ॥

मंत्रम्—ॐ नमो भगवते—जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा.

तृतीयपूजा.

दुहा.

शुभ वास्तुकपूजा कहुं, आणी अतिशय भाव;
स्वर्गादिक सुख पामीए, होवे शिवसुख दाव. ॥१॥

देव अरिहंत जाणीए, दोषरहीत अढार; गुरु सु-
साधु महाव्रती, पाळे पंचाचार. ॥ २ ॥ जिनवरभा-
षित सत्य छे, जैनधर्म जगजोय; सुख दुःख होवे
कर्मथी, अवर न कर्ता कोय. ॥ ३ ॥

(अनिहारे न्हवण करो जिनराजनेरे—ए देशी.)

अनिहांरे वास्तुकपूजा शुभ कीजीएरे, तजी
अवर देवनी आश; सत्पात्रे दानने दीजोएरे, सूत्रश्र-
वणरुचि अभिलाष, श्री संखेश्वर प्रभु पासजोरे.
॥ १ ॥ भवी भावे द्रव्यार्थिकमये करीरे, शाश्वत छे
लोकालोक; कर्ता तेहनो को नहिरे, केम कर्ता मा-
नीए फोक. श्री संखे. ॥२॥ उंचो नीचो एवा तीरछा
लोकनीरे, स्थिति छे अनादिअनंत; कर्ता तेहनो
को नहींरे, एम भाखे श्री भगवंत. श्री संखे. ॥३॥
नवतत्त्व षट्द्रव्य छे नित्य शाश्वतारे, द्रव्य गुणप-
र्यायस्वरूप; बे भेदे जीव दाखियारे, तस लक्षण छे
चिद्रूप. श्री संखे. ॥ ४ ॥ परिणामी पुद्गल जीव
दो जाणीएरे, अनादि संबंध विचार; कर्ता कर्मनो

आतमारे, तेम भोक्ता हृदये धार. श्री संखे. ॥ ५ ॥ शुभाशुभकर्म ग्रही भोगी आतमारे, वेदे शाता अशाता दोय; देव मनुज नारक तिरिरे, चउगतिमां भटके जोय, श्री संखे. ॥६॥ जीवे कीधां पुण्य पाप ते भोगवेरे, परपुद्गलसंगे खास; राच्यो माच्यो पुद्गलमां वस्योरे, बन्यो पुद्गलनो जीव दास; श्री संखे. ॥ ७ ॥ प्रभुपूजा करतां प्राणिया सुख लहेरे, नासे कर्माष्टकपाश; स्वामीवच्छल नवकारशीरे, हेतु सुखनां दीसे खास. श्री संखे. ॥८॥ शुभभावे नैवेद्य थाळमां मूकीनेरे, प्रभु आगळ धरीए चंग; रत्नत्रयो कमळा वरेरे, बुद्धिशाश्वतपदरंग. श्री संखे. ॥ ९ ॥

मंत्रम्—ॐ नमो भगवते—जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा.

चतुर्थपूजा.

दुहा.

शरीरपुद्गलमां वस्यो, पुद्गल मानो गेह; परभव साथ न आवतुं, क्षणमां नाशी तेह. ॥१॥ देह

अनंतां छंडियां, ज्ञटकी आ संसार; लाख चोराशी हुं भम्यो, तार तार प्रभु ! तार. ॥२॥

(सांभळजो मुनि संयम रागे, उपशम श्रेणि चढीआरे—ए राग.)

श्री संखेश्वरपार्श्वप्रभु नित्य, मनमंदिरमां धरीएरे; ध्यावी गावी पाप गमावी; श्रद्धा समकित वरीएरे. श्री संखे.॥१॥ यादवलोकनी जरा निवारी, षड्दर्शन विख्यातरे; वामानंदन, जगजन रंजक नमतां पावन गात्ररे. श्री संखे. ॥२॥ परपरिणतिथी अष्टकर्म ग्रही, परभोगीपरकर्तारे; अतुलबलीपण कर्मपिंजरमां, वसियो निजगुण धरतारे. श्री संखे. ॥३॥ औदारिक वैक्रिय आहारक, तैजस कार्मण पंचरे: पंचशरीर घर मानी वसियो, करतो कर्मनो संचरे. श्री संखे. ॥४॥ सुरापानी बकतो फरे वळी, धत्तुरज्ञक्षक जेमरे, अवली परिणतिथी अहो आतम, स्वरूप भूल्यो तेमरे. श्री संखे. ॥ ५ ॥ भवमां ज्ञमतां पुण्योदयथी, सद्गुरु सहजे मळियारे; बुद्धि शिवसुख पामे अविचल, सकळ मनोरथ फळियारे. श्री संखे. ॥६॥

मंत्रम्—ॐ नमो भगवते—जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं. दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा.

पंचमपूजा.

दुहा.

सद्गुरु पंचमहाव्रती, पंचमहाव्रत धार; भावथी वास्तुकपूजना, कहेवे अतिसुखकार. ॥१॥ पुद्गलद्रव्यथी भिन्न छे. अचल अमल गुणवान्; शुद्ध बुद्ध परमातमा, चिदानंद भगवान्. ॥ २ ॥ घर आतमनुं ओळख्युं, जेनो रुडो महेल; वास खरो मुज एहमां, वसतां शिवसुख सहेल. ॥३॥

(नमोरे नमो श्री शत्रुंजय गिरिवर—ए राग.)

वास्तुकभावपूजा निजभावे, चेतननो शुद्ध दाखीरे; वास वासे चेतन जे मध्ये, तेहनी पूजा भाखीरे. श्री. संखेश्वरपासजी गावो. ॥१॥ असंख्यप्रदेश आतमना जाणो, शुद्धवास जीव होयरे; गुणपर्याय स्वभाव अनंता, एकेक प्रदेशे जोयरे. श्री संखे. ॥ २ ॥ ज्ञाता ज्ञेय ने ज्ञान त्रिभंगी, आतम-

मांही समायरे; अस्ति नास्ति समकाले लाधे, एवो आतमरायरे. श्री संखे. ॥ ३ ॥ धर्माधर्मने पुद्गलाकाश, तेहतणा प्रदेशरे; गुणपर्यायधर्म तसकेरा, नहि एक जीव लेशरे. श्री संखे. ॥ ४ ॥ शुद्ध बुद्ध परमात्मस्वरूपी, अव्याबाध अभंगरे; अविनाशी अकलंक अजोगी, भोगी अयोगी असंगरे. श्री संखे. ॥ ५ ॥ नित्यानित्यने एकानेक, सदसत् भाव विचाररे; वक्तव्यावक्तव्य ए आठ—पक्षतणो आधाररे. श्री संखे. ॥६॥ शुद्धस्वरूपी ज्ञानानंदी, चेतनवास कहायरे; सुख अनंतु चेतनघरमां, वचनअगोचर थायरे. श्री संखे. ॥७॥ आत्मथकी छूटे जब कर्म, तब पामे शिवस्थानरे; शाश्वतअमलअचलपद जावे, वास्तुकपूजा मानरे. श्री संखे. ॥८॥ एणीपेरे वास्तुकपूजा करशे, ते तरशे संसाररे; बुद्धिसागर क्षायिकसमकित, पामी लहे भवपाररे. श्री संखे. ॥९॥

कलश.

गाइ गाइरे ए वास्तुकपूजा गाइ, अचल अमल अजंग महोदय, शुद्धसत्ता निज ध्यायी; समकितदा-

कहेते पूजा, करतां हर्ष वधाइरे. ए वास्तुकपूजा गाइ. ॥ १ ॥ मिथ्यापरिणति नाशक तारक—आतमस्वज्ञाने सुहाइ; परमातम पद प्राप्तिकारक, सुखकर समकितदाइरे. ए वास्तुक. ॥ २ ॥ धरणेंद्र पद्मावती देवी, जेहनी सारे सेव; सुरपति यतिनति भूपति पूजित, श्री संखेश्वर देवरे. ए वास्तुक. ॥३॥ तास पसाये पूजा रची ए, हर्ष अति दिल लायी; जयजय मंगळ माळा कमळा, आतममां प्रगटाइरे. ए वास्तुक. ॥ ४ ॥ जन्मभूमि विजापुरगामे, मासकल्प करी सार; ओगणिश साठ माघ सुदि बारस; रचतां जयजयकाररे. ए वास्तुक. ॥५॥ विद्यादायक धर्मसहायक, गंभीर श्रद्धावत; दोशी नथुभाइ मंछाराम—हेते एह रचंतरे. ए वास्तुक. ॥ ६ ॥ शेठ छगनलाल बेचरकाजे, कीधी रचना भावे; संघ सकलमां आनंद मंगल, ऋद्धि वृद्धि सुख थावेरे. ए वास्तुक. ॥ ७ ॥ तपगच्छमंडन हीरविजयसूरि, जस गुण सुरनर गाया; तास शिष्य श्री सहेजसागरजी,

उपाध्याय कहायारे. ए वास्तुक. ॥ ८ ॥ पाटपरंपर नेमसागरजी, क्रियावंत महंत; तास शिष्य श्री रवि-सागरजी, वैरागी गुणवंतरे. ए वास्तुक. ॥९॥ संवेगी आतमगुणरंगी, सुखसागर गुरुराया; गामोगाम विहार करंता, विद्यापुरमां आयारे. ए वास्तुक.॥१०॥ चढते नावे हर्ष उल्लासे, कीधी रचना एह; नव्य जीवने अमृतसम ए, चातकने जेम मेहरे. ए वा-स्तुक. ॥ ११ ॥ शांति तुष्टि सुखसंपदा थावे, रोग शोग दूर जाय; बुद्धिसागर शाश्वतपद लही, मुक्ति-वधू सुख पायरे. ए वास्तुक. ॥ १२ ॥ श्री संखेश्वर-पास प्रभुजी, गातां सुख विशाल; श्री विद्यापुर स-कल संघमां, होवे मंगल मालरे. ए वास्तुक. ॥१३॥

मंत्रम्—ॐ नमो नगवते—जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा.

वास्तुकपूजा विधि.

दरेक वस्तु पांच पांच लेवो, अष्टप्रकारी पू-जानो सामान लेवो, आठ स्नात्रीया करवा.

एक कळश ग्रहण करे, बीजो केशरनी वाटकी ग्रहण करे, त्रीजो फुलनो हार वा छुटां फुल ग्रहण करे, चोथो धूप, पांचमो दीपक, छठो रकेबीमां अक्षतनो स्वस्तिक लइने उभो रहे, सातमो नैवेद्य लइ उभो रहे, आठमो फळ लइ उभो रहे. दरेक पूजाए अभिषेक करी पूजा करवी.

५ कळश, ५ केशरनी वाटकी, ५ फुलना हार, धूपधाणुं, ५ दीपक, ५ चोखाना साथीआ, ५ नैवेद्य, ५ फळ.

वास्तुकपूजा जेनुं घर करे, अने तेमां प्रवेश करे ते भणावे. तेने घेर आ पूजा भणावतां आनंद मंगळ थाय. रोग, शोक, वहेम सर्वे नाश पामे. नवस्मरण, कुंभनी स्थापना करी अने दीवो करी गणवां. शक्ति होय तो स्नात्रीयाने जमाडवा. इंद्राणीओ छोकरीओने करे तो करवी.

इति वास्तुकपूजा संपूर्ण

अष्टप्रकारीपूजा.

परमेश्वर महावीर जिन, तीर्थंकर गुणधाम; चोवीशमा श्रीजिनपति, सर्वजीवविश्राम. ॥ १ ॥ अनंतगुण उपकारीजे, शासन नायक देव; द्रव्यभावथी पूजतां, प्रगटे आनंद मेव. ॥ २ ॥ द्रव्यभावथी पूजना, अष्टप्रकारी बेश; करतां नरने नारीओ, दूर करे सहु क्लेश. ॥ ३ ॥ महावीरदेवे पूजना, भाखी भवीहितकार; ते कारण पूजा रचुं, मनशुद्धि करनार. ॥ ४ ॥ कारण कार्यनी सिद्धि छे, द्रव्यथी भाव सधाय; भक्तिमंता धर्मीजन, पूजाथी शिव पाय. ॥ ५ ॥

प्रथम जल पूजा.

सांभळरे सहियां हमारी. ए देशोनी चोपाया चाल.

प्रभु महावीर जग जयकारी, परमेश्वर जिन उपकारी; द्रव्य भावथी स्नात्र करीजे, प्रभु उपर प्रेम धरीजे. तेथी निजनी पूजावरीजेरे, द्रव्यभावथी पूजा सारी; मोहवृत्तिने हरनारी. प्रभु. ॥ १ ॥

मेरु उपर प्रभुने लाव्या, जलथी इन्द्रे न्हवराव्या; पंचरूप धरी गुण गायारे, तेम स्नात्र करी नरनारी, करे समकित शुद्धि अपारी. प्रभु. ॥ २ ॥ जात्र समकित जल अभिषेके; मिथ्यामल रहे न विवेके; पूजो महावीरजिनने टेकेरे, त्यजी जूठी दुनिया-दारी; प्रभु शरण ग्रहो हितकारी. प्रभु. ॥ ३ ॥ मों-घाकाले नयने दीठा, लाग्या आतमरूपे मीठा; थया कुदेव मोहो अनीठारे, लागी तुजथको एक तारी; लागी ताह्यरी मूर्ति प्यारी. प्रभु. ॥ ४ ॥ तुज उपर जउ सहु वारी, प्रभु ताह्यरो साची यारो; मरुं मर्या पहेलां मोह मारीरे, एवी पूजा बनो हितकारी; करो करुणा एहवी सारी. प्रभु. ॥ ५ ॥ प्रभु पूजा करुं प्रभुरंगे, निज आतम शुद्ध उमंगे; कादि पडुं न मिथ्या ढंगेरे, बुद्धिसागर प्रभु अवधारो; लही आ-तम सुखनी खुमारो. प्रभु. ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीं प० जलं यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीया चंदनपूजा.

चंदनथी प्रभु पूजतां–आतम शीतल थाय. भावथी समताचंदने, पूजे ते शिवपाय ॥१॥ हर्षभाव केशर भळे, लाली प्रगटे अंग. श्रद्धा प्रेम सुवासथी, प्रगटे आनंद रंग ॥ २ ॥

रहो गुरुजी फागण चोमासुंरे, ए राग.

प्रभु महावीर जिनवर मळियारे, म्हारा मनना मनोरथ फळियारे. प्रभु ॥ समताचंदन घसी रंगेरे, अर्चु महावीर प्रभु अंगेरे; दिल चढता भाव उमंगेरे. प्रभु ॥ २ ॥ शुद्ध अमृतरसनी क्यारीरे, रह्या मोही जगत नरनारीरे; सत्य सद्भूतमूर्ति प्यारीरे. प्रभु ॥ ३ ॥ प्रभु दीठे भ्रमणा भागीरे, सम्यक्त्वदशा घट जागीरे, रोमेरोम थयो तुजरागीरे. प्रभुः ॥ ४ ॥ प्रभु मळिया आविर्भावेरे–निजसद्भूत आत्मस्वभावेरे. शमचंदने पूज्या सुहावेरे. प्रभु. ॥ ५ ॥ प्रभु दिलमांधरी प्रभु थावुंरे, प्रभु चंदन पूजाभावुंरे; बुद्धिसागर जिनवर गावुंरे. प्रभु ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ. परम० चंदनं, य० स्वाहा ॥

तृतीया पुष्प पूजा.

द्रव्यभावथी पुष्पनो, पूजा प्रभुनी वेश; करतां दुर्गुण दुःखडां, नासे सघळा क्लेश. ॥ १ ॥ भावथी पंचाचार छे, गुणकरपुष्प प्रधान; तेथी जिनवर पूजतां, बनो स्वयंभगवान् ॥ २ ॥ काल अनादि न ओळख्यो, ओळख्यो ज्ञाने आज, पंचाचारना पुष्पथी, पूजुं जिनराज ॥ ३ ॥

सांभळजो मुनि संयम, रागे–उपशम
श्रेणि चढियारे ए. राग.

पूजुं महावीर जिन जयकारी, चिदानंदरूपधारीरे; तुज उपयोगे क्षणक्षण जीवुं, भक्तिभाव वधारीरे. पूजुं ॥ १ ॥ ज्ञानने दर्शन चरणाचारे, तपने वीर्याचारेरे; रहेतां द्रव्यने भावथी आतम, धर्मसुगंधी प्रसारेरे. पूजुं. ॥ २ ॥ क्षयोपशमने उपशम क्षायिक, भावनी शुद्धि वधारेरे; पंचाचार सुपुष्पे पूजा, करतां

शिवपद धारेरे. पूजुं ॥ ३ ॥ मैत्रीप्रमोद मध्यस्थ करुणा, सात्विक पुष्पनी माळारे; प्रभुना कंठे प्रेमे चढावी, पीवुं प्रभुरस प्यालारे. पूजुं. ॥ ४ ॥ प्रभु गुण गावे समरे ध्यावे, आतम प्रभुरूप थावेरे; जेवी भावना तेवी सिद्धि, अंतरमां सुख पावेरे. पूजुं. ॥ ५ ॥ हाथे चढियो आंखे देखायो, हवे न छोडुं क्यारेरे; बुद्धिसागर आत्मउजागर, उपयोगे निज-तारेरे. पूजुं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ प० पुष्पं य० स्वाहा.

चतुर्थ धूप पूजा.

द्रव्य भाव बे भेदथी, धूपनी पूजा श्रेष्ठ; करतां आतम बळ वधे, पडतुं पशु बल हेठ. ॥ १ ॥ चारे ध्यानना धूपथी, पूजतां जिनराज; मोहनी दुर्गंधी टळे, सिद्धे शिवपद काज. ॥ २ ॥ भावथी प्रभुनी पूजना, आतम पूजा जाण; सम्यग्दृष्टि जीवनी, करणी सर्व प्रमाण. ॥ ३ ॥

झुंमखणानी देशी.

धन्य प्रभु महावीरनेरे, सत्य जणाव्यो धर्म; महावीर पूजीए; बार वर्षना ध्यानथीरे, टाळ्यां घातीकर्म. महावीर. ॥१॥ पिंडस्थने पदस्थथीरे, रूपस्थ रूपातीत; महावीर. चारध्यानरूप धूपथीरे, आतम शुद्ध प्रतीत. महावीर. ॥ २ ॥ आर्त रौद्रदुर्गंधनेरे, टाळो वेगे दूर, महावीर. एकता लीनतायोगथीरे, प्रभुजी हजराहजूर. महावीर. ॥ ३ ॥ धर्म शुक्ल बे ध्यानथीरे, आपोआप प्रकाश; महावीर. ध्यानधूपे प्रभु पूजतांरे, व्यक्तानंद विलास. महावीर. ॥ ४ ॥ इयल भ्रमरी संगथीरे, भ्रमरीरूप सुहाय. महावीर. बुद्धिसागर आतमारे, प्रभुध्याने प्रभु थाय. महावीर, ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ० प० धूपं० यजामहे स्वाहा

पंचमी दीपक पूजा.

पंचमी दीपक पूजना, करतां आत्मप्रकाश;
मतिश्रुत ज्ञानना दीपके, मिथ्यातमनो नाश ॥१॥

सम्यग् ज्ञानी जीवने, सवळुं सहु प्रणमाय; आस्र- व ते परिश्रवपणे, थावे आतममांह्य. ॥ २ ॥ दीपक मीसे ज्ञानना, दीपक जो प्रगटाय; आतम जाणे वि- श्वनो, ज्ञानी निश्चय थाय. ॥ ३ ॥

जिनपद जगमां याचुं जाणो स्वरूप रमण

सुविलासी. ए राग.

धन्य प्रभु महावीर जिनेश्वर, अनंतगुणा उप- कारीजी; जेनुं संप्रति शासन वर्ते, भावदया भंडारी, जिनवर भजीएजी; पामी सम्यग्ज्ञान, दीपके यजी- एजी. ॥ १ ॥ दर्शनमोह टळयाथी सम्यग्,–भावे ज्ञान प्रकाशेजी; मतिश्रुत अवधिने मनपर्यव, केवल- ज्ञान विकासे. जिन० ॥ २ ॥ मति अट्ठावीश त्रणसो चालीश, भेदे वीरे प्रकाश्युंजी; चउद वीश श्रुत भेद प्रकाश्या, समकितीने विकास्युं. जिन० ॥ ३ ॥ अ- वधि असंख्यप्रकारे प्रगटे, मनपर्यव बे भेदेजी; क्षयोपशमभावे ए चारे, ज्ञान ज तमने छेदे. जिन०

॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाशक केवल, ज्ञान ते व्यापक एकजी; मतिश्रुत दीपकथी प्रभु पूजे, प्रगटे धर्म विवेक. जिन० ॥ ५ ॥ द्रव्य भावथी दीपक पूजा, गृही यतिने अधिकारेजो; बुद्धिसागर आतमशुद्धि, निश्चयने व्यवहारे. जिन० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं० परम० दीपं यजामहे स्वाहा.

षष्ठी स्वस्तिकपूजा ॥

स्वस्तिक प्रभुनी आगळे, करतां स्वास्ति थाय; द्रव्यभाव स्वस्तिक करे, भव्यो शिवपद पाय ॥१॥ चतुर्गतिरूप साथीयो, करीने मागो एम; सिद्ध शिलानी उपरे, शिवस्थानक सुखक्षेम ॥ २ ॥ चारकषायथी चउगति, कीधां भ्रमण अनंत; स्वस्तिक करी प्रभु आगळे, पामो शिवपद संत ॥ ३ ॥

विमलाचलवासी मारा व्हाला सेवकने
विसारो नहीं विसारो नहीं. ए राग.

महावीर जिनेश्वर पाये पडुं, तुजरूप बनुं रूपबनुं; समभावे रही एकरूप बनो उपयोगे भणुं योगे

त्रणुं; चतुर्मतिरूप स्वस्तिक आगळ, दर्शन ज्ञानचारित्र; त्रण्य पुंजने सिद्ध शिलापर, मुक्तिनुं चिह्न पवित्र; प्रभुतुजरूप. म० ॥ १ ॥ चारे सामायिक स्वस्तिकथी, रत्नत्रयीज पमाय; तेथी सिद्धशिलापर मुक्ति, भक्तयोगी झट पाय. प्रभु तुज. म० ॥२॥ चारे प्रकारे संघनो स्वस्तिक, मंगलरूप सदाय. पामी त्रिपदी ज्ञान करीने, भक्तयोगी शिवपाय. प्रभु. म० ॥ ३ ॥ चार महायम स्वस्तिकरूपी, त्रण गुप्ति जे पाय; पूरण आत्मसमाधि पामी, पूर्ण सुखी झट थाय. प्रभु. म० ॥ ४ ॥ आध्यात्मिक संकेते ज्ञानी, प्रभुने पूजो एम; बुद्धिसागर क्षायिक भावे, पामे योगने क्षेम. प्रभुतुज. म० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम० स्वस्तिकं यजामहे स्वाहा॥

सप्तमी नैवेद्यपूजा.

दुहा.

द्रव्यभाव नैवेद्यथी, प्रभुने पूजे जेह; प्रभु स्वरूपे थै रहे, देह छतां वैदेह. ॥ १ ॥ अनुभवनैवेद्ये

भली, आतम पुष्टि थाय; आत्मरसी आतम बनी, बाह्यरति नहि थाय. ॥ २ ॥ जडरस नैवेद्य मूकीने, आतमरस नैवेद्य; पामवुं ते प्रभु पूजना, तेथी रहे नहि वेद. ॥ ३ ॥

व्हाला वीर जिनेश्वर जन्म जरा निवारजोरे. ए राग.

व्हाला आतम वीर जिनेश्वर पूजुं भावथीरे, सहेजे आनंदनैवेद्ये पूजु गुणदावथीरे; आतम रस प्रगटातो ज्यारे, बाह्यमां रसनी भ्रांति न त्यारे; जडमां बंध न मुक्ति सहजभाव उपयोगथीरे. व्हाला. सहेजे० ॥ १ ॥ तुजरसमां रंगाया जेओ, पछीथी नहि जडरसिया तेओ; एवी नैवेद्य पूजाए पूजुं उमंगथीरे. व्हाला. स०॥२॥ तुज मुज अंतरभेद ज भागे, आतम आपस्वरूपे जागे; पछीथी शांति तुष्टि पुष्टि सहज स्वभावथीरे. व्हाला० ॥ ३ ॥ एवी पूजा थातां सारी, प्रगटे आनंद पूर्ण खुमारी; पछीथी दुःख रहे नहि जडवस्तुना अभावथीरे. व्हाला० ॥ ४ ॥ जीवन्ती प्रभु पूजा एवी, उपयोगे अंतरमां

लेवी; पामे बुद्धिसागर आनंद आत्मस्वभावथीरे. व्हाला० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री० य० नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

अष्टमी फलपूजा.

मुक्ति फलने पामवा, फलथी पूजुं देव; फलथी फल निश्चय मळे, नासे मोहनी टेव. ॥ १ ॥ द्रव्य-भाव बे भेदथी, निश्चयने व्यवहार, सापेक्षे फल पूजना, उपयोगे सुखकार. ॥ २ ॥ विनयने बहुमानथी, श्रद्धा प्रीतियोग; फलपूजा जिनराजनी, करतां शिवसंयोग. ॥ ३ ॥

उत्तम फलपूजा कीजे, ए राग.

धन्य महावीर उपकारी, त्रिशलानंद जयकारी; सिद्धारथकुलमनोहारीरे, लगनी तुज साथे लागी. भाग्य दशा पूरण जागीरे ॥ लगनी ॥ तुजरूपे थइयो रागीरे. लगनी ॥ १ ॥ पूरणरागे घट धार्यो, नाठो मोह घणुं हार्यो; मरुं न हवे कोथी मार्योरे.

लगनी. ॥ २ ॥ फलपूजा करतां भावे, उपयोगे शिवफल पावे; भक्ति नकामी नहि जावेरे. लगनी. ॥ ३ ॥ समकितोनी सहु करणी, मोक्षमहेलनी निःसरणी; पूजादिक निर्जर वरणीरे. लगनी.॥ ४ ॥ तुज श्रद्धा प्रीति साची, जडनी माया सहु काची; माची रह्यो तुजमां राचोरें लगनी. ॥ ५ ॥ निष्कामे सेवाभक्ति, करतां प्रभु प्रगटे शक्ति; बुद्धिसागर प्रभुव्यक्तिरे. लगनी. ॥ ६ ॥

कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो, त्रिशलानंदन शासन नायक; परमेश्वर जगरायो; अष्टप्रकारी पूजा रचीने, भावथी गायो ध्यायोरे. महावीर. ॥ १ ॥ चउनिक्षेपे सातनयोथी, पूजा पूज्यने जाणी; द्रव्यने भावथी पूजा करतां, पामे मुक्ति निशानीरे ॥ महावीर. ॥ २ ॥ सम्यग् दृष्टिने द्रव्यने भावथी, पूजा शिवसुखकारी; चढतेभावे निर्जरा-

कारी, मुक्ति अनुभवधारीरे. महावीर. ॥ ३ ॥ भक्तजनो भक्तिरस पावे, भावे ते चित्तलावे; भक्तिथी चित्त शुद्धिने ज्ञाने, क्षणमां मुक्ति सुहावेरे. महावीर. ॥ ४ ॥ श्रद्धा प्रीति सेवाभक्ति, करनारां नरनारी; निश्चयमुक्ति पदने पामे, उपयोगे गुणधारीरे. महावीर. ॥ ५ ॥ वीरजिनेश्वर पट्ट परंपर, तपगच्छी सूरिराया; जगगुरु हीर विजय सूरि मोटा, नरपतिसुरपति गायारे. म. ॥ ६ ॥ पट्टपरंपर सागर शाखे, रविसरखा गुरुराया. रविसागर गुरु पूर्णप्रतापो, भारतसंत सुहायारे. म. ॥ ७ ॥ तस शिष्य संवेगी मुनिशेखर, सुखसागर गुरुराया; तास कृपाए पूजा रचीने, आनंद अतिशय पायारे. म. ॥ ८ ॥ ओगणिश अठ्योत्तर चैत्रीसुदि, नवमीने गुरुवारे; विजापुरमां चढता पहोरे, पूजा रची प्रभुप्यारेरे. महावीर. ॥ ९ ॥ प्रभुमय मनवच काया थाशो, भक्तिगुण प्रगटाशो; शुद्धातम महावीरोपयोगे, आयु एम वहाशोरे. म. ॥ १० ॥ अनुभव आनंद प्रगटयो न

छूपे, छूपे न जानु छूपायो; बुद्धिसागर आनंद मंगल, आतम तेजे सुहायोरे. म. ॥ ११ ॥

ॐ प. महावीर जिनेन्द्राय फलं य. स्वा.

महागुरु श्री रविसागर गुरुपूजा.

प्रथम सद्गुरु संगति जलपूजा.

परमेश्वर महावीर जिन, चोवीशमा जिनदेव; परमब्रह्म परमातमा, तीर्थंकर करुं सेव. ॥१॥ गणधर गुणवंता गुरु, श्री सुधर्म प्रधान; गणधर पद परंपरा, श्वेतांबर गुणवान्. ॥२॥ वडगछथी तपगछनी, परंपरा वर्ताय; जगगुरु हीरविजयसूरि, थया महागुरु राय. ॥ ३ ॥ विद्यासागर मुनिवरा, सहज सागर मुनिराज; पट्ट परंपर शोभता, संवेगी शिरताज. ॥ ४ ॥ नेमिसागर मुनिवरा, व्रताचारे गुणवंत; तास शिष्य गुण गणधरा, रविसागरजी संत. ॥ ५ ॥ गुरु पूजा रचु भावथी, मुनि परमेष्ठी जेह; गुणी गुण गातां भावतां, पवित्र मनवच देह. ॥ ६ ॥

॥ मेतारज मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार. ॥

मरुदेशे शुभ पाली नगरे, श्रावक कुलमांही चंद; श्रेष्ठी राघवजी गुणवंता, पत्नी माणिक गुणवंत; तस कुखे जन्म्या रवचंद पुत्र उदार. ॥ १ ॥ अनंत पुण्ये श्रावक कुलमां, जन्म नवोनो थाय; अनंत पुण्ये संत समागम, धर्मरुचि प्रगटाय; श्री जैन धर्मनो जगमां छे आधार. ॥२॥ मात पितानी साथे आव्या, आजीविका हेत; नेमिसागर गुरुजी मळिया, पूर्व पुण्य संकेत; शुभ साधु संगति भवी जीवने हितकार. ॥ ३ ॥ साधु संगे देवगुरुने, धर्मनी श्रद्धा थाय; मिथ्या बुद्धि झट टळेने, सत्यबुद्धि प्रगटाय. शुभ. ॥ ४ ॥ गुरु सेवा भक्ति करेजी, विनय धरी बहुमान; बुद्धिसागर सद्गुरु संगे, प्रगटे कोटि कल्याण. शुभ० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ गुरुपद पूजाय जलं. य. स्वाहा ॥

द्वितीया चंदन पूजा गुरुमुख आगमश्रवण.

दुहा.

गुरुपासे नित्य सांभळे, आगम शास्त्र प्रमाण;
जिनवर वाणी सांभळे, प्रगटे मतिश्रुतज्ञान. ॥ १ ॥

पुखलवइ विजय जयोरे ए राग.

विनय अने बहुमानथीरे, करी गुरुनी सेव;
जे गुरुवाणी सांभळेरे, ते पामे शिवमेवरे भविका;
सुणजो गुरुगमशास्त्र. ॥ १ ॥ गुरुमुखे आगम सांभळेरे, ते धन्य धन्य नरनार; धर्मशास्त्रना बोधथीरे, सफल मनु अवताररे. भ० ॥ २ ॥ गुरुसेवा भक्ति बळेरे, सम्यग् प्रकटे ज्ञान; नगुरा नास्तिक प्राणियारे, धारे दिल अज्ञानरे. भ० ॥ ३ ॥ गीतार्थ गुरुगमवडेरे, विघटे मिथ्याबुद्धि; वैयावच्ची प्रेमथीरे, करतो हृदयनी शुद्धिरे. भ० ॥ ४ ॥ गुरुमुखे तत्त्वने सांभळेरे, ज्ञाननी वृद्धि थाय; गुरुश्रद्धा प्रीतिबळेरे, सवळुं सहु प्रणमायरे. भ० ॥ ५ ॥ गुरुमुखथी शास्त्रो सुणीरे, पाम्या रवचंद ज्ञान; देवगुरुने धर्मनीरे, श्रद्धा

प्रगटी प्रमाणरे. भ० ॥ ६ ॥ नयगम भंग प्रमाण-थीरे, आतम ज्ञान सुहाय; बुद्धिसागर गुरुमुखेरे, धर्म सुणे शिव थायरे. भ० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री आगम श्रवणार्थं गुरुपद भक्तये चंदनं. य० स्वाहा ॥

सम्यक्त्वग्रहणरूपा तृतीया पुष्पपूजा.

गुरु आगम आलंबने, समकित श्रद्धा थाय; उपशम क्षयोपशम तथा, क्षायिक घट प्रगटाय. ॥ १ ॥ व्यवहारे समकिततणां, कारण जेह गणाय; ते अवलंब्या भविजना, समकित भाव सुहाय. ॥२॥ समकित पाम्यो आतमा, कर्मोदये जटकाय; उच्च नीच जव पामतो, अंते मुक्ति पाय. ॥ ३ ॥

कानुडो न जाणे मारी प्रीत. ए राग.

समकित पामो नरने नार, गुरुमुख बोध ग्रहीनेरे. समकित० देवगुरुपर रुचि, समकित प्रगट्यां थावे; प्रगटे पूरण श्रद्धा प्रेम, ब्रह्मनो बोध वहीनेरे.

समकित० ॥ १ ॥ द्रव्यथी भाव जे आवे, व्यवहारे निश्चय थावे; कारणयोगे कार्य सधाय, आतमधर्म स्वभावेरे. समकित० ॥ २ ॥ सम्यग्भावे जाणे, समकिती आतमज्ञाने; आस्रव हेतु जेने थाय, संवरभावे सुतानेरे. समकित० ॥ ३ ॥ मिथ्याशास्त्रो पण सवळां, कोइ न थातां अवळां; सम्यग्दृष्टियोगे हेतु,–सर्वे थाता सवळारे. समकित० ॥ ४ ॥ समकितमां छे शक्ति, प्रगटावे केवल व्यक्ति; जडमां प्रगटयो मोह विभाव, टाळे झट आसक्तिरे. समकित० ॥ ५ ॥ सद्गुरु संगे प्रगटे, मिथ्याबुद्धि झट विघटे; नगुरा नास्तिक मूढालोक, मिथ्याज्ञाने भटकेरे. समकित० ॥ ६ ॥ नेमिसागरजी बोधे, रवचंद तत्त्वो शोधे; पाम्या द्रव्यभाव समकित, मोहनो वृत्ति रोधेरे. समकित० ॥ ७ ॥ व्यवहारे समकित ग्रहियुं, आंतर भावे वहियुं. सम्यग् दृष्टिए अध्यात्मरूपज अंतर लहियुंरे. समकित० ॥ ८ ॥ देवगुरुपर भक्ति, धर्मनी साची प्रीति; बुद्धिसागर गुण सम्यक्त्व, प्रगटे धर्मनी रीतिरे. समकित. ॥ ९ ॥

देशविरति व्रतग्रहणरूपा चतुर्थी धूपपूजा.

समकित परिणति बलवडे, विरति प्रगटे खास; विरतिथी होय निर्जरा, कर्मक्षये शिववास. ॥ १ ॥ समकितवण व्रततपवडे, मळे न साचीमुक्ति; सम्यग्दृष्टिजीवनी, सफळी सर्व प्रवृत्ति. ॥ २ ॥ समकित योगे उपजे, मनमां विरतिभाव; भावविरति, समकितीने, प्रगटे निमित्तदाव ॥ ३ ॥

सांभळशो मुनि संयमरागे ए राग.

श्रावकव्रतनी छे बलिहारी, धर्मीने हितकारीरे; गुरुपासे उच्चरी नरनारी, पामे भवोदधि पारीरे. श्रावक. ॥ १ ॥ पंचमगुण स्थानक देशविरति, देश उपाधि हठावेरे; जे जे अंशे निरुपाधिकता, ते अंशे सुख थावेरे. श्रावक. ॥ २ ॥ सम्यग्दृष्टिने व्रतकिरिया, मुक्तिहेते थावेरे; समकितदायक गुरुभक्तिए, मुक्ति अनुभव आवेरे. श्रावक. ॥ ३ ॥ नेमिसागर गुरुनी पासे, रवचंद भावे रहियारे; श्रावकनां व्रत

वारे अहियां, शुद्धभावे गहगहियारे. श्रावक. ॥ ४ ॥ षडावश्यक भावे साधे, गुरुने मुनि आराधेरे; चढता भावे निशदिन वाधे, प्रगट्या गुण न विराधेरे. श्रावक. ॥ ५ ॥ देवगुरुने धर्मनी सेवा, करता मुनि व्रत इच्छारे; गुरुने विनवे आपो मुझने, सर्व विरतिनी दीक्षारे. श्रावक. ॥ ६ ॥ सर्व विरति लेवानी इच्छा, श्रावकने होय नक्कीरे; बुद्धिसागर आतमबळथी, पामे दीक्षा पक्कीरे.

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हसद्गुरुभक्तये, धूपं. य. स्वाहा ॥

पंचमहाव्रत सर्वविरतिग्रहणरूपा पंचमोदीपपूजा.

देशथी सर्वविरतिविषे, अनंती आतमशुद्धि, प्रगटे आत्मानंदता, क्षयोपशमगुणऋद्धि. ॥ १ ॥ छट्ठागुणस्थानकतणो, क्रिया द्रव्य चारित्र; भावथी विरतिपरिणति, प्रगटे आत्मपवित्र. ॥ २ ॥ गृहस्थथकी त्यागी मुनि, अनंतगुण छे महान्; यथा सर्षपने सुरगिरि, चारित्रगुण बलवान् ॥ ३ ॥ व्यव-

हारे मुनिसद्गुरु, जैनागमथी प्रमाण; सर्वविरति चारित्रथी, प्रगटे केवलज्ञान. ॥ ४ ॥ द्रव्यभाव चारित्रनी, इच्छा जेने होय; समकिती देशविरति, भावथकी ते जोय. ॥५॥ गृहस्थभावे भावना, मुनि पद लेवा काज; अवसर बल प्रगटे तदा, दीक्षा ले शिवसाज. ॥ ६ ॥

सिद्धिएनमो सिद्ध अनंता, ए राग.

धन्य धन्य मुनि अनगारी, सर्वविरति चारित्र धारी; जेह सर्वजीव उपकारीरे, संयमी गुरुजी नमो गुणकारी. नमो आतम उपयोग धारीरे, संयमी. ॥ १ ॥ द्रव्यने भावथी हिंसाटाळे; जेह उत्सर्ग अपवादे चाले, सत्य वदता अस्तेयने पाळेरे. संयमी. ॥ २ ॥ द्रव्यभाव ब्रह्मचर्यनाधारी, नवविध परिग्रहना जे निवारी, रात्री भोजनना परिहारीरे. सं. ॥ ३ ॥ चारित्र एवुं धरे व्यवहारे, निश्चयथी निज उपयोग म्हाले, नेमिसागर गुरु कलिकालेरे. संयमी. ॥ ४ ॥ संवत ओगणिसे सातनी साले, मौन एकादशी

शुभवारे, गुरुपासे दीक्षा ग्रही म्हालेरे. सं. ॥ ५ ॥ नाम थापियुं रविसागर मुनिराया, गुरुराजना निशदिन सेवे पाया, बुद्धिसागर गुरु गुण गायारे. संयमी. ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हगुरुपूजार्थं दीपं. य. स्वाहा.

गुरु कुलवास वैयावृत्य विनय करणरूपा.

॥ ७ठी अक्षतपूजा ॥

गुरुकुल वासी गुरुवरा, पामे जगमां मान; एकल विहारीने नहिं, तप संयम जप ध्यान. ॥ १ ॥ गुरुपासां जे सेवता, रही गुरुनी पास; शिष्य धर्म जे पालता, बनो गुरुना दास. ॥ २ ॥ गुरुकुलवास रह्या मुनि, संयममां स्थिर थाय; बहुश्रुत अनुभव पामता, भ्रष्टपणुं नहि पाय. ॥ ३ ॥

भवि तुम वंदोरे सातमुं पद भलुंरे. ए राग.

गुरुकुल वासीरे मुनि गुरुवंदतांरे, आतम शुद्धि थाय: गुरुने स्वार्पणभावे जे सेवतारे, स्वर्ग अने शिव

पाय. गुरु० ॥ १ ॥ आचारांगने दश वैकालिकेरे, गुरु कुल वास वखाण; उत्तराध्ययने वैयावच्चोनोरे, पडतो थाय न जाण. गुरु० ॥ २ ॥ गुरु वैयावच्च योगे गुण वधेरे, गुण प्रगट्या नहि जाय; गुरुना विनय अने वहुमानथीरे, मति श्रुत वृद्धि थाय. गुरु० ॥ ३ ॥ गुरुनी आपी शिक्षाओ ग्रहेरे, गुरु आशय सहु जाण; अवळामांथी पण सवळुं ग्रहेरे, समतादिक गुण खाण. गुरु० ॥ ४ ॥ आतम उपयोगे करणो करेरे, चढता भावे सदाय; गुरु आज्ञामां अर्पाइ जतोरे, गुरुपर श्रद्धा प्यार. गुरु० ॥ ५ ॥ द्रव्यने गुण पर्यायथी आतमारे, नयथी जाणे तत्त्व; आतम शुद्ध स्वरूपे परिणमेरे, पामे उत्तम सत्त्व. गुरु० ॥ ६ ॥ गुरुनी श्रद्धा प्रीतियोगथीरे, प्रगटे आतमज्ञान; स्वाभाविक ए जगमां कायदोरे, पाळे ते गुणवान्. गुरु. ॥ ७ ॥ नेमिसागर गुरुनी पासमांरे, रविसागर मुनिराज; रहीने गुरुनी सेवाभक्तिथीरे, साध्यां आतम काज. गुरु० ॥ ८ ॥ गुरु आज्ञामां धर्मने जाणी

नेरे, साधे आतम धर्म; बुद्धिसागर गुरुनी महेरथीरे, प्रगटे मुक्तिशर्म. गुरु० ॥ ९ ॥

ॐ० गुरुपदपूजार्थं अक्षतं य० स्वाहा ॥

सप्तमी चारित्राराधनरूपा नैवेद्यपूजा

दोहरा.

गुरु आज्ञाए वर्तता, संयमयोग सधाय; आस्रवना पण हेतुओ, संवर हेतु थाय. ॥ १ ॥ आतमना उपयोगथी, कर्मोदयमां धर्म; थातो निश्चयभावथी, करतां बाहिर कर्म. ॥ २ ॥ आतमगुणमां रमणता, ते चारित्र सुहाय; आत्मरमणता कारणो, ज्ञानीने सहु थाय. ॥ ३ ॥

तेजे तरणिथो वडोरे. ए राग.

ग्राम नगर पुर विचरतारे, पाळे पंचाचार; चारित्र लहीने पाळवुंरे, शूरानो व्यवहार हो. जगमां, चारित्र पाळवुं दोहिलुंरे. ॥ १ ॥ गुर्जर सोरठ देशमांरे, विचरे दे उपदेश; तप तपता वणे आगमोरे,

सहे परिषह ने क्लेश हो. जगमां चा० ॥ २ ॥ नेमि सागर गुरुवरेरे, निजपट्टे गुणी जाण; थाप्या रवि-सागर गुरुरे, सर्व समय सावधान हो. जगमां चा० ॥ ३ ॥ धर्मक्रिया योगी मुनिवरारे, सागरवर गंभीर; सिंहनो पेठे पराक्रमीरे, मेरुपेठे धीर हो. जगमां चा० ॥ ४ ॥ मूळ उत्तर चारित्रनोरे, धरता शुभ व्यवहार; धर्म प्रभावना बहु करेरे, सुधरावे आचार हो. जगमां चा० ॥ ५ ॥ कहेणी रहेणी जेहनीरे, सरखो मुनि शिरदार; ते कालना मुनिवृन्दमांरे; उत्कृष्ट अनगार हो. ज० चा० ॥ ६ ॥ भावसागरजी नामनारे, शिष्य कर्या अनगार; बीजा सुखसागर कर्यारे, समता गुणभंडार हो. ज० चा० ॥ ७ ॥ जाणे गुरुनुं सहु गुरुरे, गुरुथी जेह अभिन्न; बुद्धिसागर सद्गुरुरे, समभावे लयलीन हो. ज० चा० ॥८॥

ॐ० गुरुपदपूजार्थं नैवेद्यं य० स्वाहा० ॥

अष्टमी ध्यानसमाधिरूपा फलपूजा.

ध्यान समाधि योगथी, प्रगटे सहजानन्द; सहजानन्दने पामवा, धर्म प्रवृत्ति वृन्द. ॥ १ ॥ दर्शन

ज्ञानने चरणमां, वर्ते सहज समाधि; आतम आनन्दफलतणा, स्वादे रहे नहि आधि. ॥ २ ॥ आतम आनन्द पामवा, ध्यान समाधि योग; उपादान कारण कह्युं, निमित्त गुरु संयोग. ॥ ३ ॥

जिनपद जगमां जाचुं जाणो–ए राग.

सर्व विरतिधर गुरु जयकारी, नमुं पूजुं उपकारीजी, समकित चारित्रदायक गुरुनो, जगमां छे बलिहारी; गुरुजी नजीए जी, पामी गुरु उपदेश, मोहने तजीए जी ॥१॥ आर्त रौद्रने प्रगटयां त्यागे, धर्मध्यानमां जागेजी; वर्ते आतमगुणना रागे, रहेता जे वैराग्ये. गुरु० ॥ २ ॥ वर्ते आतमगुण उपयोगे, आतम आनंदभोगेजी; दिलमां रहे नहि हर्षे शोके, क्षण न रहे जे ढोंगे. गुरु० ॥ ३ ॥ आतमना उपयोगे म्हाले, आतम गुण अजुवाळेजी; मोहासक्तिनां बो वाळे, चारित्र एवुं पाळे. गुरु० ॥ ४ ॥ ध्यानसमाधि योगे रमता, मोहवने नहि भमताजी;

सर्व कार्य करंतां समता, ज्ञाने मोहने दमता. गुरु० ॥ ५ ॥ क्षयोपशम आनंदने पामे, अंतरमां विश्रामे जी; निश्चय ठरता अनुभव ठामे, पडे न मिथ्या भामे; गुरु. ॥ ६ ॥ आतम सुख फल पूजाए जे, परम प्रभुने पूजेजी, गुरु रविसागर गुरु सुखसागर, पूजंतां मोह धूजे. गुरु. ॥७॥ मेसाणामां वृद्धपणामां, रहीने आतमध्यावेजी; सुडतालीश वर्षतक संयम, पाळी मोह हठावे. गुरु. ॥८॥ संवत् ओगणिशचोपनसाले, वदि एकादशी आवेजी; जेठ मासमां चढता प्रहरे, गुरुजी स्वर्ग सिधावे. गुरु. ॥ ९ ॥ आत्मोपयोगे जड चेतनमां, समजावे परिणामीजी; बुद्धिसागर सद्गुरु वंदु, अतिभावे शिरनामी. गुरु. ॥ १० ॥

कलश.

गाया गायारे एम गुरुगुण भावथी गाया. नेमिसागरजी रविसागरजी, सुखसागरगुरु गाया; द्रव्यभावथी गुरुपद पूजा, करतां भाव चढायारे. एम. ॥१॥ तपगच्छजगगुरुहीरविजयसूरि, पट्ट परंपरआया;

समकितचारित्र गुण प्रगटाया, आतम अनुभव पायारे. एम. ॥२॥ गुरुने गातां गुरुगुण प्रगटे, निश्चय एह जणाया; ओगणिश अठ्योतर चैतरनी, पूर्णिमा पूजा रचायारे. एम. ॥ ३ ॥ गुर्जरदेश विजापुरमांही, पूजा रची सुखकारी; संघ चतुर्विध मंगलकारी, शांति पुष्टि करनारीरे. एम. ॥ ४ ॥ गुरुने गातां प्रगटी-खुमारी, उतरे ते न उतारी; बुद्धिसागरगुरु जयकारी, पूजो भवी नरनारीरे. एम. ॥ ५ ॥

श्री सद्‌गुरु सुखसागर गुरुपूजा.

प्रथम सेवारूप जलपूजा.

दोहरा.

प्रणमुं श्री परमातमा, तीर्थंकर महावीर; गौतम आदि सूरिवरा, अनेकगुण गंभीर. ॥ १ ॥ श्वेतांबर तपगच्छमां, अनेक मुनि गुणवंत; संप्रति जे जग विचरता, तेमां उत्तम संत. ॥२॥ श्री सुखसागर मुनि गुरु, थया जगत् विख्यात; सर्व गच्छ

मुनिवृन्दथी, वखणाया जगत्रात ॥ ३ ॥ गुरु गातां स्तवतां थकां, पूजंतां सुख थाय; ते कारण गुरु पूजना, रचतां मुक्ति सुहाय. ॥४॥ गुरु चरण स्थापी करी, पूजा अष्ट प्रकार; द्रव्य भावथी जे करे; ते तरतां नरनार. ॥ ५ ॥

मेरु शिखर न्हवरावे हो सुरपति, ए राग.

सद्गुरु जग उपकारी हो, सद्गुणी; सद्गुरु जग उपकारी; समकित चारित्र दायक सद्गुरु, जगमां तुज बलिहारी; सर्व भावे तुजमां अर्पावुं, सद्गुरु सेवा ए सारी हो. सद्गुणी. स० ॥ १ ॥ नाम रूपनो मोह निवारी, आतम भाव समारी; व्हालुं सहु तुज उपरे वारी, सेवा करुं सुखकारी हो. स० ॥ २ ॥ पवित्र सेवा जलथी पूजुं, तुज चरण उपकारी; पुष्ट निमित्त गुरुजी कलिकाले, आतम शुद्धिकारी हो. स० ॥ ३ ॥ कुंभे बांध्युं वारि रहे पण, घटवण होय न पाणी; ज्ञाने मनवश पण गुरु मळतां, ज्ञान प्रगट

गुणखाणी हो. स० ॥ ४ ॥ गुरुजी मळिया फेरा टळिया, गुरुसेवामां हाळिया; सुखसागर गुरु पूजा करतां, बुद्धि वंछित फाळियां हो. स० ॥ ५ ॥
ॐ अर्हं श्री सद्गुरु चरण पूजार्थं जलं. य. स्वाहा.॥

द्वितीया गुरु समतारूपा चंदनपूजा.

आतमने शीतल करे, समता चंदन मान; समता चंदन पामीने, पूजुं गुरु गुणखाण. ॥ १ ॥ भवदव ताप शमाववा, समता चंदन वेश; गुरु हृदयमां जो वसे, तो प्रगटे नहि क्लेश. ॥ २ ॥

धुवपद गोडी राग.

लगनी श्री सद्गुरुथी लागी, भ्रांति भ्रमणा भागीरे; रंगायो रागी थै रंगे, जोयुं हवे घट जागीरे. लगनी० ॥ १ ॥ मुखथी महावीर जाप जपंता, आतमना उपयोगीरे. सरल हृदयने समता गुणमय, भासक निजगुणभोगीरे. लगनी० ॥ २ ॥ प्रेमी थैने परख्या पूरा, निश्चय निर्मल [illegible]रे; सत्ताए पर-

मातम सद्गुरु, संयमपालन शूरारे. लगनी० ॥३॥ आतमअसंख्यप्रदेशे समता, चंदनपूजा करतारे, बुद्धिसागर आतम सद्गुरु, पामी नवी शिव वर-तारे. लगनी. ॥ ४ ॥

ॐ ह्री श्री अर्हं सद्गुरु चरणपूजार्थं चंदनं, यजामहे स्वाहा ॥

तृतीया गुरुगुणराग ग्रहणरूपा पुष्पपूजा.

सद्गुरु गुणरागी बनो, गुरुगुणनो फेलाव; करी ए विनयने मानथी, एछे पूजनल्हाव. ॥ १ ॥ गुरु-रागे गुण संपजे, गुरु निंदे गुण जाय; गुरुनी श्रद्धा प्रीतिथी, गुरुना गुण ग्रहवाय. ॥ २ ॥ गुरुनी श्रद्धा प्रीतिथी, गुरुनो बोध ग्रहाय; सेवा नक्ति संपजे, सगुराने समजाय. ॥ ३ ॥

निशानी कहा बतावुंरे—राग.

गुरुनी करुणा सारो रे, जेथी थतो रंक राय. गुरुनी. गुरु करुणा गुरु रागथीरे, तनमन अर्प्ये प्राण; जेओ प्रभुपद पामियारे, गुरु कृपा त्यां जाण. गुरु.॥१॥

गुरुनी रीझमां विश्वनी रे, खोज न गणवी लगार; गुरुरागे रंगाइयारे, ते धन्य धन्य नरनार. गुरु. ॥२॥ नगुरा नास्तिक लोकथीरे, जेह नहीं भरमाय; शिरसाटे गुरु सेवनारे, पामे करुणा सहाय. गुरु. ॥ ३ ॥ गुरु कृपा ते जन लहेरे, गुरुरूप थै जाय; निष्कामी थै गुरु नजेरे, गुरुथी अलगो न थाय. गुरु. ॥४॥ गुरुरागी गुरुगुण ग्रहीरे, सुखसागर महाराज; गुरुगुणप्रेमसु पुष्पथीरे, पूजे शिव साम्राज्य. गुरु. ॥ ५ ॥ द्रव्यभाव गुरु रागियारे, करता आतमशुद्धि; बुद्धिसागर आतमारे, आविर्भावे ऋद्धि. गुरु. ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं अँर्ह सद्गुरुपद पूजार्थं पुष्पं यजामहे स्वाहा॥

चतुर्थी गुरुनाम मंत्रजापरूप धूपपूजा.

सद्गुरुनामने स्थापना, द्रव्यभाव निक्षेप; साचा ते अवलंबतां, रहे न कर्मनो रेख. ॥ १ ॥ सद्गुरु नामना जापथी, मोह न आवे पास; प्रभु महावीर नामना, जापे सद्गुण वास. ॥ २ ॥ सद्गुरु, नामना

जापथी, आतमशुद्धि थाय; द्रव्यभावथी धूपनी, पूजा छे शिवदाय. ॥ ३ ॥

सारंगराग.

रीझीए रीझीए रीझीए, गुरुनाम जपो दिल रीझीए; गुरुसंगी रसिया थै रागे, आतमरसने पीजीए. गुरु. ॥ १ ॥ गुरुना द्वेषी नास्तिकजननी, संगति क्यारे न कीजीए; गुरुना रागी भक्तनी संगे, आतमरसने लीजीए. गुरु. ॥२॥ समकिती चारित्री गुरुपर, शंकादि न धरीजीए; कडवी शिक्षा अमृतसरखी, मानी क्यारे न खीजीए. गुरु. ॥ ३ ॥ आतम सर्व गुरुने निवेदी, गुरुभक्तिरस पीजीए; गुरुनिन्दक प्रतिपक्षी वचनपर, विश्वास क्यारे न दीजीए. गुरु. ॥४॥ गुरुनाम जापनी धूपपूजाथी, दुर्गंधमोह हरीजीए; बुद्धिसागरसद्गुरुजापे, प्रभुपद सहेजे वरीजीए. गुरु० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ गुरुपद पूजार्थं धूपं यजामहे स्वाहा.॥

पंचमी गुरुगम ज्ञानरूप दीपकपूजा.

गुरुथी ज्ञान प्रकाश छे, गुरुवण छे अज्ञान; गुरुगम वण शास्त्रो भणे, थाय न सम्यग्ज्ञान. ॥ १ ॥ जैनागम शास्त्रो सकल, गुरुगमथी समजाय; गुरुनी सेवा भक्तिथी, सवळुं सहु प्रणमाय. ॥ २ ॥ नयगम भंग निक्षेपथी, षड्द्रव्यादिक ज्ञान; गुरुमुखथी श्रवणे सुणी, करीए प्रगटे सान. ॥ ३ ॥

ध्यानक्रिया मनमां आणीजे ए राग.

गुरुनी सेवा भक्ति करंतां, सम्यग्ज्ञान लहीजेरे; सम्यग् मति श्रुत ज्ञान प्रगटतां, आतमरूपे वहीजेरे; गुरुगम ज्ञान करो नरनारी. ॥ १ ॥ गुरु विनये ने गुरु बहुमाने, गुरु आणाने पाळेरे; गुरुमाटे स्वार्पण भक्तिए, प्रगटे ज्ञान सुचालेरे. गुरु. ॥ २ ॥ गुरु कृपाथी सम्यग्दृष्टि, प्रगट सर्व छे सवळुंरे; गुरु कृपा वण आपमतिने, मिथ्यादृष्टिए अवळुंरे. गुरु. ॥ ३ ॥ गुरुकृपा प्रगटे एम वर्ते, विनयी जे नर-

नारीरे; परमातमपद वेगे पामो, मुक्ति लहे अवि-कारीरे. गुरु. ॥ ४ ॥ मतिश्रुतथी अवधि मनपर्यव, केवलज्ञान प्रकाशेरे; गुरुसुखसागर पूर्णकृपाथी, बुद्धि प्रभुपद पासेरे. गुरु. ॥ ५ ॥

ॐ अर्हं गुरुपद पूजार्थं दीपं यजामहे स्वाहा ॥

षष्ठी पंचाचारपालनरूपा अक्षतपूजा.

पंचाचारना अक्षते, अक्षत आतमरूप; पूजी जे बहुप्रेमथी, नासे भवत्रय धूप० ॥ १ ॥ गुरु चर-णने अक्षते, पूजंतां शिव थाय; स्वस्तिक गुरुनी आगले, करतां पाप पलाय. ॥ २ ॥ पंचाचारने पाळवा, अक्षतपूजा एह; भावथी पूजा पूज्यनी, प्रगटावे शिवगेह. ॥ ३ ॥

कान्हरो.

अक्षतपूजा आनंदकारी, द्रव्यने भावथी छे जयकारी; दर्शन ज्ञानने चरणाचारी, तप वीर्ये गुरु जग उपकारी. अक्षत. ॥ १ ॥ स्वस्तिक करतां स्व-

स्तिभारी, जयजयगुरु तुज जग बलिहारी; द्रव्यभाव-
वथी पंचाचारी, उपयोगी गुरुजी हितकारी. अक्षत.
॥ २ ॥ पंचमहाव्रत पालनकारी, प्रतिबोध्यां बहुलां
नरनारी; एकांते गुरुजी सुखकारी, अंतर आत्मप्रदेश
विहारी. अक्षत. ॥ ३ ॥ आतम सुखसागर गुरुप्यारी,
रोमेरोमे लागी यारी; बुद्धिसागरगुरु अनगारी,
आनंद मंगलप्रद अविकारी. अक्षत. ॥ ४ ॥

ॐ अर्हं महावीरजिनेश्वरपट्ट परंपर प्रवर्तित
श्री गुरुपूजार्थं अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥

सप्तमी ध्यानरूपा नैवेद्यपूजा.

ध्यानरूप नैवेद्यथी, गुरुपूजा करनार; उपशम
क्षयोपशम अने, क्षायिकगुण वरनार. ॥१॥ असंख्य
प्रदेशी आतमा, प्रतिप्रदेशे अनंत; गुणपर्यायनाध्या-
नथी, प्रगटे शिवपदकंत. ॥ २ ॥ बाह्य नैवेद्यना
रसवडे, नित्य तृप्ति नहि थाय; आतमरस नैवेद्यथी,
जडरस रुचि विणशाय. ॥ ३ ॥

जिनदर्शन मोहनगारा, ए रागनी चाल.

गुरुदर्शन छे सुखकारी, गुरुसंतनी ठे बलिहारीरे.
गुरु. द्रव्यगुणपर्याय विचारी, ध्यान समाधिधारी; आतमरसियाने अविकारी, गुरुनी गति ठे न्यारीरे. गुरु. ॥ १ ॥ आतम असंख्यप्रदेशविहारी, द्रव्य-भावव्यवहारी; षडावश्यक धर्माचारी, उत्कृष्टा अन गारी रे; गुरु. ॥२॥ अंतरथी नहीं जडनीयारी, आतम परिणति प्यारी; क्रियायोगी साचा उपकारी, संत सदा जयकारी रे. गुरु. ॥ ३ ॥ गुरुमूर्ति द्रव्यभावथी प्यारी, शुद्धप्रदेशी सारी; कर्म करे पण निर्बंध भारी, सर्वजीव आधारो रे. गुरु. ॥ ४ ॥ गुरुनी अकलकला सहु न्यारी, समजे नहि अविचारी; बुद्धिसागर ध्याननुं नैवद्य—धरतां सुख निर्धारीरे. गुरु. ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हं महावीर परमेश्वर पट्ट परंपर शोभित गुरुपद ध्यानार्थं नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

अष्टमी ज्ञानानन्दानुभवरूपा फलपूजा.

आतम आनंद पामीने, जडरस पेलोपार; आत्मदशाना अनुभवी, जय जय गुरु सुखकार. ॥ १ ॥ आतम अनुभवफलतणो, आनंदरस छे अनंत; आतमरसी ज्ञानी गुरु, पामे भवनो अंत. ॥ २ ॥ द्रव्यभाव फल पामवा, फलथी पूजे जेह; भक्तशिष्य सुखरस लहे, परे न पाछो तेह ॥ ३ ॥

निशदिन जोउ त्हारी वाटडी, घेर आवोने ढोला.

ए राग.

आतम अनुभव फलवडे, गुरु पूजीए भावे, द्रव्य थकी भाव संपजे, निज गुण रस आवे. आतम. ॥ १ ॥ संत गुरुनो पूजना, नहीं निष्फल जाती; कारणे कार्यनी सिद्धि छे, प्रभुता परखाती. आतम. ॥ २ ॥ गुरु हृदयमां छे प्रभु, तेम गुरु प्रभु जाणो; गुरु पूजे प्रभु पूजिया, श्रद्धा प्रेमे प्रमाणो. आतम.

॥ ३ ॥ गुरुथी सिद्धता संपजे, गुरु प्रभुने जणावे; निमित्त गुरुथी आत्मनी, गुरुता जवी पावे. आतम. ॥ ४ ॥ गुरु सेवा भक्तिवडे, थाती हृदयनी शुद्धि; आतम ज्ञान ज संपजे, नवक्षायिक ऋद्धि. आतम. ॥ ५ ॥ गुरुथी आतमरस मळे, जडरस टळे भ्रांति; गुरुथी आतमरस लह्यो, मळी आतम शांति. आतम. ॥ ६ ॥ अनुभव फलथी पूजिया, गुरुजी जयकारी; बुद्धिसागर सद्गुरु, प्रभु विश्वोपकारी. आतम. ॥ ७ ॥

ॐ अर्हं परमप्रभु परब्रह्मपरमात्ममहावीर तीर्थंकरदेवपट्टपरंपरवर्त्ति सद्गुरुचरणानुभव फल पूजार्थं फलं, य. स्वाहा ॥

कलश.

गुरु पूजा गाइ गुणकारी, मंगलदायी शिवसुख कारी. गुरु. आधि व्याधि उपाधिहारी, गुरु पूजाथी तरे नरनारी. गुरु. ॥ १ ॥ ओगणिश अठ्योतरनी

साले, चैत्र वदि बीजने गुरुवारे. गुरु. मधुपुरी (महुडी) मां भक्ति विचारे, पूजा रची शुभ भावविशाले. गुरु. ॥२॥ गुरु पूजा जे भणे नरनारी, पामो मंगल ऋद्धि अपारी; घर घर आनंद प्रगटो भारी, गुरु पूजाथी शांति थनारी. गुरु. ॥३॥ गुरु भक्तोनी चढती थाशो, धर्म कमाणी सत्य कमाशो; गुरुभक्ते दुःखो दूर जाशो, गुरु नामे ए आशी सुहाशो. गुरु. ॥ ४ ॥ द्रव्यथी भावथी महा उपकारी, श्री सुखसागरजी हित कारी. बुद्धिसागर गुरु बलिहारी, व्हारे आवी वेडली तारो. गुरु. ॥ ५ ॥

कलश.

गाइ गाइरे गुरुपूजा भावथी गाइ. ए टेक.

द्रव्य भावथी मुनि गुरुपूजा, आनंद मंगलदायी; श्रोता वक्ता घर घर मंगल, संघमां शांति वधाइरे. गुरु. ॥ १ ॥ ओगणिश अड्योतर चैत्रनी, वदि बीजने गुरुवारे; मधुपुरी (महुडी) मांही गुरु

भक्तिथी, पूजा रची भवी तारेरे. गुरु. ॥२॥ गुरुभक्तिथी पातिक शापो, आधि व्याधि प्रणाशो; गुरुभक्तिथी संघमां घर घर, मंगल सुखडां प्रकाशोरे. गुरु. ॥३॥ गुरुभक्तिथी भक्तजनोनी, वळशो सुखनी वेळा; गुरु भक्तिथी प्रभुपद पामो, मळशो वांछित मेळारे. गुरु. ॥ ४ ॥ गुरुभक्तिरसियां नरनारी, सुखसागर गुरु धारी; बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धि–कीर्ति जयपदकारीरे. गुरु. ॥ ५ ॥

गुरुपूजा भणाववानी विधि.

उपाश्रयमां अगर बीजी जग्याए गुरुनां पगलां स्थापवां; केशरचंदननी बे पादुकाकरवी, अगरचोखानी पण बे पादुका करवी. गुरुनी छबी होयतो ते स्थापवी, स्नात्र भणाववानी जरूर नथी; जलपूजानो कलश, जलपूजा भणावीने आगल स्थापन करवो. पाषाणधातु आदिनी गुरुमूर्ति होयतो तेनापर जलनो अभिषेक करवो, तथा चंदननी पूजा वगेरे जिनप्र-

तिमानी माफक करवी, प॰ ला॑ पाषाणनां होयतो ते पर जल अभिषेक तथा चंदन पुष्प वगेरे ॰तिमानी पेठे चढाववां, धूपदीप आगल करवो. पगलां अगर मूर्तिनी आगळ, स्वस्तिक नैवेद्यफ॰ने ढांकवां; केशरचंदननी पादुका करी होयतो तेनी आगळ जल कलशादिक मूकवा. जिनमन्दिरमां गोखलामां गुरु-मूर्ति अगर पादुका होयतो श्रीजिनप्रतिमानो मूळ गभारो बंध करीने गुरु पादुका अगर मूर्ति आगळ पूजाभणाववी, अरिहंत जेम परमेष्ठी छे तेम आचार्य उपाध्याय अने मुनि ए त्रण पंचपरमेष्ठीमां छे तेथी तेमनी मूर्ति पादुका छे ते जिनमूर्ति वा पादुकानी पेठे पूजवा योग्य छे जे दिवसे सूरिवाचक साधुए देहोत्सर्ग कर्यो होय ते दिवसे गुरुपूजा भणाववी. स्नात्रियाओने जमाडवा. तेमने लाडु आदिनी प्रभावना करवी. पूजामां आवनार सर्वनी प्रभावनाथी भक्ति करवी. शक्ति होयतो जमण पण करवुं. पादुका अगर मूर्ति आगळ उत्सव करवो. सांजरे

टोळी बेसाडी गुरुभक्तिनां गायनो स्तवनो गावां. गुरुनी भक्तिना निमित्ते वर्तमान साधु साध्वीनी सेवा भक्ति करवी. गुरुचरित्रनुं व्याख्यान सांभळवुं, ते निमित्ते धार्मिक पुस्तको छपाववां. गुरुनो महिमा वधारवो. गुरुना उपदेशोनुसारे वर्तवुं. गुरुपादुकानी वा मूर्तिनी सुगंधी पुष्पथी पूजा करवी.

अथ सत्तरभेदी पूजा.

प्रभु महावीर जिनपति, तीर्थंकर जगदेव; श्री जिनवाणी सद्गुरु, प्रणमी करु शुभ सेव. ॥ १ ॥ सत्तरभेदी पूजा भली, द्रव्य भाव सुखकार; श्रावकने बे भेदथी, यतिने भावथी सार. ॥२॥ आगम शास्त्राधारथी, पूजा भवि हितकार; श्रद्धा प्रीतिभक्तिथी, आत्मशुद्धि करनार. ॥ ३ ॥

प्रथम न्हवणपूजा.

॥ ध्रुवपदं, गोडीरागेण गीयते ॥

जिनपतिने न्हवरावेहो सुरपति, मेरुशिखर न्हवरावेरे; उज्वल शुभ आतमपरिणामे, जिनगुण भावना भावेरे. जिन० ॥ १ ॥ प्रभु तुज उपरे श्रद्धा प्रीति, न्हवण पूजा में धारीरे; दुनियानी खीज दूर निवारी, तुज पर जउ सहु वारीरे. जिन० ॥ २ ॥ तुज भक्तिमां मुज मन प्रणम्युं, तुज रागे रंगायोरे; तुज रागे समकित गुण निश्चय, तन्मयभावे सुहा-

योरे. जिन० ॥ ३ ॥ गंगादिक निर्मल जल स्नाने, भावथी भक्तिकामेरे; बुद्धिसागर पूजा करतां, आतम निज गुण पामेरे. जिन० ॥ ४ ॥

द्वितीया चंदनविलेपनपूजा.

द्रव्यभावथी कीजीए, चंदनपूजा बेश; भावथी समचंदनवर्ने, पूजे विघटे क्लेश. ॥ १ ॥

धन्याश्री रागेण गीयते.

द्रव्यने भावथी चंदनपूजा, जिनवरनी जयकाररे; सत्य सुगंधी चूर्ण विलेपन, समता चंदन साररे. द्रव्य० ॥ १ ॥ प्रभु नवअंगे चंदन चर्चे, भाव धरी नरनाररे; श्रद्धा प्रीति प्रभुपर वधतां, परपरिणति परिहाररे. द्रव्य० ॥ २ ॥ तुजमां राचुं तुजपर माचुं, भूली दुनिया भानरे; बुद्धिसागर प्रभुमय जीवन; रंगे थयो गुल्तानरे. द्रव्य० ॥ ३ ॥

तृतीया चक्षुर्युगलपुजा.

द्रव्य भावथी चक्षुनी, युगलपूजा सुखकार; चढता प्रीति भावथी, करतां शिवसुख सार. ॥१॥

दीपचंदी ताल सोरठ.

जिनदर्शन मोहनगारा, ए राग.

तुज मूरति प्रभु !!! मुज व्हाली, आंखे देखी देखो धारीरे. तुज० सम्यग् मति श्रुत चक्षु युगलथी, प्रभु पूजा जयकारी; केवल दर्शन ज्ञान प्रगटतां, पूजा पूर्ण प्रकारीरे. तुज० ॥ १ ॥ शब्दनये तुज मूरति प्यारी, देखे तस बलिहारी; नयव्यवहारे स्थापना सारी, भविजीवने हितकारीरे. तुज० ॥ २ ॥ तुज भक्ति शिवपुरनी बारी, मिथ्यामत संहारी, सम्यग् दृष्टिनी करनारी, अनंत कर्म संहारीरे. तुज० ॥३॥ भावथी पूजंतां नरनारी, आनंदनी लहे क्यारी; बुद्धिसागर जिनगुण धारी, पूजा छे सुखकारीरे. तुज० ॥ ४ ॥

चतुर्थी वासपूजा ॥

चंदन घसी घनसारने, मेळवी पुष्प सुवास;
वासथकी प्रभु पूजीए, भावथकी विश्वास. ॥ १ ॥

गीत राग—मालवी गोडी.

वासथकी प्रभु पूजा सारी, भक्तजनोने प्यारीरे; गुणीनी सेवा प्रकट करे गुण, प्रभुगुणनो बलिहारीरे. वास० ॥ १ ॥ समकित वासे प्रभु पूजंतां, गुणगण प्रगटे भारीरे; प्रभुगुणवासे वासित आतम, शुद्धातम निर्धारीरे. वास० ॥ २ ॥ सर्व विरति संयमगुण वासे, मोहनी दुर्गंध नासेरे; समकितवासे प्रभु निज पासे, आपोआप प्रकाशेरे. वास० ॥ ३ ॥ निमित शुद्ध उपादान वासे, चढतां भाव वधारीरे; बुद्धिसागर आतमविकासो, प्रभु पूजी नरनारीरे. वास० ॥ ४ ॥

पंचमी पुष्पपूजा.

द्रव्यभावसुपुष्पथी, पूजंतां जिनराज;
अंतर आतम उल्लसे, प्रगटे प्रभु साम्राज्य.॥ ॥

प्रभु निर्मल दर्शन कीजीए ए—राग.

सारंगरागेण गीयते.

पूजीए पूजीए पूजीए, जिनराजने प्रेमे पूजीए,

प्रभुगुण अमृत पीजीए, जिनराजने प्रेमे पूजीए;
द्रव्यथकी शुभगंधी पुष्पे, प्रभुनी पूजा कीजीए,
भावथकी व्रतपंचाचारना, पुष्पे पूजीने रीझीए.
जिनराज० ॥ १ ॥ क्षयोपशम उपशमने क्षायिक,
आतमगुणे प्रकटीजीए; आतमगुण अनुयायी
चेतना, प्रगटावी सुख लीजीए. जिनराज० ॥ २ ॥
प्रभु तुजथी मुज लगनी लागी, मुज पर करुणा
कीजीए; बुद्धिसागर आतम आनंद, रसभर प्याला
पीजीए. जिनराज० ॥ ३ ॥

षष्ठी पुष्पमाला पूजा.

पुष्पमालथी पूजतां, प्रभु गुण प्रकटे अंग;
ईयल भमरी ध्यानथी, भ्रमरी पद लहे रंग. ॥१॥

चेतन अब मोहे दरिशन दीजे. ए राग.

प्रभुजी महावीर तुज रढ लागी, थयो तुज
गुण अंतर रागी. प्रभुजी० तुज गुण गणतां पार
न आवे, कोटी वर्ष वही जावे; तुज अनुभव झांखी

घट प्रगटे, आनंद जगमां न मावे. प्रभु० ॥ १ ॥ आतमगुण पंच पुष्पनी माला, जावथी पूजा प्यारी; जिनपूजा ते आतमपूजा, निश्चयथी सुखकारी. प्रभुजी० ॥ २ ॥ आतम द्रव्यना गुण पर्याये, आत्मोपयोग समारी; बुद्धिसागर आविर्भावे, प्रभु प्रकटे जयकारी. प्रभुजी० ॥ ३ ॥

सप्तमी कुसुम आंगी रचनारूपपूजा.

देव गुरुने धर्मनी, श्रद्धा भक्ति प्रकार;
कुसुम आंगी पूजाभली, करतां जवी नरनार. १

राग बिरुओ अथवा पीलु ॥

सोवे सोवे सारी रेंन गुमाइ. ए राग.

कुसुम आंगीनी पूजा सारी, द्रव्य भावथी जवि हितकारी. कु० समकित सड सठ बोल विचारी, कुसुमनी आंगी मलपरिहारी. कु० ॥१॥ देव गुरुने धर्मनी जक्ति, करतां प्रगटे आतम शक्ति. कु० समकित वण व्रत तप जप रीति, तेथी टळे नहि

भवनो जीति. कु० ॥ २ ॥ तुज आगमनी श्रद्धा धारी, तुजपर तन मन जाउ वारी; कु० ॥ तुज संतोनी साची यारी, बाकी जूठो दुनियादारी. कु० ॥ ३ ॥ श्रावक साधु गुणगण भारी, भावथी पूजा ए निर्धारी; कु० ॥ बुद्धिसागर भक्ति प्यारी, भाव-थकी शिवसुख देनारी. कु० ॥ ४ ॥

अष्टमो चूर्णपूजा.

घनसारादिक चूर्णथी, जिनपति पूजा एह;
भावथी उपशम चूर्णथी, पूजे जिनवर तेह. ॥ १ ॥

ध्रुवपद काफी रागेण गीयते.

प्रभु तुज दर्शननो बलिहारी, दर्शननी बलि-हारी. प्रभु० द्रव्यने भावथी दर्शन पामे, धन्य ते नरने नारी; द्रव्यभाव चूरणथी पूजा, करता तस बलिहारी. प्रभु० ॥१॥ क्रोध मान मायाने लोभनो, उपशम जेटलो थावे; तेटलो प्रभु गुण अनुभव आवे, समकितीने ए सुहावे. प्रभु० ॥ २ ॥ आनंद

ज्ञाननी प्रकट प्रभुता, प्रभु भक्ति तेह भावे; क्षयोपशम उपशमना भावे, प्रगटे अनुभव आवे. प्रभु० ॥ ३ ॥ सातनयोथी दर्शन पूजा, सेवा साची जाणी; बुद्धिसागर प्रभुनो पूजा, आपोआप प्रमाणी. प्रभु० ॥ ४ ॥

नवमी ध्वजपूजा.

द्रव्यभाव बे भेदथी, ध्वजपूजा सुखकार; ध्वजथी जिनवर पूजतां, भक्ति वधे जयकार. ॥ १ ॥

नमुं रविसागर गुरु राया,

जिन शासन जय वर्ताया. ए राग.

घन घटा भुवन रंग छाया. ए राग.

ध्वजपूजा छे जयकारी, जिन शासन शोभाकारी. ध्वज ॥ प्रभु धर्मने जग फेलावे, ध्वज पूजा भावना दावे; जाणे तेनी बलिहारी. ध्वज० जिन० ॥ १ ॥ जे थया प्रभावक सारा, तेणे प्रभु पूज्या प्यारा; ध्वज पूजा एहवी धारी, ध्वज. जि० ॥ २ ॥

जिन शासन जे शोभावे, ते भावथी पूजा पावे; प्रभु भक्तनी छे बलिहारी. ध्वज० ॥ ३ ॥ प्रभु पूजाथी प्रभु प्रगटे, चढता भावे मल विघटे; बुद्धिसागर सुखकारी. ध्वज. ॥ ४ ॥

दशमी आभूषणपूजा.

द्रौपदीने सूर्याभनी, पेठे पूजे जेह; द्रव्यथी भावना पूजना, निश्चय पामे तेह.

श्री श्रेयांसजिन अंतरजामी. ए राग.

श्री जिनवरनी पूजा प्यारी, सुख आपे निर्धारीरे; द्रव्यभावथी पूजा सारी, करतां नरने नारीरे. श्री० ॥ १ ॥ नयनिक्षेपे पूजा विचारी, सम्यग्दृष्टि धारीरे; द्रव्यभाव पूजा आचारी, हठ कदाग्रह वारीरे. श्री० ॥ २ ॥ चारने चार छे भावना भूषण, निश्चयने व्यवहारीरे; बुद्धिसागर भावना पूजा, प्रगटी घट सुखकारीरे. श्री० ॥ ३ ॥

एकादशमी कुसुमगृहपूजा

कुसुम गृहे प्रभु थापीने, जे पूजे नरनार; ते मुक्तिवेगे वरे, सम्यग्दृष्टि उदार ॥ १ ॥

आज सखी मोंये वाल्हमा, मुज मंदिर आये. ए राग. मारु वा. ॥

अथवा उत्सव रंग वधामणां. ए राग. वेलावल. ॥

परम प्रभु परमातमा, मुज दिल दर्शायो; बाह्यांतर स्वरूपथी, पूरण परखायो. परम० ॥ १ ॥ सम्यग्दृष्टि जीवनी, सहु करणी लेखे; अल्पबंध बहु निर्जरा, करे सम्यग् पेखे. परम० ॥ २ ॥ बाह्याभ्यंतर अतिशय,-पुष्प घरमां बिराजो; असंख्यप्रदेशी पुष्पना, घरमांही छाजो. परम० ॥ ३ ॥ द्रव्यने भावथी पुष्पनुं, घर करी जिन थापे; बुद्धिसागर आतमा, प्रभु छापे व्यापे. परम० ॥ ४ ॥

बारमी कुसुम मेघपूजा.

द्रव्यथी कुसुमना मेघथी, प्रभुपूजा सुखकार; भावथी प्रभु उपदेशना, मेघथी पूजा सार. ॥ १ ॥

राग फाग–सिद्ध जजो भगवंत, प्राणी पूर्णानन्दी. ए राग.

जिनवर छे जयकार, जवी; भावथी पूजो; द्रव्यने भावथकी जिनपूजा, अमृतरस धरनार. भवी० आतम गुण पर्यायस्वजावे, धर्म प्रगट करनार. भवी० ॥ १ ॥ जिनवर वाणीपुष्पनामेघे, आतम शांति थनार. भवी० अनुजवपुष्पना मेहुला वरसे, सुगंधनी बहु व्हार. भवी० ॥ २ ॥ मोहनी दुर्गंध दूरे नासे, समता शीतलता सार. भवी० मुजमन तुज उपदेश स्वरूपी–मेघे मोह्युं अपार. भवी० ॥३॥ पुष्पना मेघो तुज शिर उपर, वर्षावुं धरी व्हाल. जवी० बुद्धिसागर मुजपर वर्षो, जिनवाणी मेघ अपार. भवी० ॥ ४ ॥

त्रयोदशमी अष्टमाङ्गलिक पूजा.

स्वस्तिक ने श्रीवस्त छे, घट जद्रासन चार;
नंदावर्तने वर्धमान, मीनयुग दर्पण सार. ॥ १ ॥

अष्ट ए मंगलथी प्रभु, पूजे पाप पलाय; पद पद मंगल संपजे, लब्धि सिद्धि प्रगटाय. ॥ २ ॥

॥ ध्रुवपद् गोडी रागेण गीयते ॥

प्रभुनी आगळ आठे मंगल, पुण्यातिशये चालेरे; द्रव्यथी मंगल आलेखे जे, भावमङ्गल ने भाळेरे. प्रभु० ॥१॥ सहज गुण जे चार ते स्वस्तिक, दर्पण ज्ञानने धारोरे; सम्यग्दृष्टि कुंभ विचारो, विरति श्रीवच्छ प्यारोरे. प्रभु० ॥ २ ॥ संयम भद्रासन नंदावर्त, अनुभव आनंद पामोरे; आत्म समाधि वर्धमान छे, भाव मंगलथी जामोरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ मीन युगलते ज्ञानने दर्शन–उपयोगे जयकारीरे; बुद्धिसागर प्रभुनो पूजा, द्रव्यभाव हितकारीरे. प्रभु० ॥ ४ ॥

॥ चतुर्दश धूपदीपक पूजा ॥

द्रव्यभावथी धूपने, दीपक पूजा सार; जिनवरनी जे जन करे, पामे शर्म अपार.

पिया निज महेले पधारोरे, करी करुणा महाराज पिया. ए राग मारु. ॥

प्रभु तुज प्रीतडी लागीरे, प्रगट्युं रुचिरसपूर. प्रभु० ॥ १ ॥ ध्याता ध्येयने ध्याननीरे, एकतामांहि न भेद; निर्विकल्प समाधिमांरे, जोति द्वेष न खेद. प्रभु० ॥ १ ॥ आतमना उपयोगमांरे, प्रभु तुं छे मुज पास; ध्यान धूपने ज्ञाननारे, दीपकनो छे प्रकाश. प्रभु० ॥ २ ॥ कोटि वर्ष सम नाहयरोरे, क्षणविरहो न खमाय; बुद्धिसागर प्रेमथीरे, पूजा करे ज जीवाय. प्रभु० ॥ ३ ॥

पन्नरमी गीत पूजा.

प्रभु गुण पर्याय गीतथी, प्रभुने पूजे जेह; चढता भावोल्लासथी, प्रभुपद पामे तेह.

नाथ कैसे गजको बंध छुडायो—ए राग. सारंग. ॥

प्रभु तुज गान घणुं गुणकारी, आतम आनंदकारी. प्रभु० वीणादिक तालमानने ताने, प्रभु

गुण गान उमाह्यो; नरघां मरदंग तान सुज्ञाने, आनंद रस रंगायो. प्रभु० ॥ १ ॥ प्रभु तुज सन्मुख चेतना करवा, उपयोगथी हर्षायो; प्रभु तुजगाने भान न जगनुं, आतम झांखी पायो. प्रभु० ॥ २ ॥ प्रभुने गातां सुखनी खुमारी, प्रगटंती जयकारी; पूर्णानंदी प्रभुने पूजो, गीतवरे नरनारी. प्रभु० ॥ ३ ॥ परापश्यंती मध्यमागाने, अनहद्गीत सु-ताने; बुद्धिसागर प्रभुरसपाने, भक्त प्रभु घट माने. प्रभु० ॥ ४ ॥

सोळमी नृत्यपूजा.

प्रभु आगळ भावे करे, नृत्यनी पूजा जेह;
आतमशुद्धि ते करे, पामे शिवपुर गेह. ॥ १ ॥

अवसर बेरबेर नहि आवे. ए राग. आशावरी.

शुभंकर जिनपूजा जयकारी, द्रव्यभावथी नृत्यनी पूजा, आतम आनंदकारी. शुभंकर. ॥ एक शत आठे देवकुमरने, सुर कुमरी शुभ नाचे;

सुरनर नृत्य करीने माचे, आत्मरसी थै राचे. शुभं-
कर० ॥ १ ॥ चढते भावे धर्म रसीला, प्रभु प्रेमे
उल्लसिया; सुर नरनारी हर्षे नाचे, श्रद्धाभक्तिमां
वसिया. शुभंकर. ॥ २ ॥ भक्तिए रोम रोम जस
विकसे, दिलमां हर्ष न मावे, भावथी नवरसना
शृंगारे, अंतरनाचे सुहावे. शुभंकर. ॥ ३ ॥ भक्ति-
रसे गुलतान बनीने, गुणपर्याये नाचुं; बुद्धिसागर
आत्ममहावीर, सहज स्वभावे राचुं. शुभंकर. ॥ ४ ॥

सत्तरमी सर्ववाद्यपुजा.

सर्वजाति वाजिंत्रथी, चढता भावोल्लास; नर-
नारी प्रभु पूजतां, पामे शिवसुख खास ॥ १ ॥

राग. प्रभात.

समवसरणमां वाजां वाजे, अंबरतलमां गा-
जेरे; देवदुंदुभि वाजी गाजे, जिनपति महिमाए रा-
जेरे. सम० ॥ १ ॥ सारंगी शरणाइ भूंगळ, भेरी न
फेरी वीणारे; जल्लरी ढोल ने वंशळी वाजे, सुरकुम-

रीना स्वर झीणारे. सम० ॥ २ ॥ मुरज कंसालांने मृदंगने, पणवादिक वाजींत्रेरे; जिनवर पूजा भक्ति जन करता, मोह शत्रुने जीतेरे. सम० ॥ ३ ॥ सुरनर वाजिंत्रे जिनपूजा, भावथी करी नर नारीरे. तीर्थंकर आदि पद पावे, निजपरिणतिने समारीरे. सम० ॥ ४ ॥ योगाभ्यासे अंतरवाजां, वाजे अनहद तानेरे; शुक्ल शुक्ल उज्वल परिणामे, धर्म ध्यान निज मानेरे. सम० ॥ ५ ॥ आत्मोल्लास रस वाजिंत्रे प्रभु, पूजामां थइ रसियोरे; बुद्धिसागर आतम स्वभावे, आनंद ल्हेरे उल्लसियोरे. सम० ॥ ६ ॥

कलश—धनाश्री.

गाया गायारे प्रभु महावीर गुणगण ध्यायी, सत्तर भेदी पूजाथी प्रभु, गातां मुक्ति वधाइरे. प्रभु महावीर. ॥ १ ॥ द्रव्य भाव प्रभुपूजा रचीने, आतम आनंद पायो; ओगणिश अठ्योतर चैतर वदि, दशमी जय वर्तायोरे. प्रभु० ॥ २ ॥ जिनवर

महावीर पट्ट परंपरा, तपगच्छ सागर शाखे, रवि-सागर गुरु सुखसागर गुरु, जिन आणा दिल राखेरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ मधुपुरीमां पद्मप्रभु जिन, गुरुनी पूर्ण कृपाए; आनंद मंगल ऋद्धि सिद्धि, पूजा करंतां थाएरे. प्रभु० ॥ ४ ॥ घर घर संघमां आनंद मंगल, पूजाथी सुख भारी. बुद्धिसागरसूरि ऋद्धि, वृद्धि कीर्ति जयकारीरे. प्रभु० ॥ ५ ॥

अथ नवपद लघु पूजा.

प्रथम अरिहंत पद पूजा.

परम प्रभु परमातमा, परब्रह्म महावीर; शासनपति अरिहंत जिन, सर्व धीर महाधीर. ॥ १ ॥ वंदी पूजी ध्याइने, नव पद पूजा सार; रचुं स्वपर-हित कारणे, आत्म शुद्धि करनार. ॥ २ ॥ तीर्थंकर सर्वे प्रभु, अर्हत् पदमां समाय; चार निक्षेपे जाणतां, पूजे शिव सुख थाय. ॥ ३ ॥

राग. सोरठ.

अरिहंत द्रव्यभाव सुखकारो, साची लागी अरिहंत यारी. शुद्धातम उपकारो. अरिहंत. चोत्रीश अतिशय धारी जिनेश्वर—बारगुणे जयकारी; पांत्रीश वाणीगुणना धारण—तीर्थंकर हितकारी. अरिहंत. ॥ १ ॥ संघ चतुर्विध तीरथ स्थापक,—केवल ज्ञानी विहारी; विश्वोद्धारक कर्म संहारक, शुद्धानंदना धारी. अरिहंत. ॥ २ ॥ तुजपर पूरण प्रीति प्रगटी, कोथी न उतरे उतारी; निश्चयथी अरिहंत निजातम, जाण्युं उपयोग धारी. अरिहंत. ॥ ३ ॥ सत्ता व्यक्तिभावे अरिहंत, निश्चय नय व्यवहारी; बुद्धिसागर अरिहंत आतम—शुद्ध बुद्ध अविकारी. अरिहंत. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं परम० अर्हन् पद पूजार्थ जलं०—य० स्वाहा.

द्वितीया सिद्धपद पूजा.

पूजुं प्रभु गुण भावथी, सिद्ध सदा जयकार; अष्टगुणी परमातमा, एकत्रिंश गुणधार. ॥ १ ॥ अनंत;

ज्योते झळहळे, अनंत आनंद धाम; निराकार परब्रह्मने, हो उपयोगे प्रणाम. ॥ २ ॥

नाथ कैसे गजको बंध छुडायो. सारंग वा.

राग—आशावरी.

निरंजन सिद्धप्रभु सुखकारी, कर्म रहित जयकारी. निरंजन० क्षायिक नवलब्धि गुणधारी, निराकार निर्धारी; अनंत ज्योते झळहळता विभु, पूर्णानंदी अपारी. निरंजन० ॥ १ ॥ अलख अरूपी जन्म मरण नहीं, गुणपर्यायाधारी; शुद्धातम परब्रह्म अखंडित, अविनाशी अविकारी. निरंजन० ॥ २ ॥ सकल सिद्धने वंदु पूजुं, शुद्धोपयोग समारी; सत्ताए निज आतम सिद्ध छे; समरंतां सुख भारी. निरंजन० ॥ ३ ॥ सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्रना, शुद्धोपयोगे विहारी, बुद्धिसागर सिद्ध स्वयं थै, पामे शिव नरनारी. निरंजन० ॥ ४ ॥

ॐ०=॥ सिद्धपद पूजार्थे जलं० य० स्वाहा ॥

तृतीया आचार्यपद पूजा.

द्रव्यभाव व्यवहारथी. निश्चयथी सूरिराज;
वंदतां पूजतां ध्यावतां, प्रगटे शिवसाम्राज्य. ॥ १ ॥

सोवे सोवे मारी रेनगुमाइ. राग. विरुओ.
अथवा पोलु.

वंदु पूजुं सूरिवर रागे, ज्ञानादिक गुण अंतर जागे–वंदु. ॥ छत्रीशो छत्रीशो गुणगण मंडित–सज्जावे वर्ते वैराग्ये. वंदु. ॥ १ ॥ धर्मना रक्षक धर्म प्रवर्तक–जेहथी मोहनो दूरे भागे. वंदु; । द्रव्य क्षेत्र काल भावने जाणे–विषयोमां नाहि वर्ते रागे. वंदु. ॥ २ ॥ जिनवाणीनो अर्थ जणावे. द्रव्यने भावथी वर्ते त्यागे. वंदु. । ज्ञानी ध्यानी योगी सनूरा–म्हाले आतम गुणना बागे. वंदु. ॥ ३ ॥ निश्चयथी सूरिवर निज आतम– शुद्ध परिणति भावमां लागे; बुद्धिसागर ब्रह्मसूरि घट– प्रगटंतां जय डंको वागे. वंदु. ॥ ४ ॥

ॐ०–आचार्य पद पूजार्थं जलं० य० स्वाहा ॥

चतुर्थी उपाध्याय पद पूजा.

द्रव्य भाव वाचक नमुं, पूजुं जग हितकार;
ज्ञानी पंच महाव्रती, सेवंतां सुखकार. ॥ १ ॥

आज सखो मुज व्हालमा, मन मंदिर आये.

ए राग. वेलावल. ॥

वाचक पदने वंदोए, पूजोए जयकारी; वाचक सेवा भक्तिथी, निज शुद्धि थनारी. वाचक. ॥ १ ॥ द्रव्य क्षेत्र काल भावथी, वर्ते जयकारी; निश्चय दृष्टि दिल धरी, वर्ते व्यवहारी. वाचक. ॥ २ ॥ धर्म शास्त्र पाठक प्रभु, विश्वजीवोपकारी; आतम उपयोगे रहे, ब्रह्म वाचक धारी. वाचक. ॥ ३ ॥ निश्चय वाचक आतमा, पच्चीश गुण धारी; बुद्धिसागर धर्मना,—वाहक हितकारी. वाचक. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं०—प० वाचक पदपूजार्थं जलं० य० स्वाहा ॥

पंचमी साधु पद पूजा.

चउनिक्षेपे साधुपद, क्षेत्रकाल अनुसार; वंदतां सेवतां पूजतां, ध्यातां शर्म अपार.

मेरुशिखर न्हवरावेहो सुरपति. ए राग.

साधु सदा उपकारी हो जगमां, साधु सदा उपकारी. ॥ व्यवहारथी जे पंचाचारी, पंच महाव्रत धारी; साधुसंगतनी बलिहारी, जेथी तरे नरनारी हो. जगमां. साधु. ॥ १ ॥ द्रव्यादिक प्रतिबंध निवारी, रागने रोष संहारी; व्यवहारथी व्यवहारे वर्ते, निश्चय उपयोग धारी हो. जगमां. ॥ २ ॥ साधु संतनी सेवा करीए, दोषनी दृष्टि निवारी; वेषाचारथी अनंत उत्तम, गुण लेजो नर नारी हो. ॥ ३ ॥ आतम ते साधु परमातम, उपयोगे ल्यो धारी; बुद्धिसागर साधु सेवा, अनंतगुणी गुणकारी हो. जगमां. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं०–प०–साधु पद पूजार्थं जलं० य० स्वाहा ॥

षष्ठी दर्शनपद पूजा.

सम्यग् दर्शन पद नमुं, पूजुं ध्यावुं सत्य, सम्यग् दर्शन पामतां, सफलां धर्मनां कृत्य.

राग. गोडी. निशानी कहा बतावुंरे. ए लय. ॥

अनुभव दर्शन पामोरे, गुरुगमथी नरनार. अनुभव० ॥

देवगुरुने धर्मनीरे, श्रद्धा प्रीति थाय; सडसठ बोले अलंकर्युंरे, प्रगटे दिलमां जणाय. अनुभव. ॥ १ ॥ द्रव्यजाव व्यवहारथीरे, निश्चय समकित जाण; सातनयोथी जाणतांरे, रहे नहीं अज्ञान. अनुजव. ॥ २ ॥ दर्शन ज्ञान चरित्रनीरे, एकपरिणति थाय; निश्चय दर्शन आतमारे, शुद्धोपयोगे सुहाय. अनुजव. ॥ ३ ॥ सम्यग् दर्शन पामतांरे, निश्चय मुक्ति थाय; बुद्धिसागर आतमारे, परमातम पद पाय. अनुजव. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं० प० दर्शनार्थं जलं० य० स्वाहा ॥

सप्तमी ज्ञान पूजा.

द्रव्य भावथी ज्ञानने, वंदु पूजुं बेश, सम्यग् ज्ञानने पामतां, नासे सघळा क्लेश. ॥ १ ॥

राग मालवी. गोडी.

सम्यग् ज्ञान लहो नर नारी, नहि कोइ ज्ञान समानरे; ज्ञानी श्वासोच्छ्वासमां कर्मने, टाळी लहे निर्वाणरे. सम्यग्. ॥ १ ॥ मतिश्रुत अवधि ने मन पर्यव, केवल पांचमुं ज्ञानरे; दर्शन पामे मतिश्रुत, भावथी, सम्यग् ज्ञान प्रमाण रे. सम्यग्. ॥ २ ॥ आतम अनुभव ज्ञानोपयोगे, क्षणमां मुक्ति सुहाय रे; ज्ञानविना कोइ ध्यान न पावे, ज्ञाने आनंद थाय रे. सम्यग्. ॥ ३ ॥ स्वपर प्रकाशक ज्ञान ते आतम, गुण गुणीरूप प्रमाण रे; बुद्धिसागर आतम ज्ञाने, प्रगटे केवल ज्ञान रे. सम्यग्. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं प०-ज्ञानार्थे जलं० य० स्वाहा.

अष्टमी चारित्र पद पूजा.

द्रव्य भाव चारित्रथी, आतम शुद्धि थाय,
प्रगटे परमानन्दता, आतम सिद्ध सुहाय. ॥ १ ॥

कीजीए कीजीए कीजीए प्रभु निर्मल दर्शन
कीजीए. राग. सारंग.

पामीए पामीए पामीए, शुद्ध चारित्र पदने पामीए, वामीए वामीए वामीए; मोहभावने दूरे वामीए. ॥ पामीए. ॥ व्रत वेष तप जप त्यागाचारथी, द्रव्य चारित्रमां झामीए; सम परिणामे आत्मोपयोगे, भावचरण विश्रामीए. शुद्ध. ॥ १ ॥ द्रव्य ते भावनुं कारण जाणो, भाख्युं महावीर स्वामीए; जड विषयोमां रागने द्वेषनो, परिणतिथकी विरामीए. शुद्ध. ॥ २ ॥ आत्मस्वभावे रमवुं चरण छे, चारित्रीने शिर नामीए; चारित्रमां अर्पाइ जातां, पूर्णानन्दे आरामीए. शुद्ध. ॥ ३ ॥ व्यवहार निश्चय चारित्र वरवा, गुरुगम ज्ञानने पामीए; बुद्धिसागर

आतम आनंद, प्रगट चारित्र प्रणामीए. शुद्ध. ॥४॥

ॐ ह्रीं० प० चारित्र पूजार्थं जलं०-य. स्वाहा ॥

नवमी तपपद पूजा.

द्रव्य भावथी तप तपे, आठे कर्म विनाश;
ज्ञान अने निष्कामथी, थावे शिवपुर वास. ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपद काफी रागेण गीयते ॥

महावीर तपगुणनी बलिहारी, तपगुणनो बलिहारी. महावीर० ॥ तपथी लब्धियो प्रगटे न्यारी, मनडुं बने अविकारी; सुख दुःखमां समभावता धारी, अहंपणुं न लगारो. महावीर० ॥ १ ॥ बाह्य अभ्यंतर तप जयकारी, पुद्गलनो नहि यारी; राग द्वेषनी वृत्ति संहारी, पर परिणति परिहारी. महावीर० ॥ २ ॥ धन्य धन्य वीर जगजयकारी, सह्या परिषह भारी; प्रगटाव्युं घटमांही केवल, वंदु वार हजारी. महावीर० ॥ ३ ॥ तप ते आतम निश्चय धारी, त-

पशो नरने नारी; बुद्धिसागर शुद्धातम रस,—स्वाद लह्यो तपधारी. महावीर० ॥ ४ ॥

कलश.

गाइ गाइरे नवपदनी पूजा गाइ०॥ ओगणिश अठ्योत्तर आश्विन बीज, मेसाणामां रचाइरे, नवपदनी पूजा गाइ ॥ वीर प्रभुनी पट्ट परंपर, श्वेतांबर सुखदायी; तपगच्छ हीरविजय सूरि जगगुरु, पट्ट परंपरा आइरे. नव० ॥ १ ॥ नेमिसागर रविसागर गुरु, सुखसागर गुरु ध्यायी; नवपद पूजा रचतां ऋद्धि, वृद्धि कीर्ति सुहाइरे. नव० ॥ २ ॥ घट घट नवपद ऋद्धि सिद्धि, सत्ताए रही छे सुहाइ; बुद्धिसागर पुर्णानन्दनी, प्रगटो घटमां वधाइरे. नव०॥३॥

ॐ० प० तपः पदपूजार्थं जलं० य० स्वाहा ॥

अथ पंचधा योग पूजा.

परम प्रभु परमातमा, प्रभु महावीर जिनेश; परमब्रह्म परमेश्वरा, प्रणमुं विभु विश्वेश. ॥ १ ॥ पंच योग पूजा रचुं, आतम शुद्धि काज; अष्टप्रकारे पूजना, करतां शिव साम्राज्य. ॥ २ ॥ अध्यातमने भावना, ध्यानने समता चार; वृत्तिसंक्षययोगथी, पूर्ण शुद्धि सुखकार. ॥ ३ ॥ योगनी भूमिका प्रथम, अनुक्रमे पांचे योग, सुणतां ध्यावतां संपजे; आतम शिव सुख भोग. ॥४॥ आतम सुख निश्चय थतां, योग रुचि प्रगटाय, पंच योगनी साधना; कर्मविनाशक थाय. ॥ ५ ॥ महावीर देवे प्रकाशिया, असंख्य योग प्रकार; सर्व मुख्य दर्शन अने, ज्ञान चरण छे उदार. ॥ ६ ॥ तेमां सहु योगो शमे, तोपण भवि हितकार; पंचयोग दर्शाविया, तस पूजा सुखकार.॥७॥

प्रथम योग भूमिका पूजा.

प्रभु महावीर जिनेश्वर भाखे, योग भूमिका सारजी; योग भूमिका शुद्धि करतां, मन शुद्धि नि-

धार. योगने धारोजी; प्रथम गुरु देव सेव, धरीए आचारोजी. ॥ १ ॥ ओघे देव गुरु वृद्ध सेवा, पूजन थाय सुरागजी, सदाचार प्रवृत्ति प्रगटे, तपनी वृत्ति त्याग. योगने. ॥ २ ॥ उपकारीनी सेवा थावे, प्रभु दर्शन गुणरागजी; चारिसंजीवन दृष्टांते, धर्म कर्म वै-राग्य. योगने. ॥ ३ ॥ देव गुरुनी निन्दा न थाती, थाय सुपात्रे दानजी; परोपकार प्रवृत्ति थावे, गुण ग्रहणता तान. योग. ॥ ४ ॥ प्रभुता पामे गर्व न थातो, सत्य पथ्य हित बोलजी; सत्य तत्त्वनी इहा प्रगटे, सत्यासत्यनो तोल. योग. ॥ ५ ॥ साधु सं-तनी सेवा भक्ति, रुचे धर्मोपदेशजी; मार्गानुसारी नीतिरीत, मुक्तिपर नहीं द्वेष. योग. ॥ ६ ॥ प्रमा-णिक व्यवहार प्रवृत्ति, सत्यप्रतिज्ञा पळायजी; चोरी व्यभिचार व्यसन निवृत्ति, कुलाचार वर्ताय. योग. ॥ ७ ॥ मांस मदिरा त्यागने सज्जन,-रीतिनो व्यवहारजी; मात पिता गुरु वर्गनो आज्ञा, ऐवो सदाचार धार. योगने. ॥ ८ ॥ नास्तिक दुष्टनी संग

न रुचे, रुडा प्रगटे विचारजो; योगनी दृढ ज्रूमिका एवी, दंभतणो परिहार. योगने. ॥ ९ ॥ अनन्य विषगरलनी निवृत्ति, तद्धेतु शुभ थायजी; समकित पूर्वक ज्ञानथी अमृत, शुभ अनुष्ठान सुहाय. ॥ १० ॥ योगनी पूर्व सेवा योगज्रूमि, चरमावर्ते पायजी; बुद्धिसागर योगना योग्य ज, नरनारी ते गणाय. योग. ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, योगभूमिका सेवार्थं जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा ॥

॥ प्रथमा अध्यात्मयोग पूजा ॥

प्रभु वचनानुसारथी, तत्त्वनी चिंता थाय; गृही-त्यागी व्रत युक्तने, मैत्र्यादि भाव सुहाय. ॥ १ ॥ आतमज्ञानने आत्मनी, शुद्धिनुं अनुष्टान, द्रव्यभाव अध्यात्मनो, योग ज्रलो गुण खाण. ॥ २ ॥

द्रव्य क्षेत्रकाल भावथी जाणी, अध्यातम योग धारोजी; आतमज्ञानीने योगथी सिद्धि, राग रोष परिहारो. योगने धरीएजी. टाळी मोहनी टेव; शिव-सुख वरीएजी. ॥ १ ॥ देव मंत्रने जपीए विधिये, अशुभ वृत्ति निवारीजी; आसन जय प्राणायामाभ्यासथी, देहशुद्धि हितकारी. योग ॥ २ ॥ अध्यात्मयोगनी आगळ हठनी, किमत जाणो कोमीजी; आतम ज्ञानीओए दिलमां, शुद्धातम प्रीत जामी. योग० ॥ ३ ॥ आतमस्वरूप विचारणा करवी, मनवच तनु वश राखीजो; गृहस्थ त्यागी व्रत गुण पालन, प्रारब्धे थवुं साक्षी. योग० ॥ ४ ॥ मनवच काया अशुभ प्रवृत्ति, त्यागी शुभने भजीएजी, शुभ थकी शुद्धभावमां प्रणमो, प्रकटपणे गुण सजीए. योग० ॥ ५ ॥ सुख दुःख आवे हर्ष न शोक ज, देव गुरुने वंदोजी; प्रत्याख्यानथी इच्छाओ रोधो, प्रगटे ते दोषने निंदो. योग० ॥ ६ ॥ देह ममत्व निवारी आतम, उपयोगी थै रहेवुंजो, आवश्यक धर्म कर्मने

करवां, अंतरमां चित्त देवुं. योग० ॥ ७ ॥ मैत्री प्रमोद मध्यस्थ करुणा, भावना भावीए चारजी, साधनथी साधंतां साध्यज, नासे मोहविकार. योग० ॥ ८ ॥ अध्यात्मयोगथी आतम शुद्धि, क्षणमां थावे मुक्तिजी, बुद्धिसागर आतम आनंद, प्रगटे अनुभव युक्ति. योग० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं० अध्यात्म योग पूजार्थं जलं० य० स्वाहा ॥

द्वितीया भावनायोगपूजा ॥

आतम स्वरूप विचारणा, वारंवार जे थाय; मन समाधि सहित ते, भावना योग भणाय० ॥ १ ॥ आतमना उपयोगनो, पुनः पुनः अभ्यास; भावना योगे संपजे, आतम शुद्ध प्रकाश० ॥ २ ॥

दशमे देशावगासीएरे. ए राग.

धन्य प्रभु महावीरनेरे, साध्यो पूरण योग; आतम परमातम कर्योरे, पाम्या अनंत सुख भोग हो.

घटमां, महावीर प्रभुने लावीएरे, भावना योगने जावीएरे; कर्म रिपुने हरावीएरे, प्रगटे परमानन्द० ॥१॥ पहेली श्रुतनी भावनारे, सुणीए धर्म सिद्धांत; वांचीए श्रुत शास्त्रो भलारे, गुरुगमथी निर्भ्रान्त हो. घटमां, भावना० ॥ २ ॥ आतम जड बे तत्त्वनोरे, निश्चय करीए सत्य. आतम ज्ञानथी आतमनांरे, करीए धर्मनां कृत्य हो. घटमां, भावना० ॥ ३ ॥ श्रुतज्ञाने संशय टळेरे, आतम अनुभव थाय; आतम ते परमातमारे, निश्चय दिल प्रगटाय हो. घटमां० ॥ ४ ॥ बीजी तपनी भावनारे, भावीए थै निष्काम; सर्वेच्छाओ रोधवीरे, तप ते आतमराम हो. घटमां० ॥ ५ ॥ सर्व विषयनी कामनारे, टाळे ते तप बेश; सर्वशुभाशुभ वृत्तियोरे, तेना शमता क्लेश हो. घटमां० ॥ ६ ॥ त्रीजी सत्वनी भावनारे, आतम शक्ति अनंत; आतम सत्त्वे मोहनोरे, आवे क्षणमां अंत हो. घटमां० ॥७॥ परिषह संकट वेठतारे, रहेवुं आतममां स्थिर; सुख दुःखमां चळवुं नहींरे, मेरु पेठे

थवुं धीर हो. घटमां० ॥८॥ आतमना उपयोगथीरे, अप्रतिबद्ध विहार; निःसंग वनवास निर्ममेरे, ध्यान समाधिधार हो. घटमां० ॥ ९ ॥ इन्द्रादिक सुख भ्रांति छेरे, आतम सुखनी पास; आत्म स्वतंत्रता धारवीरे, कर्म हणीने खास हो. घटमां० ॥१०॥ चोथी एकत्व छे भावनारे, भावीए धरी उल्लास; जड जगमां नहीं जीवनुंरे, कोइ पोतानुं खास हो. घटमां० ॥११॥ पांचमी तत्त्वनी भावनारे, जीवादिक नव तत्त्व; षड् द्रव्योने विचारतांरे, प्रगटे निज एकत्व हो. घटमां० ॥ १२ ॥ आतम तत्वने जाणतांरे, जाण्या सर्व पदार्थ; बुद्धिसागर भावनारे, भावे शिव परमार्थ हो. घटमां० ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० भावना योग पूजार्थं जलं० य० स्वाहा ॥

---

(३) तृतीया ध्यान पूजा ॥

ज्ञान प्रमाणे ध्यान छे, गुरुगमथी छे ध्यान,

संयम स्थिरता संपजे, ध्यानथी केवल ज्ञान. ॥ १ ॥ ध्याननो भेद समाधि छे, मति श्रुतज्ञाने ध्यान; साकारी उपयोगथी, अंतर्मुहूर्त प्रमाण. ॥ २ ॥ आतम आदि तत्त्वमां, उपयोगे एकतान; अंतर्मुहूर्त ध्यान छे, ध्यान प्रवाह बहु मान. ॥ ३ ॥ आर्तरौद्र बे परिहरी, धर्म शुक्ल बे ध्यान; ध्याइए उपयोगथी, जीव बने भगवान् ॥ ४ ॥

हे सुखकारी आ संसारथकी जो मुजने उद्धरे.

ए राग.

महावीर प्रभु तुज ध्याने लय लागी बीजुं नहीं गमे; त्हें ध्यान धर्युं बार वर्ष लगी तेमां मुज आतम रमे, त्हें ध्याने केवल प्रगटाव्युं; मुज मनमां ध्यान ते शुभ भाव्युं, ध्याने प्रगटे सुख समजायुं. महावीर. ॥ १ ॥ वायु वण दीप शिखापेरे, आतम ध्याने आनंद ल्हेरे; रहेवुं शुद्धातम निज घ्हेरे. म-

हावीर. ॥ २ ॥ मेरुपरे स्थिर ध्याने थावुं, अंतरमां साक्षी थै जावुं; ध्याने आतम पोते ध्यावुं. महावीर. ॥ ३ ॥ पिंडस्थ पदस्थ बे ध्याइजे, रूपस्थने दिलमां पाइजे; रूपातीतथी शिव पाइजे. महावीर. ॥ ४ ॥ आतम ध्याने लगनी लागे; ऋद्धि सिद्धि लब्धि जागे, घातीकर्मो वेगे भागे. महावीर. ॥ ५ ॥ शुद्धातम उपयोगे रहीए, आनंन्दोल्लासे गहगहीए; जीवंतां मुक्ति सुख लहीए. महावीर. ॥ ६ ॥ खेद उद्वेग भ्रमने परिहरीए, उत्थानने क्षेपने झट हरीए; आसंग त्यजी ध्यान ज धरीए. महावीर. ॥७॥ अन्यत्र प्रेमने नहीं करीए, रोगोदयमां स्थिरता धरीए; संकल्प विकल्पने परिहरीए. महावीर. ॥ ८ ॥ शुक्लध्याननी भावना भावीए, आतम लाली प्रगटावीए, आतम गुणपर्याय ध्यावीए. महावीर. ॥९॥ मनवचतनुनी स्थिरता करीए, कदि मोहना मार्या नहीं मरीए; आतम महावीरदशा वरीए. महावीर. ॥ १० ॥ ध्याने ज्ञानादिक गुण सिद्धि, क्षायिक नव

प्रगटे घट लब्धि; बुद्धिसागर आनंद ऋद्धि. महा-
वीर. ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ध्यानयोग पूजार्थं. जलं०
य० स्वाहा.

चतुर्थी समता योगपूजा.

समताथी शिव संपजे, आठ कर्म दूर जाय;
समता प्रगट्या वण कदि, कोइ न मुक्ति पाय. ॥१॥
सर्व योगशिरोमणि, समतायोग महान्, राग रोष
वे विषमता, त्यजे स्वयं भगवान् ॥ २ ॥ सर्वधर्म
दर्शनविषे, समभावे छे मुक्ति; समता दिलमां धा-
रीए, सर्वयोग वरू रीति ॥ ३ ॥

वगडानो वाशीरे मोरशिद मारियो. ए राग.

प्रभु महावीर समतागुणना दरियारे, रागने
रोष विषमता परिहरी; समता गुणथी भरिया जीवो
तरियारे, ममताने त्यागेरे समता छे खरी. समताने
धारेरे शिवसुख थाय छे, ममता ने अहंता दूरे जाय

छे; आतम ते परमातमपद पाय छे, आतम एक आपोआप सुहाय छे. ॥ १ ॥ जडविषयोमां शुभ-अशुभ नहीं वृत्तिरे, सुख दुःखमां हर्ष न शोक जरा रहे, लाभालाभमां मरण जीवनमां समतारे, आतमना उपयोगे साक्षीपणुं वहे. समताने० ॥२॥ शुभाशुभपणुं जगमां नहीं कल्पातुंरे, आतम जरू निज निज भावे जणाय छे, जडमां सुख दुःख विषमपणानो भ्रांतिरे, थाती नहीं आतम निःसंग थाय छे. समताने० ॥३॥ कमठ अने धरणेंद्र उपर समभावीरे, धन्य धन्यरे पार्श्वप्रभो!! त्हारी दशा; चंडकोशिया संगम इन्द्रनी उपरेरे, समताना योगीरे महावीर दिल वस्या. समता० ॥ ४ ॥ समताभावे स्कंधक सूरिना शिष्योरे, रहियारे क्षणमां मुक्तिपद वर्या; अच्चंकारी भट्टा अन्निकापुत्रेरे, सद्गतिने साधोरे भवसागर तर्या. समताने० ॥ ५ ॥ दमदंतने नमि राजर्षि शिव पाम्यारे, मेतारज समताए मुक्ति लह्या; गज सुकुमाले समता घटमां धारीरे, एम अनेक समताए शिवपद वह्या. समताने० ॥ ६ ॥ नामरूप शास्त्रा-

दिक वासना टाळीरे, लोकादिक संज्ञारे टाळेरे सम॰
पणुं; पंचेन्द्रिय विषयोनी कामना टळतांरे, मनमांरे
प्रगटे नहीं विषमीपणुं. समताने० ॥ ७ ॥ समताए
आतमनुं सुख अनंतुंरे, तेनीरे आगळ जडसुख नहीं
कश्युं; अहंपणुं ममता टाळंतां ज्ञानेरे, ज्ञानीना दि-
लमां अनुभव सुख वस्युं. समताने० ॥ ८ ॥ जरूचे-
तनमां समभावी उपयोगीरे, एवोरे आतम हुं साक्षी
रह्यो; कर्मविपाकमां मुंझुं नहीं समभावेरे, उपयोगे
एवो निश्चय में लह्यो. समताने० ॥ ९ ॥ प्रभु महा-
वीर !!! हुं तुज समता अनुसरतोरे, शुद्धातम महावीर
पदने पामशुं; आतमज्ञाने शिवपुर दीवुं मीवुंरे, पा-
मीशुं योगथकी त्यां ठामशुं. समताने० ॥ १० ॥
समतायोगने उपयोगे दिल धरीएरे, वरीएरे मुक्ति
दशा जीव्यावते. बुद्धिसागर समतासंगी रंगीरे,
मुक्तिरे सर्व धर्म समताछते. समताने० ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीँ श्री परम॰ समतायोग पूजार्थं जलं०
य० स्वाहा ॥

पंचमी वृत्तिसंक्षययोग पूजा.

मोहादिनी चित्तमां, प्रगटी वृत्ति निरोध; चित्तनी वृद्धि निरोधथी, प्रगटे केवल बोध. ॥ १ ॥ सर्व संकल्प विकल्प जे, मोहनी वृत्ति गणाय; तेना पूरण नाशथी, नवलब्धि प्रगटाय. ॥ २ ॥ तिरोभाव निज ऋद्धिनो, आविर्भाव जे थाय; पूर्णयोग ते जाणवो, साध्य स्वरूप सुहाय. ॥३॥ ज्ञान ध्यान समताथकी, मोहनी वृत्ति विनाश; ज्ञानावरणादिक टळे, निज गुणे शोभे खास. ॥ ४ ॥

चउमासी पारणुं आवे. ॥

धन्य महावीर प्रभु जयकारी, पूजुं ध्यावुं शिव सुखकारी; चित्तवृत्ति हणी जयकारी, वृत्ति संक्षय योगना धारीरे; महावीर प्रभु जयकारी. मोहवृत्ति हणो नरनारीरे. महावीर. ॥१॥ सर्व अशुभ वृत्तिना त्यागे, देवगुरु धर्म उपरे रागे; शुभवृत्ति व्यापार ना लागे, योग प्रथमदशामां ए जागेरे. महावीर.

॥२॥ धर्मार्थे शुन्न परिणामे, काया वाणी धर्मनां ज्ञामे; प्रशस्यकषायना ठामे, शुभ दर्शन चारित्र ठामेरे. महावीर. ॥ ३ ॥ सेवाभक्ति शुभ प्रवृत्ति, शुभ योगे आतम व्यक्ति; सात्विक परिणामनी शक्ति, शुन्नयोगमां शुभ आसक्तिरे. महावीर. ॥ ४ ॥ शुन्न वृत्ति टळे शुद्धन्नावे, शुद्ध उपयोग ध्यान प्रन्नावे; सावि कल्पता दूरे जावे, मनोवृत्ति व्यापार न थावेरे. महावीर. ॥ ५ ॥ टळे सर्व कषायो ज्यारे, प्रगटे केवल ज्ञान त्यारे; मनोवृत्ति रहे न लगारे, घाती कर्मो रहे नहीं चारेरे. महावीर. ॥ ६ ॥ शुभाशुन्न चित्तवृत्ति विनाशे, शुद्ध उपयोग वीर्योल्लासे; श्रुत उपयोगना अभ्यासे, शुद्ध आतम ज्ञान विकासेरे. महा. ॥ ७ ॥ सयोगी गुणस्थान सुहावे, पछे अयोगी थै शिव जावे; साधन योग अभाव ज थावे, सिद्ध बुद्ध परम प्रभु थावेरे. महावीर. ॥ ८ ॥ एक एकज योगे अनंता, जीवो मुक्ति पदने वरंता; आतम शुद्धिमां सर्वे मळंता, जाणे सापेक्षज्ञाने संतारे. महावीर. ॥ ९ ॥

क्षयोपशमे उपशम जावे, जाव क्षायिके चेतन आवे; शुद्ध परिणामे प्रणमे स्वभावे, निवृत्तिपणुं झट थावेरे. महावीर. ॥ १० ॥ पंच समिति त्रिगुप्ति पाळी, मन मोहनी वृत्तियो टाळो, देजो आतममां मन वाळी,; बुद्धिसागर आनंदलालीरे. महावीर. ॥११॥

कलश.

गायोरे गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो. ॥ पंच प्रकारी योगनी पूजा, रचोने प्रभु गुण गायो; योगनी पूजा ते प्रभु भक्ति, करतां आनंद पायोरे. महावीर० ॥१॥ दर्शन ज्ञानने चारित्र योगमां, सर्वे योग समाया; पांच योग पंच समिति त्रिगुप्ति, असंख्य योग कथायारे. महावीर० ॥ २ ॥ चउदगुण स्थान अष्टांग योग ज, आतममांही समाया; शुद्धातम उपयोगमां सर्वे, अंतर्भावने पायारे. महावीर० ॥३॥ आतममांही भेदाभेदे, सर्वे योग समाता; पातंजल आदि योग भेदो, पंचथी न्यारा न थातारे. महा-

वीर० ॥ ४ ॥ गुरुगमथी योग साधता जाण्यो, अनंत शक्ति सुहाता; चिदानंद अनुभवने पाता, सिद्ध बुद्ध थै जातारे. महावीर० ॥ ५ ॥ प्रभु महावीर पट्ट परंपरा, श्वेतांबर साम्राज्ये; तपगच्छ जगगुरु हीरविजय सूरि, सूर्यनी पेठे छाजेरे. महावीर० ॥ ६ ॥ तसपट्ट सागरपट्ट परंपरा, नेमिसागर गुरुराया; तस शिष्य रविसागर गुरु रविसम, भारत सुजश छवायारे. महा वीर० ॥७॥ तस शिष्य सुखसागर स[illegible]त, मुनि गणमांहि सवाया; तस शिष्य बुद्धिसागरसूरिए, योगथकी प्रभु ध्यायारे. महावीर० ॥ ८ ॥ संवत् ओगणिश अठ्योत्तरना—आश्विनमां जयकारी; वदि पांचम बुधवार सवारे, पूजा रची सुखकारीरे. महा- वीर० ॥ ९ ॥ जाणशे गुणशेने सांभळशे, भावथकी आचरशे; नरनारी ते शिवपद वरशे, भवपाथोधि तरशेरे. महावीर० ॥ ० ॥ मेसाणा संघ भक्तिथी कीधुं, चोमासुं सुखकारी; बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धि, कीर्ति लहो नरनारीरे. महावीर० ॥ ११ ॥

पंचपरमेष्ठी पूजा.

प्रणमुं प्रभु महावीर जिन, चोवीसमा अरिहंत; वर्तमान शासनपति, परमेश्वर शिवकंत. ॥१॥ परमेष्ठी पूजा रचुं, द्रव्यने भावथी वेश; भणतां सुणतां आचरे, नासे सर्वे क्लेश. ॥ २ ॥ अर्हन् सिद्धने सूरिजी, वाचक मुनि जयकार; परमेष्ठी मंगलकरा, सुख शांति दातार. ॥ ३ ॥

प्रथम अरिहंत पद पूजा.

चउ निक्षेपे ध्यावतां, स्तवतां पूजतां सार; अरिहंत प्रभु वंदतां, कर्म टळे निर्धार. ॥१॥ अरिहंत छे आतमा, गुण पर्याये शुद्ध; प्रभु भजतां निज आतमा, थावे प्रभु जिन बुद्ध. ॥ २ ॥ दोष अढार रहित विभु, अरिहंत जिनराज; पूजंतां प्रगटे प्रभु, त्रण भुवन शिरताज. ॥ ३ ॥

राग वेलावल. मेरु शिखर न्हवरावे हो जिन-
पति. ए राग.

अरिहंत जिनपति भजीए हो भावे, अरिहंत जिनपति भजीए ॥ द्रव्यने भावथी वीशस्थानक पद, हर्षोल्लासे आराधे; अनंतपुण्यमयी जिननामने, बांधी प्रभुपद साधे हो. अरिहंत जिनपति भजीए भावे० ॥ १ ॥ समवसरणमां भाव अरिहंत, भवि-जनने उपदेशे; त्रण्यकाल जिनवर पूजंतां; मनकुं न रहे भवक्लेशे हो. अरिहंत० ॥ २ ॥ द्रव्य गुण पर्याय अरिहंत, आतम आप स्वरूपी; बुद्धिसागर प्रेम प्रतीते; चिदानंदफलरूपी हो. अरिहंत० ॥ ३ ॥

ॐ० प० अर्हत्पद पूजार्थं ज० य० स्वाहा.

द्वितीया सिद्ध पूजा.

षउ निक्षेपे सिद्ध पद, सेवंतां नर नार; अष्ट कर्म क्षय झट करी, सिद्ध बने निर्धार. ॥ १ ॥ शु-द्ध बुद्ध परमातमा, सिद्ध प्रभु भगवंत; परब्रह्म पर-

मेश्वरा, पूजंता भविसंत. ॥ २ ॥ आतम गुण पर्या-
यनी, पूर्ण शुद्धि जे थाय; ते निज पर्यव सिद्धता,
आतममांहि समाय. ॥ ३ ॥

प्रभु दर्शन मोहनगारा. ए राग.

प्रभु परमातम रढ लागी, प्रभु सिद्धनी प्रीत-
डी जागीरे. प्रभु ॥ आठे कर्म रहित शुद्ध आतम,
आठगुणे वडभागी; गुण एकत्रिंश अनंत गुणीजे,
थयो प्रभुपद रागीरे. प्रभु. ॥ १ ॥ चउनिक्षेपे सात-
नये सिद्ध, जाणंतां लय लागी; आतम ते सिद्ध
बुद्ध प्रभु छे, सत्ताए सौभागीरे. प्रभु. ॥ २ ॥ आतम
पूरण शुद्धि सिद्ध ते, पूजंतां वैरागी; बुद्धिसागर नि-
र्भय देशी, निर्मोही महात्यागीरे. प्रभु. ॥ ३ ॥

ॐ प० सिद्धपद पूजार्थं ज० य. स्वाहा.

तृतीया आचार्य पद पूजा.

छत्रीशी छत्रीशी गुणरूपे, गुणी जे ज्ञानी महंत; पंचाचारने पाळता, पूजु सूरि संत. ॥ १ ॥ द्रव्यादिक अनुसारथी, श्री सूरि गुणवंत; भावथी आतम सूरि छे, पूजो प्रणमो संत. ॥ २ ॥ नय निक्षेपथी सूरिपद, निजपरने हितकार; निश्चयने व्यवहारथी, पूजो नरने नार. ॥ ३ ॥

राग देशाख.

जगत्‌मां सूरीश्वर जयकारी. जिन शासननो शोभाकारी, प्रभु पेठे उपकारी. जगत्. ॥१॥ छत्रीशी छत्रीशी गुणगण शोभित, पंचाचारी विहारी; कलिकाले प्रभुपाटे प्रभुसम, संघ सकल आधारी. ज. ॥ २ ॥ जैनधर्म वर्तावे जगमां, निश्चयी जे व्यवहारी; शुद्धातम गुणध्यान समाधि, राता आनंदकारी. ज. ॥ ३ ॥ आतमज्ञानी जे मस्तानो, आतम

आनंद धारी; बुद्धिसागर सद्गुरु सूरि, पूजंतां भवपारी. जगत्. ॥ ४ ॥

ॐ० सूरिपद पूजार्थं ज० य. स्वाहा.

चतुर्थी उपाध्याय पद पूजा.

पच्चीश गुणथी शोभता, वाचक धर्माधार; भणे भणावे साधुने, सम्यक् श्रुत दातार. ॥ १ ॥ अनेक गुणथी शोभता, साधे धर्माचार; संयममां वर्ते सदा, साधु धर्म धरे सार. ॥ २ ॥ श्रुतने चारित्र धर्मथी, आतम धर्म प्रकाश;–करता वाचक पूजतां, थावे कर्म विनाश. ॥ ३ ॥

सोवे सोवे सारी रेंन गुमाइ. ए राग. पीलु. ॥

वाचकपद आतम गुण धारी, ज्ञानने दर्शन च- रण विहारी. वा० ॥ आतम शुभ परिणति जयकारी,

वाचक पूजानी बलिहारी. वाचक० ॥ १ ॥ ज्ञानानुभवसुखनो क्यारी, पंच महाव्रत पंचाचारी. वा० मुनिगण पाठक जगहितकारी, श्रुतरसिया संयम गुणधारी. वाचक० ॥ २ ॥ पूजी वंदी वाचक पदने, आनंद पामो नरनेनारी; बुद्धिसागर गुरु अवतारी, वाचक जगमां छे सुखकारी. वा० ॥ ३ ॥

ॐ० वाचक पद पूजार्थं ज० य० स्वा०

॥ पंचमी साधुपद पूजा ॥

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्रनी पदवी न इच्छुं लेश; क्षण पण साधु संगति, इच्छुं रहे न क्लेश० ॥ १ ॥ पूजुं मुनिपद प्रेमथी, इच्छुं मुनिवर संग; क्षण पण साधु संगतें, प्रगटे ज्ञान तरंग ॥ २ ॥ संतथी प्रभु परखाय छे, विणसे मोहविलास; प्रभुदर्शन प्रभु प्राप्तिमां, साधु दलाल ज खास ॥ ३ ॥

राग वसंत.

तुंतो पाठक पद मन धर हो. रंगीले जिउरा ए राग.

जीव मुनिवर संगत कररे, प्रभु रसिया प्यारा; जड चेतनमां जे समभावी, गुणोना गुण दिलमां धररे. प्रभु० ॥१॥ श्रुतज्ञानी निजपर उपकारी, खेद द्वेष नहि जरी मररे. प्रभु० संतनां दर्शन ते प्रभु दर्शन, जेने नहीं धन नारी घररे. प्रभु० संतहृदय मांहि प्रभुजी छे परगट, संत वचनामृत पान कररे. प्रभु० ॥ २ ॥ आधि व्याधि सर्व उपाधि, नासे मन न रहे चंचळरे. प्रभु० श्रद्धाप्रीतिथी स्वार्पण करी सहु, तुंतो साधुनी सेवा कररे. प्रभु० ॥ ३ ॥ शांति पमाडे संत ते साधु, बहु विनय करी मन धररे. प्रभु० साधु कृपाथकी प्रभु परगट दिल, मोहजाने न पाछो फररे. प्रभु० ॥ ४ ॥ आतम गुण पर्यायनी शुद्धि, पंचपरमेष्ठी पद स्मररे. प्रभु० बुद्धिसागर पूर्णानन्दी, उपयोगे घटमां विचररे. प्रभु० ॥ ५ ॥

कलश.

गाइ गाइरे पंच परमेष्ठी पूजा गाइ, ओगणिश अव्योत्तर अक्षयत्रीज, चढते प्रहरे रचाइ; शांति तुष्टि पुष्टि सिद्धि,—देनारी सुखदाइरे. पंच. ॥ १ ॥ प्रभु महावीर पट्ट परपंरा, तप गच्छ जग सुखदायी; जगगुरु हीरविजय सूरिराजा, सहुगच्छमांही सवाइरे. पंच० ॥ २ ॥ सागर शाखा पट्ट परपंरा, रविसागर गुरुराजा; सर्व मुनि गणना शिरताजा, मुनि गुणगणनी माझारे. पंच. ॥ ३ ॥ रविसागर शिष्यगुरु सुखसागर, शांत दांत सुखदायी; गुरुकृपाने आशीर्वादे, आतम स्थिरता पाइरे. पंच. ॥ ४ ॥ पंच परमेष्ठी पूजा रची शुभ, आनंद मंगलदायी; बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धि, कीर्ति जयगुण छायोरे. पंच ॥५॥

ॐ० मुनिपद पूजार्थं० ज० य. स्वाहा.

अथ श्री महावीर जन्म कल्याणक जयंती महोत्सव पूजा.

॥ दुहा ॥

परमेश्वर परमातमा, महावीर जिनराज; वीतराग अरिहंतजो, सर्वदेव शिरताज ॥ १ ॥ चोवीशमा तीर्थंकरा, सर्वविश्व आधार; केवलज्ञाने बोधीने, तार्यां नरने नार. ॥ २ ॥ भारत आदि देशनो, कीधो धर्मोद्धार; वर्तमान शासन प्रभु, तीर्थंकर अवतार. ॥ ३ ॥ जेना कल्याणक दिने, नरक विषे उद्योत; शातापामे विश्वजीव, अनंत निर्मल ज्योत. ॥ ४ ॥ कल्याणक पांचे भलां, च्यवन जन्म कल्याण; प्रभु महावीर देवनां, गातां आनंद ल्हाण. ॥ ५ ॥ जन्मोत्सवने उजवे, जन्मादिक नहि थाय; प्रभुभक्तिथी भक्तनां,-दुःखो दूरे जाय. ॥ ६ ॥ द्रव्य भाव भक्तिथकी, आतम शुद्धि थाय; च्यवन जन्मने गावतां, पुण्योदय प्रगटाय. ॥ ७ ॥ प्रभु जन्म कल्याणनो, पूजा विविध प्रकार; गातां स्तवतां

भक्त जन, सुख शांति लहे सार. ॥ ८ ॥ ते कारण पूजा रचुं, आनंद मंगल काज; घर घर पूजा गावतां, स्तवतां सुख साम्राज्य. ॥ ९ ॥ शुभ कार्यो करतां थकां, समकिती नरनार; वर्धमानपूजाबले, शांति लहे नरनार. ॥ १० ॥ प्रभु महावीर देवना, जन्म गुणो गानार; शांति तुष्टि पुष्टिने, जय लक्ष्मी वरनार. ॥ ११ ॥ महावीर जन्मजयंती दिन, उत्सव जे करनार; पूजा जेह भणावशे, सुख लहेशे जयकार. ॥ १२ ॥ अनंत गुण उपकारीजे, विश्वोद्धारक देव; जन्म जयंती महोत्सवे, रसिया पामे सेव. ॥ १३ ॥

॥ प्रथमभवे समकितप्राप्ति पूजा ॥

पुखलवइ विजये जयोरे. ए राग.

पश्चिम महाविदेहमांरे, ग्रामपति नयसार; गुणरागी विनयी भलोरे, ग्रामतणो आधाररे. चे-

तन ! समकित छे जयकार, जेथी लहो भव पाररे. चेतन. स० ॥ १ ॥ एक दिवस वनमां गयोरे, काष्ठादिकने काज; भूल्या पड्या एक साधुनेरे, दीधी प्रेमे साजरे. चेतन० ॥ २ ॥ साधुनी सेवा करीरे, वहोराव्यो आहार; राच्यो माच्यो हर्षियोरे, धन्य गण्यो अवताररे. चेतन. स० ॥ ३ ॥ योग्य जाणीने साधुएरे, दीधो धर्मोपदेश; देवगुरुने धर्मनीरे, श्रद्धा प्रगटी बेशरे. चेतन. ॥ ४ ॥ त्रण्य करण करी फरशियुंरे, समकित मोक्षनुं द्वार; समकित पामे भव तणीरे, गणतरी छे निर्धाररे. चेतन. ॥ ५ ॥ नयसारे बहुभावथीरे, मुनिना वंद्या पाय; संतनी सेवा चाकरीरे, निष्फल क्यारे न जायरे. चेतन० ॥ ६ ॥ मिथ्यादृष्टि टळया पछीरे, देवगुरुपर प्रेम; धर्म प्रेम वाधे घणोरे, प्रगटे योगने क्षेमरे. चेतन. ॥७॥ समकितवंता जीवड़ारे, कर्मोदये करे काज; अंतरथी न्यारा रहेरे, इच्छे शिवपुर राजरे. चेतन. ॥८॥ अंतर्मुहूर्त लगी रहेरे, उपशम समकित बेश; पण

ते नियमा भव करेरे, टाळे कर्मना क्लेशरे. चेतन. ॥ ९ ॥ क्षयोपशम समकित भलुंरे, प्रगटे वार असंख्य; क्षायिक एकज वारथीरे, आतम करे निःशंकरे. चेतन. ॥ १० ॥ यदा समकित प्रगटे तदारे, देव गुरुपर राग; धर्मराग श्रद्धा घणोरे, मिथ्याचारनो त्यागरे. चेतन. ॥ ११ ॥ साधु संतना योगथीरे, भद्रक गुणी नयसार; समकित पाम्यो अंशथीरे, बन्यो प्रभु अवताररे. चेतन. ॥१२॥ तीर्थंकर महावीरनोरे, आतम चढ्यो गुण थान; ऋषभदेव पौत्रज थयोरे, पाम्यो बहुश्रुत ज्ञानरे. चेतन. ॥ १३ ॥ मरिचि नामे मुनि थयोरे, बीजा लह्या अवतार; एकवार समकित लहेरे, पडे त्होंये चढे साररे. चेतन. ॥ १४ ॥ समकित चारित्र करणीएरे, भवनो निश्चय अंत; बुद्धिसागर वीरनारे, गुणग्रहो मतिमंतरे. चेतन. ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमते महावीर जिनेन्द्राय,

जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीया तीर्थंकर नाम कर्मबंधक पूजा.

धन्य धन्य महावीरनो, पच्चीशमो अवतार; भरत छत्रिका नगरीमां, जन्म्या जग हितकार. ॥ १ ॥ जितशत्रु राजातणो, भद्रा राणी कूख; नन्दन नन्दन नामथी, जन्म्या जस बहु सुख. ॥ २ ॥ पोट्टिलसूरि उपदेशथी, ग्रह्युं चारित्र उदार; समकितने चारित्रथी, निश्चय मुक्ति थनार. ॥ ३ ॥ समकितने पाम्या पछी, समकित जो टळी जाय; तोपण पाछुं ते लही, चारित्री शिव पाय. ॥ ४ ॥ सर्वनयोनुं सार छे, द्रव्य भाव चारित्र; चारित्री निश्चय करे, सर्वकर्मने रिक्त. ॥ ५ ॥

सांभळजो सखियां हमारी ए चाल.

नमुं नंदन मुनि जयकारो, धन्य मुनिवरनी बलिहारी ॥ करे मास खमण तप भारी, बीस स्थानक सेवना सारी; थया उत्कृष्टा अनगारीरे, भावे भावना शुद्ध विचारी; दउ विश्वजीवो उद्धारी. नमुं. ॥ १ ॥ करुं शासन रसो नरनारी, दुःख दृष्टि टळे दुःखकारी; सर्वजीवविषे उजियारी, करुं भावना एवी सारीरे; प्रगटी शुभ परिणति क्यारी, बांध्युं तीर्थंकर पद भारो. नमुं. ॥ २ ॥ प्रत्याख्यानी कषाय विरामे, दुष्ट संज्वल परिणति वामे; धर्म ध्यानावलंबन ठामे, वधता उज्ज्वलपरिणामेरे; छट्ठा गुणस्थानकना धारी, धन्य धन्य मुनि अनगारी. नमुं. ॥ ३ ॥ रागद्वेषनी परिणति टाळे, समता सुखमांहि म्हाले; शुभ अशुभ बुद्धिने खाळे, निज आतममां मन वाळेरे; जेणे कंचन कामिनी टाळी, जडथी मूर्च्छा उतारी, नमुं. ॥ ४ ॥ क्षयोपशमी

चारित्र पाळे, प्रगटया दोषो झट टाळे; षडावश्यके गुण अजवाळे, करे मोहथी युद्धज भारेरे; नहीं दिलमां अरिनी यारी, उपयोगे रहे हितकारी. नमुं. ॥ ५ ॥ चार भावना दिलमां लावे, शुद्ध आतम रूपनेध्यावे; सहे उपसर्गो समभावे, एवा संत मळे शिव थावेरे; एवा सराग संयमधारी, धन्य नंदन मुनि सुखकारी. नमुं. ॥ ६ ॥ धन्य चारित्री गुणधारी, द्रव्य गुणपर्याय विचारी; बन्या द्रव्य क्रिया व्यवहारी, जे निश्चय उपयोग धारोरे; बुद्धिसागर मुनि महाराजा, सुरपति नरपति शिरताजा. नमुं. ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीं प० श्रीमते महावीर जिनेन्द्राय, जलं, चंदनं पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं च संयतगुणलाभाय य० स्वाहा ॥

तृतीया प्राणांत स्वर्गगमनदशावर्णन पूजा.

आयु क्षये नंदन मुनि, दशमा स्वर्ग मझार, उपज्या वीश सागर उपम, आयुथी जयकार. ॥१॥ मति श्रुत अवधिज्ञानना,–धारक सुर सुखकार; पूर्व भवोने जाणता, शुभ परिणामी उदार. ॥२॥ भोगवे मनथी भोगने, पण नहि भोगी जेह; सम्यग्दृष्टि देवने, वर्ते नहि संदेह. ॥ ३ ॥

सांभळशो मुनि संयम रागे–ए राग.

सांभळशो महावीर प्रभुनो, छवीशमो भव सारोरे; मतिश्रुत अवधिना उपयोगे, जातो सुर जन्मारोरे. सांभळशो० ॥ १ ॥ सराग संयम तप जप कर्मे, स्वर्ग गतिने पामेरे; सम्यग्दृष्टि, मुक्ति माटे, विचरे रहे विश्रामेरे. सांभळशो० ॥ २ ॥ वैक्रिय देही पुद्गल शक्ति,–धारक भक्तिधारीरे; धर्मीजीवोने सहाय करंता, कर्मयोगी उपकारीरे. सां० ॥३॥ शुक्ल

शुक्ल परिणामना धारी, कामी छतां जे अकामोरे; सम्यग्दृष्टियोगे सघलुं, जाणे न धारे खामीरे. सां० ॥४॥ पुण्य भोग भोगवता विचरे, मुक्ति सुख अभिलाषीरे; सघलुं आयुष्य पूरण करता, शुद्धातम विश्वासीरे. सां० ॥५॥ अनंत निर्जरे अल्पकर्मबंध, सम्यग्दृष्टि योगेरे; बाह्यथकी देवभवना सुखने, भोगवे उदयप्रयोगेरे. सां० ॥६॥ तीर्थंकर पद बांध्यु जाणे, भावी जन्मने जाणेरे; एक समये चवतां नहि जाणे, उपयोग मुहूर्त प्रमाणेरे. सां० ॥ ७ ॥ शिव मारग विसामो सुरभव, वीरप्रभुनो जाणोरे; बुद्धिसागर प्रभुगुणभक्ते, जन्म सफल थयो मानोरे. सां० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमते महावीर जिनेन्द्राय, भक्तिलाभार्थे ज० य० स्वाहा ॥

चतुर्थी च्यवन कल्याण पूजा.

भारत माहन कुंडमां, ब्राह्मण ऋषभदास; देवानंदा ब्राह्मणी, पतिव्रता जे खास. ॥ १ ॥ प्राणत स्वर्गथकी प्रभु, भोगवी सुरनुं आय; देवानंदा कुख विषे, प्रगट्या पुण्यपसाय. ॥ २ ॥ चौद स्वप्नने देखती, देवानंदा मात; ऋषभदासना बोधथी, जाणी थै रळियात. ॥ ३ ॥

मेतारज मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार. ए राग.

कर्मोदयथी देवानंदा, कुखमां चवी प्रभु आय; ब्यासी रात्री दिवस त्यां रहिया, कर्मथकी न छूटाय; त्रिज्ञानी प्रभुजी भोगवे कर्मना भोग. ॥ १ ॥ क्षत्रिय कुंड नगरीमांही, सिद्धारथ गुणी राय; त्रिशला राणी तेनी कुखमां, आव्या प्रभु सुखदाय. त्रि० ॥ २ ॥ त्रिशला माता चौद स्वप्नने, देखी हर्षित थाय; जोषीओ बोले तीर्थंकर,—प्रगटया छे

जगराय. त्रि० ॥ ३ ॥ राजा जोषीगण संतोषे, दाने अने सन्माने; त्रिशला माता प्रभुगुणभक्ते, आयु वहे ते न जाणे. त्रि० ॥ ४ ॥ गर्भे रहिया त्रिज्ञानी प्रभु, उपयोगे जिनराय; शाता वेदनी वेदे गर्भमां, गर्भकाल वीती जाय. त्रि० ॥ ५ ॥ नव मासने उपर साडा-, सात दिवस वही जाय; बुद्धिसागर प्रभु महावीर, गर्भ गुफामां सुहाय. त्रि० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ० प० महावीर च्यवन कल्याणक पूजार्थं ज० य० स्वाहा ॥

॥ पंचमी श्री महावीर जन्म कल्याणक पूजा ॥

त्रिशला माता विधिथी, गर्भवहे सुखकार; शांति तुष्टि पुष्टिथी, आरोग्य ज धरनार. ॥ १ ॥ चैत्री सुदि त्रयोदशी, मध्य रात्रीना योग; सर्व दिशा निर्मल छते, जन्म्या प्रभु गुण भोग. ॥ २ ॥ अजवाळुं नरके थयुं, चौद भुवन उद्योत; सर्व जीव शा-

ता थइ, जेनी निर्मल ज्योत. ॥ ३ ॥ छप्पन दिशि कुमरी तुरत, आवी प्रभुने पास; सूति कर्म जावे कर्युं, माता हर्ष उल्लास. ॥ ४ ॥

॥ मेरु शिखर न्हवरावे हो सुरपति० ॥ ए राग ॥

प्रभु जन्म्या ते काले हो सुरपति, सघळा मळी झट आवे; प्रभुनी माता पासे आवी, प्रभु प्रणमीने वधावे हो; सुरपति सघळा मळी तिहां आवे. ॥ १ ॥ प्रभु बिंब मूकी प्रभुपासे, प्रभुने मेरु लेइ जावे; आठ जातिना कलश भरीने, स्नात्र करी गुण गावे हो; सुरपति प्रेमे प्रभु न्हवरावे. ॥ २ ॥ चोसठ इन्द्रो प्रभु गुण गावे, हैडे हर्ष न मावे; त्रण्य जगत्ना नाथने ध्यावे, भक्ते उल्लसित थावे हो; सुरपति प्रेमे प्रभु न्हवरावे. ॥ ३ ॥ चार निकायना देव देवीओ, इन्द्रो असंख्य त्यां आवे; विधिए पूजी प्रभुने मातनी,–पासे मूकी जावे हो. सुरपति. ॥४॥ प्रातःकाले जन्मने जाणी, सिद्धारथ नृप जावे; प्रभु

जन्मोत्सव देश नगरने, घर घरमां विरचावे हो; प्रभुजी जन्म्या जग जयकारो. ॥ ५ ॥ शांति तुष्टि पुष्टि मंगल,-वायु भारत वायो; भारतमांही सोना सूरज, उग्यो प्रगट सुहायो हो. प्रभुजी. ॥ ६ ॥ भारतमां सुख शांति वर्तो, रोग उपद्रव शामो; प्रभु कल्याणक योगे जगत्मां, सर्व जीवो सुख पामो हो. प्रभुजी. ॥ ७ ॥ ओगणीश अड्योत्तर चैत्र सुदि, त्रयोदशी रविवारे; प्रभु महावीर जन्म महोत्सव, गायो हर्ष विचारे हो. प्रभुजी. ॥ ८ ॥ प्रभु महावीर गावो भावो, रत्नादिकथी वधावो, सकल संघमां आनंदमंगल, शांति पुष्टि थावो हो. प्रभुजी महावीर देव वधावो ॥ ९ ॥ जन्म कल्याणक पूजा गाइ, विजापूरमां सारी, बुद्धिसागर आनंद मंगल, पामो नरने नारी हो. प्रभुजी महावीर देव वधावो. ॥१०॥

ॐ० प० श्री महावीर जिनेश्वर जन्म कल्याणक पूजार्थं ज० य० स्वाहा. ॥

॥ प्रभु महावीर तीर्थंकर देवनी अष्ट प्रकारी पूजा ॥

परब्रह्म परमातमा, चोवीशमा जिनराज; विश्वपति जिनपति विभु, सारो वंछित काज. ॥ १ ॥ प्रणमुं महावीर जगपति, जिन शासन सुलतान; अष्ट प्रकारे द्रव्यथी, पूजुं तुज भगवान् ॥ २ ॥ मनवच कायाथी करुं, प्रभु तुज शरणुं वेश; अर्पायो तुजमां प्रभु, जाग्यो असंख्य प्रदेश. ॥ ३ ॥ जडथी प्रीति टाळोने, धारी तुजपर प्रीत; तुजपर श्रद्धा धारतां, रही न भीति अनीति. ॥ ४ ॥ परोक्ष मति श्रुत ज्ञानथी, परोक्ष तुं परखाय; केवलज्ञाने तुं प्रभु, प्रत्यक्ष घट पेखाय. ॥ ५ ॥ तुज आगमना अनुभवे, अनुभव्यो जिनदेव; द्रव्यभाव पूजा रची, करुं तुजरूपनो सेव. ॥ ६ ॥ अनंत गुण पर्यायनो, शुद्धि करवा काज; निज आतम तुज साथमां, योज्यो करो सनाथ. ॥ ७ ॥ तुज गुण

गातां ध्यावतां, स्तवतां सर्व प्रकार; निज आतमनी शुद्धता, पूज्यपणुं निर्धार. ॥ ८ ॥

प्रथमा जलपूजा.

श्रद्धा प्रीति जलवडे, पूजो महावीर देव; सम्यग् दृष्टि योगथी, नासे मिथ्या टेव. ॥ १ ॥ श्रद्धा प्रेमने सत्यनी–, जल पूजा सुखकार; सम्यग् दृष्टि भक्तने, नक्कि शिव देनार. ॥ २ ॥ द्रव्यभाव सम्यकत्वथी, तुज सेवक नरनार; निश्चय मुक्तिपद वरे, भमे नहीं संसार. ॥ ३ ॥

सब जन धरम धरम मुख बोले. ए राग.

प्रभु महावीर जगत् जयकारी, तीर्थंकर उपकारीरे. प्रभु ॥ तुजपर श्रद्धा प्रीति धारी, कीधुं शरण तुज भारी; ॐ अर्हं महावीर प्रभुजी, जापे लगनी धारीरे. महावीर० ॥ १ ॥ शुद्ध गुण पर्यायना योगे, निज उपयोगे सुधारी; प्रभु तुज साथे मळि·

यो हळियो, लेजो झट उद्धारीरे. महावीर० ॥ २ ॥ तत्त्वमसि सोऽहं ने ओऽहं, एकता लीनता धारो; भूल्यो जडमाया तुज भाने, तुजपर जउ सहु वारीरे. महावीर० ॥ ३ ॥ प्रभु तुज रीझनी आगळ जगनो, खीज गणुं न लगारो; ज्यां देखुं त्यां तुंहि तुंहि तुंहि, प्रगटंतो धून भारीरे. महावीर० ॥ ४ ॥ लक्ष्मी सत्ताथी न पमातो, निराकार निर्धारो; श्रद्धा प्रीति उपयोगे प्रभु, मळतो तुं सुखकारीरे. महावीर० ॥ ५ ॥ श्रद्धा प्रीति जल पूजाथी, पूजुं जग हितकारी; ज्ञानानन्द जे अंशे प्रगटे, पूजाफल निर्धारीरे. महावीर० ॥ ६ ॥ जगनो माया मन पम्छाया, मुंकुं नहीं त्यां लगारी; बुद्धिसागर प्रभुमहावीर, लेजो हवेतो उगारीरे. महावीर० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं० श्री परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमते महावीर जिनेन्द्राय, जलं यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीया चंदन पूजा.

प्रभु महावीर गुण घणा, वैखरीथी न कथाय; परा पश्यंती भासता, अनंत तुज महिमाय. ॥ १ ॥ धर्म क्षमा चंदनथकी, पूजुं प्रभु तुज अंग; जाणंतां तुज धर्मने, लाग्यो अविहडरंग. ॥ २ ॥ एकवार तुज आगमे, जो प्रभु जाण्यो जाय; तो भवताप रहे नहीं, निश्चय ए निर्माय. ॥ ३ ॥

॥ प्रभु सुमतिरे सुमति आपो प्यारा, मुज प्राणतणा आधारा ॥ ए राग. ॥

प्रभु महावीररे तुज साथे रंग लाग्यो, म्हारो अंतर महावीर जाग्यो; प्रभु गुरुगमथी तुं जणायोरे, पूरा प्रेमथकी परखायोरे, धातोधातेरे मळियो आनंद पायो, रोमेरोमे प्रभु रंगायो. प्रभु. ॥ १ ॥ लागे नहि तुजवण कोइ प्यारुंरे, नहीं तुजवण कोइ जग म्हारुंरे; मोह मारेरे तुजथी मेळ सुहातो, भेद

जागे जाएयो जातो. प्रभु. ॥ २ ॥ गुण अनंत पर्याय दरियोरे, बीजा सात्विक गुणगण भरियोरे; उपदेशेरे तार्या जीव करोडो, जडे नहीं तुज जगमां जोडो. प्रभु. ॥ ३ ॥ प्रभु देह छतां साकारारे, देहातीत थतां निराकारारे; थया सिद्ध ज रे पूर्ण असंख्यप्रदेशी, अरिहंत अलख ब्रह्म देशी. प्रभु. ॥ ४ ॥ जे आतम नहि ते शुं ? मागुंरे, मेंतो मागणपणुं हवे त्याग्युंरे; प्रभु परखीरे निष्कामी थै जाग्यो, तुज लगनीए घट जाग्यो. प्रभु. ॥ ५ ॥ पूर्ण प्रभुथी पूर्ण रंगायोरे, पूर्ण आनंद घटमां छायोरे; बुद्धिसागररे पूर्णनी पूरण पूजा, उपयोगे महावीर पूज्या. प्रभु. ॥ ६ ॥

ॐ० प० महावीर जिनेन्द्राय, चंदनं. य. स्वाहा.

॥ तृतीया पुष्पपूजा. ॥

प्रभु महावीर भक्तिथी, मुक्ति लहे नरनार;
प्रभु गुण पुष्पनी मालथी, पूजो प्रभु जयकार. ॥१॥

जैनधर्म श्रद्धा धरो, सर्व संघनी सेव; प्रभु महावीर देवनी, पूजानो ए टेव. ॥ २ ॥ प्रभु महावीर उपदिश्यां, षड् द्रव्यो नव तत्त्व; सत्य गणीने वर्तवुं; ए प्रभु पूजा सत्त्व. ॥ ३ ॥

निशानी कहा बतावुंरे. ए राग.

प्रभु महावीर तुं प्यारोरे, सर्व विश्व आधार. प्रभु० ॥ १ ॥ तुज हृदयथी प्रगटियोरे, जैनधर्म छे सत्य; सकल संघनी सेवनारे, तुज पूजानुं कृत्य. प्रभु० ॥२॥ केवलज्ञानी तुं प्रभुरे, तुज वचनानुसार; वर्तवुं पुष्पनी पूजनारे, धरवा धर्माचार. प्रभु० ॥२॥ मुज मन मन्दिरमां वसोरे, क्षण पण थाओ न दूर; तुज विरहो न खमी शकुंरे, रहेशो हजराहजूर. प्रभु० ॥ ३ ॥ नय निक्षेप प्रमाणथीरे, जैनागम अनुसार; प्रभु तुज ध्यान समाधिथीरे, प्रगट्यो रस जयकार. प्रभु० ॥ ४ ॥ अनेकांत सत्तामयीरे, अनंत

गुण आधार; एक आधार प्रभु तुंहिरे, आनंदमय निर्धार. प्रभु० ॥ ५ ॥ सेवा आदि गुणमयीरे, सात्त्विक पुष्पनी माल; प्रभु महावीर कंठमांरे, स्थापंता कल्याण. प्रभु० ॥ ६ ॥ तुज स्वरूप थइ तुज भजुंरे, चढता भावोल्लास; बुद्धिसागर आतमारे, आनंद अनुभव खास. प्रभु० ॥ ७ ॥

ॐ प० महावीर जिनेन्द्राय पु० य० स्वाहा ॥

चतुर्थी धूप पूजा.

देव गुरुने धर्मनी, श्रद्धा समकित खास; गुरु पासे समकित ग्रही, टाळो मिथ्यावास. ॥ १ ॥ खेद भीति ने द्वेष वण, प्रभुने पूजे भक्त; देहादि जडसंगी पण, मन नहि जरू आसक्त. ॥ २ ॥ प्रभु नामना जापनो–धूप करी नरनार; प्रभुने पूजे प्रेमथी, कर्म टळे निर्धार. ॥ ३ ॥

एं गुण वीरतणो न विसारु, संभारु दिन रातरे.

एं राग.

ॐ अर्हं महावीर जिनेश्वर, जाप जपुं दिन रातरे; प्रभु वण बीजुं कांइ न इच्छुं, मात पिता तुं भ्रातरे. ॐ अर्हं० ॥ १ ॥ परापश्यंती मध्यमा वैखरी, जापे टळे सहु पापरे; राग द्वेष न पासे आवे, जाप जपंतां अमापरे. ॐ अर्हं० ॥ २ ॥ ज्यां त्यां अंतर बाहिर धारणा, त्राटक तुज उपयोगरे; जीभ न हाले मानस जापे, प्रगटे आनंद जोगरे. ॐ अर्हं० ॥ ३ ॥ जड चेतन सहु विश्वमां प्रभुनी,—सत्ता धारणायोगरे; आत्ममहावीरसत्ता प्रगटे, थातो कर्म वियोगरे. ॐ अर्हं० ॥ ४ ॥ प्रभु तुज जापना धूपथी नासे, दुर्बुद्धि दुर्गंधरे; क्षण क्षण आतम शुद्धि वृद्धि, आतम थाय अबंधरे. ॐ अर्हं० ॥ ५ ॥ प्रभु जापे प्रभु घटमां प्रकाश्या, प्रगटी सुखनी खुमारीरे; बुद्धिसागर महावीर लगनी, प्रगटी न उतरे उतारीरे. ॐ अर्हं० ॥६॥

ॐ० प० महावीर जिनेन्द्राय—धूपं यजामहे स्वाहा ॥

॥ पंचमी दीपक पूजा ॥

मतिश्रुत ज्ञानना दीपके, पूजा महावीर देव; करतां दुर्गुण दोष सहु, नासे छे ततखेव. ॥ १ ॥ मिथ्या तम दूरेटळे, दीपक पूजा योग; केवल ज्ञानने दर्शने, मुक्तिपुरी संयोग. ॥ २ ॥ तिरोभाव निज ऋद्धिनो, आविर्भाव जे थाय; आत्ममहावीर सिद्धता, देहछतां सोहाय. ॥ ३ ॥

आशा ओरनकी क्या कीजे. ए राग. आशाउरी. ॥

घटमां महावीर जिनवर भास्या, आपो आप प्रकाश्या. घटमां० चौदलोक आकारे मनुष्यनुं, तनु मन्दिर जयकारी; असंख्यप्रदेशी आत्ममहावीर, शोभंतुं सुखकारी. घटमां० ॥ १ ॥ गुरुगम ज्ञाननी कुंचीयोगे, समकित द्वार उघाडयुं; मतिश्रुत आंखे अनंत ज्योति, प्रभुनुं रूप निहाळ्युं. घटमां० ॥ २ ॥ अनहद नादनो घंट वगाडयो, ळळी ळळी नमो

प्रभु पाये; आनन्द प्रगटयो अतिशय न्हारी, त्रण्य भुवन न समाये. घटमां० ॥ ३ ॥ दिल फानस मन कोडीयामां, प्रीति घृत पूर्यु सारुं; सद्विचार दीवेट करी शुभ्र, ज्ञानाग्नि उजियारुं. घटमां० ॥ ४ ॥ धर्म बुद्धिनो दीपक एवो, झळहळतो प्रभु ज्योते; प्रभु महावीर पासे शोभे, क्षयोपशम उद्योते. घटमां० ॥ ५ ॥ क्षयोपशमना ज्ञान दीपकथी, महावीर जिनवर पूज्या; बुद्धिसागर गुरुकृपाए, सत्य प्रकाशे सूज्या. घटमां० ॥ ६ ॥

ॐ० प० महावीर जिनेन्द्राय—दीपं य० स्वाहा.

षष्ठी अक्षत पूजा.

अक्षत महावीर रूपनी, अनंत झळहळ ज्योत; अक्षतथी प्रभु पूजतां, त्रण्य भुवन उद्योत. ॥ १ ॥ दया दान दमशीलने, संतोषे महावीर; पूजंतां निज आतमा, शुद्ध बने महावीर. ॥ २ ॥ सात्विकने जे

सहज छे, जाणी गुणगण बेश; प्रभु महावीर पूजतां, रहे न मिथ्याक्लेश. ॥ ३ ॥

राग. आशावरी. ॥

महावीर अकलकला प्रभु म्हारी, सर्व विश्वना परमेश्वर छो. सकल जगत् उपकारी महावीर० ॥ पृथ्वी थाळी भानु शशी बे, आरती मंगल भारी; महा मेघनां वाजां वागे, विजळी महिमा भारी. महावीर० ॥ १ ॥ वेदो आगमो महिमा गावे, ऋषियो ध्याइ गयारी; व्याप्यने व्यापक सद्सद्रूपो, गुणपर्याय मयारी. महावीर० ॥ ॥ २ ॥ सद्गुणरूपके पंच महाव्रत, ज्ञाने शोभी रह्यारी; अनंत गुण गणना तमे दरिया, आविर्भावे रह्यारी. महावीर० ॥ ३ ॥ चारगति चूरक स्वस्तिकने, रत्नत्रयी पुंज धारी; सिद्ध शिला सिद्ध चिह्न करीने, पूजुं भाव वधारी० ॥ ४ ॥ नयनिक्षेपा भंग

विकल्पे, ध्यान दशा छे विचारी; बुद्धिसागर शुद्ध उपयोगे, महावीर जग जयकारी. महावीर० ॥ ५ ॥

सप्तमी नैवेद्यपूजा.

बाह्यांतर तुज रूपने, जाणे भक्त गणाय; तुज पर श्रद्धा धारतां, मुज मन निर्मल थाय. ॥१॥ चौद भुवनमां आथड्यो, पड्युं न क्यांये चेन; पण तुजमां मन धारतां, प्रगटो सुखनी घेन. ॥ २ ॥ वर्धमान महावीर तुं, एक खरो आधार; तुजपर स्वार्पण सहु कर्युं; तुज शरणुं सुखकार. ॥ ३ ॥

नाथ कैसे गजको बंध छुडायो. ए राग.

प्रभु तुज आनंदरस बलिहारी, तीर्थंकर अवतारी. प्रभु० अनंत भवमां ठाम न ठरियो, दुःख लह्यो बहु भारी; बाहिरजड रसथी रंगायो, तृप्ति थई न लगारी. प्रभु० ॥ १ ॥ परमातम तुज आनंद

रसियो, थातां प्रगटी खुमारी; कोटि प्रयत्नो कोइ करे पण, उतरे नहि ते उतारी. प्रभु तुज आनंद रस बलिहारी. ॥ २ ॥ तुज रस पामे विषयरस छूटे, मनडुं ठरे निर्धारी; सेवा भक्ति आतमज्ञाने, तुज रस मळतो भारी. प्रभु० ॥ ३ ॥ कोटि उपाय करे जन कोइ, सत्यानन्दने माटे; पण जड जगथी न आनंद पामे, आनंद छे तुज हाटे. प्रभु० ॥ ४ ॥ अमृत आस्वाद्या पछी विषना,–पाननो प्रेम न जागे; एकवार तुज रसने पामे, मन न रहे जडरागे. प्रभु० ॥ ५ ॥ क्षयोपशम आतम रस पामी, क्षायिक आनंद माटे; सहेजे तुजमां मन रंगायुं, माल छे शिरने साटे. प्रभु० ॥ ६ ॥ आनंदरस नैवेद्ये पूजुं, बाह्य नैवेद्यथी पूजुं; बुद्धिसागर महावीर पामी, बीजे क्यांये न मुंझुं. प्रभु० ॥ ७ ॥

ॐ० प० महावीर जिनेन्द्राय–नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

अष्टमी फलपूजा.

महावीरमां मन धरी, चालंतां व्यवहार; आसक्ति वण आतमा, प्रभुपद पामे सार. ॥ १ ॥ बाह्यांतर अतिशयी प्रभु, महावीर जिन परखाय; श्रद्धा प्रीति स्वार्पणे, मुक्ति अंते थाय. ॥२॥ प्रभु महावीर तुं धणी, सर्व विश्वनो देव; निष्कामे दिलमां धरी, करुं ताह्मरी सेव. ॥ ३ ॥

राग सारंग. प्रभु निर्मल दर्शन कीजीए. ए राग.

प्रभु वीर !!! थयो तुज रागियो, आतमज्ञाने जागियो. प्रभु० इन्द्रादिक पद सुख नहीं इच्छुं, तुज स्वरूपे लागियो; भव मुक्तिमां समवृत्ति थै, नहि त्यागी वैरागियो. प्रभु० ॥ १ ॥ जड जगमां त्याग ग्रहणनी वृत्ति, टळतां थयो सौभागियो; बुद्धिसागर प्रभु महावीर, परमानंद फल चाखियो. प्रभु० ॥२॥

विनतिपणे हुं विनवुं, घेर आवोने ढोला. ए राग.

क्षयोपशम उपशम फले, प्रभु पूज्या स्वभावे; निमित्त साधन साधना, साधुं प्रीतिभावे. क्षयोपशम० ॥ ३ ॥ प्रभु पूजन फल ज्ञानने, आनंद रस लीधुं; प्रभु रीझे जग खीजमां, लेश चित्त न दीधुं. क्षयोपशम० ॥ ४ ॥ बाकी क्षायिक भावथी, पूजन फल रहियुं; शुद्धातम तुज रंगमां, मुज मन गहगहियु. क्षयोपशम० ॥ ५ ॥ उत्पत्ति व्यय ध्रौव्यथी, सर्व द्रव्य प्रमाण्यां; सम्यग् दृष्टि योगथी, तुज वचनो जाण्यां. क्षयोपशम० ॥ ६ ॥ देव गुरुने धर्मनो, भक्ति-व्यवहारे; रहियो प्रभु तुज आणथी, उपयोग विचारे. क्षयोपशम० ॥ ७ ॥ सात्त्विक आदि मोहना, पडदामां रहेलो; बुद्धिसागर आतमा, देखी मळियो मेळो. क्षयोपशम० ॥ ८ ॥

कलश धन्याश्री.

कीधी कीधीरे प्रभु महावीर पूजा कीधी. आनंद मंगल लीला प्रगटी, भोगवी आतम ऋद्धिरे. प्रभु० ॥ १ ॥ द्रव्यने भावथी गृहीने पूजा, त्यागीने भावथी सिद्धि; प्रभु गातां ध्यातां स्तवतां सुख, अष्ट सिद्धिनी समृद्धिरे. प्रभु० ॥ २ ॥ ओगणिश अठयोत्तर वैशाखी, वदि चोथने सोमवारे; विद्यापुरमां पूजा रची शुभ, भवी जननां दुःखवारेरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ प्रभु महावीर पूजायोगे, जैन संघोन्नति थाशो; जैन धर्म आराधी भव्यो, परमानंदने पाशोरे. प्रभु० ॥ ४ ॥ प्रभु पूजा भणतां ने गातां, थाशो संघ समृद्धि; बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धि, कीर्ति जय शिव सिद्धिरे. प्रभु० ॥ ५ ॥

श्री घंटाकर्ण महावीर पूजन विधि.

श्री शांति स्नात्र अष्टोत्तरी स्नात्र तथा प्रतिष्ठा प्रसंगे पूर्वाचार्य मुनियोए घंटाकर्ण महावीर मंत्रयंत्रनी थाळी थापवानुं जणाव्युं छे अने ते प्रमाणे वर्तमानमां प्रवृत्ति थाय छे. तथा देवप्रतिष्ठा शांति स्नात्र काले घंटाकर्ण महावीरना मंत्रनो १०८ वार जाप करीने सुखडी सहित मंत्रनी स्थाळी बांधी स्थापवामां आवे छे. घंटाकर्ण महावीरनी श्री महुडी (मधुपुरी) गाममां श्री पद्मप्रभु जिन मंदिरनी बहार देरी छे, तेमां घंटाकर्ण महावीरनी मूर्ति स्थापवामां आवी छे. घणा भक्तोना आग्रहथी वीरनी पूजा रचवामां आवी छे, तथा आरती रचवामां आवी छे. गुरुगम पूर्वक पूजा जणाववी अने करवी. शासन रक्षक वीर तरीके पूर्वाचार्योए घंटाकर्ण महावीरने स्थाप्या छे. घंटाकर्ण महावीर कल्प बे त्रण जातिना छे. कलिकालमां शासन प्रभावक वीरना अनेक चमत्कारो थाय छे. सम्यग् दृष्टि वीर ते सम्यग् दृष्टियोने स्वधर्मी तरीके

भक्ति करवा योग्य छे. परमात्म महावीर देवना भक्त रागी वीरने स्वधर्मी तरीके मानवामां पूजवामां अतिचार नथी. स्वधर्मी तरीके श्री घंटाकर्ण महावीरनी सहाय इच्छवानी जेओनी इच्छा होय तेओए घंटाकर्ण महावीरनी पूजा आदिथी आराधना करवी. मिथ्यात्वी देव देवीनी सहाय इच्छवा करतां सम्यग् दृष्टि स्वधर्मी देव वीरनी सहाय इच्छवी ते विशेष उत्तम छे. गीतार्थ आचार्य मुनि मंत्र ज्ञाताओनी पासे रही मंत्र, विद्या, देवोपासना वगेरेनुं रहस्य समजवुं. जेओने चारनिकायना स्वधर्मी देवादिनी सहायादिनी इच्छा न होय, तेओने माटे तो वीरादिनुं पूजन नथी. इत्यादि सर्व बाबत गुरु गमथी जाणवी.

जैन शासन भक्त श्री घंटाकर्ण महावीर पूजा.

परब्रह्म परमातमा, महावीर जिनराज; इन्द्रादिक पूजे सदा, सर्व देव शिरताज ॥ १ ॥ चोवीशमा तीर्थंकरा, विश्वोद्धारक देव; सर्व देवने देवीओ, करती प्रेमे सेव ॥ २ ॥ यक्षयक्षिणी योगिनी, प्रभु पद ध्यावे बेश; बावन वीरो सेवता, टाळे जविना क्लेश ॥ ३ ॥ सर्व वीरमां श्रेष्ठ जे, महावीर शिरदार; घंटाकर्ण विराजता, प्रभु जक्त अवतार ॥४॥ परमातम महावीरना, परमजक्त बलवंत; घंटाकर्ण प्रसिद्ध छे, साझ करे गुणवंत ॥ ५ ॥ प्रभु महावीर देवना, भक्तो नरनेनार; तेओनां संकट टळे, समरे स्हाय थनार ॥ ६ ॥ सम्यग्दृष्टि भक्त छे, घंटाकर्णजी वीर; साधर्मिक जक्ति करे, प्रगटे आतम धीर ॥ ७ ॥ साधर्मिक महावीरनी, पूजा गृही नरनार; करतां समकित निर्मलुं, करतां धरो दिलप्यार. ॥ ८ ॥ त्यागी मुनिवर कारणे, धर्म प्रभावन हेत; मंत्र स्मरे गुण बोलीने, धर्मवृद्धि संकेत. ॥ ९ ॥

धर्मी रागी समकिती, वीर करंतो स्हाय; सम्यग्दृष्टि धर्मीने, संकट आव्यां जाय ॥ १० ॥ धूपने दीपक पुष्पनी, सुखडी पूजा सार, सुवर्ण आदि वरखथी, पूजा छे श्रीकार० ॥ ११ ॥

प्रथमा धूपपूजा.

कानुडो न जाणे मोरी प्रीत. ए राग.

घंटाकर्ण महावीर देव, अद्भुत महिमा धारीरे. घंटाकर्ण० समरंतां चढता व्हारे, संकट पडियां टाळे, त्हारो महिमा अपरंपार, भक्तना रोग निवारेरे. घंटाकर्ण० ॥ १ ॥ घंटाकर्णना मंत्रे, श्रद्धाथी विधि यंत्रे; साधे सिद्धे सघळां काज, गुरुगम भाषित तंत्रेरे. घंटाकर्ण० ॥ २ ॥ प्रत्यक्ष दर्शन आपे, भक्तोना मनमां व्यापे; आपे धर्म करणमां साज, कष्टनी कोटी कापेरे. घंटाकर्ण० ॥ ३ ॥ त्हारा मंत्रोना जापे, शक्तियो दिलमां छापे; तुजरागी नरनेनार, धर्मने ज-

गमां स्थापेरे. घंटाकर्ण० ॥ ४ ॥ महिमा त्हारो जग गाजे, ज्यां त्यां जय डंको वाजे; समरे रहेशो हजरा हजूर, त्हारु बिरुद न लाजेरे. घंटाकर्ण० ॥ ५ ॥ वनमां रणमां सागरमां, पृथ्वीतलमां अंबरमां; करोने धर्म कर्ममां साज, दरबारे ने घरमांरे. घंटाकर्ण०॥६॥ धूपे पूजी गुण गावुं, सम्यग् दृष्टि दिल लावुं; बुद्धिसागर शासन देव, जगमां स्थापी भावुंरे. घंटाकर्ण० ॥ ७ ॥

मंत्र–ॐ घंटाकर्ण महावीराय, सर्व रोगोपद्रव शमनाय, इष्ट लाभाय. शांति तुष्टि पुष्टयर्थं धूपं यजामहे स्वाहा.

द्वितीया दीपक पूजा.

सेवक अरज करे छे राज, अमने शिव सुख आपो. ए राग.

घंटाकर्ण महावीर बळिया धीर, शांति जगमां

पसारो; त्हारो महिमा अपरंपार हो वीर!!! संघमां शांति प्रचारो. ॥ मागुं न मागणपेठे स्वार्थे, बाधा मान्यता सर्वे; राखे ते नहीं जैनो भक्तो, तुज प्रेमे रहियो अगर्वे हो वीर! संघमां० ॥ १ ॥ स्वार्थथी मान्यता बाधा वण हुं, धर्मनुं सगपण धारी; दीपक करीने प्रेमे पूजुं, निष्काम भाव वधारी. वीर! संघ-मां० ॥ २ ॥ याचक थइ तुज पासे न याचुं, आतम प्रेमे राचुं; शुद्ध प्रेमथी सगपण साचुं, परमार्थे नित्य माचुं हो वीर! संघमां० ॥ ३ ॥ लाज न जावा देजे वीरा, सहायक वड धीरा; महिमा न जूठो पडवा देजे, समकिती गुण हीरा हो वीर!!! संघमां० ॥ ४ ॥ धर्मी वीरा साथे रहेशो, धर्मे स्हायने देशो; परमार्थे पूजनने वहेशो, कीधुं ध्यानमां लेशो हो वीर! संघमां० ॥ ५ ॥ सर्व जगत्मां महिमा छवा-यो, उग्यो रवि न छुपायो; साधर्मिक प्रीतिए सुहा-यो, कलिमां जागतो गायो हो वीर! संघमां० ॥ ६ ॥ जेम घटे तेम मित्रनी पेठे, धर्ममां साथी रहेशो; बु-

छिन्नागर प्रत्यक्ष अनुभव, महावीरनो संदेशो हो वीर ! ! ! संघमां० ॥ ७ ॥

ॐ घंटाकर्ण महावीराय शांति तुष्टि पुष्टयर्थं दीपं यजामहे स्वाहा ॥

तृतीया पुष्प पूजा.

दशमे देशावगाशिकेरे. ए राग.

प्रभु महावीर शासनेरे, घंटाकर्ण सुवीर; शासन रासिया देव छोरे, टाळो भक्तनी पोरू हो; जगमां. जैनधर्म प्रसरावजोरे, संघनी व्हारे आवशोरे; करशो समरे सहाय० ॥१॥ पुष्पनी माळा कंठमांरे, स्थापी हरखुं चित्त; साधर्मिक देव प्रीतिथीरे, दिलकुं थातुं पवित्र हो. जगमां० ॥२॥ साधर्मिक देव रीति छेरे, प्रार्थ्या वण करे काज; धर्म कष्ट पडतां थकांरे, राखे स्वधर्मी लाज हो. जगमां० ॥३॥ दिव्यौषधीथी महाबलीरे, देव कृपा सुखकार; मुक्ति पंथमां भक्त-

नेरे, साज घणी करनार हो. जगमां० ॥ ४ ॥ नर-नारी जे जे भावथीरे, भावे ते ते भाव; फल पामे भावे खरुंरे, देख्या ते ते बनाव हो. जगमां० ॥ ५ ॥ प्रभु महावीर देवनोरे, तुं वडभक्त छे वीर; विश्वमां सर्वत्र जागतोरे, सागरसम गंभीर हो. जगमां०॥६॥ प्रभु महावीरना संघनीरे, सेवामां लय लीन; बुद्धि-सागर भक्तिमारे, जलमां ज्युं वर्ते मीन हो. जगमां० ॥ ७ ॥

ॐ घंटाकर्ण महावीराय जैनशासन रक्षकाय पुष्पं च पुष्पमालां यजामहे स्वाहा ॥

चतुर्थी सुखडी नैवेद्य पूजा.

विमला नव करशो उच्चाट. ए राग.

घंटाकर्ण महावीर स्हाये व्हेला आवशोरे; प्रेमे धर्मीओने स्हाय करीने सुहावशोरे—परमब्रह्म महावीर

नामे, शरण करी जे ठरतो ठामे; तेवा भक्तोनी भ- क्तिमां धून लगावशोरे. घंटाकर्ण. ॥ १ ॥ श्रद्धा प्रीति प्रेर्या आवो, भक्तिविना नथी कोइनो दावो; जयकर मंगलमाला, कीर्तिध्वज फरकावशोरे. घंटाकर्ण. ॥२॥ क्षणमां पृथ्वीने डोलावो, क्षणमां मेरुने कंपावो; एवो महिमा त्हारो, शापने ताप शमावशोरे. घंटाकर्ण. ॥ ३ ॥ दुर्जन दुष्टोनेज हठावो, जैनधर्म जगमां फेलावो; प्रभुश्री महावीर नामना जपने जग प्रस- रावशोरे. घंटाकर्ण. ॥ ४ ॥ तुज प्रेमी घर मंगलमा- ला, पुत्रादिक धन ऋद्धि विशाला; आपी वांछित सहुने चित्त प्रसन्न सुहावशोरे. घंटाकर्ण. ॥ ५ ॥ पुण्योदये तुज साधन मळतुं, श्रद्धा प्रीति योगे फ- ळतुं; प्रगटी शासन सेवामांही चित्त लगावशोरे. घंटाकर्ण. ॥ ६ ॥ प्रत्यक्ष प्रेमे महावीर दीठा, शासन देवा लाग्या मीठा; बुद्धिसागर दिलमां प्रभु संदेश जणावशोरे. घंटाकर्ण. ॥ ७ ॥

ॐ घंटाकर्ण महावीर जैन शासन रक्षकाय शांतिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धि वृद्धिं कुरु कुरु नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

पंचमी श्रीफल पूजा.

आवशो आवशो आवशोरे मुज पासे महावीर आवशो. श्रद्धा प्रेमना जोरे पधारो, धर्ममां बुद्धि करावशोरे. मुज० ॥ १ ॥ जैन धर्ममां स्वार्पण कारक,- भक्तने प्रत्यक्ष थावशोरे. मुज० उपर उपरनां लटक सलामियां, नास्तिक पासे न आवशोरे, मुज० ॥२॥ नाम ने रूपना मोह मरेला, भक्तोनी आंखे सुहावशोरे. मुज० संतमां व्यक्ति पूर्ण धरीने, आतमभावे लय लावशोरे. मुज० ॥ ३ ॥ शासन रागे धर्म प्रभावक-बनीने प्रभुने ध्यावशोरे; मुज० सकल संघनी सेवा सारी, परम ब्रह्मपद पावशोरे. मुज० ॥ ४ ॥ तुज पूजाथी धर्मीजनोनी, धर्म बुद्धि स्थिर थावशोरे.

मुज० बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धि, कीर्ति जय जग पावशोरे. मुज० ॥ ५ ॥

कलश गीत.

गायो गायोरे एम शासन वीरने गायो, पंच प्रकारे पूजा रचीने, समकित शुद्धिए छायोरे. एम० ॥ १ ॥ घंटाकर्ण महावीर पूजा, कीर्तनथी गुण पायो; सम्यग्दृष्टिदेवनी स्तुति, करतां हर्षे उमाह्योरे. एम० ॥ २ ॥ तपगच्छ सागर शाखा मांहि, नेमिसागर गुरु रायो; रविसागर गुरु सुखसागर गुरु, जैनधर्म फेलायोरे. एम० ॥ ३ ॥ साधु आदि सर्व संघनी, वृद्धि थाशो पसायो; सर्व प्रकारे उन्नति थाशो, आशीर्वाद सुहायोरे. एम० ॥४॥ ओगणिश अठ्योत्तर अक्षय त्रीज, विजापुर जयकारो; बुद्धिसागर चढते पहोरे, सुख पामो नरनारीरे. एम० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीँ घंटाकर्ण महावीराय, सर्व क्षुद्रापद्रव रोग निवारणाय, इष्ट फललाभाय फलं यजामहे स्वाहा ॥

ॐ अर्हं महावीर शांतिः

श्री घंटाकर्ण महावीरनी आरती.

घंटाकर्ण महावीर गाजे, जड चेतन जगमहिमा छाजे; मनवांछित पूरण करनारा, नक्तजनोना भय हरनारा. घं. आधि व्याधि उपाधि हरता, रोग उपद्रव दुःख संहरता. घं० ॥ १ ॥ ऋद्धि सिद्धि मंगल करता, सत्वर सहाये पगलां भरता. घं. तुज स्मरणथी वांछित मेळा, भक्तोनी थाती शुभ वेळा. घं० ॥ २ ॥ घंटाकर्ण महावीर त्हारी, आरती करतां जे नर नारी; आरत चिंता शोक निवारी, धर्मी थातां दोषने टाळी. घं० ॥ ३ ॥ गाजी रह्यो जगमांही सघळे; घरमां सागरमां रणवगडे; स्हाय करंतो वादे झघडे, दुष्टोथी कंई शुभ न बगडे. घं० ॥ ४ ॥ देश नगर संघ वर्तो शांति, भक्तजनोनी वधशो कांति; महामारी नय संकट नासो, आरोग्य आनंदे जग वासो. घं० ॥ ५ ॥ मंगल माला घर घर प्रगटो, इति उपद्रव विघ्नो विघटो; शांति आनंदने प्रगटावो, स्मरतां झट व्हारे आवो. घं० ॥ ६ ॥

आत्म महावीर शासन राज्ये, सेवा कारक जगमां गाजे; बुद्धिसागर आतम काजे, क्षण क्षण व्हेलो सहाये थाजे. घं० ॥ ७ ॥

गुरुनी आरती.

जय जय गुरुवर जग जयकारी, आरती करतां आनंद भारी. जय० मही थाळीमां शशी सूरजनी, आरती कुद्रते प्रेमे उतारी. जय० ॥ १ ॥ पिंड अने ब्रह्मांडमां मति श्रुत,–आरती थाती जग उपकारी. जय० केवलज्ञाननो मंगल दीवो, थातो गुरुगम ज्ञान विचारी. जय० ॥ २ ॥ जरू चेतन सौन्दर्य प्रसारी, सहेजे आरती करे हितकारी. जय० आरत टाळे आरती सारी, युगोयुग जीवो गुरु गुणकारी. जय० ॥ ३ ॥ आरती करनारां नरनारी, आनंद पामो मोह निवारी; समकित दाता गुरु सुखकारी, जग चिंतामणि जग उपकारी. जय० ॥ ४ ॥ सेवा भक्ति घृत

भयुं जारी, कर्मयोग दीवेट छे सारी; बुद्धिसागर गुरु व्यवहारी, ताहारी जाउं सदा बलिहारी. जय० ॥५॥

॥ मंगल दीपक ॥

जग गुरु जग जय मंगल दीवो, चतुर गुरु जग चिरंजीवो. जग० चन्द्र सूरज ग्रह फरता फेरा, गुरुना प्रकाशे रहे न अंधेरा. जग० ॥ १ ॥ वेदागम तुज महिमा गावे, गुरु कृपावडे मुक्ति थावे. जग० निश्चय भावथी मंगलरूपी, सदसद्रूपी रूपारूपी. जग० ॥ २ ॥ पंचभूत उपमा नहीं पावे, अलख कळा नहीं समजी जावे; बुद्धिसागर मंगल माला, पामो ऋद्धि वृद्धि विशाला. जग० ॥ ३ ॥

जिनेश्वर देवनी आरती.

अप्सरा करती आरती जिन आगे. ए राग.

जय जिनवर जिनराजजी जयकारी, परमेश्वर जग उपकारी; जग जीवोने हितकारी, तार्यां नरने नार. जय० ॥ १ ॥ चन्द्र सूरज तुज आरती रूप शोभे, तुज महिमाए जग थोभे; तुज महिमा अपार. जय० ॥ २ ॥ तुज आणाए विश्वमां द्रव्य वर्ते, ज्ञान आज्ञाएज प्रवर्ते; कोइ लोपे न आण. जय० ॥ ३ ॥ देव देवी नर नारीओ मळी नाचे, तुज रूप गुण देखी माचे; बनी भक्ति मगन्न. जय० ॥ ४ ॥ कोटि वर्ष कोटि जीभथी न गवाये, कोटि दिलमां न ध्यातां समाये; परा पश्यंती पार. जय० ॥ ५ ॥ घनगर्जे मोर टहुकतो मन हर्षे, खुशी चातक घन जब वर्षे; तुज दर्शने मुज मन तरसे, देखी दिलडुं प्रसन्न. जय० ॥ ६ ॥ मही जलवायु अग्निने नभ पंच, तेनी उपमा न तुजने रंच; तुं तो निरुपम देव. जय० ॥ ७ ॥

सर्वमांही ने सर्वथी प्रभो न्यारा, सदसद् गुण प-र्यायाधारा; वीतरागने सर्वज्ञ प्यारा, सर्वदेवना देव. जय० ॥ ८ ॥ परमब्रह्म महावीरजी जगत्राता, तुंहि माता पिता ने भ्राता; बुद्धिसागर द्यो सुख शाता, संघ मंगल माल. जय० ॥ ९ ॥

मंगल दीपक.

जय जिनवर तुज जग बलिहारो, विश्वोद्धारक जग उपकारी. जय० मंगलदीवो मंगलकारो, तेथी पूजुं जिन जयकारी. जय० ॥ १ ॥ द्रव्यभाव मंगल अवतारी, तुज भक्तें मंगल निर्धारी. जय० जगमां मोटो मंगल दीवो, विश्व जीवन तुं चिरंजीवो. जय० ॥ २ ॥ शक्ति अनंती अगम अपारा, सर्व जीव दिलमां छो प्यारा; जय० नय निक्षेपथी निश्चय न्यारा, सर्व विश्वना छो आधारा. जय० ॥ ३ ॥ गुणपर्याय अनंता दरिया, अनंत शक्ति स्वभावे भरिया. जय० नवग्रह इन्द्रादिक तुज बंदा, निशदिन सेव करे सूरचंदा. जय० ॥ ४ ॥ परब्रह्म महावीर गवाया, अरिहंत परमेश्वर जिनराया; जय० बुद्धिसागर मंगल राया, पूजी प्रेमे तुज गुण गाया. जय० ॥ ५ ॥